राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक-पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत. राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाड्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

सम्पादक

श्री गोपालनारायण बहुरा, एम० ए०

उप सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२ | क्रिस्ताब्द १९६०

प्रथमावृत्ति ५०० | | मूल्य १२.००

मुद्रक—श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर।

RAJASTHAN PURATANA GRANTHMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular

*

GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, Vishveshvrananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, (Punjab), Gujrat Sahitya Sabha, Ahemdabad, Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay, General Editor, Gujarat Puratattva Mandir Granthavali, Bharatiya Vidya Series, Sinhghi Jain Series etc etc

* *

No. 51

A CLASSIFIED LIST OF MANUSCRIPTS

IN THE

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

Pt 2

* * *

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

Director, Rajasthana Prachya Vidya Pratisthana

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR (RAJASTHAN)

VS 2017] [*1960 A D.*

सञ्चालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत सूची राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुरमे अप्रैल सन १९५६ ई० मे मार्च सन् १९५८ ई० तक संग्रहीत ३८५५ हस्तलिखित ग्रन्थोंकी है। मार्च सन् १९५६ तक संगृहीत ४००० ग्रन्थाकी सूची भाग १ के रूपमे प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही मार्च सन १९५८ तक संगृहीत राजस्थानी ग्रन्थोंकी सूची भी राजस्थानी ग्रन्थ सूची भाग १ के नामसे पृथक् प्रकाशित की जा चुकी है।

ग्रन्थोंका वर्गीकरण और विषयनिर्धारण ये दोना ही कठिन एवं समय सापेक्ष्य कार्य है। हमारा विचार था कि राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमे संगृहीत ग्रन्थोंका वर्गीकृत और सविवरण सूचीपत्र तयार कराकर विद्वज्जनोंके सामने लाया जाय, किन्तु ग्रन्थाकी सख्या दिनो दिन बढती रही और आगन्तुक विद्वानो एवं अनुसंधित्सुओं का, सामग्रीकी उपयोगिताकी दृष्टिमे रखते हुए, यह अनुरोध रहा कि संगृहीत सामग्रीका कोई न कोई रूप जल्दी से जल्दी सामने आ जाना चाहिए। एतदर्थ यथासाध्य उपकरणोंको जुटा कर विभागीय कर्मचारियो द्वारा थोडे से थोडे समयमे मोट तौर पर वर्गीकरण एवं विषय-विभाजन कराकर ये सूचियाँ वार्षिक सूचिकाके रूपमे प्रकाशित की जा रही हैं। आगे विवरणादि तयार करनेका कार्यक्रम भी हमारे सामने है और राजस्थानी सचित्र ग्रन्थोंके सूचीपत्रका काम इस दिशामे श्रीगणेश करनेके लिए हाथ मे लिया गया है। इस प्रकार हमारे सूची प्रकाशन कार्यक्रममे एक तो संगृहीत ग्रन्थाकी सूची और दूसरी विवरणात्मक सूचियाँ यथावसर निकलती रहेंगी।

प्रस्तुत ग्रन्थ सूची, भाग २, का स्वरूप यद्यपि प्रथम भागके बहुत कुछ अनुरूप रखा गया है फिर भी इसमे आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन किये गये हैं। यथा भाषाका कोष्ठक कम करके हिन्दी एवं राजस्थानी ग्रन्थोंके पृथक् विषय बना दिये गये है जिससे सुविधानुसार इन दोना भाषाओंके ग्रन्थोंकी जानकारी मिल सके। विशेष उल्लेखनीय के कोष्ठकमें रचनाकाल लिपिकाल, लिपिकर्त्ता, ग्रन्थदशा और विषय-स्पष्टीकरणका सक्षिप्त ससूचन किया गया है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट १ में कुछ विशिष्ट ग्रन्थोंके आद्य त अश अविकल रूपमें उद्धृत कर दिये गये हैं। साथ ही ग्रन्थके विषयमे यदि कोई विशेष सूचना प्राप्त हुई है तो वह भी समाविष्ट कर दी गई है। तात्पर्य यह है कि ग्रन्थके स्वरूप एव दशाको समझनेके लिए सक्षिप्त रूपमे जानकारी देनेका यथासभव प्रयास किया गया है। परिशिष्ट २ में ग्रन्थकर्त्ता-नामानुक्रमणिका दी

गई है। स्पष्ट है कि इन दोनो ही सूचियोमे बहुतसे ग्रन्थ एव ग्रन्थकारोके नाम अद्यावधि अन्यान्य सस्थाओमे प्रकाशित ग्रन्थसूचियोमे, विशेषत. राजस्थानी ग्रन्थ-सूचियोमे नही पाये जाते है, जो अद्यतन अनुसधित्सु विद्वानोंके लिए विशेष आवश्यक एव उपयोगी हैं।

प्रतिष्ठानकी वर्द्धमान प्रगतिको देखते हुए यह भी उचित समझा गया है कि राज्यमे ततत् स्थानो पर उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थ-सग्रहोंको भी इसी विभागके आयत कर दिया जावे। तदनुसार इन्द्रगढ पोथीखानेके २०६ ग्रन्थ प्रतिष्ठानमे प्राप्त हुए है जिनकी सूची इसी भागके परिशिष्ट ३ मे प्रकाशित की जा रही है। भविष्यमे भी ऐसे प्राप्त होने वाले सरकारी एव व्यक्तिगत सग्रहोकी सूचियाँ प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित की जावेगी।

इस सूचीमे समाविष्ट ग्रन्थोके आक्रमाक विशिष्ट परिचयान्त परिचय-पत्रक सन् १९५८ के नवम्बर मासमे ही श्री गोपालनारायण बहुरा एव श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी द्वारा भरे जा चुके थे, परन्तु दिसम्बर १९५८ मे प्रतिष्ठानका स्थानान्तरण जोधपुरमे हो गया। यहाँ आकर व्यवस्था आदि करने मे ५-६ मासका समय लगा। तदनतर पुन जांच आदि करके प्रेस कापियाँ तैयार की गई और मुद्रण चालू करवाया गया। इस पुस्तक का सम्पादन हमारे निर्देशनमे विभाग के उप सचालक श्री गोपालनारायण बहुराने किया तथा परिचय पत्रकाकन, प्रेस कॉपी लेखन, नामानुक्रमणिका और परिशिष्टादि सकलन और प्रूफ-सशोधनादि कार्यमे सर्व श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी, रमानन्द सारस्वत, स्वर्गीय विश्वेश्वरदत्त द्विवेदी प्रभृतिने भी यथेष्ट सहयोग दिया।

आशा है, इस प्रकाशनसे विद्वज्जन एव पुरासाहित्यानुसधित्सु लाभान्वित होगे।

राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर
दि० २९-७-६०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

विषय-तालिका





क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५८	अग्निहोत्रपञ्चाग्नि स्तोत्र		१८२७	११	लि क –वैष्णव नृसिंहदास गढ बधणोर मध्ये
२	४५०३(१)	अपराजिता विद्या (रुद्रगीता)	विष्णधर्मोत्तर तृतीयकाण्डगत	१८वीं श	१–६	
३	७६६८	अपराधनिरसन स्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१८९०	२	लि क –रामनारायण
४	६६५२	अपराधसुन्दरस्तोत्र सटीक	शङ्कराचार्य (टी रामानन्दभिक्षु रामेन्द्रवनशिष्य)	१७६७	७	लि क –परमानन्द
५	४४६७	अपामार्जन स्तोत्र	विष्णुरहस्योक्त (दाल्भ्य पुलस्त्यसवाद)	१८०२	८	लि क –दवे सदाशिव
६	४४७७		विष्णुधर्मोत्तरे विष्णुरहस्योक्त	१९वीं श	१०	
७	५४३८(६)	अष्टाविंशति नाम	भगवदुक्त	१८९०	६६–६७	
८	४२३४	अहल्यास्तोत्र	अध्यात्मरामायणगत	१८वीं श	६	*
९	४२५४	अज्ञानविमोचनस्तोत्र	नन्दिपुराणगत	१९वीं श	३	*
१०	४३७०	आदित्यहृदयस्तोत्र (द्वादशावरण)	भविष्योत्तरपुराणगत	१८२०	११	लि क –गगाधर
११	४५१२	आदित्यहृदयस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१९वीं श	२५	
१२	५०५२	,,	,,	१८९५	१६	लि क –जोशी पन्नालाल सवाई जयपुरमध्ये
१३	५०५७	,		१९२३	१८	
१४	६७८५	आनन्दलहरी	शङ्कराचार्य	१९०८	२	
१५	४५१३	आपदुद्धारवटुकभैरवकवच स्तोत्र (अष्टोत्तरशतनाम)	रुद्रयामले भैरवतन्त्रोक्त	१८०३	७	लि क –दवे सदाशिव
१६	६०७४	आलवन्दारस्तोत्र सटीक त्रिपाठ	यामुनाचार्य	१८२८	१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६२४३	आलवन्दारस्तोत्र सटीक	यामुनाचार्य	१८२९	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१८	६५४७	,, ,,	,,	१९वी श	१४	
१९	७५८२	,, ,,	,,	१८७८	१८	
२०	६३७९	इन्द्राक्षी स्तोत्र		१८वी श	५	
२१	४९०४	(१) एकश्लोकी भागवत (२) महाभारत (३) दुर्गा (४) सप्तश्लोकी गीता			६६ से ६९	
२२	५६४७	कर्पूरस्तवराज सटीक	महाकालसहितोक्त	१९वी श	१२	
२३	५४४८	कार्त्तवीर्य्यार्जुन कवच	अमरतन्त्रोक्त	,,	३८	
२४	५७०३	कालिका-कवच	तन्त्रोक्त	१९१२	२	लि.क –व्रजवासी, अलवर
२५	५७६०	कालिकाखड्गमाला स्तोत्र	महाकालसहितान्तर्गत	१९वी श	३	
२६	५८१७	कालीसहस्रनाम	,,	१८वी श	३०	
२७	५१९२	काशीमङ्गल स्तोत्र	श्रीशकराचार्य	१९वी श.	८	
२८	६२८०(२)	कृष्णकरुणामृत	लीलाशुक	१९०९	७–१९	लि.क पुजारी हरदेवदास, गोविदगढ
२९	७६१९	कृष्णस्तवराज		१९वी श.	१०	
३०	४२३६	कौसल्यास्तोत्र	अध्यात्मरामायणान्तर्गत	१८वी श.	४	
३१	४२३१	गगालहरी	जगन्नाथ भट्ट	१९वी श.	२७	
३२	५४२०(२)	गगालहरी (सटीक)	जगन्नाथ, टी. बलदेव	१९वी श.	४८–६५	हिन्दी टीका सहित
३३	५५६९	गगालहरी बालबोधिनी टीकासहित	टी. दलपतिराम	,,	३२	
३४	६०५८	गगालहरी टीका	टी चतुर्भुज मिश्र	१९०९	५८	लि. क.–सालग्राम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	४२३७	गङ्गास्तोत्र	नारायण भट्ट	१८वीं श	४	
३६	६६३६	"	ब्रह्मवैवर्तपुराणगत	१८८१	५	
३७	४२६६	गजेन्द्रमोक्ष	महाभारतोक्त	१८वीं श	२६	
३८	५२८४			१९वीं श	१३	
३९	४५०६		"	१८३९	१६	
४०	४४५२(३८)	गणपतिस्तोत्र		१८वीं श	४१	लि क–पं० प्रीतसौभाग्य
४१	४६७०	गायत्रीसहस्रनाम	रुद्रयामलोक्त	१८१२	११	लि क महात्मा नाथराम शिवपुरीमध्ये
४२	५४५६	गीता पञ्चरत्न सचित्र		१८वीं श	२१६	चित्र संख्या ५
४३	५५०८	"		१८३०	३६०	
४४	५८१८			१८७४	१६२	
४५	७१३४	" सचित्र		१८वीं श	गुटका	चित्र संख्या ५१
४६	४५०८	गुरुगीता	स्कन्दपुराणोत्तरखण्डोक्त	१८१६	५	लि क–भीकमजी
४७	७६२६	गुरुपादुकास्मृति		१९वीं श	३	
४८	७१४-	गुरुस्मरणाष्टक		"	४०	
४९	५३१६	गोपालविंशति	कवितार्किकसिंह वेंकटनाथ शिष्य गोपाल	१८८३	२	गोपालविद्यार्थिना लिखित नतरामजी कृते
५०	५२०५(१४)	गोपिकागीत (रासपञ्चाध्यायी)	भागवतोक्त	१८वीं श	४९–६४	
५१	४२६१	गोपीनाथाष्टक	विश्वनाथ चक्रवर्ती	१९४७	२	
५२	४५०५	गोविन्दस्तोत्र	श्रीशंकराचार्य	१८४३	३	
५३	७७८९	गोविन्दाष्टकम्	"	१७५१	२	
५४	५०८३	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१७८६	६१	आद्य चार पत्र अप्राप्त, लि क–पंचल, चित्र सं ४६

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५	५२०८	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१८वी श.	९८	चित्र सख्या १०
५६	५२०५(१२)	चतु·श्लोकी भागवत		,,	४७–४८	
५७	४४५२(५८)	चतु षष्टियोगिनीस्तव		,,	११६वा	
५८	६३८१	जानकीनवरत्नस्तोत्र	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१९वी श	६	लि.क –भरतदास वैष्णव,भरतपुर
५९	७७०३	जानकीस्तवराज	अगस्त्यसंहितान्तर्गत	,,	६	लि क.–रामनारायण
६०	६६९७	जानकीसहस्रनामस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१७६०	१८	लि क.–भगवद्दास
६१	७०६५	जानकीसहस्रनाम		२०वी श.	७	
६२	४९९९	ताराकवच	भैरवीतन्त्रोक्त	१९वीं श	४	
६३	४२४९	तारा–श्रीरामसवाद	रामायणोक्त	१८वी श	५	वेदान्तपरक
६४	६६३४	द्वादशस्तोत्राणि	आनन्दतीर्थ	१९वी श	११	
६५	७७०५	दशहरास्तोत्र	स्कन्दपुराणे काशीखडोक्त	१७४२	४	लि क –चतुर्भुज व्यास,अम्बावती
६६	७६१२	दशावतारस्तोत्र		१९वी श	१	लि.क –केशवदास, गढबदनोर
६७	६०५२	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	शकराचार्य	१८वीं श	४	
६८	४५४४	,,	,,	१७६४	१२	
६९	५५०४	दुर्गाकीलकस्तोत्र		१८८९	१२	लि.क –हनुमदुपाध्याय
७०	४२०७	दुर्गासप्तशती		१९वी श	३५	
७१	४४७९	,,		१७७३	,५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
७२	५३२८	,,		१८३१	५६	लि.क.–रघुनाथजोशी, स. जयपुर
७३	५४६३	,,		१८८९	५८	लि क.–हनुमदुपाध्याय
७४	६९२७	,,		१७वी श	८४	भोजपत्र पर लिखित
७५	७१५७	,,		१८वी श.	१६१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	५०६२	देवीचरित्र (दुर्गोपाख्यान त्रयोदशाध्यायात्)	रुद्रयामलोत्तरखण्डोक्त	१९वीं श	५१	पत्र १ व ३२वां अप्राप्त तथा १५वें पत्रमें कुछ स्थल त्रुटित
७७	५८२०	देवीमहिम्नस्तोत्र	दुर्वास प्रोक्त	१९१७	२२	लि क –व्यास मुकुन्ददास, जोधनगर
७८	४३११	देवीमाहात्म्य	वेदव्यास	१८५५	१८	
७९	४२६०	नवाष्टक कृष्णाष्टक	श्रीमद्गोस्वामी (विट्ठल?)	१८वीं श	४	
८०	७७८७(६)	नवश्लोकीस्तोत्र	शंकराचार्य	१८५०	२२८–२३०	
८१	४१७२	नारायणकवच	भागवतोक्त	१८वीं श	८	
८२	४४६८	,	,	१९वीं श	४	
८३	५४३८(७)	,		१८९०	६७–७३	
८४	४२३३	नारायणाष्टक		१८वीं श	३	
८५	६४५०	नारायणहृदयस्तोत्र		१९१७	१–४	
८६	४२६७	नृसिंहकवच		१८वीं श	४	प्रथम पत्र सचित्र
८७	४१७५	पंचमुखी हनुमत्कवच		१९वीं श	१३	
८८	७६५३	पंचायुधस्तोत्र	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८३७	२	
८९	४१७०	पद्मपुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	१८७८	१०	
९०	६८५८	,,		१८वीं श	८	आद्यपत्र चित्रित
९१	४८८१	(१) पवनविजयानिस्तोत्र (२) रामनवमीसंकल्प		१९वीं श	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
९२	४१७८	पीयूषलहरी	जगन्नाथ पंडितराज	१९१०	१४	लि क –गोटाराम जोसी
९३	४१७९	पीयूषलहरी	,	१९१०	१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९४	४५१०	पीयूष लहरी	जगन्नाथ पण्डितराज	१९१०	११	
९५	५२५६	,,	,,	१८वीं श	२६	
९६	६५८५	ब्रह्मस्तुति (व्याख्यासहित)	श्रीनिवासदास	१८४०	२५	
९७	५२४८	बगलामुखीस्तोत्र		२०वीं श	७	
९८	४१३३	बटुकभैरवकवच		१९वीं श	८	
९९	४१३४	वटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्र		,,	३५	
१००	४१५४	भगवती अर्गला कीलकस्तोत्र		,,	३	
१०१	४१९२	भगवती पुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	,,	६	लि क —रामशकर, कुबेरलाल, स्थान—ग्राम मधवासना
१०२	६४२३	,,	,,	१८०७	६	
१०३	७६९४	भवान्यष्टक	शकराचार्य	१७६४	१	लि.क —राघव जोशी
१०४	४१२४	(१) भवानी कवच (२) भवानीसहस्रनामस्तोत्र		१८वीं श.	२२	
१०५	४२५९	भवानीसहस्रनाम		१८६१	३०	लि क —गगाविष्णु, मलारणा
१०६	५२१३	,		१८वीं श.	३०	
१०७	५७९०	भवानीसहस्रनाम एव कवच		१८९८	९	लि.क.—हरिवल्लभ शर्मा
१०८	५४६७	भावकल्पतरु	मधुर शर्मा	१९वीं श	३४	
१०९	४२४१	भीष्मस्तवराज	महाभारतोक्त	१८वीं श	२२	
११०	५२८५	,	,,	१९वीं श	९	
१११	६९९९	,,	,,	,,	१२	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामम्	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११२	४५१८	भीष्मस्तोत्र सार्थम्	शान्तिपर्वोक्त	१८३१	१४	
११३	५२०८(१३)	भवानीभुजङ्गाष्टकम्			४८-४९	
११४	४३७५	भुवनेश्वरीस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	१६८६	८	
११५	५३८५(५)	मङ्गलाष्टक		१९वीं श		
११६	४६६०	,,	कालिदास	१८९७	४	
११७	७७०१	मधुरकुञ्जविहाराष्टक		१८वीं श	१	
११८	५२४३	मल्लारिकवचस्तोत्र	ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गतोक्त		३	
११९	५०५६	महागणपतिकवच	देवीरहस्योक्त	१९वीं श	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०	४५१४	महागणपतिस्तोत्र	राघवचैतन्य	१८२६	३	लि क –तिवाड़ी बखतरामजी
१२१	४५०३(२)	महागणपतिस्तोत्र	शंकराचार्य	१८वीं श	६-८	
१२२	४२१५	महानारायणस्तोत्रचिन्तामणि		१९वीं श	१८	
१२३	५०४६	महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	,,	११	
१२४	६६८२	महासुदर्शनकवच	सुदर्शनसंहिता	,,	३	
१२५	५२५०	महिम्नस्तोत्र	श्रीविष्णुकृत	१८३१	६	
१२६	५८७०	,,	पुष्पदन्त	१९वीं श	४	
१२७	६६८३		,,	१७६०	११	लिपि स्थान–काशी
१२८	६६११		,,	१८८६	१०	लि क –नन्दराम
१२९	७४६६	महिम्नस्तोत्रटीका	मधुसूदन सरस्वती	१७९३	४८	प्रथम दो पत्र अप्राप्त
१३०	५५६०	महिम्नस्तोत्र सटीक (त्रिपाठ)		१९वीं श	१६	
१३१	६७८४	,,		१९१९		लि क –रामदास पचोलीजी
१३२	५७८४	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	रुद्रयामलतन्त्रोक्त	१८८२	८	लि क –ब्रजवासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३३	६६६८	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	विश्वसारोद्धृत	१९वीं श	१२	
१३४	५२७८	यमकाष्टक	पद्मप्रभदेव	२०वी श	५	
१३५	४२३८	यमुनाष्टकस्तोत्र		१८वीं श	३	
१३६	६७०१	यमुनाष्टकादिस्तोत्र	श्रीवल्लभ-विट्ठल-हरिराय-रघुनाथ	१९वीं श	५४	(४८ कृतिया)
१३७	६३७६	युगलकिशोर सहस्रनाम	नारदीयपुराण	१८वीं श	१२	लि क –रामसेवक, चित्रकूट
१३८	४१७३	रघुवरसहस्रनामस्तोत्र	ब्रह्मरहस्यगत	१८११	२१	प्रतमें नवग्रहस्तोत्र आदि हैं
१३९	६७४९(५)	राधाकवच		१९वीं श	११७–११९	
१४०	५४५५(२)	राधाकृष्णशतनामस्तोत्र	तंत्रोक्त	,,	११	
१४१	७७००	राधाष्टकस्तोत्र	त्रैलोक्यसम्मोहनतन्त्रोक्त	१८वीं श	१	
१४२	६२८०(५)	राधास्तवराज	गौतमीयतन्त्रोक्त	१८०६		लि क –पुजारी हरदेवदास
१४३	५४५४	राधासहस्रनामस्तोत्र	सत्यामलोक्त	१८१८	३६	
१४४	५५१८	,,	,,	१९वीं श	२५	
१४५	५२४७	राधिकाष्टकस्तोत्र		,	२	
१४६	७७०२	राधिकास्तोत्र	बृहद्ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१७६६	१	
१४७	६२८०(७)	राधिकाष्टोत्तरशतनाम		१८०६	२	लि क –पुजारी हरदेवदास
१४८	५२८३	रामचन्द्रस्तवराज	नारदप्रोक्त	१९वीं श	८	
१४९	७७१८	रामचन्द्र स्तुति आदि		,,	६	
१५०	६३६६	राम महिम्न स्तोत्रम्	विजयरामाचार्य	१९०१	११	
१५१	४३३२	रामरक्षाकवच	विश्वामित्र ऋषि	१८वीं श.	९	
१५२	७६४७	रामरक्षाविवरणकारिका	नीलकण्ठ	१९वीं श	३	
१५३	५०५३	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र	,,	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५४	६६७९	(१) रामवज्रकवच (२) विष्णुहृदयस्तोत्र	हिरण्यगर्भसंहितोक्त	१९वीं श	८	
१५५	६६८०	रामशरणस्तोत्र	वृहद् ब्रह्मसंहितोक्त	१८वीं श	४	
१५६	६६३०	रामस्तव		१९वीं श	३	
१५७	४२४७	रामस्तवराज	सनत्कुमारसंहितोक्त	१८वीं श	१८	
१५८	५२३५	"		१७५९	७	
१५९	५४३८(१)	"	"	१८९०	१-१६	
१६०	६६६५		"	१८६०	६	लि क –जयजयराम
१६१	६७४९(४)	"	"	१९वीं श	१०५-११६	
१६२	५२३३		"	१९०९	३८	किला अमरकोट मालवामें लिखित
१६३	४२४८	रामहृदयस्तोत्र		१८वीं श	९	
१६४	४५०४	"	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१९वीं श	५	
१६५	७७५७(८)	"	अध्यात्मरामायणोक्त	१८५०	२२२-२२७	
१६६	६६३६	रामानुजाष्टोत्तरशतनाम	महात्मा आंड प्रिपूर्ण	१८वीं श	२	
१६७	७६१६	रामाष्टक, रामस्तोत्र	महेश्वर भट्ट	१९वीं श	१	
१६८	५७१५	रुचिस्तव	मार्कण्डेयपुराणोक्त	"	५	
१६९	७७९६	रूपचिन्तामणिस्तोत्र	चक्रवर्ती	१८९०	४	लि क –रामनारायण
१७०	६२८०(६)	"	"	१९०९	२५-२८	लि क –पुजारी हरदेवदास
१७१	५१९४	ललितादिव्यनामत्रिशती	ललितोपाख्यानगत	१९वीं श	२०	
१७२	५८०७	ललितास्तव	दुर्वासा	१९वीं श	२६	स्तव २११ आर्याओंमे है।
१७३	७६५९	लक्ष्मीपञ्जरस्तोत्र	मन्त्ररहस्योत्तरखण्डोक्त	१९१३	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७४	६६८६	लक्ष्मीस्तव	वेंकटनाथ वेदान्ताचार्य	१६वी श	३	
१७५	६६८८	लक्ष्मीस्तोत्र		१६०१	४	
१७६	५५१६	लक्ष्मीस्तोत्र, नारायणहृदय	अथर्वणरहस्योक्त	१६२६	१२	
१७७	५३१६	लक्ष्मीसहस्रनाम	ब्रह्माण्डपुराणगत	१८२८	१०	७वां पत्र अप्राप्त
१७८	६४४०(२)	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	१६१७	५–१७	
१७९	७७१३	व्रजविहार	श्रीधर स्वामी	२०वीं श	२	
१८०	५३३६	वरदगुरुपचाशत	नारायण	२०वीं श	६	लि क –देवकृष्ण, र का १६०१
१८१	५२३४(२)	(१) विंशतिनामस्तोत्र (२) चतु श्लोकी भागवत (३) एकश्लोकी रामायण (४) सप्तश्लोकी गीता (५) बिहारी सतसई के २३ दोहे		१६११	१०–१४	
१८२	५५११	विलोम सप्तशती	मार्कण्डेयपुराण	१८वीं श	३२	
१८३	७७२१(१६)	विष्णुपञ्जरस्तोत्र		१८४४	२०३–२०५	लि क –श्याम वेरा
१८४	७७५०(२)	,,	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८६०	२१–२४	लिपिकर्त्री–किशनी, लिपि स्थान–नारसा
१८५	४२५१	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	महाभारतोक्त	१८वीं श	३२	
१८६	४४७८	विष्णुसहस्रनाम (सार्थ)	पद्मपुराणोक्त	१७वीं श	५३	टीका हिन्दीमे
१८७	५२८२	,,	महाभारतोक्त	१६वीं श	१३	
१८८	५४३८(२)	,,	,,	१८६०	१६–४०	
१८९	५४६०	,, (गीतापञ्चरत्न)		१८८२	३०१	चित्र संख्या ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	६६३५	विष्णुसहस्रनाम	महाभारतोक्त	१७वीं श	११	
१६१	६३७५	"		१७८२	१७	
१६२	४५१५	"	"	१८वीं श	१६	
१६३	६८६४	विषापहारस्तोत्र व्याख्या	धनञ्जयसूरि	१६वीं श	१०	लि क –पण्डित हरिपाणि
१६४	५२०५(१७)	विशिप्त ? (विज्ञप्तिस्तोत्र)	विठ्ठलेश दीक्षित	१८वीं श	८६–८८	
१६५	५१८३	वृन्दावनशतकम्	प्रबोधानन्द सरस्वती	"	२०	
१६६	५४६६	"	"	१८३७	११	
१६७	६४६८	वेदसार सटीक	विश्वनाथ	१६वीं श	२७	
१६८	४२४६	वेदस्तुति	भागवतोक्त	१८वीं श	१४	
१६६	५४६७	वेदस्तुति (अन्वयबोधिनी टीका)		१८६२	३६	
२००	६४६३	वेदस्तुति सटीक		१६६६	६	लि क –शिवनिधानगणि लि० स्था०–प्रल्हादनपुर
२०१	६४६७	" "	टी श्रीधर	१८८८	५४	लि क –हरिलाल
२०२	६५६३	"	श्रीनिवासदास	१६वीं श	२८	
२०३	४१८०	वैशम्पायन सहस्रनाम	वेदव्यास	"	२७	
२०४	४२५३	श्रीदेवीपुष्पाञ्जलि	रामकृष्ण	१८४६	३	
२०५	४१३१	श्रीसूक्त (सभाष्य)	विद्यातीर्थ	१६वीं श	६	
२०६	७७५७(१०)	श्वेताश्वतरोपनिषत्	शंकराचार्य	१८५०	२३०–२३२	
२०७	५७५६	शरभसहस्रनाम (सस्तव)	आकाशभैरवकल्पोक्त	१६वीं श	७	
२०८	४१७१	शारभकवच	शंकरप्रोक्त	"	१२	
२०६	६६८७	शान्तिग्रामस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	"	४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	७६४६	हनुमन्मधुनामस्तोत्र		२०वी श.	२	लाङ्गूल शत्रुञ्जयस्तोत्र
२४९	६७०७	हयग्रीवस्तोत्र	वेंकटनाथ वेदान्ताचार्य	१९वी श	४	
२५०	७७०६	हरिनाममालास्तोत्र	शंकराचार्य	,,	३	
२५१	७८१२	हरिहरस्तोत्र	हरिवंशपुराणोक्त	,,	६	(८१वा अध्याय)
२५२	७६८८	हरिहरात्मकस्तोत्र		,,	३	
२५१	६८२९(२)	(१) हस्तामलक	शंकराचार्य	१९०२	१–१४	
		(२) यमुनाष्टक	नन्ददास			
		(३) हनुमानाष्टक	तुलसीदास			
२५४	६५८२	हस्तामलक सटीक	शंकराचार्य	१९वी श.	५	
२५५	६५८४	क्षमाषोडशी	वेदाचार्य	१८९५	७	लि क –रामसुख रामनारायण
२५६	६६७८	,,	,,	१९वी श	३	
२५७	५१०९	(१) त्रिपुरसुन्दरीहृदय	वीरमहेश्वरतन्त्रोक्त	१९२५	३१	लि.क –रामकुमार, कोटा
		(२) त्रिशती				
		(३) कल्याणीस्तोत्र				
		(४) ललितास्तवराज				
२५८	५१९१	त्रिपुराकवच		१९वी श	३	
२५९	७७२१(१७)	त्रिपुरास्तोत्र आदि		१८४४	२०५–२७७	
२६०	४१९३	त्रैलोक्यविजयकवच	उत्तरगन्धर्वतन्त्र	१९वी श.	२४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४६६३	अथर्वण निरुक्त		१८९५	१२	लि क –सदासुख शुक्ल,जयनगर
२	४६३७	अथर्वणसंहिता अष्टादशकांड		१९०४	११	,, ,,
३	४६२८	अथर्वणसंहिता		१८६२	१३४	
४	४०६५	आपस्तम्ब अग्निष्टोमसूत्र		१८वीं श	५६	लि क –महादेव भट्ट
५	४७०२	एतरेयोपनिषत		१९वीं श	५	
६	४६४५	एतरेयोपनिषद्भाष्य	माधव	,,	३०	
७	६५६२	एतरेयोपनिषद्भाष्यटीका	अभिनव नारायणेन्द्र सरस्वती	,,	४४	
८	४५६२	ऋग्विधान		,,	२१	लि क –भट्ट मयाराम
९	४६८६	,,		१८०६	१६	लि क –सवाईराम
१०	४६४४	ऋग्वेद (चतुर्थाष्टक चतुर्थाध्याय)	माधव	१९वीं श	९४	
११	५०१०	ऋग्वेद प्रथमाष्टक		१७८१	१०५	लि क –वीरेश्वर शुक्ल
१२	५०११	द्वितीयाष्टक		१७८४	७५	,, ,,
१३	५०१२	,, तृतीयाष्टक		,,	८७	,,
१४	५०१३	,, चतुर्थाष्टक		१७१९	१२४	,, ,,
१५	५०१४	पञ्चमाष्टक		१७८४	७२	,, ,,
१६	५०१५	,, षष्ठाष्टक		१७८२	१११	लि क –पंड्या चिंतामणि
१७	५०१६	सप्तमाष्टक		,,	९९	,, ,,
१८	५०१७	,, अष्टमाष्टक		१७८२	९८	लि क –वीरेश्वर
१९	५०१८	,, प्रथमाष्टक		१७२६	१३३	पत्र १९ ४६ ४७ अप्राप्त
२०	५०१९	,, द्वितीयाष्टक		१९वीं श	१२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	५०२०	ऋग्वेद तृतीयाष्टक		१६वी श	१११	
२२	५०२१	,, चतुर्थाष्टक		१८५३	१२६	१७वा पत्र अप्राप्त
२३	५०२२	,, पञ्चमाष्टक		१८५५	६७	
२४	५०२३	,, षष्ठाष्टक		१८५५	१०४	
४५	५०२४	,, सप्तमाष्टक		१८५६	६६	
२६	५०२५	,, अष्टमाष्टक		१८५८	११४	
२७	५५७०	,, तृतीयाष्टक		१८वीं श	६६	पत्र २७ से ३८ तक अप्राप्त
२८	७६७३	,, प्रथमाष्टक		१७७५	६६	
२९	७६७४	,, द्वितीयाष्टक		१७७३	७४	
३०	७६७५	,, तृतीयाष्टक		१७७५	६६	
३१	७६७६	,, चतुर्थाष्टक		१७७५	७२	
३२	७६७७	,, पञ्चमाष्टक		१७२०	१००	
३३	७६७८	,, षष्ठाष्टक		१७८०	८४	लि.क –वीरेश्वर शुक्ल
३४	७६७९	,, सप्तमाष्टक		१७७४	७२	
३५	७६८०	,, द्वितीयाष्टक		१६६९	८२	लि क –जगन्नाथ, काशी
३६	७६८१	,, तृतीयाष्टक		१७९३	७९	
३७	७६८२	,, ,,		१७०४	१६३	लि,क.–व्यास गोकुल, टोडा
३८	७३८३	,, ,,		१७२९	९१	लि क –पण्ड्या चिन्तामणि
३९	७६८४	,, पञ्चमाष्टक		१७७४	७१	
४०	७६८५	,, षष्ठाष्टक		,,	७२	
४१	७६८६	,, सप्तमाष्टक		१८५३	११०	लि क –सुखजी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	४९६७	ऋग्वेद प्रातिशाख्य (प्रथमाध्याय)		१८वीं श	१६	
४३	४९५३	ऋग्वेद संहिता		१७९३	९३	लि क –फकीरचन्द
४४	५१९६	,,		१७३०	१५१	
४५	५०२६	ऋग्वेदानुक्रमणिका		१८५२	१२३	स्वरितं देवनाकरेण
४६	५०२७	, (वृद्ध)		१७९९	४७	लि क –रविदत्त
४७	५०२८	, परिभाषाभाष्य	रघुनाथ	१७९८	१०	
४८	५०८५	ऋग्वेदानुक्रमणिका विवृति		१८वीं श	१३	अपूर्ण
४९	४९९९	केनोपनिषत		१९वीं श	३	
५०	७५८४	कपाल्योपनिषत		१९वीं श	१	
५१	६१२९(२)	कौषीतक ब्राह्मण		१५४३	१३३	
५२	५४४३	गोपालतापिन्युपनिषत त्रिपाठ सटीक		१९०१	१६	लि क –अम्बालाल
५३	४६२८	चरणव्यूह व्याख्या		१७८०	५	लि क –पीताम्बर, कान्हाजीसुत
५४	५७००	,		१९२४	३	
५५	७८२	धनुर्वेदपरिच्छेद (वीरचिन्तामणिनामा)		१७९९	२९	लि क –हरिकृष्ण
५६	४२४५	नारायणोपनिषत		१८वीं श	१३	
५७	७७१०	,		१९वीं श	४	
५८	५०३०	निघण्टु		१८१२	२२	लि क शुभराम तुलाराम व्याससुत
५९	६७२४	,	पाणिनीय	१९वीं श	२९	
६०	५५७३	निरुक्तम		१७२४	९३	पत्र ८ व २८ से ४२ तक अप्राप्त
६१	५०३४	ब्राह्मण प्रथम पंचिका		१८वीं श	२३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५४८२	ब्राह्मण प्रथमपंचिका		१८वी श	४६	
६३	७७०४	,, ,,		,,	२२	
६४	५०३५	,, द्वितीयपचिका		,,	२८	
६५	५५६६	,, ,,		,,	६१	पत्र १, २, ५५ अप्राप्त
६६	५०३६	,, तृतीयपचिका		,,	३०	
६७	५४८३	,, ,,		,,	५५	
६८	५०३७	,, चतुर्थपचिका		,,	२४	
६९	५०३८	,, पचमपचिका		,,	३०	
७०	५०३९	,, षष्ठपचिका		,,	२३	
७१	५०४०	,, सप्तमपचिका		,,	२०	
७२	५०४१	,, अष्टमपचिका		,,	२०	
७३	६६४४	ब्राह्मणानि (तृतीयाध्यायपर्यन्त)		१८५४	५२	
७४	४१९४	मण्डल (श्रावणीकर्माङ्गभूत)		१९वी श	७	
७५	५१७६	मण्डल प्रकरण		१७९१	१०	
७६	४६३०	मण्डल व्याख्यान	सायणाचार्य	१७वी श.	६	लि.क –माधवाश्रम शकर
७७	५५७१	मन्त्रसहिता शान्तिसूक्तानि		१८वी श	१७१	पत्र २० से ९२ अप्राप्त
७८	५८२३	मन्त्रार्थदीपिका	शत्रुघ्नोपाध्याय	१८२५	१४२	आदिके दो पत्र नही है लि. क.–मित्रमणि
७९	७७१७	मन्युसूक्त		२०वी श	४	
८०	४६०८	मनोज्योतिमत्र		१९१३	२	
८१	४७००	माण्डूक्योपनिषत्		१९वी श	३	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८२	७६६३	माध्यन्दिनी सहिता		१८५६	४	
८३	४७०१	मुण्डकोपनिषत		१६वीं श	७	
८४	५५८०	रुद्रजाप्य (रुद्राष्टाध्यायी)		१७८८	३८	लि क –रामगोपाल दाधीच पत्र १, ५, ११, ३७ अप्राप्त
८५	४४७६	रुद्रांगभूतमंत्रन्यासादि		१६वीं श	८	
८,	७६६५	रुद्राध्याय		१८६६	१३	
८७	५७२८	वंश-ब्राह्मण		१६वीं श	११	
८८	४५७६	वाजसनयी निगमा	याज्ञवल्क्य		१५	
८६	४२०३	वाजसनय सहिता		१७६७	१६०	लि क –रावल वलभजी
६०	५००७	, ,		१८४८	१४६	लि क –वल्लभराम दुलभराम नागर विषमनगरा
६१	५२००	, „		१८वीं श	१५७	
६२	५८०३	,		१७८२	१८२	लि क –जयचद धनश्वरसुत
६३	४६३२	, पूर्वार्द्ध		१८७६	१७०	लि क –राधाकृष्ण स्थान अम्बावती
६४	५७०८	,		१८५२	१४८	
६५	४६३३	, उत्तरार्द्ध		१८७६	१०७	लि क –रामकृष्ण
६६	५७०६	,		१८७३	६३	
६७	५१६७	,		१८२८	१५३	लि क –रामवल्लभ
६८	६४६६	वाजसनयी सहितोपनिषदोना वास्यभाष्य सटिप्पण	मा –शंकराचार्य टि आनन्दगिरि	१८८६	६	
६६	७८३०	वदिक सहिता (पदसग्रह)		१५२५	१५५	लि क –हरिभाई सूपपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५०२९	शिक्षाज्योतिषछन्दासि		१७२७	२४	लि. क –अम्बिकेश्वर श्यामजी-शुक्लसुत, टोडावास्तव्य
१०१	५०३१	,, (शाकरीशिक्षा)		१७९७	१५	लि क –पुरुषोत्तम
१०२	७५०९	षडङ्गमन्त्रा (मन्त्रार्थदीपिकाख्या-टीकोपेता)	श्रीशत्रुघ्न	१९वी श	७५	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०३	५५७४	षष्ठाध्याय		१७२४	१०३	
१०४	४११६	सहिता		१८६७	१८०	लि क.–करणीदत्त पालीवाल
१०५	५५७७	,, (द्वितीयाष्टक)		१७५९	१०४	
१०६	५००१	सहितैकादशप्रकाश		१९वी श	१३	घन जटा, मण्डलादि
१०७	४९५६	सर्वानुक्रमणिकावृत्ति		१७९८	६१	लि. क.–दीनानाथ
१०८	४६४१	हव्यकाण्ड	ब्राह्मणोक्त	१६८७	२११	लि. क –मेदपाटज्ञातीय वासुदेव
१०९	७७७१	त्र्यृचाभाष्य		१९१७	२	
११०	७७७८	त्र्यृचाभाष्य		१९३७	२	

ग्रन्थसंख्या ७८३०

ऋग्वेदसंहिता

(सप्रपाठक वैदिक ग्रन्थोंमें प्राचीनतम ब्राह्मणलिपिमें संवत १५२५ में लिखित ग्रन्थ)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४४६	अग्निष्टोमपद्धति	देव याज्ञिक	१८६६	८५	कात्यायनसूत्रोक्त
२	४४५०	"	"	१८६५	८२	लि क –उमाशकर शुक्ल
३	४६१०	अनन्तव्रतविधि	भविष्योत्तरे	१८००	११	लि क –नन्दराम आचाय
४	४४५१	अध्वयुप्रयोग		१८००	५३	लि क –दुखभजन तिवाडी औदीच्य
५	४५५८	अधिदेवतादिस्थापनहोमविधि		१९वीं श	१३	
६	५३४६	अष्टमहादानप्रकरण		१९वीं श	३	
७	४६८८	आतुरसन्यासपद्धति	अगिरोक्त	१७७३	५	लि क –लीलाधर ठाकुर, कोटा
८	५१७५			१८वीं श	१४	
९	४६३६	आरामप्रतिष्ठाविधि		१५६८	२१	
१०	४०६४	आश्वलायनगृह्यपरिशिष्ट		१८वीं श	२६	
११	४६५०	आश्वलायनगृह्यसूत्रवृत्ति	नारायण	१८०३	१०७	
१२	४६५५		त्रविध्यवद्ध	१८००	६४	
१३	४६५४	" "		१७६६	१०७	
१४	५०३३	आश्वलायनश्रौतसूत्र		१७९५	५२	लि क –इच्छाराम व्यास
१५	४६१९(२)	आह्निकपद्धति	देवयाज्ञिक	१७६८	४२	लि क –यदुराम
१६	६६७४	एकोद्दिष्टश्राद्धविधि		१९०३	६	
१७	४६१३	ऋषिपञ्चमीव्रतविधि	भविष्यत्पुराणोक्त	१८वीं श	४	लि क –छेदालाल, पडित
१८	४६८३	कर्कभाष्य	कर्काचाय	१८०७	१९	लि क –सुखदेव गोलवाल सुरतवदरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४६२५	कर्मप्रदीप	गोभिलोक्त	१९वी श.	३३	१५वा पत्र अप्राप्त
२०	४९८७	,,		१५६९	३५	लि. क –कालुआ महन्त, महसाणा
२१	४९४९	कात्यायनश्रौतसूत्र		१७६३	६१	
२२	४४४८	कात्यायनसूत्रपद्धति	देव याज्ञिक	१८६४	१५९	
२३	५४९४	कात्यायनपद्धति (सौत्रामणी)	,,	१८वी श	२०	
२४	६३६८	कार्तिकोद्यापनविधि		१८२२	६	
२५	४९६५	कुण्डकल्पद्रुम	माधव	१८१०	१८	र का –१७१२ लि. क.–ऋषीश्वर शुक्ल
२६	५७४९	,,	,,	१९वी श.	१०	*
२७	४९६०	कुण्डतत्त्वप्रदीप	बलभद्रशुक्ल	१८वी श.	१५	*
२८	४९७८	कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)	रामचन्द्र नैमिषवासी	१८१७	३१	*
२९	५६१८	कुण्डप्रदीपक सटीक	महादेव राजगुरु	१९२९	८	
३०	४६३५	कुण्डमण्डपसिद्धि सवृत्तिक	विट्ठल दीक्षित	१९वी श.	४२	
३१	४५२७	,, विवृति	,,	१८वी श.	२५	लि क –रुद्रदत्त शुक्ल जम्बूसर
३२	५६४४	कुण्डरत्नटीका	विश्वनाथ श्रीपतिद्विवेदसुत	१९वी श.	८६	
३३	४१२८	कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)	मू शंकर भट्ट टी रघुवीर दीक्षित	१८९४	११	लि क –व्रजवासी सिल्लु.
३४	४९९७	कुशकण्डिका		१९वी श	६	
३५	४११५	क्रियापद्धति	विश्वनाथ	१८६०	१०६	
३६	४९५१	,,	,,	१८वी श	७५	जीर्ण प्रति

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	४६६३	क्रियापद्धति	देवयाज्ञिक प्रजापतिसुत	१७८२	२६	लि क –नन्दिकेश्वर
३८	५७४१	,	देवकीनन्दन जीवानन्दसुत	१६वीं श	११	
३६	५७२६	ग्रहजपदानविधि		१६१०	२१	लि क राधाकिशन मूडोता ग्राम
४०	४४८	ग्रहशान्ति	वृद्ध वशिष्ठ	१,वीं श	१२	
४१	४१८५	ग्रहशान्तिप्रकार (पद्धति)	योद्धराज	१६वीं श	८३	*पत्र ८ स १६ तक अप्राप्त
४२	४१२५	ग्रहशान्तिपद्धति		१८६३	२८	
४३	५७६५(१)	,,	हेरम्ब मिश्र	१६वीं श	१८२	
४४	५०४४	,		,	१६	
४५	४६१४	गयापद्धति	नारायणभट्ट रामेश्वरसुत	१७५१	१३	लि क –वामदेव
४६	५७१६		,	१८वीं श	२२	
४७	४६३६	गृह्यसूत्र		१६वीं श	३१	
४८	४६६१	गृह्यसूत्रपद्धति	वसुदेव दीक्षित	१८वीं श	६३	
४६	५७६५(२)	गोदानपद्धति		१६वीं श	८२ ८८	
५०	४१३०	घटतुलादान विधि		१८६३	३	लि क –व्रजवासीसिल्लु, काशी
५१	४५६०	जन्मदिवसकृत्यम		१८४०	४	लि थ –भट्टराजा यज्ञदत्त जयपुर
५२	४६३२	तर्पणविधि		१६वीं श	५	
५३	४६३४			१८६५	२	
५४	५६८१	तिलाविधनुदानविधि	विविधपुराणोक्तसंग्रह	१६वीं श	६	
५५	४६२७	तीर्थयात्राविधि	,,	,	१४	
५६	४६८०	तीर्थश्राद्धविधि	भट्टोजिदीक्षितकृतत्रिस्थलीसेतुगत	१८७६	२२	लि क –सदासुख शुक्ल
५७	५०५१	तुलादानविधि		,	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५४५१	तुलादानविधि		१९९०	६	
५९	६६८६	तुलापुरुषपद्धति		१९वी श.	८	लि क—माणिकराम भट्ट
६०	४११२	द्वादशलिंगीमण्डलदेवतापूजनविधि		१९वी श.	७	
६१	४९७५	दशकर्मपद्धति	गणपति रावल हरिशंकरसुत	१७१८	३६	रचना १७१६ लि क—भट्ट शंकरदत्तजी, जयपुर
६२	४१२०	दशरात्र		१९वी .	१०३	
६३	६५७३	दशहराकृत्य		.	४	
६४	६७१३	नवग्रहजाप्यविधि		१८३४	७	लि क.—हरगोविन्द दाधीच, सवाई जयपुर
६५	६७१४	नवग्रहन्यास		१८९३	७	
६६	४६३३	नवान्नेष्टि		१९वी श	४	
६७	४९४०	नागबलिप्रयोग		,,	२१	
६८	५८६९	नरदाहकर्त्तव्यता	आश्वलायनगृह्यसूत्रपरिशिष्ट	,	५	
६९	४९३९	नारायणबलि	शिवप्रसाद पुष्करवल्लीवास्तव्य	,,	१०	प्रयोगसारान्तर्गत
७०	४९८९	नीलोद्वाह पद्धति		१७९०	१९	जीर्णप्रति, लि क—नन्दिकेश्वर
७१	५००२	,,		१९वी श	१५	
७२	४१०६	प्रतिष्ठाकर्म		१८५२	४५	लि क—हरिप्रसाद शर्मा
७३	४१११	प्रतिष्ठामयूख	नीलकण्ठ शंकरभट्टात्मज	१८वी श.	३७	
७४	४९५७	,,	,,	१८८६	३०	लि क.—सम्पतराम शुक्ल,जयपुर
७५	४९९२	प्रयाणशान्ति		१८८८	९	राजादिजय प्रयाणविधि

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामादि	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	५५६१	प्रयोग	अनन्त भट्ट	१८४१	१६०	यज्ञोपवीतविधि पत्र २७ से ५६ व १५५ से १५७ तक अप्राप्त
७७	४०६३	प्रयोगदीपिका	मचनाचार्य	१९वीं श	९६	आश्वलायन सूत्रोक्त
७८	५५५४	प्रयोगरत्न	नारायण रामेश्वरभट्टात्मज	१८४२	२१४	लि क–काशीनाथ पुस्तकमिदं नारायणभट्टसूनोर्देवभट्टस्य ।
७९	५५७२	प्रयोगरत्नाकर	,	१९वीं श	११२	पत्र १, ३९ ४० ७५, ९४ व ९५ वां अप्राप्त ।
८०	६५९५	प्राणप्रतिष्ठाविधि		१८८१	२	लि क रामनारायण सामरथाग्राम
८१	६४११	प्रायश्चित्तधनुदानविधि		१९वीं श	८	अपूर्ण ।
८२	४६०४	प्रायश्चित्तप्रयोग		१८३९	२	लि क–करुणाकर जोशी
८३	४९७७	प्रासाददेवताप्रतिष्ठा		१८१३	२०	लि क–आशाराम व्यास, मालपुरा
८४	४९४२	प्रतवलि		१९वीं श	१६	
८५	४९८६	पशुबन्धप्रयोग		१७९४	६	लि क–ऋषीश्वर ।
८६	५३३१	पापघटदानविधि		१९वीं श	८	लि क–गोविन्द शर्मा
८७	४१७४	पार्थिवपूजा			९	
८८	६९८४	पार्थिवेश्वरचिन्तामणिपद्धति		१८७३	६	
८९	४११४	पार्थिवेश्वरपूजापद्धति	चन्द्रचूड	१९वीं श	७	
९०	४२१२	पार्वणश्राद्धविधि		,	११	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९१	६६७५	पार्वणश्राद्धविधि		१९०३	९	
९२	६७२७	पिण्डप्रमाण		१८०५	७	
९३	४२११	पितृकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग		१९वीं श.	८	
९४	७८११(४)	पुरुषसूक्त (षोडशोपचार)		१८वीं श	८१–८६	
९५	६५०९	ब्राह्मणसर्वस्व	हलायुध	१८०४	१९६	जीर्ण, खण्डित
९६	६६३३	भगवदाराधनप्रकार		१९वीं श	७	रामानुजसप्रदायानुसार
९७	४९४१	भूतबलि		,,	१५	
९८	४९९३	महालक्ष्मीव्रतोद्यापनविधि		,,	१३	
९९	४२१०	मातृकैकोद्दिष्टप्रयोग		,,	७	
१००	४६४९	मूर्तिप्रतिष्ठाविधि		१८१०	५	* लि. क –गिरिधारी
१०१	७६९७	यजमानपद्धति	गगाधर रामचद्रपाठकसुत	१७९४	१७	लि. क –इच्छाराम व्यास
१०२	४९६२	यजुर्गृह्यसूत्र	पारस्कर	१८५६	४८	लि. क –गोविन्दराम, आम्बेर
१०३	४९६६	,,	,,	१८वीं श	४०	
१०४	४९६९	,, (डोढकाण्ड)	,,	१७९८	२४	
१०५	७६०१	यजुर्विधान		१९वीं श	३५	
१०६	६४०८	यज्ञोपवीतविधि		१८वीं श.	११	अपूर्ण
१०७	४६४२	यात्राविधि		१९वीं श.	३	
१०८	५०६७	योगपट्टविधि		,,	१	सन्यासी छत्रधारणविधि
१०९	४१२१	योगिनीपूजनविधि		,,	१९	लि क –अम्बाशकर सामग
११०	६६०२	राधाकृष्णषोडशोपचारपूजा		,,	५	
१११	५८८८	रामोद्यापनपूजाविधि	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१९०८	११	

क्रमांङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामन्व	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११२	७८११(१)	रात्रिसध्याविधान आदि		१८वीं श	११८	
११३	४६६२	रुद्रपद्धति (रुद्राचनमजरी)	मालजी त्र्यगलाभट्टसुत	१७१४	५७	रचना १६६५, लि क –बालकृष्ण
११४	४६०७	रुद्राभिषेककम		१६१३	१४	यासाम्बुक्रम
११५	४६२०	रुद्राभिषेकपद्धति	महानन्द पाठक	१८१४	१८	
११६	६४२७	लघुकारिका	कर्काचार्य	१६४७	१८	लि क –जानकीलाल
११७	४६७६	व्यासपूजापद्धति		१६७६	१०	लि क –सदासुख शुक्ल, बीकानेर
११८	५७६५(३)	वर्द्धापनविधि		१६वीं श	८८–६६	
११९	७६६६	वास्तुशान्ति		,,	२६	
१२०	४६२४	विचाररत्नसमुच्चय		,,	२७	
१२१	४५१७	विनायकशान्ति		१८५८	६	
१२२	७१४६	विवाहचतुर्थीकम	गर्गोक्त	१६४३	१७+१३=३०	लि क –रामचन्द्र
१२३	४८८८	विवाहपद्धति		१७२५	६	लि क –सदाफूल
१२४	५७६५(४)			१६वीं श	६६–११७	
१२५	४५८२	विवाहविधि (यजुर्वेदीय)		१८६१	१५	लि क –रत्नेश्वर व्यास, जयपुर
१२६	७१४७			१६४३	२३	राजस्थानी में अर्थ सहित
१२७	४१८६	वेदोक्तस्नानादिकम		१६वीं श	२२	
१२८	४६४१	व्रतरण्यादिदान		१८४५	८	
१२९	४६६१	शमयन्त्रशान्ति		१६वीं श	५	
१३०	५३२०	श्राद्धप्रयोग	नारायणभट्ट	१८८५	८	लि क –चुन्नीलाल
१३१	५५६५	,,	नारायणभट्ट	१६वीं श	२५	प्रयोगरत्नाकरगत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	४५६५	श्राद्धपद्धति (यजुर्वेदीय)		१६वी श	२५	
१३३	४६१५	,,		१७६७	७	लि क–शकरदत्त
१३४	५५१५	,, (सावत्सरिक)		१६वी श	१६	
१३५	५७२६	,,		१६१५	७	
१३६	५०५५	श्राद्धविधि		१८२७	३१	लि. स्था–सवाई जयपुर
१३७	७२६५	श्राद्धविधिवृत्ति (कौमुदी)	रत्नेश्वरसूरि	१६वी श	१२५	
१३८	५२५२	श्राद्धविवेक	रुद्रधर	१६वीं श.	५१	२० वा पत्र अप्राप्त
१३९	४१८८	श्रावणीविधि (ऋषिपूजन)		१६वी श	६१	
१४०	४२२१	,,		१८७२	२१	लि क–केसोराम, नगर बोली
१४१	७६६१	श्रौताधानपद्धति	गणपति रावल	१६वीं श.	३३	
१४२	५६३७	शान्तिकर्म	कमलाकर रामकृष्णसुत, नारायणपौत्र	,,	१५८	
१४३	४१२३	शान्तिपद्धति	दुर्गाशकर शुक्ल	१८वीं श	७०	
१४४	४८७२	शातिविधान (पल्लीसरटपतन)	गर्गोक्त	१८४४	३	लि क–रेवादत्त
१४५	५१७०	शान्तिभाष्य	वशिष्ठोक्त	१८०६	६	लि. क–केवलजी, जयपुर, माधवसिंह राज्ये
१४६	५५६४	शान्तिविधि	,,	१८वीं श	६८	३७ वां पत्र अप्राप्त।
१४७	४६५२	शुल्वसूत्र	कात्यायन	१६वी श.	५	
१४८	४५६६	षट्पिण्डकर्म		,,	७	
१४९	५००८	षष्ठीपूजा		१८७०	११	लि. क–उमाशकर
१५०	७६१३	षोडशोपचारपूजा		१८४६	६	लि क–रणछोडदास, गढ-वदनोर।

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४२०८	स्त्रीकृत कश्राद्धप्रयोग		१६१७	५	लि क—नारायण शर्मा
१५२	४१६५	स्वस्तिवाचन	दानखण्डोक्त	१६वीं श	१३	
१५३	५७१६	"		१७८६	१०	
१५४	६६८१		यजुर्वेदीय	१६वीं श	६	
१५५	६६६२		,	१८६२	८	
१५६	५२५५	सध्या (यजर्वेदीया)		१६वीं श	११	
१५७	५६६५	सध्या टीका		१८६६	१५	लि क—मुरलीधर गरण
१५८	६६००	सध्यापद्धति (सामवेदीया)		१६वीं श	५	
१५९	६५७२	सध्याभाष्य	नारायणमुनि शठकोपमुनि	१६वीं ग	६	
१६०	७७७५	सध्यामत्रव्याख्या	भट्टोजिदीक्षित	१६४२	१६	लि क—मगनराज जोशी
१६१	७६६५	सध्या सटीका (यजुर्वेदीया)		१६०१	४	
१६२	४५८१	सन्यासपद्धति		१६०८	४	लि क—रघनाथाश्रम काशी
१६३	६६४८	सपिण्डीकरणविधि		१६वीं ग	४०	लि क—वसुदेवराम मथुरा
१६४	५७४०	सर्वतोभद्रमण्डलपूजाविधि		,	४	
१६५	५७६५(५)	सर्वदेवतास्थापनपूजाविधि		,	११७—१३१	
१६६	४५६४	सिद्धिविनायकव्रतपद्धति		,	४	
१६७	४६८५	सूयव्रतविधि		१८१२	४	लि क—सदाशिव शुक्ल
१६८	४६३८	हरतालिकाव्रतविधि		१७२८	७	लि क—म सुर
१६९	५१८२	हेमाद्रिप्रयोग		१८वीं ग	१२	
१७०	४७०७	हेमाद्रिविधि (स्नान सकल्प)		१८४४	८	
१७१	४५६८	ऋचाकल्प (अर्घ्यदान)	हसवतीविधानोक्त	१६वीं श	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७२	७७८८	त्र्यृचाविधानम्		१९वीं श	७	अपूर्ण
१७३	७७७४	त्र्यम्बकमत्रविधि		१८९३	१९	लि क –बालमुकुन्द व्यास
१७४	५०५८	त्रिकालसध्या (सामवेदीया)		१९२३	१३	
१७५	५७६१	,, (यजुर्वेदीया)		१९२५	१२	
१७६	६४२४	,,		१८२५	८	लि क –चैनराम मिश्र, भरतपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५७८१	अमरनाथपटल	भृङ्गीशसहितान्तर्गत	१९वीं श	२६	एकादशपटलात, अमरनाथको यात्राका फल
२	५२२७	अष्टादशाक्षरमहामंत्रपद्धति		१८वीं श	१७	गोपालमत्रपरक
३	५७८३	उच्छिष्टगणपतिचतुरङ्ग	रुद्रयामलप्रोक्त	१९वीं श	१५	आदि में गणपतिमत्र है ।
४	४१५०	उड्डीशकल्प		१९२७	६४	लि क –रामनारायणमिश्र लि स्था –बयाना
५	५७९३	उद्धारकोश	सकलागमसारोक्त	१९वीं श	२४	
६	५८२०			,	२	
७	४४५२(५७)	औषधिकल्प (चक्र)		१८वीं श	११४–११६	
८	५७६७	कक्षपटी	सिद्धनागार्जुन	१८७७	५०	लि क –कृपाराम
९	५६५०	कामकलाङ्गनाविलास	पुण्यानन्दमुनीन्द्र	१९१६	३३	
१०	५७९९	कार्त्तवीर्यदीपकमरहस्य	उड्डामरतन्त्रोक्त	१६५१	५	लि क –गदाधर दवज्ञ, लि स्था –वाराणसी
११	६६६२	कार्त्तवीर्यनित्यदीपविधि		१९०३	५	
१२	५२२८	कालाग्निरुद्रपटलोपनिषत		१८५०	७	लि स्था –पुष्कर
१३	६७५१	कालाग्निरुद्रोपनिषत	नन्दिकेश्वरपुराणोक्त	१९०६	१०	लि क –रामदास
१४	५६१७	कुलाचन्द्रदीपिका	जगदानन्द महामहोपाध्याय	१९वीं श	२४	
१५	५६२३	कुलार्णवतन्त्र		,	७८	
१६	५७६२	,		,	८७	
१७	४३२६	कृष्णचरित	सम्मोहनतन्त्रगत	१७६२	१६	*
१८	४८८६	कौतुकचिंतामणि	प्रतापरुद्रदेव	१८०९	६८	लि क –आशाराम ज्ञानी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	६९३५	कौलरहस्य (शतक)	तरुणीवीरेंद्र नरोत्तमारण्यमुनीद्र-शिष्य	१८८९	१०	लि क –रामसुख, जयपुर
२०	७६९०	गणेशपूजा		१८८१	४	लि क –शिवनाथव्यास, जयनगर
२१	६७३२	गणपत्युपनिषत्		२०वीं श	३	
२२	६३४८	गायत्रीपद्धति		१८८७	३५	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३	६७७३	गायत्रीपचांग	रुद्रयामलोक्त	१९०७	२०	लि क –रामदास कबीरपंथी
२४	६२४७	गधोत्तमानिर्णय	गुरुसेवक (श्रीकाल)	१८वीं श	२२	* रचना–१७०२
२५	५७१०	गुरुकीलकपटल	(गुप्तवतीरहस्यतन्त्रोक्त)	१९वीं श	२	
२६	७८११(२)	गौरीकल्प		१८वीं श.		
२७	५१९८	घटाकर्णकल्प		१९वीं श.	२०	आपदुद्धारणमन्त्रयुक्त, अपूर्ण
२८	५७०२	चण्डिकार्चनदीपिका	काशीनाथभट्ट जयरामसुत वाराणसीगर्भसंभव	१८९६	२३	लि. क –सजवासी ज्योतिर्वित् लि स्था.–काशी
२९	५८१४	चडीप्रयोगविधि	नागोजीभट्ट	१९००	२७	लि. क.–दामोदरदास, सिउरपुर गामवासी
३०	५८८६	चडीपाठप्रयोगविधि		१९वीं श.	२३	
३१	७५०६	चडीस्तोत्रव्याख्या	नागोजीभट्ट	१८११	६१	
३२	४८९७	तन्त्रलीलावती	कर्णसिंह	१८वीं श	१९	* तृतीयपटलात
३३	७७११	तारस्थहृदय (स्वोपज्ञटीकोपेत)	काशीनाथभट्ट अनन्तशिष्य नागपुरवास्तव्य जयरामसुत	"	१८	* लि क –बालमुकुंद
३४	७६०८	तुम्बादिबीजमन्त्र		१९वीं श.	१	लि. क –केशवदास

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	५७२२	तुरीयोपस्थानविधि		१९१५	५	लि क –घनश्याम ब्राह्मण लि स्था –राजपुर मेवाड
३६	५१२६	नवाणन्यासविधि		१९वीं श	२	
३७	४६००	नित्ययात्रा (षोडशयात्रा)		,,	६	
३८	४६२६		काशीखण्डोक्त	१८४७	१४	
३९	५७९५(२)	नित्यापारायण	बुद्धिराज	१९वीं श	१–२०	
४०	५५१६	नृसिंहमालामन्त्र			२०	
४१	७६४४	प्रत्यंगिरासूक्तमन्त्र		१९१२	१६	लि क –ब्रजवासी सिल्लू लि स्था –अलवर
४२	४४५२(८९)	प्रभातगायत्री तथा त्रिकाल ब्रह्म गायत्री		१८वीं श	१२८वाँ	
४३	५१२३(५)	पञ्चदशीयन्त्रविधान		,,	२७–२८	
४४	७७०८	परशुरामकल्पसूत्र		१८वीं श	४८	* आदिके ११ पत्र कीटविद्ध।
४५	५७५७	पात्रस्थापनविधि		१९वीं श	६	
४६	५६५४	पुरश्चर्यार्णव	प्रतापशाहदेव	,,	२४	प्रथम तरङ्ग
४७	५६५५	,,	,,		२५२	द्वितीयसे नवमतरङ्गपर्यन्त
४८	५६५६			,,	११७	दशमकादशद्वादशतरङ्ग रचना सं० १८३१
४९	५६६१	पुरश्चरणचन्द्रिका	देवेन्द्राश्रम	,,	११२	
५०	५६३८	पूजारत्न	सत्यानन्द	१९२८	२१२	
५१	५७९५(१)		,,	१९वीं श	१–६	प्रथम मयूख

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेप उल्लेखनीय
५२	५१९५	पूर्णाभिषेक षडाम्नाय मत्रादि		१८वी श.	स्फुट पत्र	इन पत्रोमे नृसिहसुन्दरी महामत्र, दशमहाविद्या, दशावतार दश-श्लोक, शिवाबलि विधि नाभि-विद्योद्धार और तन्त्रोक्त अपूर्ण-हवनपद्धति लिखी हुई हे।
५३	६८७८	ब्रह्मकल्प (कायाकल्प)		१९वी श.	६	
५४	५००४	वटुकभैरवपद्धति	मत्रचितामणिप्रोक्त	१९वी श.	२३	
५५	४१३५	वटुकभैरवपूजापद्धति	विश्वसारोद्धारतत्रावत	१९वी श.	२७	
५६	६७६०	बालास्तोत्रादि		१७२८	१६–२४	बालास्तोत्र, ईश्वरीस्तुतिपूजा, भारतीस्तोत्र, अन्नपूर्णास्तोत्र, श्रीवार्तिकसस्कृतपार्श्वनाथ स्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र।
५७	७०५६	भुवनेश्वरीपद्धति (पञ्चाङ्ग)	रुद्रयामलतत्रातर्गत	१८वी श	६९	पत्र ९ से १५ अप्राप्त
५८	५४२९	भूत-भूतिनीसाधनविधि	भूतडामरतत्रोक्त	१९वी श.	७४	प्रथमपत्र खडित।
५९	६४१६	भूतशुद्धि		,,	११	
६०	७००३	,,		,,	७	लि क–भट्ट दयादत्तशर्मा
६१	४१८१	भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा मातृकान्यास		,,	२०	
६२	५००५	भैरवपुरश्चरणविधि	शिवागमसारोक्त	,,	६	लि क–रामचद्र शुक्ल
६३	६४४६(१)	भौमपूजाप्रकार		,,	३९–४०	
६४	६७२३	मगलव्रतपूजाविधि		१९१७	६	लि क–विद्याधर
६५	४४४४	मत्रमहोदधि	महोधर	१८०३	१४९	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	५७४८	मन्त्रमहोदधि	महीधर	१८वीं श	८२	रचना स० १६४५
६७	५७४४		,	१६वीं श	७४	नौकाटीकासहित
६८	६६५६	,	,,	१८७६	२११	लि क –शिवदत्त गवल सनाढय माधोपुर काशी
६६	४८५८	मन्त्रसिद्धिलक्षण	गौतमतन्त्रोक्त	१६वीं श	३	
७०	५०४६	महागणपतिविधान (पञ्चाङ्ग)	रुद्रयामलोक्त	,,	३२	
७१	६२६२	महानिर्वाणतन्त्र (पूर्वकाण्ड)		१६४२	१४६	
७२	५८३२	महाविद्या		१८वीं श	५५	४१वां पत्र अप्राप्त
७३	४२६६	महाविद्यादशश्लोकीविवरण		१४६१(?)	४	*लि स्था –सिरोही लि स –१८६१ प्रतीत होता है।
७४	५३३६	महाविद्यापारायणविधि		१६००	२७	
७५	५०००	मातृकानिघण्टु	नसिंह	१६वीं श	६	
७६	५६११	मानसोल्लास सटीक	टी रामतीर्थ	१६१६	७७	
७७	६४१३	मायाबीजकल्प (ह्रींकारकल्प)		१६७५	३	लि क –भक्तिसुदर लि स्था –विक्रमपुर
७८	५७८०	मार्तण्डमाहात्म्य	भ गौरीसहितान्तर्गत	१६वीं श	१५	
७६	४११८	रामपद्धति (वदोक्ता)	श्रीरामानुज	१८६७	८	* लि क –विप्र जयराम
८०	४२३६		,,	१८वीं श	२६	
८१	४२५५		,	,	३	
८२	५८७८	,	लक्ष्मीनिवास नसिंहाश्रमशिष्य	१७७१	१८	लि क –पुरुषोत्तमदास वैष्णव लि स्था —गलता जयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६७४२	रामपूजापद्धति	श्रीरामोपाध्याय	१६५६	१६१	* पत्र १६०वा अप्राप्त
८४	६८०४	"	लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य	१७६४	२६	
८५	४११७	राममत्रपटल		१६वीं श.	७	
८६	७७१६	राममत्रविधिपटल		,	१७	लि.क.–वैष्णव रामप्रसाद वैष्णव
८७	४१६६	राममत्रविधिपद्धतिपटल		"	१५	लि क –अमरदास, खेतडी
८८	५७६२	रामार्चनदर्पण (त्रिपुरसुदरीपूजादिविधान)		१६१०	१२२	
८९	४१६७	लक्ष्मीपञ्चाङ्ग	ईश्वरतत्रोक्त	१८२४	३१	लि क –भवानीदत्त
९०	७०५४	ललितोपाख्यान	ब्रह्माण्ड पुराणोक्त	१८वीं श	४२	अपूर्ण
९१	५१२६	वरदगणेशपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलान्तर्गत	१६वीं श	२६	
९२	४४५२(५६)	वश्ययत्रादि		१८वी श.	११४वा	
९३	५२३६	वसुधारा (आर्यवसुधारा)	बौद्धकल्प	१६वीं श	७	*
९४	५२२५	वसुधारानाम धारणीकल्प	बौद्धकल्प	१८६६	६	*
९५	५८०९	श्यामापद्धति		१६वीं श.	८	अन्तमे भैरवतन्त्रोक्त जगन्मगल कवच भी हे।
९६	५६२७	श्यामार्चनमंजरी	लालभट्ट अनारगिरिशिष्य	१६१६	६३	
९७	५६०५	श्यामारहस्य	पूर्णानन्दगिरि	१८वी श.	१०४	
९८	६२२१	"	"	"	२२	पत्र २० से २२की लिखावट अर्वाचीन प्रतीत होती हैं।
९९	५५६२	"	"	"	६९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५८०५	श्रीचक्रार्चनविधि	पद्मोधरमिश्र शाण्डिल्यगोत्रज जगन्नाथसुत हरपुरनिवासी	१९वीं श	६	परशुरामकल्पसूत्रानुसार
१०१	५७५४	श्रीविद्यापटल	दक्षिणामूर्तिसंहितोक्त	१९वीं श	१५	
१०२	७५०२	श्रीविद्यार्चनपद्धति		,,	४७	मन्त्रमहोदध्यनुसारिणी
१०३	५४६८	श्रीविद्यार्चनसंक्षेपपद्धति	मन्त्रमहोदध्युक्त	,,	३७	
१०४	५७९८	श्रीविद्यामालामन्त्र	ललितापरिशिष्टतन्त्रोक्त	,,	१०	
१०५	५६६५	श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका	विद्यारण्य	,,	४४	
१०६	४६५८	शतचण्डीविधान		१८९९	५२	लि क–सदाशिव शुक्ल
१०७	४९९८	,, ,,		१९वीं श	११	भट्टविश्वनाथस्य पुस्तकम्
१०८	७१२९	शतचंडी-सहस्रचंडी प्रयोगपद्धति		,,	५२	(अपूर्ण)
१०९	५६४१	शरभार्चापारिजात	रामकृष्णवत्स नीलकण्ठवंशीय प्रापदेवसुत भवानीगभज	१९२६	१२२	
११०	५६९७	शिवताण्डवतन्त्र	दक्षिणामूर्तिप्रोक्त	१९११	६४	लि क–जीवणराम द्वादशपटलसचतुर्दशपटलान्त
१११	६४४४	,, ,,	,,	१९वीं श	२५	
११२	६४९६	,, ,, (सटीक)	टी० नीलकण्ठ गोविंदसूरिसूनु	१८४०	४२	लि क–गंगाधर
११३	४४९९	नित्यषडक्षरीन्यासविधि		१९वीं श	६	*
११४	६७३३	नित्यान्यकल्प		,,	१७	
११५	७७४१(२)	स्फुटमन्त्र		१७वीं श	१२ १३	
११६	५००६	सर्वदेवप्रतिष्ठाविधि		१८६१	१५४	लि क सदाशिव शुक्ल।
११७	५५८५	सांख्यायनतन्त्र		१९वीं श	५१	पञ्चत्रिंशत्पटलात्मक।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११८	७७७३	सिद्धसिद्धान्तपद्धति	गोरक्षनाथ	,,	२६	
११९	४२०५	सिद्धसिद्धान्तसिंधु	गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट	१८२५	६०२	*रचना सं० १७३१ लि स्था जयपुर
१२०	७६६२	सुमुखीविधान	रुद्रयामलोक्त	१७३४	३	लि. क गगापुरी लि स्था मागलोर ग्राम हाडौती प्रदेश
१२१	५६५८	सौभाग्यरत्नाकर	श्रीविद्यानन्दनाथ (श्रीनिवास-भट्ट गोस्वामी)	१६२७	२७२	
१२२	६३७१	हनुमत्पताकासिद्धि		१८वीं श	४६	
१२३	५१३८	त्रिकूटारहस्य	रुद्रयामलोक्त	२०वीं श.	६	अपूर्ण
१२४	६१२१	,,	रुद्रयामलगत	१७५०	५६	प्रथमपत्र अप्राप्त लि क सुगराम
१२५	५७७७	त्रिपुरार्चनमजरी	भट्टगदाधर(नानानन्दापर नामधेय विमर्शशिष्य शिवशंकरसुत अम्बागर्भसभूत)	१६१६	१	प्रतिके कोण खण्डित है
१२६	५८१२	,,	,,	१६वीं श.	२६४	
१२७	५६५६	त्रिपुरारहस्य		१६वीं श	१०६	
१२८	५६००	त्रिपुरासारसमुच्चय	नागभट्ट	,,	५१	
१२९	५८०६	त्रिशतीनामार्थप्रकाशिका	शंकराचार्य	१६३४	८६	लि. क. नानूराम ब्राह्मण लि स्था. जयपुर
१३०	५८२६	ज्ञानार्णवतंत्र		१६वीं श.	११६	८१वा पत्र अप्राप्त
१३१	६६५६	,,		१६वीं श.	८६	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४३७८	अत्रिस्मृति	स्कन्दपुराणोक्त	१९वीं श	११	
२	४५३४			१८४०	४	
३	४९२७	अथर्वणातिप्रयोग		१८९३	७३	लि क देवकृष्ण दाधीच लि स्था जयनगरमध्ये सीतारामजीका मन्दिर
४	४५८६	आचारदीप	नागदेव उपाध्याय	१८वीं श	६५	
५	४६१६	,	,	,,	८८	ज्योतिर्वित्केवलरामजीकस्य पुस्तकमिदम्
६	४६४३	,	,,	१९वीं श	६३	पत्र ५८ ५९ अप्राप्त
७	६५५९	आचारप्रदीप	,,	१९१५	४०	लि क रामनारायण मिश्र दाधीच
८	५२२९	आचारप्रदीप	कमलाकर कूपरग्रामवासी	१७६०	६२	पत्र १ से ३ तथा ५४, ५५वें अप्राप्त। लि क किशोरदास लि स्था सागवाटकपुर
९	४३८२	आचारमयूख	नीलकण्ठभट्ट शंकरसुत	१८वीं श	८४	७४वा पत्र अप्राप्त
१०	६५१३		,	१८३८	७२	
११	४५२९	आग्नीवत्रिंशच्छ्लोकी		१९वीं श	५	
१२	५२५८			,	२३	
१३	४५३०	आग्नीधनिर्णय		१९७०	६	लि क शीवजी केशवसुत
१४	४५३१	, वृत्ति	श्री भट्टाचार्य ?	१८वीं श	१६	त्रिंशच्छ्लोकी व्याख्या

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	४११३	आशौचदशक सभाष्य	मू विज्ञानेश्वर, टी. हरिहर	१८४२	११	*
१६	७७९१	,, ,,		१९वीं श.	१०	
१७	४६०२	आशौचसग्रह सटीक (त्रिशच्छ्लोकी भाष्य)	टी भट्टाचार्य	१९वीं श	३७	
१८	४६०३	,,		,,	६	शिवनदनजोलिखापित, जयपुर
१९	६२२८	,,		१८६९	१६	
२०	५२२०	उत्सवप्रतान	पुरुषोत्तम	१८वीं श.	३८	लि क. मोरेश्वर
२१	४५५९	कालनिर्णयदीपिका	श्रीरामचन्द्राचार्य गोपालगुरुशिष्य	१८१३	२०	लि क दयाराम, जयनगर
२२	४९७१	,,	,,	१८११	३०	लि क गोविंदराम महाशकर टोडा मध्ये
२३	६९९५	कालनिर्णयप्रकाश	रामचन्द्रभट्ट विट्ठलभट्टसुनु बालकृष्णभट्टपौत्र	१८६१	१४१	लि क. अनिरुद्र प्रश्नोरा, प्रति अपूर्ण।
२४	४३५१	कालनिर्णयसिद्धात सटीक	मू रघुराम, टी महादेव	१७४०	१४७	*पत्र ४७, ८१ से ८४तक अप्राप्त लि क हरिराम हलवद्रवासी रचना स. १७०९, १० स्थान भुजपुर। ५८वा पत्र अप्राप्त।
२५	६२४९	कृत्यरत्नावली	रामचन्द्रभट्ट, विठ्ठलभट्टसुनु	१८वीं श.	६२	
२६	६३८०	गोदानविधि		,,	१६	
२७	६५८७	चैत्रशुक्लप्रतिपन्निर्णय	जयसिहकल्पद्रुमान्तर्गत	१९वीं श	८	लि. क गोपीनाथ।
२८	६९२४	जयसिहकल्पद्रुम	रत्नाकर पुण्डरीक	१८वीं श	७५५	

॥तिथि प॥

॥संवत् १७३२ वर्षे भाद्रपद सुदि २ गुरुवासरे ॥ श्रीरामायनमः ॥ श्रीगोवि
दायनमः ॥ श्रीरामोजयति ॥ [illegible] ॥ गणेशाय नमः ॥ गंगायैनमः ॥
[illegible] दधिस्नाने क्षौरकर्मणि मैथुने ॥ जाते च मरणे चैव [illegible] तत्कालव्यापिनी तिथिः ॥१॥ मन्वादौ
च युगादौ च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ व्यतीपाते च धृतौ न तत्कालव्यापिनी तिथि ॥२॥ [illegible]
संक्रान्तौ विवाहाद्युत्सवादिषु ॥ स्नानदानादिकं कुर्यान्निशि काम्यव्रतेषु च ॥३॥
दीपासवक्रतो [illegible] दुर्गाविश्रावणी ॥ एकादशी [illegible] सूतके सदा ॥४॥ [illegible]
मध्यग [illegible] विवाहे यज्ञमंडपे ॥ [illegible] सूतकं न विधीयते ॥५॥ विवाहे [illegible]
तबंधे च चूडोपकरणे तथा ॥ दुर्गाहोमसुते जाते अग्निवर्के न दूषति ॥६॥
॥ निबंधे ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥२॥ निबंधे

॥३७॥

२४५

॥राम॥

३७॥

ग्रन्थसंख्या ७६१४

तिथिनिर्णय

(मिश्र ग्र (ओरछा, जयपुर बीकानेर) दीक्षागुरु गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट रचित। रचयिता के जीवनकाल में संवत १७३२ मे लिखित प्रति)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	६९९३	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर पुण्डरीक	१९वीं श	४४१	अपूर्ण त्रुटित
३०	६६५८	जातिविवेक	विश्वम्भरीयवास्तु शास्त्रान्तगत	१९०२	२०	विविध वर्णसंकर जातियोंका वर्णन
३१	७०४१	जीवत्पितृक कर्तव्यनिर्णय	रामकृष्णभट्ट नारायणसूनु रामेश्वर पौत्र	१७४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२	४१२९	तिथिनिर्णय (तिथि दीधिति)	अनन्तदेव	१७५७	४८	*स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३३	४६१८(१)	,	भट्टोजी दीक्षित	१८वीं श	२७	
३४	४६०१	,	गंगाराम भट्ट	१८३४	१२	लि क वीरदेव सवत्र (त) नेपाले ८३४
३५	७५९५	,	शिवानन्द भट्ट	१७३२	३७	कर्ताके जीवनकालमें लिखित प्रति ज्ञात होती है
३६	४५३८	दत्तकदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श	१४	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३७	४६२९	दानचन्द्रिका		१८९८	६८	लि क सदासुख शुक्ल
३८	७५९५	दानधर्म प्रकरण	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१९वीं श	३०१	आद्य १५ पत्र अप्राप्त
३९	४६४७	, खण्ड	हेमाद्रि	१७६६	३३९	चतुर्वर्गचिंतामणिगत लि क भगवतीदास
४०	४६८४	दानवाक्यसमुच्चय	पुरुषोत्तम	१६१९	७	*लि क वामनशुक्ल
४१	४५४०	देवालयगृहादिवास्तुदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श	४२	
४२	५११३	धर्मप्रवृत्ति	रामेश्वरभट्ट सूनु श्रीनारायणभट्ट	१८७९	१७८	लि क वैष्णव रामप्रसाद तक्षकपुर
४३	४६०५	ध्यानतपद्धति (द्वादश्यादिव्रत निर्णय)		१९वीं श	९	*

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	६६५७	निर्णयसिन्धु	कमलाकरभट्ट	१८८२	३५०	लि क हरिदास वैष्णव, जयपुर
४५	४५५३	निर्णयामृत	गोपीनारायणश्रीसूर्यसेन महीमहेन्द्र	१५३५	२३०	लि. क. पाठक वानरसुत पाठक परमात्मा
४६	४५८३	,,	वल्लालदेव	१६७०	१८०	(अपूर्ण)
४७	५१६४	नीतिमयूख	नीलकठभट्ट शङ्करसूनु	१८वी श.	५०	
४८	५७०९	प्रायश्चित्तकदम्बनिर्णय	गोपाल न्यायपचानन भट्टाचार्य	१९०७	५३	
४९	४१८४	प्रायश्चित्तमयूख	नीलकठ	१९वी श.	१०९	* पत्र ७,६१,६२,७० से ७३ तथा अन्त्य पत्र अप्राप्त
५०	६४५४	पाराशरस्मृति सविवृतिक	विवृतिकार माधव	१५वी श.	१५६	६६वाँ पत्र अप्राप्त
५१	४६२६	,,	,,	१८३३	५०८	लि.क –रामनारायण मिश्र शाकभरीवासी
५२	७७७९	,,	,,	१७७१	१८६	
५३	४५६३	,,	,,	१७वी श.	१६०	अपूर्ण
५४	४४४६	मदनपारिजात	भट्ट विश्वेश्वर कौशिक (?)	१७८९	३८४	*लि क.–वीरेश्वर शुक्ल
५५	६५७५	मलमासनिर्णयादि		१९वी श.	९	
५६	६००८	महादानपद्धति.	रूपनारायण	१५७२	१४०	प्रथम पत्र अप्राप्त
५७	४९९०	महाव्रत		१८वीं श.	१२	लि. क –ऋषीश्वर
५८	६१२९(१)	महाव्रतकथा		१५४३	१३	जीर्ण, फटी हुई
५९	४४४४	महाव्रतभाष्य	गोविन्दपण्डित	१७४१	३४	*
६०	४९८२	महाशान्ति	नीलकठ	१८९६	६	लि क –सदासुख

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	६६८५	माधवीयकालनिर्णयकारिका	माधव	१८वीं श	१२	
६२	४५१६	मानवधर्मशास्त्रसंहिता	भृगुप्रोक्त	१८वीं श	१३१	*
६३	४५३७	यमप्रणीतधर्मशास्त्र		१८वीं श	४	
६४	४३८३	याज्ञवल्क्यस्मृतिटीका (मिताक्षरा प्रथमाध्याय)	विज्ञानेश्वर श्रीपद्मनाभ भट्टोपाध्यायात्मज	१५७८	६२	१ से ६ पत्र अप्राप्त
६५	४३८४	, द्वितीयाध्याय	,	,	१६३	४४ से ५४ पत्र अप्राप्त
६६	४६४५		,	१८वीं श	४०	
६७	४३८५	, ततीयाध्याय	,	१८वीं श	१४१	
६८	५१६३	,	,	१८११	१४३	आदितस्ततीयाध्यायान्त
६९	६४५१	प्रथमाध्याय	,	१७वीं श	७५	
७०	६४५२	द्वितीयाध्याय	,,		१३२	'शुक्लविश्वेश्वरस्येदंपुस्तकम्'
७१	६४५३	ततीयाध्याय	,	,	१७९	,, १५०वां पत्र अप्राप्त
७२	६५४६		,	१८६६	८८	लि क –वकुण्ठनाथ व्यवहार खण्ड मात्र
७३	४६१६	मूल		१७८२	४७	लि क उद्धवजी नागोर
७४	४५४१	रजोदर्शनजातकशान्तिदीधिति	अनन्तदेव	१९वीं श	९७	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत प्रथम पत्र तथा प ९७ से आगे पत्र अप्राप्त, अपूर्ण प्रति
७५	४९३८	रजोदर्शनशान्ति		१८९५	७	लि क सदासुखशुक्ल जयपुर
७६	४३५०	रत्नसंग्रह	गोविन्दपण्डित	१७१२	५०	*

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७	६५०७	लघुपाराशरस्मृति	पराशरमुनि	१८वीं श.	३३	
७८	४५४२	व्याससमृति		१८वी श	५	तृतीयाध्यायपर्यन्त
७९	६६१५	,, ,, गृहस्थाह्निकम्		,,	११	
८०	४९२६	व्रतार्क	शङ्कर नीलकण्ठ (तनय)	१८९२	५८३	लि क गङ्गाराम। लि स्था जयपुर। पत्र ५२ व ३८९से ३९४ तक अप्राप्त। प्रति मे दो तरहके पत्र हैं। ५१४ से ५७० तकके पत्र दूसरी प्रकारके व छोटे है तथा इनमे पत्र स. १७० तक स्वतन्त्र सख्या भी लगी है।
८१	५८२१	वार्षिककृत्य		१९वी श	५५२	पत्र ४७, ४८, १८६ व २२०से २२३ तक अप्राप्त
८२	४५८४	विश्वादर्श	कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य-सुत	१६७५	२०	११वा पत्र अप्राप्त
८३	६७१९	विश्वेश्वरस्मृति	कैवल्येन्द्र सरस्वतीशिष्य	१८वी श	७	
८४	४५३६	वृद्धशातातपधर्मशास्त्र		१८वी श.	३	
८५	६६१५	वैष्णवचर्चा		१९वी श	४	
८६	६१६७	वैष्णवधर्मतत्त्वचिन्तामणि	श्रीनिवासाचार्य	१८वीं श.	४	
८७	६२६६	वैष्णवोपयोगीनिर्णय		१९०५	२०	रामार्चनचद्रिकादिके आधार पर सगृहीत
८८	४५३३	शङ्खस्मृति (शाखशास्त्र)	शखप्रोक्त	१८४१	११	*

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८६	४४४७	गाखायनसूत्रभाष्य	वरदत्तसुत ?	१६०६	१५४	*
६०	४६४८	शान्तिमयूख	नीलकंठ	१७७६	१५८	कीटविद्ध । ठाकुर नाथूरामस्य पुस्तकम्' ।
६१	६०७५		'	१८७७	८७	पत्र ४६ से ५० व ८१वा अप्राप्त
६२	४६३१	गातिसार	दिनकरभट्ट रामकृष्णात्मज	१८८७	६१	लि क सदासुखशुक्ल, जयनगर
६३	४३८०			१६वीं श	१२३	
६४	५००३	शिवरात्रिपूजनविधि		१६वीं श	१५	जयसिंहकल्पद्रमोक्त
६५	५१४२	शुद्धिविवेक	रुद्रधरलक्ष्मीधरात्मज हल धरानुज	१७६६	१४	लि क रामभक्त सारस्वत
६६	४६३४	शूद्रधर्मकमलाकर	भट्ट कमलाकर	१८६०	६५	लि क सदासुखशुक्ल, जयपुर
६७	५५७८	स्मार्तनिष्कृतिपद्धति	दिवाकर भट्ट	१७०६शक	७१	पत्र ६ से १५, २३ २४ तथा ५२ से ६२ तथा ८७वा पत्र अप्राप्त लि क सखारामभट्ट उल्लप नामक भाई भट्ट सूनु
६८	४६६८	स्मत्याह्निक (स्मतिसमुच्चय)		१७५८	२४	लि क ठा लीलाधर लि स्था कोटा
६६	४५३६	स्मतिकौस्तुभ-सस्कारदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं	६७	
१००	४६१७	स्मृतिसार	याज्ञिकदीक्षित	१८१२	२२	लि क तिवाडी शिवजीराम दायमा, लि स्था आमेर
१०१	४६३६	,,	,	१७६७	२०	
१०२	६०६३	सस्कारकौस्तुभ	अनन्तदेव	१८वीं	१३५	पत्र ३४, ३५, ३६ अप्राप्त लि लट्टू गदाधरसुत जयकृष्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७०४४	सस्कारप्रयोगसग्रह		१८वी श	८१	अपूर्ण
१०४	७०४५	सस्कारपद्धतिसग्रह		,,	२५	
१०५	५२५३	सगहश्लोका		१९२३	२१	
१०६	४५३५	सवर्त्तस्मृति	सवर्त्तऋषिप्रोक्त	१८४०	८	
१०७	४९७६	सापिण्ड्यविवेक	श्रीशूलपाणि	१७१९	५	लि क श्रीरत्नाकर भट्टात्मज भट्ट शकर । लि स्था काशी
१०८	५५४९	हारीतस्मृति	हारीतऋषिप्रोक्त	१८१०	६८	५१वा पत्र अप्राप्त । लि क आशानन्द व्यास
१०९	४५८९	हेमाद्रिकालनिर्णय	भट्टोजोदीक्षित	१८वी श	४५	लि क. नाथूराम भालूक
११०	७७७०	त्रिशच्छ्लोकीभाष्य		१८८४	३१	
१११	५३४२	त्रिशच्छ्लोकीसटीक		१८५४	१८	
११२	४९३५	,,		१८९६	१७	लि क सम्पतराम
११३	६९०३	ज्ञानभास्कर		१९वीं श	१३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६२८	अक्षयततीयाकथा	पद्मपुराणोक्त	१९३१	२	लि क देवकृष्ण दाधीच पुरोहित चक्षुपुरे (चाकसू ?)
२	४४६१	अगस्त्यकथा	पद्मपुराणोत्तरखण्डोक्त	१६वीं श	८	
३	४८६४	, (अर्घ्यदानविधि)	भविष्योत्तरपुराणगत	१६वीं श	८	
४	६६७३		,	१८३१	४	लि क रामचन्द्र
५	४२२०	अगस्त्यार्घ्यपूजाकथा	,	१८१४	८	लि क केसोराम कान्यकुब्ज ब्राह्मण नगर बोली
६	५३७६(१४)	अनन्तनाथकथा	गोतमप्रोक्त	१८वीं श	१९९ से २०२	
७	४१२२	अनन्तव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणगत	१९वीं श	१०	
८	६६७०	,	"	१८३२	८	
९	६६५४	अबुदमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१९०५	१३१	
१०	६८११	इतिहाससमुच्चय		१९४३	४६	
११	४१९०	एकलिंगमाहात्म्य	वायुपुराणोक्त	१९१३	१०४	लि स्था –उदयपुर
१२	४०४४	एकादशीमाहात्म्यकथा साथ	विविधपुराणसकलित	१८१३	२८	ग्रथ राजस्थानीमें है लि क रामचन्द ग्राम कागणी मेवाडदेशे
१३	५५५२	एकादशीकथासग्रह	"	१९०८	९१	लि क यज्ञेश्वरदेव आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४	६४०९	, (अपूर्ण)	"	१९वीं श	१६	भाद्रपद से फाल्गुन कृ एकादशी कथापर्यन्त
१५	६७२९	ऋषिपञ्चमीकथा	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८१६	७	
१६	६६६९	ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापन	भविष्योत्तरपुराणगत	१९वीं श	७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६५६६	कमलेकादशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१९वीं श.	४	
१८	६७०४	कामदैकादशीकथा	भविष्योत्तरपुराणोक्त	”	४	कामदा एकादशी पुरुषोत्तममास की एकादशी होती है
१९	५४४४	कार्तिककृष्णैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त	१८४५	८	'रमा' एकादशी लि क घनश्याम
२०	४०९७	कार्तिकमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१६७७	४७	लि. क. गोविन्दव्यास गुर्जरगौड अजयपुर
२१	४१०७	”	पद्मपुराणोक्त	१८५९	४५	लि क. नन्दूभाट्ट विद्यार्थी
२२	४२०९	”	”	१८५१	५१	लि क गगाविष्णु कान्यकुब्ज, चोली नगर
२३	४५५४	” (एकादशी कथा सग्रह)	मत्स्याद्यनेकपुराणोद्धृत	१८६१	७१	२०वा पत्र नप्राप्त लि क. रत्नेश्वरव्यास, जयपुर
२४	६५४८	”	पद्मपुराणोक्तपुराणोक्त	१९वीं श	३८	
२५	६५९७	”	”	”	५१	
२६	६६०७	”	ब्रह्मनारदीयपुराणोक्त	१८७९	५७	
२७	६६०८	”	पद्मपुराणोक्त	१९वीं श	२२	
२८	६५७८	कार्तिकशुक्लानवमीमाहात्म्य	”	१९वी श.	६	अक्षयनवमीमाहात्म्य
२९	४४४१	कूर्मपुराण	वेदव्यास	१८४८	२००	१९५वा पत्र अप्राप्त लि क मोतीराम
३०	४४८३	केदारखण्ड	स्कन्दपुराणोक्त	१७९९	९७	शैवप्रकरण
३१	४६०१	गङ्गामाहात्म्य	”	१९वीं श.	७	जागेश्वरस्यपुस्तकम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४९०	गणनाथचतुर्थीकथा	स्कन्द०	१९०४	८	लि क न वरामध्यात
३२	४२८४	गयामाहात्म्य	वायुपुराणोक्त	१७८१	२८	लि प नृसिंह भट्ट तक्षेश्वरी
३३	४५५५	गरुडपुराण	वेदव्यास	१९वीं श	८१	
३४	६६०६	गरुडपुराणसारोद्धार	"	"	९६	व्रतमञ्जरी
३५	६४१०	"	,	१९१९	३६	,
३६	६९१०	गोपाष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१९वीं श	१	
३७	६६८५	गोत्रिरात्रव्रतकथा	स्कन्द०	१८९९	६	
३८	५५०	चातुर्मास्यमाहात्म्य (अपूर्ण)	,	१९वीं श	३३	
३९	६६१८	चान्द्रायणव्रतकथा	भविष्योत्तर०	,	२	
४०	६७०८	ज्येष्ठकृष्णकादशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्ड०	"	२	
४१	४४८६	जन्माष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१८५७	७	लि क व्यास रतनेश्वर, श्रीभिन्नमालमध्ये
४२	५४४२	जन्माष्टमीजयन्तीनिर्णय		१९०७	६	लि प रामनारायण, हरिवल्लभजीभट्टस्य
४३	६५८०	जन्माष्टमीव्रतकथा	"	१८६४	४	लि क देवकृष्णभट्ट
४४	५९९१	तत्त्वदीपभागवतम् (पूर्वखण्ड)	वल्लभ (विष्णुस्वामिमतवर्ती)	१७६४	११०	नवानगरे लिखितम्
४५	५९९२	, (उत्तरखण्ड)	,	,	८९	"
४६	७११९	तुलसीमाहात्म्य	पद्म०स्कन्द०विष्णुधर्मोत्तर०	१९वीं श	३१	
४७	६७२२	तुलसीविवाहमहिमा	विष्णुपुराणोक्त	१९वीं श	६	
४८	६६२६	द्वादशीमाहात्म्य	गरुड०	१७७६	५	
४९	६६१२	दशादित्यव्रतकथा	स्कन्द०	१९वीं श	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	६४८६	दानभागवत	कुवेरानन्दवर्णि	१९वी श	११२	
५१	४२१८	देवप्रबोधिनीएकादशीव्रतकथा	विष्णु०	१८५३	१२	लि क गङ्गाविष्णु कान्यकुब्ज बौंलीनगर(जयपुरराज्यान्तर्गत)
५२	५२०५(१५)	धरणीशेषसवाद	ब्रह्माण्ड०	१८वी श	६४–६६	
५३	६८३६	नासिकेतपुराण		१८६५	९२	गुटका–जिसमे रामगीता, राम-स्तोत्र, कर्मविपाक व पाण्डवगीता भी हैं
५४	५९५२	नित्यविहारलीला	लक्ष्मीधरपुत्र रामशिष्य ?	१६४५	१०१	माथुरराजद्वारकादास कारायित टिप्पणी
५५	६७०९	निर्जलैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्त्त०	१८६१	४	
५६	४४८७	नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा	पद्मपुराणोक्त	१९वी श	७	
५७	६६०१	,,	,,	१८७७	४	लि क. रामलाल
५८	६६७१	प्रदोषव्रतकथा	स्कन्द०	२०वी श.	११	
५९	४५४८	पञ्चपर्वमाहात्म्य	गरुड०वराह०नारदीय०	१९२३	११	लि क घनश्याम ब्राह्मण पाराशर
६०	५५४२	पद्मपुराण (पातालखण्ड)		१८३८	४३	१४वाँ पत्र अप्राप्त
६१	६५९०	पुरुषोत्तममासमाहात्म्य	स्कन्द०	१८९६	४१	लि क रामनारायण मिश्र
६२	६८०७	पुरुषोत्तमसहस्रनाम टीका (अपूर्ण)	शङ्कराचार्य	१९वी श.	४३	विष्णुसहस्रनाम
६३	७७७७	पुष्करणोपाख्यान	स्कन्द०	,,	६	
६४	४६२२	पुष्करप्रादुर्भाव (सटीक)	टी विश्वेश्वर	१७६५	८३	'गौडज्ञातीयभट्टरामनन्दनात्मजेन वीरनन्दनेन लिखित व्यास क्षेत्रे' ३६वाँ ६२वाँ पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६५	६५८९	पुष्करमाहात्म्य	पद्म०	१७९९	९९	
६६	७०१७	„		१८३७	५९	लि क मोतीराम मथ, रूप नगरमध्ये लालदासजीपठनार्थ सलेमाबाद
६७	७०३३	„	„	१८वीं श	२१	आद्यपत्र अप्राप्त
६८	७६०६	„	„	१७६५	६०	आद्य २ पत्र अप्राप्त
६९	४१०१	ब्रह्मवैवर्तपुराण (गणपतिखण्ड)		१८६१	९९	
७०	६९९०			१९वीं श	१०१	
७१	६९९३	„		„	६६	
७२	६९५९	(प्रकृतिखण्ड)		„	१७४	
७३	६९९१	„ (ब्रह्मखण्ड)		„	७७	
७४	६५१२	बृहन्नारदीयपुराण		१७९८	१३३	लि क जतीलालजी सवाई जय पुरे महाराजाधिराज सवाई जय सिंहराज्ये
७५	५२१२	भागवत (प्रथम से दशमस्कन्धपर्यन्त) सचित्र		१८वीं श		चित्र स० ६
७६	५४९५	भागवत (प्रथम तीन स्कन्ध)		„	९७	
७७	४२३०	„ (द्वादशस्कन्ध)		१८७१	११३	*लि क घनश्यामपल्लीवाल
७८	४३१७(१)	„ सजिल्द सटीक (प्रथम द्वितीयस्कन्ध)	श्रीधर स्वामी	१९वीं श	५२	लिपि सुन्दर,आद्यन्त पत्रोपर चित्र
७९	४३१७(२)	„ (तृतीयस्कन्ध)		„	१४०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	गन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	४३१७(३)	भागवत (चतुर्थस्कन्ध)		१९वी श	१–१२१	लिपि सुन्दर आद्यन्तपत्रो पर चित्र
		(पञ्चम ,,)			१–९४	,,
८१	४३१७(४)	,, (षष्ठस्कन्ध)	टी श्रीधरस्वामी	,,	१–७८	आद्यन्त पत्र सचित्र; लिपि
		(सप्तमस्कन्ध)			१–७८	सुन्दर एक जिल्दमे
८२	४३१७(५)	,, (अष्टमस्कन्ध)	,,	,,	१–७२	,,
		(नवमस्कन्ध)	,,		१–६२	
८३	४३१७(६)	,, (दशमस्कन्धपूर्वार्द्ध)		,,	१७७	,,
८४	४३१७(७)	,, (दशम उत्तरार्द्ध)	,,	,,	१६१	,,
८५	७०२१	,, सटीक	टी०श्रीधरस्वामी	१७९८	११	लि. स्था मालपुरा
८६	७०३२	,, ,,	,,	१८वी श.	९५	प्रथम स्कन्ध (अपूर्ण)
८७	७०२७	,, (दशम पूर्वार्द्ध)		१८२९	८८	प्रति कीटभुग्न
८८	७०२८	,, (दशम उत्तरार्द्ध)		,	८६	
८९	६४७७	,, क्रमसन्दर्भटीका (प्रथमस्कन्ध)		१८वी श.	२४	"तौ सन्तोषयता सन्तौ श्रीलरूप-सनातनौ। दाक्षिणात्येन भट्टेन पुनरेतद्विविच्यते ,,
९०	६४७८	,, क्रमसन्दर्भटीका (द्वितीयस्कन्ध)		,,	१७	,,
९१	६४८९	,, (चतुर्थस्कन्ध)		,,	२१	,,
९२	६४८०	,, (सप्तम ,,)		,,	६	,,
९३	६४८१	,, (अष्टम ,,)		,,	९	,,
९४	६४८२	,, (नवम ,,)		,,	६	,,
९५	६४८३	,, (दशम ,,)		१७९८	१०९	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९६	६४८४	भागवत (एकादशस्कन्ध)		१८वीं श	३६	
९७	६४८५	भागवतक्रमसन्दर्भटीका द्वादशस्कन्ध		,,	८	*
९८	७८२२	भागवतके सचित्र पत्र		१९वीं श	१४०–१४६	चित्र सं० १२
९९	६९२५	भागवत सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं श		
१००	६९६४		,	१९वीं श	५९९	
१०१	६७०६	,, मूल			१५३	पञ्चमस्कन्धके चतुर्थ अध्याय तक
१०२	६४७४	(प्रथमस्कन्ध) सुबोधिनीटीका	टी० वल्लभाचार्य	१७९७	११६	
१०३	६४७५	,, द्वितीयस्कन्ध ,,	,	१७९८	९	
१०४	६४७२	, सटीक द्वितीयस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं श	५७	४८वां पत्र अप्राप्त
१०५	६५४९	,, तृतीयस्कन्ध	,	१९वीं श	११८	
१०६	६५५०	, चतुर्थस्कन्ध		१८०६	९७	लि॰ क॰ भूधरमहाजन भानपुर मध्य
१०७	६५५१	,, पञ्चमस्कन्ध	,	१७८९	८३	लि॰ क॰ खुश्यालचन्द वधवाडा ग्रामे राज श्री बेदला डूगरसिंहजी राज्ये
१०८	६५५२	, षष्ठस्कन्ध	,	१९वीं श	६२	पत्र २८ से ३० तक अप्राप्त
१०९	६५५३	सप्तमस्कन्ध	,,	१८१०	६७	२१वां पत्र अप्राप्त
११०	६५५४	, अष्टमस्कन्ध	,	१९वीं श	५८	लि॰ क॰ गोवर्द्धनदास जती सवाई जयपुर मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	६५५५	भागवत नवमस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१९वी श.	५१	
११२	७८३४	,, दशमस्कन्धके सचित्रपत्र		,,	६	६ पत्रोमें ११ चित्र
११३	५१७८	भागवत दशमस्कन्ध		१६६८	४०	जीर्ण
११४	६४५०	,, ,,		१६८५	२६२	लि क देवजी रूपपुरनिवासी
११५	५१७९	,, ,,		१९वी श	३	३१वा अध्यायमात्र लि क दुर्लभराय जगन्नाथभट्ट सुत
११६	५१८४	,, ,,		१८वी श.	३६२	अन्तमे श्रीकृष्णसहस्रनाम और अष्टकादि भी है
११७	६४७३	भागवत दशमस्कन्ध रासपञ्चाध्यायी वैष्णवनन्दिनीटीका	टिप्पणिकार विद्याभूषण	१९वी श.	५०	
११८	६४९०	,, दशमस्क धप्रकरणद्वयविवृति-प्रकाश	विठ्ठलदीक्षित	,,	३९	
११९	६४७६	,, दशमस्कन्ध सुबोधिनीटीका	वल्लभाचार्य	१८वी श.	१८२	
१२०	६८१५	,, भागवत दशमस्कन्धपूर्वार्द्ध सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१९वी श.	१११	
१२१	६८१६	,, उत्तरार्द्ध	,,	१९४५	६८	लि क. लक्ष्मीनारायण
१२२	६४४९	,, दशमस्कन्ध (उत्तरार्द्ध) सटीक	टी० परमानन्द	१७५८	१३०	बुन्देलखण्डे कोचसमीपे
१२३	६५५६	,, ,, (उत्तरार्द्ध)		१९वी श.	९८	
१२४	६५५७	,, एकादशस्कन्धसटीक	टी० श्रीधरस्वामी	,,	१५५	
१२५	६५५८	,, द्वादश ,, ,,	,,	१८वी श	४८	
१२६	६४९५	,, दशमस्कन्धे जन्माद्यस्यार्थ-प्रकाश		१९वी श	११	"जन्माद्यस्य"—इस एकही श्लोकके अनेक प्रकारसे अर्थ किए गये है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२७	६६१७	भागवतपुराणविषयशंकानिरास	पुरुषोत्तम(वल्लभाचार्यचरणानुचर)	१६वीं श	४	
१२८	४१०२	भागवतमाहात्म्य	पद्मपुराणोक्त	,	१८	लि क व्रजलालगौड, ब्राह्मण गुजरगौड, ग्राम खडारी
१२६	५५४१	भागवत माहात्म्य	पद्म०	१८वीं श	६	
१३०	५५५७	,	,	१६वीं श	२८	पत्र १० से १३ तक अप्राप्त
१३१	६५६८	,		१८५५	१५	लि क कवर कालूराम जयपुर मध्ये
१३२	७५ १			१८४५	२५	३रा पत्र अप्राप्त लि क लिछमीराम जोसी नेवटा नगरमध्य
१३३	६४८८	भागवतसन्दर्भे तत्त्वसन्दर्भ (प्रथम)	जीवक	१८२५	१३	*
१३४	६४८७	भगवत्सन्दर्भ (द्वितीय)		१६वीं श	७८	
१३५	६४८६	कृष्णसन्दर्भ (तृतीय)		,	८०	
१३६	५२०५(११)	भागवतानुक्रमणिका		१८वीं श	४२-४७	
१३७	५७३७	भौमव्रतकथा	भविष्योत्तर०	१८६६	३	लि क व्रजवासी ज्योतिर्विद सारस्वतकुलोत्पन्न रीमा (रीवां)
१३८	६७३६	मत्स्यदेशमाहात्म्य	,	१६वीं श	१७	
१३६	७५६३	मथुरामाहात्म्य	आदिवराहपुराण०	१८६६	५०	आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४०	७३०७	(अपूर्ण)		१६वीं श	४६	
१४१	६६११	महालक्ष्मीव्रतकथा	भविष्योत्तर०	१६१६	६	
१४२	४५४६	माघमाहात्म्य	पद्म०	१८६२	६८	वसिष्ठ दिलीपसंवाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४३	६५६३	माघमाहात्म्य	पद्म०	१९वीं श.	३९	
१४४	६५६६	,,	,,	१८८९	४१	लि क. रामसुख रामनारायण सवाईजयपुरमध्ये
१४५	५५७५	मार्गशीर्षमाहात्म्य	स्कन्द०	१८३१	३८	पत्र ३५, ३६ अप्राप्त लि क लालविहारी
१४६	६५६७	,,	,,	१९वीं श.	५४	
१४७	६७११	यमद्वितीयाकथा		१८८७	१	लि क गिरिधारी
१४८	५८७२	रामनवमीव्रतकथा	लिङ्गपुराणोक्त	१८८९	९	लि क. शकरप्रधान खण्डेला
१४९	६६६७	,,	अगस्त्यसहितोक्त	१८९२	४	लि. क. रामनारायण
१५०	६५६५	रामायणमाहात्म्य	स्कद०	१८८९	८	लि. क रामसुखरामनारायण
१५१	६७७८	रासक्रीडा	भागवतोक्त	१९१६	२	
१५२	५१७३	रासपञ्चाध्यायी	,,	१८वी श.	३४	
१५३	४६३७	लिङ्गपुराण	वेदव्यास	१८१४	३७	लि. क कृपाराम
१५४	६४६६	,,	,,	१९वीं श.	१८९	
१५५	६७४०	लोहार्गलमाहात्म्य	वराहपुराण	२०वी श.	३	
१५६	६६६८	वटत्रिरात्रिकथा	भविष्योत्तर०	१७९६	९	
१५७	५४६५	विष्णुपुराण (६ खण्ड)	वेदव्यास	१९वी श.	१८१	
१५८	६५६४	वैशाखमाहात्म्य	स्कद०	१९१५	४६	लि क रामनारायणमिश्र
१५९	६६४७	,,	पद्म०	१८४२	६३	लि. क. जैजैराम सवाई जयपुर-मध्ये सवाई प्रतापसिंह राज्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	५४८५	शिवपुराण	वेदव्यास	१८१७	२०६	ग्राम खाचरोद में लिखित
१६१	४८८८	शिवरात्रिकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१८वीं श	४	लि क सभूकचन्द
१६२	६६०६	,	स्कन्दपुराणान्तगत	१६वीं श	२	लि क कँवर कालूराम
१६३	५४४५	शिवरात्रिव्रतकथा	लिंगपुराणोक्त	१८१६	१४	लिखित जयपुर मध्य
१६४	६६१४	सक्रान्तिमाहात्म्य		१८६०	१	लि क कवर कालूराम
१६५	६६४६	सकष्टचतुर्थीकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१६३७	४	लि क जोशी मोडराम पाटोद्यो बूदी मध्ये
१६६	६७१२	सकटचतुर्थीव्रतकथा	नारदीयपुराणोक्त	१७३०	५	
१६७	५२५७	सत्यनारायणव्रतकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१६३४	१२	
१६८	४१००	सत्योपाख्यान	श्रीव्यास	१६वीं श	६५	
१६९	५६७८	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणान्तगत	१८६५	४	लि क व्रजवासी सिल्लु फाश्याम
१७०	६४०३	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणान्तगत	१६वीं श	३	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७१	४६३८	हरिवशपुराणरसकुल्याख्याव्याख्या	हितहरिवंशगोस्वामी	१८३५	५२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४५४५	अध्यात्मविद्योपदेशविधि(गीतागूढार्थ-दीपिका)	शंकराचार्य	१७६०	६	लि. क. मयाराम लि. स्था. मालपुरा
२	४५६४	अन्तःकरणबोधसविवृत्तिकविवृति	वल्लभ	१८वी श.	१६	
३	४२४४	अनुस्मृति	महाभारतगत	,,	१३	
४	४६४६	अनुस्मृति	महाभारतशान्तिपर्वोक्त	१९वी श	६	
५	४५८८	अपरोक्षानुभूति	शकराचार्य	१८वीं श.	७	
६	५२३२	,,	,,	,,	१०	
७	६७१०	,,	,,	२०वी श.	६	
८	७७५७(४)	,,	,,	१८५०	१७०–१८६	
९	५३५१	अभयप्रदानसार	वरदाचार्य वेंकटनाथाचार्यशिष्य	१८६१	१५	
१०	६९४२	अर्जुनगीता		१८९६	१२	लि. क. शिवराजगिरि
११	५५४७	अर्थपञ्चकम् (रामानुजसम्प्रदायस्य)	गोपदास	१८३७	१०	लि. क. तुलसीदास वैष्णव पुष्कर मध्ये
१२	५५४३	अष्टावक्रटीका	विश्वेश्वर	१७१४	७४	लि क गोकुल वैरागी शाहगज
१३	५२९४(२)	अष्टावक्रटीका (अवधूतानुभूति)	विश्वेश्वर	१८९०	३२	लि. क. हरिदेव
१४	६५९९	अष्टावक्रटीका (वाक्यसुधाख्या)	,,	१९वी	४४	
१५	४६०४	अष्टावक्रसूक्त	अष्टावक्र	,,	४३	
१६	४६०९	अष्टावक्रसूक्तसटीक (निपाठ)	टीका—विश्वेश्वर	१८०५	२७	लि क रामेश्वर शिवात्मज
१७	७७५७(७)	आत्मनिरूपण	शकराचार्य	१८५०	२२०–२२२	
१८	४५९१	आत्मबोध	,,	१७६६	७	
१९	४६११	,,	,,	१८वी श.	६	लि. क. दयादत्त

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०	७७५७(६)	आत्मबोध	शंकराचार्य	१८५०	२१०–२१६	
२१	६६७६	आत्मबोधप्रकरण	"	१९वीं श	१७	
२२	६६२७	आत्मबोधव्याख्या (विद्वज्जनानन्ददायिनी बालबोधिनी	शंकराचार्यनारायणतीर्थ	१७७४	२३	लि क रामकृष्ण
२३	४१४१	आत्मबोधसटीक	शंकराचार्य	१८वीं श	१७	
२४	४६१२	आत्मबोधसटीक (प्रकाशिकाख्या)	टीका गोविन्दाचार्य		१६	
२५	५६१२	आत्मबोधसटीक	शंकराचार्य	१९वीं श	१२	
२६	६३५४	आत्मानात्मविवेक		१८वीं श	६	
२७	६१५४(२)	उज्ज्वलनीलमणिविवृति	रूपसनातन	१८१४	१७६	
२८	४५७८	उत्तरगीता	अश्वमेधपर्वगत	१९वीं श	१४	
२९	५६१६	उपदेशपञ्चकव्याख्या	शंकराचार्य टीका–भूधर	,	४	
३०	५५०३	वर्णानन्दसटीक (प्रथकौमुदीनाम्नी)	कृष्णदास टीका–प्रबोधानन्द सरस्वती	१८०६	६३	रचनाकाल सं १६३५
३१	४५७७	कुम्भकपद्धति	रघुराम शिवरामसुत	१९वीं श	२१	
३२	७०६६	कृष्णसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८२०	२४३	लि क व्यास हरिलाल जूनियावासी, पत्र २१, २२ अप्राप्त
३३	५६८५		,	१८वीं श	१५६	
३४	४५६७	गर्भगीता	ब्रह्मज्ञानतत्त्वसार	"	६	
३५	७६१०	गीतासारोपनिषत		१९वीं श	४	लि क केशवदास
३६	६७८२	गोरक्षशतक		,	१२	
३७	५४०४	गोविन्दगुणानुवादसटीक	कृष्णदास	१९४९	३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८	४५८७	चन्द्रोदयविलास	चन्द्रसिह	१८वी श	६४	रचनाकाल १६६५
३९	६२०१	चित्रदीपव्याख्यान	रामकृष्ण	,,	३०	प्रति जीर्ण व कीटविद्ध है
४०	६०६९	चित्रदीपसटीक	,,	१९वी श	३०	
४१	६५६०	चैतन्यचरितामृत		१९०१	४१	
४२	५२०५(८)	जलभेद	वल्लभाचार्य	१८वी श.	४०–४१	
४३	६५०६	जलभेदटीका	कल्याणराम	१७२८	८	
४४	४३८१	तत्वभागवत		१८वीं श	१२७	अपूर्ण
४५	५५२६	तत्वमुक्तावली	पूर्णानन्द श्रीगौड	१८४६	६	
४६	५५९९	तत्वयाथार्थ्यदीपनम्	गणेशदीक्षित	१९वी श.	२३	
४७	७१६१	तत्वसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८वीं श	१८	
४८	७७५७(५)	तत्वसार	ब्रह्मचैतन्यमुनि	१८५०	१८९–२०९	
४९	५३८५(१)	,,	,,	१९वी श		
५०	६०५९	तत्वत्रयचूलिका	वरदार्य	१८४७	१३	
५१	४५४६	तत्वानुसधान	महादेव सरस्वती मुनि	१७६५	१५	लि क. मयाराम
५२	६०७०	,,	,,	१९०१	३६	
५३	६१७३	,,	,,	१८वीं श.	४६	
५४	६४९२	,,	,,	१८८६	७०	
५५	६७०५	द्वादशमहावाक्यविवरण		१८७५	३८	लि क हरीराम दवे, भावनगर
५६	७७५७(२)	द्वादशमहावाक्यसिद्धात		१८५०	५६–१४०	
५७	६८०६	दशश्लोकीटीका (तत्वसारप्रकाशिनी)	नन्ददास	१८२१	८	लि. क हरचन्द्र, जयपुर
५८	६०६१	नाटकद्वीपाख्याव्याख्या	रामकृष्ण विद्वान्	१९वी श	५	,,

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५९	७११७	नारदगीता		१९वीं श	२	
६०	५२०५(१०)	निरोधलक्षण	वल्लभाचार्य		४२वां	
६१	७५७६	निरोधलक्षणटीका	टी० हरिराय	१७७९	२७	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
६२	५२०५(४)	ग्रंथ	विट्ठलदीक्षित	१८वीं श	३६–३७	
६३	५६५२	प्रश्नावली	जडभरत (माधवानंदशिष्य)	१९वीं श	८	
६४	५७२५	प्रस्थानभेद	मधुसूदनसरस्वती	,,	१८	
६५	५४७२	प्रीतिसन्दर्भ (षष्ठ)	जीवगोस्वामी	१८२१	७१	लि क मोतीरामजोशी, जयनगर
६६	५४९६	प्रमेयरत्नार्णवसन्दर्भसटीक	रसिकोत्तंस	१८वीं श	८०	
६७	६७१६	पञ्चपादिकाव्याख्या		१९वीं श	१२	
६८	७०३१	पञ्चदशीटीका	टी० रामकृष्ण	१८९०	४१	
६९	७७८७	पञ्चदशीसटीक	,,	१८वीं श	१२५	
७०	५२९४(१)	पञ्चीकरणप्रकरण (अवधूतानुभूति)	टी० विश्वेश्वर	१८९०	१५	लि क हरिदेव
७१	५७८२	पञ्चीकरणसटीक	टी० आनन्दगिरि	१९१६	१६	
७२	६१५५	पद्यावली	योगेश्वर	१८८८	४२	
७३	५३८५(२)	परमात्मप्रकाश		१९वीं श		
७४	७०६८	परमात्मसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८२०	२७	लि क हरिलाल व्यास
७५	६१३४	परिभाषावृत्ति	विद्याविलास	१७२४	१३	आद्य २ पत्र अप्राप्त
७६	४२१४	पाण्डवगीता		१९वीं श	१७	
७७	४२४०	,		१८वीं श	१७	
७८	४४५६			१९वीं श	८	लि क जयकृष्ण
७९	५११२	,,			११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११५	६७५७	भगवद्गीता		१८८९	५४	लि स्था. डेराबसी
११६	७६०२	,,		१८५७	३५	लि क. गोडजी शोभजी
११७	७८०५	,,		१८वी श.	११७	
११८	७७८५	,, (पचोली टीका)		१९४१	४४	एकादश अध्यायपर्यन्त
११९	५७०७	भगवद्गीतासभाष्य	शकराचार्य	१८वी श	११७	
१२०	४५५१	,,	,,	,,	११	अपूर्ण
१२१	४३७२	भगवद्गीतासटीक	श्रीधर	१८७५	११३	
१२२	६६४०	,,	,,	१८७३	१०९	लि क रामचन्द्र
१२३	६६५८	,, (अर्थसगहटीक)			११२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२४	६६६२	,, सुबोधिनीटीका	श्रीधर	१८वी श.	११२	
१ ५	६५०५	भगवद्भक्तिविलासटीका	गोपालभट्ट	१८६७	६७१	लि. क गोविन्दराम, जयनगर
१२६	६५२०	महावाक्यार्थविवरण		१९वी श	८१	अन्तिम पत्र खण्डित
१२७	६०६६	मीमासा परिभाषा	कृष्णयाजी	१९१७	१७	लि. श्यामदास, मथुरा
१२८	६२८०(१)	मूलसूत्र	ब्रह्मसहितान्तर्गत	१९०९	१–६	लि. पुजारी हरदेवदास
१२९	६२६५	यतीन्द्रमतदीपिका	श्रीनिवासदास	१८वी श	२१	
१३०	५२९३	,,	,,	१८२३	५५	
१३१	५६५१	याज्ञवल्क्योपनिष		१९वी श.	२८	
१३२	५५५१	युगलचरितामृतकथा	वशीधर	१९वी श	५८	पत्र २५, ४५, ४९वा अप्राप्त
१३३	७३३६	योगदृष्टिसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रश्वेतभिक्षु	१७१९	२३	
१३४	७७५७(३)	योगवासिष्ठसार		१८५०	१४०–१७०	
१३५	४५५२	,, (सटीक त्रिपाठ)	महीधर, टी० विश्वेश्वर	१७८८	२७	लि. क नारायणदास वैष्णव स्थान वृन्दावती

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६	४४३०	योगशास्त्र	श्री पतञ्जलि	१८११	१२०	
१३७	७३४६	योगशास्त्रप्रकाश	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श	१०	
१३८	५६०१	योगशास्त्र (वृत्ति)	,	१६वीं श	२८	
१३९	७३२८	योगशास्त्र (चतुर्थ प्रकाशपर्यन्त)	,	१७वीं श	२९	
१४०	४३५३	योगशास्त्रद्वादशप्रकाश	,	१५३९	२४	
१४१	४३ ६	,	,	१५६७	२०	
१४२	७४०६	योगशास्त्रप्रकाश (चतुर्थ)		१६७७	१४	लि स्था इलदुर्ग
१४३	५८९५	योगसूत्र (अभिनवभाष्य)	भवदेवमहोपाध्याय	१९१६	३६	
१४४	५५९८	योगसूत्रभाष्य	पतञ्जलि		४३	
१४५	५६२०	योगसूत्रभाष्यवृत्ति	वाचस्पति	१९२३	०	लि क साधु ओराम, जयनगर
१४६	५५९६	योगसूत्रवृत्ति	धारेश्वर	१९१६	३५	
१४७	४४२९	योगाख्यान (योगतत्व)	याज्ञवल्क्य	१९वीं श	४८	
१४८	४२५२	रामगीता		१८वीं श	१५	
१४९	६६६५	"		१८३६	६	लि पुरोधा देवकृष्ण
१५०	६२२४	रामगीताविवृति	महीधर	१९००	१७	लि रामचरण
१५१	६५०३	"	"	१८१८	१७	लि गुभराम
१५२	७७५७(१२)	वज्रसूची	शंकराचार्य	१८५०	२३३–२४४	लि भट्ट भास्कर काश्मीरनिवासी
१५३	६२८०(३)			१९०९	१९–२०	लि पुजारी हरदेवदास
१५४	५३००	वज्रसूचीसंदर्शिनी	श्रीनिवासदास	१८५१	३	लि घासीराम
१५५	५७३३	वाक्यसुधाप्रकरण		१९वीं श	२७	
१५६	४५८०	सटीक	शंकराचार्य	१८३९	१४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	५३२३	वाक्यार्थसग्रह (प्रमाणसार)	शठारि ?	१६वीं श.	५७	
१५८	५३६३	वार्तामाला			३१	
१५६	५२१४	विद्वच्चित्तप्रसादिनीपट्पदीटीका	कविराज भिक्षु	१८वी श	१७	
१६०	५४०५	विद्वन्मण्डन	श्रीविट्ठल	१६०८	६४	लि माखनलाल
१६१	६०७६	,,	,,	१६००	४६	लि शालिग्राम
१६२	४१०६	विद्वन्मोदतरगिणी	श्रीचिरजीव भट्टाचार्य	१८४६	३४	लि जोशी जीवणराम
१६३	५५६७	,,	,,	१६वी श	४०	
१६४	५६५३	विरोधिपरिहार	लक्ष्मणाचार्य	१८४३	३२	
१६५	५८८६	विवेकत्रयरत्न	श्रीरामानुजदास	१८वीं श	२२	प्रथम दो पत्र अप्राप्त
१६६	५६१५	विज्ञाननौका	शकराचार्य	१६वीं श	६	
१६७	५५४५	वेदान्ततत्त्वबोध	अनन्तराम	१६२१	३२	लि ललिताप्रसाद पारीक
१६८	७५८०	वेदान्ततत्त्वसार	रामानुजाचार्य	१६वी श	२५	
१६६	७७०७	वेदान्तप्रश्नोत्तररत्नमाला	शकराचार्य	,,	४	
१७०	४६३१	वेदान्तपरिभाषा	धर्मराजाध्वरीन्द्र	,,	४७	
१७१	६४६३	वेदान्तरत्नावली	परमानन्ददेव	१८८८	२५	लि. रामनारायण
१७२	७७५७(११)	वेदान्तपद्पदी	शकराचार्य	१८५०	२३२–२३३	
१७३	४१०३	वेदान्तसार	सदानन्द	१६वीं श	१४	
१७४	४११६	,,	,,	१८वीं श	१७	
१७५	४५७५	,,	कृष्णानन्द	१६वीं श.	११	पत्र २, ३ अप्राप्त
१७६	४५६६	,,	सदानन्द	,,	१६	
१७७	४६२३	,,	,,	१८४१	११	लि दुर्गादत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	५७०१	वेदान्तसार	सदानन्द	१६वीं श	१३	लि ठक्कुर नरहरवल्लाल
१७६	६२५१	,	,	१८३६	२३	लि रूपराममिश्र वलभगढ़
१८०	६२८३		,	१८वीं श	१३	
१८१	६५१८	,	,,	१७६७	२४	लि पण्डा शिवदत्त
१८२	७६१७			१६वीं श	१४	
१८३	४६२१	,,	शकराचार्य	१८वीं श	१४	
१८४	४६४०		,	१६वीं श	२५	
१८५	४२७८	(सुबोधिनीटीकायुक्त)	नृसिंहसरस्वती	१७२६		लि श्यामदास स्थान उरपतनग्राम
१८६	६१७२	वेदान्तसारटीका (सुबोधिनी)	,	१७४०	५१	
१८७	५७६	वेदान्तसारटीका	,	१८८६	२६	लि रामसुख रामनारायण
१८८	६१५६	वेदान्तसिद्धान्तसग्रह (सटीक)	वनमाली	१८वीं श	१२३	
१८६	४५७६	वेदान्तसूत्र		१६वीं श	१६	
१६०	४५६३	वेदान्तसारसग्रह	ब्रह्मानन्द	,	४३	
१६१	६१६५	वैकुण्ठगद्य		१८६०	१६	
१६२	५७७३	वैराग्यप्रकरणम (रामायणान्तर्गत)	वाल्मीकि	१८वीं श	१२६	
१६३	४५५०	शतसूत्रीयभाष्य	मू० शाण्डिल्यभाष्यस्वप्नेश्वराचार्य	१८३६	३१	लि व्यास रामरतन
१६४	७६००	शारीरकमीमांसा		१८४८	१३	
१६५	५६६४	शारीरकमीमांसाभाष्य(प्रथमअध्याय)	शकराचार्य	१६वीं श	१४२	
१६६	५६६५	, (द्वितीय अध्याय)			१२८	
१६७	५६६६	, (तृतीय अध्याय)	,		१३२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९८	५९६७	शारीरकमीमासाभाष्य(चतु.अध्याय)	शकराचार्य	१८७४	५३	
१९९	६२२३	,,	,,	१७३१	२१८	
२००	६२३८	,,	,,	१८५१	२३७	लि. गिरधारीरामशर्म्मा गौड
२०१	६७८३	स्वयम्बोध	ईश्वरप्रोक्त	१९वीं श	१०	
२०२	६५८१	स्वरूपप्रकरण	शंकराचार्य	,,	३	लि रामनारायण
२०३	६३६७	स्वरोदय	तन्त्रोक्त	१९१३	९	लि वतूराम, वीर्घपुर
२०४	६७३०	स्वात्मनिरूपण	नारदपाचरात्रतन्त्रोक्त	१९वी श	२०	
२०५	५७८६	स्वात्मनिरूपणप्रकरणार्याशतक	शकराचार्य	,,	११	इस ग्रन्थमे १५६ आर्या छद हैं
२०६	४६४४	स्वात्मबोध		,	२१	
२०७	५२०५(६)	सन्न्यासनिर्णयः	वल्लभाचार्य	१८वी श	३८–३९	
२०८	७५७७	सन्न्यासनिर्णयविवरण	पुरुषोत्तम	१९१३	२४	
२०९	७५८३	सन्न्यासनिर्णयविवृति	गोपेश्वर	१९वीं श	२३	
२१०	५२०५(७)	सर्वसिद्धान्तबालबोध	वल्लभाचार्य	१८वी श.	३९वा	
२११	६२९६	सर्वोत्तमविवृति	श्रीवल्लभ	१९३६	४९	
२१२	५९२९	समाधितन्त्र (बालावबोधिनीटीका)	पर्वतधर्मार्थीकुन्दकुदाचार्यशिष्य	१७४९	७०	
२१३	४४९८	सांख्यवृत्ति	कपिलोक्त	१८वी श.	१५	
२१४	६७९९	सामवेदरहस्योपनिषत्		१८०३		पत्र १–३ अप्राप्त
२१५	६५६१	सिद्धातदर्पण	विद्याभूषण टी० नन्दमिश्र	१९वी श	२१	
२१६	४५४७	सिद्धातबिन्दु	मधुसूदनसरस्वती	१७६५	१२	लि साधरामदास स्था मारोठ
२१७	७३७०	,,	,,	१७७६	५५	
२१८	५२०५(२)	सिद्धातमुक्तावली	वल्लभाचार्य	१८वीं श	३२–३३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१९	७०७१	सेवाप्रकाशगतकथ्याख्या	गोस्वामी श्रीव्रजलाल	१८२४	६३	रचनाकाल १७५५ लि क श्वेताम्बर नानिगराम पत्र ७ से २६ तक अप्राप्त
२२०	५२०५(६)	सेवाफलम	वल्लभाचाय	१८वीं श	४१–४२	
२२१	४५६७	हठप्रदीपिका	स्वात्मराम योगीन्द्र	१९वीं श	२२	
२२२	५८७३		,	१८९४	२६	
२२३	६०७६	,	,	१८९७	२७	
२२४	६७५६		,,	१७६५	१७१	लि तुलाराम
२२५	७७५७(१)	,	,	१८५०	१–५६	लि काश्मीरनिवासीभास्करभट्ट
२२६	५८३३	हठरत्नावली	भट्ट श्रीनिवास	१९०४	३१	पत्र ३०वा अप्राप्त लि व्रजवासी रोमापुरे

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६४०	अनुमानमणिदीधिति	रघुनाथ	१९०८	२१५	लि. मथुरानाथ शर्मा
२	६५१५	अनुमितिपरामर्श	रघुदेवभट्टाचार्य	१८४६	३४	
३	६१५२	आप्तपरीक्षा	विद्यानन्द	१६७८	१३३	लि. जीवेश्वर
४	४४९९	कारिकानिबन्ध	विश्वनाथ	१८वी श.	१३	
५	५९२२	किरणावलीसूत्र	उदयनाचार्य	१७०५	५२	
६	५८५६	खण्डनखण्डकाव्य	श्रीहर्ष	१९वी श	३४१	अपूर्ण
७	५९८६	,,	,,	,,	२३२	
८	६६३६	जागदीशीन्यायव्याख्या		१९०९	११६	लि मथुरानाथशर्मा
९	४३४३	तत्त्वचिन्तामणि शब्दखण्ड	श्रीगंगेश्वर	१७वी श.	१४५	
१०	६१८१	तत्त्वदीपिका	अमृतचन्द	१८वी श	१०२	
११	४४९६	तर्कचन्द्रिका	विश्वेश्वराश्रम	१८१४	२१	लि शम्भूराम
१२	६८७४	तर्कप्रदीप	भवदेव	१९वी श	९	
१३	६०२१	तर्कभाषा	केशवमिश्र	१८११	२९	पत्र १९वा अप्राप्त
१४	६०४२	तर्कभाषाटीका(भावार्थदीपिका)	गौरीकान्तभट्टाचार्य	१८वी श.	९२	
१५	४४९५	तर्कसंग्रह	अन्नभट्ट	१९वी श	६	
१६	४५००	,,	,,	१८०५	११	लि. चैनराम, गोजगढ
१७	५३२५	,,	,,	१८३६	३	
१८	६०३७	,,	,,	१८वी श.	७	
१९	६३६५	,,	,,	१९००	८	पत्र ६ठा अप्राप्त
२०	६८६७	,,	,	१९००	२३	लि प. पन्नालाल, लश्कर
२१	६९९४	,,	,,	७३२	९	लि श्रीगोविन्दभट्ट

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	७७१२	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट	१८६२	६	लि व्रजवासी तिल्लु
२३	६१७१	तर्कसंग्रहतत्त्वदीपिका	मदनभट्टोपाध्याय	१८६४	२४	लि गोस्वामी बलदेव
२४	६८६२	तर्कसंग्रहन्यायबोधिनीटीका	गोवर्धनसुधी	१८६१	२३	
२५	४४३६	तर्कामृत	जगदीशभट्टाचार्य	१०१५	१३	लि रामनारायण मिश्र
२६	४३४१	न्यायरत्नप्रकरण	गंगाधर	१६वीं श	३८	
२७	६६६६	न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	चूडामणिभट्टाचार्य	१८८४	३१	
२८	५३३५	न्यायसिद्धान्तमञ्जरीतत्त्वप्रकाशाख्य-दीपिका	टी० नीतिकण्ठशर्मा	१८वीं श	६२	
२९	५६०४	न्यायार्थमञ्जूषा (न्यायसंग्रहवृत्ति)	हेमहंस	१५१५	६७	
३०	७२४८	नयचक्र	देवसेनपण्डित	१८१५	११	प्रथम पत्र अप्राप्त लि साधु सुखरामदास शहर वेधममध्ये
३१	७३५७	नयचक्र (गुणपर्यायमालापद्धति)	देवसेन	१८१३	६	लि सुजानसागर
३२	७५८६	नयचक्र	"	१६०३	४	लि हमीरविजय
३३	७४१४		सिद्धसेन	१७८६	५	लि ऋषिसुखदेव
३४	६५१६	निश्चयतत्त्वपरीक्षित	रघुदेव तर्कविशारद	१६वीं श	८	
३५	५६२६	प्रमाणमञ्जरी	सर्वदेव	१७वीं श	७	
३६	५६२३	प्रमाणमञ्जरीटीका	टी० अद्वयारण्य	१६वीं श	७	
३७	४४३१	पदार्थमाला	जयराम न्यायपञ्चानन	१६६६	१५६	
३८	५१७२	भाषापरिच्छेद	भट्टाचार्य सिद्धान्तपञ्चानन	१८२३	२८	
३९	६६५१	"	सिद्धान्तवागीश	१६वीं श	८	
४०	६७१८	भाषारत्न	श्रीकणाद	,	४७	११वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१	७७१४	मुक्तावलीकारिका	पचानन भट्टाचार्य	१८९२	६	लि व्रजवासी सिल्लुः
४२	५९३९	रत्नाकरावतारिकापजिका	देवसूरि	१७००	२५	लि तीर्थचन्द्रगणि
४३	४४३८	शब्दनिरूपण पूर्वार्द्ध		१७वी श.	१३१	
४४	७२५५	षडदर्शनसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रसूरि	१६१२	२०	
४५	७३६०	षड्दर्शनसमुच्चयटीका	हरिभद्रसूरि	१७वी श	२६	
४६	४३५०	षड्दर्शनसमुच्चयसावधूरि	हरिभद्र	१७१०	६	लि. मुनिप्रकाशपाल स्थान- सिरोही
४७	७४८६	स्याद्वादमजरी	हेमचन्द्राचार्य	१५२१	६९	
४८	७३४८	,,	,	१५वी श	५३	
४९	४४१६	सन्देहदोलावलीसटीक	जिनदत्तसूरि	१६वी श.	२०	लि नयनसुन्दरगणि
५०	४३४२	सप्तपदार्थी	शिवादित्य	१७वी श.	७	
५१	५९८८	,,	,,	[,,	६	
५२	५९००	सप्तपदार्थीटीका	शेषानन्तपण्डित	१७०४	२५	प्रथम पृष्ठ शोभन
५३	७१६०	सप्तपदार्थीवृत्ति	बलभद्र	१७वी श	९	प्रथम पत्र अप्राप्त
५४	५४४६	समासवाद	जयराम भट्टाचार्य	१९वी श	११	
५५	५१३३	सिद्धान्तचन्द्रोदय (तर्कसंग्रहटीका)		१८वी श.	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
५६	४४३७	सिद्धान्तमुक्तावली	विश्वनाथ पचाननभट्टाचार्य	१९वीं श.	१२०	
५७	६९५५	,,	,,	१८८४	७३	
५८	५६६४	,,	प्रकाशानद	१८१०	५७	
५९	६६३८	,,	विश्वनाथ	१८६४	९५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामादि	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१०२	अनिटकारिका		२०वीं श	३	
२	६११०			१९वीं श	३	
३	६११२	,,		,,	३	
४	५९८१	अनुबन्धफलगाथचूरिसपाठ	हेमचन्द्र	१८वीं श	१	
५	६११९	अव्ययव्याख्या			५	लि नन्दराम ब्राह्मण सवाईजयनगर
६	८३६३	अव्ययव्याख्यान		१९वीं श	४	
७	६७००	अव्ययायप्रकरण	पतञ्जलि	१८४०	७	लि गंगाविष्णु
८	५०३२	अष्टाध्यायी व्याकरण	पाणिनि	१७९९	११२	लि महता नागेश्वर औदीच्य
९	४३७३	आख्यातवादटीका	रघुदेव	१८८३	३५	लि रामलाल
१०	४३७७	आख्यातविवेक	भट्टाचार्य शिरोमणि	१९वीं श	७	
११	७४३१	उणादिगणसूत्रविवरण	हेमचन्द्र	१५वीं श	४०	
१२	५२१६	उणादिवृत्ति (पञ्चमपादान्त)	उज्ज्वलदत्त	१७वीं श	३२	
१३	७४७१	उणादिसूत्रसटीक		१७६२	१२	लि रत्नसुन्दर
१४	४३९६	ऊष्मभेद	महेश्वर कवि	१८४७	१७	लि चिमनराम तेरापंथी
१५	५३८५(४)	कातन्त्रव्याख्या (दौर्गसिंहवृत्ति)		१६वीं श	१७७–१८६	
१६	५९५८	कातन्त्रविभ्रम		१७वीं श	९	
१७	५८७१	कारकखण्डनमण्डन	तर्कसिंह भट्टाचार्य	१९वीं श	९	लि शालिग्राम
१८	६१९८			१७१९	४	लि ज्ञानकल्लोल
१९	७४५६	,,	मणिकण्ठ भट्टाचार्य	१८४७	८	लि दीपचन्द्र
२०	६१९१	कारकचक्रम	वररुचि	१८वीं श	१३	
२१	६०३१	कारकपरीक्षा	पशुपति राढीय	१८वीं श	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	४२८१	कारकविलास		१९२०	५४	
२३	७४७३	कारकविवेचन		१८वीं श	४	
२४	५४६२	कृदन्तप्रक्रिया (चन्द्रिका)	रामचन्द्राश्रम	१८९६	२४	लि बलदेव
२५	४३९४	गणरत्नमहोदधिसवृत्तिक	वर्द्धमान सूरि	१७वीं श	९६	१ से ६ पत्र अप्राप्त, रचनाकाल स० ११९७
२६	६५८३	गणपाठ (पाणिनीय)		१८६६	१४	
२७	५०८६	दशबलकारिकारूपोधातुपाठ		१७५९	२	
२८	७३११	धातुतरगिणी (स्वोपज्ञधातुपाठ-विवरण)	हर्षकीर्ति सूरि	१७वीं श	८५	
२९	६१००	धातुपाठ		१८६०	२१	
३०	६२७०	धातुरूपावली		१९वीं श.	६	
३१	५४८६	प्रक्रियाकौमुदी (प्रथमभाग)	रामचन्द्र	१७वीं श.	९३	पत्र ६३,८७,८८,९०, ९१, ९२ अप्राप्त
३२	७४६२	"	"	१७०१	१६०	
३३	५१४५	" सटीक (द्विरुक्तप्रक्रियान्त)	श्रीकृष्णनरसिंह सूरिसूनु	१८वीं श	३२१	
३४	५४८९	" सुबन्तप्रकरण	रामचन्द्र	१७वीं श.	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
३५	५४८८	" तद्धितप्रक्रिया	रामचन्द्र	"	११४	पत्र ४२,४६,६१,७३,८१ से ८९ तक, ९३ वा अप्राप्त
३६	५४८७	" कृदन्तप्रक्रिया	"	"	८८	पत्र ७६ से ८६ तक अप्राप्त
३७	५००९	प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	१९०६	४२	
३८	५२५१	"	"	१९२०	४५	लि. श्री नृसिंह गुसाई

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९	६५७०	प्रबोधचन्द्रिका	वजलभूपति	१९वीं श	१६	
४०	५१५३	प्रौढमनोरमा (पूर्वार्द्धवृत्ति	भट्टोजी दीक्षित		४४६	
४१	५१५४	(तिङन्तकाण्ड)	,	,	१५३	
४२	५१४७	,			१४४	अपूर्ण
४३	४४७१	परिभाषासूत्र (सिद्धान्तकौमुद्या)		,	२	
४४	६६६४	परिभाषासूत्राणि		१९१९	८	लि गोपीनाथ
४५	५१५५	परिभाषेन्दुशेखर	नागेश भट्ट	१८००	१०३	
४६	५९२४	पाणिनीयव्याकरणसूत्रपाठ	पाणिनि	१७वीं श	२१	
४७	५५७९	पाणिनीयशिक्षा	,	१८वीं श	२७	अपूर्ण
४८	६१६९	भाष्यप्रदीपव्याख्यान (प्रथमखण्ड)	नागोजी भट्ट	१८५५	१८९	
४९	६१७०	(द्वितीयखण्ड)		,	११२	
५०	६०५१	भीमसेनधातुपाठ	भीमसेन	१९३०	६	
५१	५९६९	भूधातुवृत्ति	क्षमा कल्याण	१८२९	३४	राजनगरे लिखितम्
५२	५१५०	मध्यकौमुदी (पूर्वभाग)	वरदराज	१८वीं श	६८	
५३	५१५१	, (उत्तरभाग)	,	१८१२	९३	
५४	६४५९	, (विलासनाम्नीटीकासहित) अव्ययपर्यन्त	टी जयकृष्ण	१९वीं श	११३	
५५	६४६०	, (आख्यातप्रक्रिया)	,	,	८९	
५६	६४६१	, (कृदन्तप्रक्रिया)	,	१८३४	६८	पत्र ६६,६७वां अप्राप्त लि जती धनसागर जनगर
५७	५१४६	महाभाष्य (तृतीयचतुर्थाध्यायो	पतञ्जलि	१८वीं श	१९८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५५४८	लघुकौमुदी (उत्तरार्द्ध)	वरदराज	१९१२	५७	लि नन्दलाल
५९	६९७०	लघुशब्देन्दुशेखर	नागेश	१८वी श.	१६५	
६०	५१४८	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१९१०	७९	
६१	६१०३	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१९०४	६८	
६२	७६८९	,,	,,	१८७४	६०	लि उमाशकर
६३	६८६५	लिङ्गानुशासन	हेमचन्द्र सूरि	१८वी श.	८	
६४	७२०५	लिंगानुशासनविवरण (स्वोपज्ञ)	हेमचन्द्राचार्य	१६४५	७४	लि श्रोभा रुद्र
६५	६५२१	व्याकरणलघुभाष्य (पूर्वखण्ड)		१९वीं श	२८२	
६६	५३१०	वाक्यप्रदीप		१७वी श	२५	अपूर्ण
६७	६३३२	विदग्धबोध	भूपतिमिश्र	१८६०	१४	वैरिनगरमध्ये लिखितम्
६८	६११५	विपरीतग्रहणप्रकरण		१९वी श	२	
६९	७४५७	वैयाकरणभूषणटीका	कृष्णमिश्र	१८वी श	१७	
७०	५१५२	वैयाकरणभूषणसार (स्फोटवाद)	कौण्डिभट्ट	,,	५०	
७१	५१७४	वैयाकरणसार (शक्तिनिर्णय)		,,	७	
७२	७४५१	शब्दप्रभेदटीका	नू. महेश्वर टी ज्ञानविमल	,,	११०	
७३	६०१४	शब्दभेदप्रकाश	पुरुषोत्तमदेव	१८७६	२	
७४	५९२८	शब्दशोभा	नीलकठ शुक्ल	१७२१	२९	रचनाकाल १६८९ सागानेर-मध्ये लिखित
७५	५२१७	शब्दसचय	केनचिज्जैनमुनिना सकलितः	१७वी श.	१६	अपूर्ण
७६	७५१८	शब्दार्थसग्रह		१८९१	३	लि व्रजवासी सिल्ल
७७	६५०८	षट्कारकव्याख्यान	भैयानन्द	१८५२	११	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७८	७४४४(१८)	सारस्वत (पञ्चसन्ध्यन्त)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८६	३०३–३१०	लि ऋषिचतुर्भुज उदपुरमेंलिखित
७९	५१४४	सारस्वतसूत्रपाठ	,,	१९वीं श	८	
८०	६७८०	,	,	१९२५	८	लि किसोरदास हमीरगढ़मध्ये
८१	७६६४	,,		१८५६	११	
८२	४४७०	,, (अन)	,	१९वीं श	८	
८३	४३९५	सारस्वत प्रथमावृत्ति (तद्धित प्रक्रियान्त)	माधव	१८४२	६६	लि मयरण सरूपचन्द मेडतानगर
८४	६६४१	सारस्वत (द्वितीयावृत्ति)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१७वीं श	४६	लि रघुनाथ
८५	६६४२	(तृतीयावृत्ति)	,,	१६६८	१२	
८६	७६४९	प्रथमसंधिभाषाटीका	,	१९वीं श	४	अपूर्ण
८७	४४७२	सारस्वतप्रक्रिया	,	१७६१	५६	लि स्था सुवामापुर
८८	५२४१	, (पचसन्ध्यन्त)	,,	१९वीं श	२३	प्रथम पत्र अप्राप्त
८९	५०४५	(त्रिसगसन्ध्यन्त)	,,	,,	१२	
९०	६११६	,		,	७३	अपूर्ण
९१	६८२३	सारस्वतप्रक्रिया (साथ)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८वीं श	६	अपूर्ण
९२	६९२३			१७वीं	१४	
९३	६५०४	सारस्वत (आख्यातप्रक्रिया)	महीदास	१८५७	५६	लि महात्मा रामलाल नवदा निवासी
९४	६९६५	,,	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८८	५८	
९५	६८९३	,, तद्धितप्रक्रियान्त	,	१७४२	४४	
९६	७५६९	, तद्धितप्रक्रिया	,,	१९वीं श	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
९७	६८८९	सारस्वत (कृत्प्रक्रिया)	अनुभूतिवरूपाचार्य	१७४७	४९	लि मुनि तेजपाल सिलीवदगामे
९८	७५८८	,, (कृदन्तप्रक्रिया)	,,	१८५७		लि. महात्मा रामलाल नेवटा
९९	७५९८	,, ,,	,,	१८१९	५५	
१००	७६३६	,, ,,	,,	१९वीं श.	२७	
१०१	६००४	सारस्वतमाधवीवृत्ति. (सिद्वान्तरत्नावली)	माधव भट्ट	१८२५	११२	लि देवचन्द्र
१०२	४१९५	सारस्वतसटीक	अनुभूति स्वरूपाचार्य टी पुञ्जराजनरेन्द्र	१६५४	९२	
१०३	४९५९	,, पूर्वार्द्ध	,,	१७वीं श.	५१	पत्र स० ३६ से ४२ तक अप्राप्त
१०४	६८६८	सारस्वतटीका	पुञ्जराज	१८वीं श.	१००	
१०५	५५०२	सारस्वतचन्द्रिका	चन्द्रकीर्ति	,,	२०८	आद्य २ पत्र अप्राप्त लि भैरवबकस व्यास केकडी में लिखित
१०६	६६५५	सारस्वत (चन्द्रकीर्तिव्याख्या)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७वीं श.	१८४	पत्र ९३, ९४, ९५ अप्राप्त
१०७	६८८३	सारस्वतटीका	चन्द्रकीर्ति	१७४५	१७०	
१०८	६८८७	,,	,,	१८वीं श.	२४६	आद्य पत्र १ से १० तक, ११८, १३३वां अप्राप्त
१०९	७४२२	सारस्वतसटीक	,,	१७वीं श	१८७	
११०	७२३६	,,	,,	,,	१२८	
१११	७५११	सारस्वतदीपिका	चन्द्रकीर्तिसूरि	१६४४	९५	
११२	४१९६	सारस्वत (प्रसादटीकोपेत)	वासुदेवभट्ट	१८वी श	७६	
११३	७४६०	सारस्वतवृत्ति (आख्यातपर्यन्त)	गोपाल	,,	११८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	६०४७	सारस्वत (पूर्वार्द्ध) भाषाटीकासह	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१६वीं श	५२	
११५	६०४८	(कृदन्तप्रक्रिया)	,,		६०	
११६	५१४६	सारस्वतधातुपाठ	हर्षकीर्तिसूरि	१८०४	४२	
११७	५६५१		,,	१६६३	६२	लि स्था-मोसत्राम
११८	५६८७	,,	,,	१७४५	४१	लि मंगलपुर
११६	६०२३	सारस्वतरूपमाला	पद्मसुन्दर	१८६०	६	लि ध्यानतमुनि सावलगजमध्ये लोहमन्दयो
१२	६७६३	सारस्वतप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८वीं श	५३	
१२१	६६६८	सारस्वतप्रक्रिया (कृदन्त)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८८८	१७	लि रामदास
१२२	६७५८	तद्धितवृत्ति	नरेन्द्रपुरी	१६०७	६३	लि
१२३	४२०१	सारसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१८६६	२१	
१२४	४२०२		,,	१८वीं श	४६	
१२५	७२०८	सिद्धहैमशब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श	२५	
१२६	४३६८	,, (दुर्गपदव्याख्या)	,,	,,	८	
१२७	५६१७	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति (अष्टमोऽध्याय)	,,	१६४५	३४	लि पं गुणविधानमुनि
१२८	५६२०	सिद्धहैमशब्दानुशासनाध्याय चतुष्कावचूरि	,,	१६वीं श	२०	
१२६	५६१६	सिद्धहैमशब्दानुशासनपदपादावचूरि	,,		२७	
१३०	५६२१	सिद्धहैमशब्दानुशासनधातुपाठ		१८वीं श	८	
१३१	५६७६	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	,,	,,	११३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	५९१४	सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श	१८	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्तम्
१३३	५९१८	,, ,,	,,	१६वीं श	१५	
१३४	५९१५	,, ,, पञ्चमाध्याय	,,	,,	२९	
१३५	५९१६	,, ,, षष्ठसप्तमाध्यायौ	,	,,	२५	
१३६	५८९८	सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्र	१५वीं श	३९	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्ता
१३७	५८९७	,, ,,	,,	,,	४७	तृतीयाध्यायद्वितीयपादान्त
१३८	७१९०	, ,,	,,	,,	२५	द्वितीयाध्यायद्वितीयपादपर्यन्त
१३९	७१९४	सिद्धहेमशब्दानुशासनसूत्रपाठ	,,	१५३३	१०	लि प धर्ममगतगणि देलुलिग्राम
१४०	७१९८	,, ,,	,,	१६वीं श	५	
१४१	५४६६	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	१८३४	३१२	
१४२	७०७४	,,	,,	१८वीं श	३५	
१४३	४३७५	,,	,,	,,	१२३	द्विरुक्तप्रक्रियान्त
१४४	५५३९	,,	,,	,,	७३	तिङन्तप्रकरण
१४५	४३२१	,,	,,	,,	३०८	कृदन्तपर्यन्त
१४६	६७९०	,,	,,	१८५४	४१	कृत्प्रक्रिया
१४७	६८०८	,,	,,	१९वीं श	२०६	
१४८	४२७९	,, तत्वबोधिनीव्याख्या	ज्ञानेन्द्रसरस्वती	,,	१२९	तिङन्तकाण्ड
१४९	६४६२	,, ,,	,,	१८३०	८७	कृदन्तमात्र
१५०	७१२४	,, व्याख्या	भट्टोजीदीक्षित	१९वीं श	३-९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४३७४	सिद्धान्तकौमुदी लघुशब्देन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ)	भट्टोजि नागेश	१६वीं श	३१२	समासाश्रयविधिपर्यन्त
१५२	४३७६	सिद्धान्तकौमुदी लघुपरिभाषेन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ)	भट्टोजि नागोजी	,	१२६	तद्धितप्रक्रिया द्विरुक्तप्रक्रिया
१५३	६८६५	सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	१७८०	६५	लि क प नरसिंह
१५४	६८६६	,		१६२३	१४५	लि क लक्ष्मीचन्द्र बलदेव
१५५	७०६२			१६वीं श	५६	
१५६	६७६८	चुरादिप्रकरण	चन्द्रकीर्ति	१८वीं श	२५	
१५७	६८८८	(कृत्प्रक्रियान्त)	रामचन्द्राश्रम	१६२५	११२	लि लक्ष्मीचन्द्र
१५८	५८८२	सटिप्पण		१८७६	१४०	लि चक्रपाणि
१५९	५८८३	पूर्वार्द्ध		१६वीं श	६४	
१६	७३५०	सटीक		१८वीं श	३०३	अपूर्ण
१६१	६५२२	सुबोधनाम्नीव्याख्यापूर्वार्द्ध	सदानन्दगणि	१६वीं श	१४२	
१६२	६२६५			१८८३	६	
१६३	५६७१	सिद्धान्तरत्नशब्दानुशासन	जिनचन्द्र	१८८३	४३	
१६४	५३८५(५)	सिद्धसूत्र' (पञ्चसन्धिपर्यन्त)		१६वीं श		
१६५	५८६६	हैमधातुपारायण	हेमचन्द्र	१७वीं श	१००	
१६६	५६०८	हैमलिंगानुशासनम (दुर्गपदप्रबोध)	श्रीवल्लभगणि	,	४४	संवत १६६१ मे जोधपुरमें श्री सूरसिंहके राज्यमें रचित

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४८३	अनेकार्थध्वनिमञ्जरी		१६वी श	१३	
२	४४८४	,,		१७१४	२१	
३	६३२५	,,	काश्मीरक महाक्षणक	१८२५	१३	
४	६३३३	,,	,,	१६वीं श	१६	
५	६२२६	,,	,,	१८४७	१७	लि क कन्हीराम मिश्र
६	७००२	,,	अमरसिंह ?	१८७४	१७	लि क. नाथूराम त्रवाडी पल्लीवाल
७	६५६६	,,		१८८१	६	लि क रामनारायण
८	४३०५	अभिधानचिन्तामणिनाममाला	हेमचन्द्र	१७वीं श.	७०	
९	४३२२	,,	,,	१५३८	८१	आद्य पत्र नहीं। तृतीयमे षष्ठकाण्ड तक
१०	४३२३	,, टीका	टी. वल्लभगणि	१७वीं श	२१४	सारोद्धार टीका
११	४४८१	,,	हेमचन्द्र	१८वी श.	३१	तृतीय काण्डान्त
१२	६११८	,, सटीक	,,	१६२७	१४८	स्वोपज्ञ टीका
१३	७२१०	,,	,,	१६०२	२०७	श्री पत्तनमे लिखित
१४	५७३४	,, (शेषसग्रह)	,,	१८५२	५६	लि. यशोविजय
१५	७१६५	,, (सशेषसटिप्पण)	,,	१८वीं श.	४७	
१६	७२३७	,, (बीजकसह)	,,	१७८०	७०	लि. क रामकृष्ण ज्योतिर्वित् विष्णुदुर्ग (कृष्णगढ ?)
१७	७३३५	अभिधानचिन्तामणिटीका	,,	१६वी श	१६६	स्वोपज्ञ टीका
१८	७४५६	,, (व्युत्पत्तिरत्नाकर-नाम्नीवृत्ति)	टी. देवसागर रविचन्द्रशिष्य	१६वीं श	४०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४३२४	अमरकोश (अमरचन्द्रिकाटीका)	टी परमानन्द विष्णुपुरी दण्डिपुत्र	१७८३	८७	
२०	४४७३	अमरकोश (प्रथमकाण्ड)	अमरसिंह	१८२९	३८	
२१	४४७४	(द्वितीयकाण्डान्त)	,,	१९वीं श	६३	
२२	४४७५	, (तीनों काण्ड)	,	१८६३	२६	
२३	५४४९	सटीक	टी क्षीरस्वामी	१६५६	८१	मथुपुरीमध्ये केशवराज्ये कालि दीतटे
२४	५४६३	,	अमरसिंह	१९वीं श	१६७	१५२ वां पत्र अप्राप्त
२५	६१२६	, द्वितीयकाण्डान्त	,	१८वीं श	३९	
२६	६०२९	, सधाख्याटीका	टी भानुजी दीक्षित	१९वीं श	२७७	
२७	६२६८	,	,	१८६५	११४	लि बलदेव गोस्वामी
२८	६४५६	अमरविवकाख्या	टी महेश्वर शर्मा	१९वीं श	४८	प्रथमकाण्ड
२९	६४५७	, ,		,,	१४२	द्वितीयकाण्ड
३०	६४५८	, ,	,	,	१०८	"पुण्यपत्तने पाठशालायां शिलाक्षरयन्त्रे मुद्रितम १७७३ शाके" ऐसा अन्तमें लिखा है
३१	६५१७	तृतीयकाण्ड	अमरसिंह	१८६८	६६	लि क वंशीधर कवीश्वर
३२	६६१२	,	,	१९वीं श	४४	
३३	६७८४	अमरकोषटीका (द्वितीयकाण्डान्त)	टी बृहस्पति	१७वीं श	४२१	५२वां व ६५ वा पत्र अप्राप्त जीर्ण प्रति
३४	६८८१	,, सटिप्पण ,		१७वीं श	६९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	६८८६	अमरकोषटीका सटिप्पण (द्वितीयकाण्डान्त)	अमरसिह	१८वी श	५३	पृथ्वीवर्ग से द्वितीयकाण्डान्त
३६	६८६१	,, (अव्ययवर्ग, सविवरण)	,,	१७४२(?)	३३	
३७	७००४	,,	,,	१६वी श	७६से१०६	अपूर्ण
३८	७००५	,, (द्वितीयकाण्ड)	,,	१८६४	११६	
३९	७१३०	,,	,,	१८६३	११२	
४०	७७६६(३)	अमरकोश	अमरसिह	१८५६	६७	चित्र स० २
४१	७४६१	अमरकोशोद्घाटन	क्षीरस्वामी	१६वीं श.	१५१	
४२	५६६८(१)	एकाक्षरनामकोश	क्षपणक	१६वीं श	१–३	
४३	५४१४(१)	एकाक्षरीकोष		१६वीं श	१–४५	
४४	५६४८	धनञ्जयनाममाला	धनजय	१६१५	१७	
४५	५३८५(३)	,,	,,	१६वी श.	१६६–१७७	
४६	६११४	शारदीया नाममाला	हर्षकीर्ति	१८वीं श.	२३	प्रदर्शनीय; चित्र २
४७	६७५४	,,	,,	१८६६	२८	लि क मोतीगर गाव लाभूडामध्ये
४८	७३७०	,,	,,	१८६४	१६	लि. क ज्ञानसागर उदयपुरमध्ये
४९	५६५०	शिलोञ्छनाममाला	हेमचन्द्र	१६४५	३	लि क कुशलगणि वाचनाचार्य
५०	५६१०	शेषनाममाला	,,	१६वी श	६	
५१	५६३७	हैमलिङ्गानुशासन सविवरण	,,	१७वीं श	८०	स्वोपज्ञ
५२	६१७६	हैमलिङ्गानुशासन	,,	१८वीं श.	६	
५३	६६८३	हैमीनाममाला	,,	१७६३	६०	लि. मोहणमुनि बाडोलीग्रामे

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता अथवा भाष्यकार	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६७७१(२)	[illegible]	[illegible]		४५-४६	
२	६८११(१)	[illegible]		१८५०	५०-५१	
३	६६८१	[illegible]		१८३०	८	
४	६९५२(७२)	[illegible]		१ वीं श	१२२ वां	
५	४४६२	[illegible]	[illegible]	१७८७	१७६	० प्रथम पत्र अप्राप्त लि क पुरोहित सदाराम लि स्था शिवपुरी
६	६६३०	[illegible]		१९वीं	१८४	
७	७३१६	[illegible]		१७३३	२४	
८	६७६६(१)	[illegible]	[illegible]	१७७५	१०(११)	
९	५०६६	[illegible]		१९४२	२	
१०	५११५	[illegible]		१९वीं श	५	
११	७०९६	[illegible]		१८वीं श	५	
१२	४८५२	[illegible]	[illegible]		६	लि क जीवन
१३	४८७८			१९५८	११	
१४	७०६१	[illegible]	[illegible]	१८६३	१	
१५	४८६१	[illegible]	[illegible]	१९वीं श	५	
१६	५६१८	[illegible]	उदयप्रभ [illegible]	१७वीं श	६७	
१७	५६०७	[illegible]	उदयप्रभ	१९वीं श	१४	
१८	५०६२	[illegible]		१९वीं श	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	५८२७	उडुदायप्रदीप (लघुपाराशरी)	टी.–लक्ष्मीपति कृष्णानन्दसुत	१९२१	५५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२०	४७५३	उपदशाकोष्ठकानि	गौरीजातकान्तर्गत	१९८०	१०	लि. क नरहरि
२१	७१०२	उपदशाफलम्		१८वी श.	२	
२२	६२८५	कर्मप्रकाशिकावृत्ति	समरसिंह वृत्तिकार अज्ञात	१८६३	१३	
२३	७६११	कर्मविपाक (भर्तृहरिराजेश्वरसंवाद)		१८४४	४	लि. क केशवदास गढ नवनोरमध्ये
२४	७९१५	कर्मविपाक (सूर्यार्णवगत)	ब्रह्मनारदसंवाद	१८०९	५१	लि क. शिवशङ्करव्यास हरिदुर्गमध्ये
२५	६२३५	कर्मविपाक	,,	१८३२	४१	
२६	४६९०	करणकुतूहल सस्तबक		१८५०	२१	लि क चतुरविजयगणि पुष्पावतीनगरे प्रथमपत्र अप्राप्त
२७	४८७३	करणकुतूहल	भास्कराचार्य	१७७८	११	लि क. औदुम्बरज्ञातीय विश्वेश्वरात्मज केवल
२८	४८८४	,,	,,	१७०२	२२	श्रीपाटणनगरे हरजीसुत सुरजीलिखितम्
२९	५७०५	,,	,,	१९वी श.	१९	
३०	६४३५	,, (मूल)	,,	१८४४	१०	लि क. अजवसुंदर खेरवामध्ये
३१	६८२४	करणसारिणी (ब्रह्मतुल्य)		१८वी श.	१९	प्रथमपत्रअप्राप्त
३२	५७११	कल्पवल्लीहोरा	विट्ठल	१८९४	५	लि क ब्रजवासी सिरलु, ललिताघट्टे काश्याम्
३३	४८५९	किरणावली	सूर्यसिद्धान्तगत	१९वी श.	३९	प्रथम ४ पत्र खडित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	६०६४	कामधेनुपद्धति (कामधेनुजातक)	जयराम भट्ट	१८७६	७६	लि क जगन्नाथ व्यास पत्र ६६ ६७ अप्राप्त
३५	४६ २	कामधेनुसारिणी		१८४४	१६	लि क चतुरविजयगणि पोहकरणमध्ये
३६	५२४६	कालज्ञान		१९वीं श	५	
३७	५५२९	केरलजातकरत्नावली		१९२५	२१	
३८	५७५८	केरलप्रश्न		१८वीं श	५	
३९	६३०७	केरलप्रश्नशास्त्र	नन्दराम	१८२४	२७	
४०	७०३५	केशवीयजातकपद्धत्युदाहरण	विश्वनाथ दैवज्ञ	१८वीं श	२९	रचनाकाल १५४०
४१	६५४०	केशवीयपद्धत्युदाहरण	"	१७६०	२५	लि क उदयविजय
४२	५३१४	केशवीयपद्धति	केशव	१८२८	२२	लि क स्वामीबालचन्द्र ग्वालियरमध्ये
४३	७१००	केशवीयसूत्र टि (जातकपद्धति)		१८वीं श	४	
४४	६०६५	कोष्ठक (नरपतिजयचर्यागत)	नरपति कवि चन्द्र	१९वीं श	२	
४५	४८८०	खेटकर्म (करणकुतूहलान्तर्गत)	भास्कराचार्य	१७६८	९	लि क गणि भाग्य सौभाग्य
४६	५७६६	खेटकुतूहलोदाहृति	विश्वनाथ	१९वीं श	६९	रचनाकाल १५३४ शाके
४७	६३८८	खेटकौतुकम्	सूर्यमिश्र	१८वीं श	२	रचनाकाल सं० १६७६
४८	४७३१	खेटसिद्धि	दिनकर	१९वीं श	३०	रचनाकाल संवत १६३५
४९	५०१२	ग्रहगोचरफल		१९वीं श	३	
५०	४१०४	ग्रहणपद्धति	मिश्र नन्दराम	१८३२	५	* रचनाकाल संवत १८२० स्थान काम्यकवन

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता ग्रादि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१	४७६१	ग्रहणपद्धति	मिश्रनन्दराम	१९वीं श	६	
५२	५३२४	ग्रहभावविचार		१८वी श	१०	
५३	४८५४	ग्रहलाघवटीका	विश्वनाथ	,,	५०	
५४	४६७७	ग्रहलाघवटीकोदाहरण	गणेशदैवज्ञ टी. विश्वनाथ	१८४२	४१	लि क. ऋषि भाणजी
५५	७६६३	ग्रहलाघवसिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१९३०	१४१	
५६	५२१९	ग्रहलाघवविवरण	,,	१९२४	६२	पत्र १७वा अप्राप्त
५७	५५३८	ग्रहलाघवाख्यसिद्धान्तरहस्योदाहृति	विश्वनाथ दैवज्ञ	१८००	३८	लि क. कल्हा केसोराय श्री रूपनगरमे लिखित
५८	४८९२	ग्रहसिद्धि	महादेव	१८वीं श	३	
५९	७६७१	ग्रहान्तर्विचारतत्व	दुर्गाशङ्कर पाठक	१९वी श.	१	
६०	५१७१	गणकमण्डन	नन्दिकेश्वर	१७९४	५२	
६१	४३९२	गणितनाममाला	हरिदत्त	१८वीं श	४	* लि क. जीवकीर्तिगणि लि स्था –तलवाडा
६२	४७२०	गणितकौमुदी	नारायणपडित (नृसिंह दैवज्ञसुत)	१९वी श	३७	
६३	४७७१(१)	गणितलीलावती आदि	भास्कराचार्य	१८०५	५४१–४५	*
६४	७१११	गणितनाम्माला	हरिदत्त	१८वी श.	६	
६५	६७६४	,,	,,	१९०६	८	
६६	७६१८	गर्गमनोरमा	गर्गऋषि	१९वीं श	१०	
६७	६६०४	गर्गमनोरमा टीका	,,	,,	१४	लि द्ग गोपीनाथ
६८	७०७८	गुरुचार		१८८०	३७	,, भगवानदास विक्रमपुरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	५११६	गूढार्थप्रकाश पूर्वार्द्ध (सूर्यसिद्धान्तकी टीका)	रङ्गनाथ	१९०६	१८६	
७०	५११५	ग्रहप्रवेशप्रकरण (प्रमिताक्षरा व्याख्यासहित, मुहूर्तचिन्तामण्यन्तर्गत)	रामदत्त	१९वीं श	१२	र का भज भुजयुग्मिते गते (१५२२)
७१	६७११	गोचरग्रहप्रकाश	श्रीपति भट्ट	१९वीं श	४	
७२	५१४६	गौतमीयजातक सटीक (त्रिपाठ)	गौतम मुनि टीका-लक्ष्मीपति	१८८४	६	
७३	५८०८	चन्द्रसूर्यग्रहणविधि		१९वीं श	१६	
७४	४७४५	चन्द्रार्की		१८वीं श	१४	
७५	४८७०		दिनकर	१८३६	३	लि क औदुम्बर शिवानन्द घाटजाख्ये ग्रामे रचना
७६	४८६३	चन्द्रार्की पद्धति		१८वीं श	३	
७७	५२६३	चन्द्रोन्मीलनदीपिका		१९३१	४३	
७८	४६७२	चमत्कारचिन्तामणि	नारायण	१९००	७	
७९	६८३३(८)			१८५०	४०-५०	गोस्वामी भोलानाथजीकी पोथीसूं लिखी
८०	५५८४	(त्रुटित)		१८३०	८	कृष्णगढ मध्ये लि क राधाकृष्ण ब्राह्मण
८१	४६६८	चमत्कारचिन्तामणिटीका भावार्थदीपिका	नारायण, टी० धर्मेश्वरमालवीय	१९०१	२८	लि क सायलापुर वास्तव्य औदीच्यज्ञातीय व्यास श्रीकेशवजी माधवजी सरधर मध्ये
८२	५७७१	चमत्कारचिन्तामणिव्याख्या	मू० नारायण	१८४०	१६	लि क चन्द्र मिश्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६६२९	चमत्कारचिन्तामणि सटीक	नारायण	१८२८	३०	लि क. कवर विजयलालराम
८४	४६६४	,, सस्तबक		१८२४	१२	,, प्रमोद विजय
८५	४९७२	,, सार्थ	राजर्षिभट्ट	१८२१	२१	प्रति कीटविद्ध है
८६	५०५१	चौरयोगप्रकरण		१९०६	११	लि.क महात्मा जोशी पन्नालाल
८७	६७७७	चौरासीवोषनामानि		१९वी श.	१	
८८	५६२४	ज्योतिर्विदाभरण	कालिदास	१९०३	१००	रचनाकाल स० २४ (?)
८९	६९०४	ज्योतिर्विदाभरणटीका	,, टीका-भावमुनि	१९वी श.	२१८	अपूर्ण
९०	५७२१	ज्योतिश्शास्त्रभाष्य	शेषनाग	१८७५	३२	
९१	६८३३(७)	ज्यौतिष के स्फुट श्लोक		१९वी श.	३७–३९	
९२	४६६९	ज्योतिश्चन्द्रार्क	महादेव (हीरामणिसुत, हेरम्बपौत्र)	१८३६	५१	रचनाकाल स० १७८३ लि क. नन्दराम
९३	५२९९	ज्यौतिषनिबन्ध		१८वी श	४५–७५	अपूर्ण
९४	४८९६	ज्यौतिषमकरन्द	अमरसिंहसूनुनन्दन	,,	६	
९५	७०९७	ज्यौतिषमाला		१८वी श.	२	लि.क. यति भवानीराम आमझरा मध्ये
९६	४२८६	ज्यौतिषरत्नमाला	श्री श्रीपति	१७वी श.	१९	*
९७	४४०५	,,	,,	१६४६	३३	* प्रथम पत्र अप्राप्त
९८	४७६८	,,	टीका-बैजापंडित	१७५७	१०७	
९९	६८७७	,,	श्रीपतिभट्ट	१७५५	१७	लि क. राजसोम
१००	७०४९	,,	,,	१७४९	५७	,, व्यास चतुर्भुज
१०१	७०९९	ज्यौतिषरत्नमाला (वृन्दावनशास्त्र)		१८वी श.	३	विवाह सम्बन्धी लग्नदोषादि का वर्णन

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	६३५०	ज्योतिषरत्नमाला षट्पञ्चाशिका ज्योतिषसार भुवनदीपक आदि		१६२०	८२	योगिनीपुरमध्ये लिखित
१०३	६२७८	ज्योतिषरत्नमालाव्याख्या	श्रीपति	१६वीं श	४४	
१०४	७८२५	ज्योतिषरत्नमाला	"	१८७१	६४	लि क गम्भीरचन्द खिलचीपुर
१०५	६६७२	ज्योतिषसंग्रह गुटका		१६वीं श	१५५	
१०६	५८१३	ज्योतिषसार		१६वीं श	६८	अपूर्ण
१०७	४८६१	, सस्तबक		१८वीं श	२०	
१०८	४४०७	ज्योतिषसारसंग्रह (सस्तबक)	अज्ञात	१७८६	२५	* लि क प० श्री खुसालसागर गुणविजय स्थान–नरायणानगर
१०९	४४१०	(साथ)		१८वीं श	२६	*
११०	६५३७	, (सस्तबक)		१८१७	३३	लि क नवनिधविजय महिमापुरमध्ये
१११	५६३१	ज्योतिषसिद्धान्तसार	मथुरानाथ मालवीय शुक्ल			रचनाकाल शक १७०४ डालचन्द्र नपाज्ञया ग्रंथ रचना
११२	४८६४	जगद्भूषण	हरिदत्त भट्ट	१७वीं श	४	महाराणा जगतसिंह नामाङ्कित जगदभूषण। रचनाकाल–स० १६६५
११३	५७१०	जगदभूषणसारिणी		१८२६	६५	
११४	४७२७			१६वीं श	६०	
११५	४७८७	,		१८वीं श	५५	रचनाकाल स० १७६८
११६	४८८२	,		१७३७	५३	लि क माणिक्यविजय ज्ञान–विजयशिष्य चन्देलाग्राममध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११७	४४५२(३७)	जन्मग्रहफल		१८वी श.	४०–४१वा	लि क. प्रीतसौभाग्य
११८	६३९६	जन्मपत्रीप्रकार	जयगणि	१९वी श.	५१	* प्रथम पत्र अप्राप्त
११९	४६९५	जन्मपत्रीपद्धति	गोपाल ?	१८२०	८	लि क. चतुरविजय
१२०	५२१५	,,		१८वी श	८	*
१२१	५६७७	,,				आद्य के ४ पत्र खडित
१२२	६४२९	,, (स्त्रीजातक) (अन्तर्दशाध्याय)	लब्धिचन्द्र	१७५१	१०	स्त्रीजातक ६ पत्र अन्तर्दशाध्याय ४ पत्र अपूर्ण
१२३	७०३९	जन्मपत्रीपद्धति		१८वी श.	९८	कीटविद्ध प्रति है। इसमे सभी विषय सगृहीत हैं।
१२४	७०८२	,,	हर्षकीर्तिसूरि	,,	४५	अपूर्ण
१२५	४७५१	जन्मपत्रीपद्धतिसारोद्धार		१९वी श	१४६	
१२६	६३८६	जन्मपत्रीविचारेकालवष्ट्राचक्रादि		१८वी श.	३२	
१२७	४४४०	जातककर्मपद्धति	श्रीपति	१४८७	१६	लि क विश्वनाथ
१२८	४६७४	,,	,,	१९००	७	,, लीलाधर देराश्री पुरुषोत्तमसुत
१२९	४७०४	,,	,,	१८३७	१५	
१३०	४८६९	,,	,,	१६९१	९	
१३१	५५१३	,,	,,	१८वी श	४४	अपूर्ण
१३२	६४३०	,, (सव्याख्या)	,,	१७४१	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त लि स्था बीकानेर
१३३	५८२५	, (प्रौढमनोरमाटीकासहित)	केशवदैवज्ञ टी दिवाकर नृसिहगणकसुत	१९वी श.	१४१	आद्य २ पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३४	५५०६	जातकग्रहफल (जातकपद्धति)	महादेवद्वच	१७५२	२४	लि क कल्याणहंसगणि ग्रवरगाबाद
१३५	४६६१	जातकदीपिका	हर्षविजय	१८८६	७	लि क नरेन्द्रविजय राजस्थानी भावार्थसहित
१३६	४६६६	,		१८४९	६	
१३७	४८४२	, (सस्तबक)		१८२२	१८	लि क श्रीकमजीनिष्य
१३८	४५२२	जातकदीपिकाभिधानपद्धति (सस्तबक)	,,	१८६२	११	रचनाकाल स० १७६८ रचनास्थान नराकरपत्तन लि क ऋषि मघजी स्थान पीचुमवपुर
१३९	४७०५	जातकपद्धति	केशव	१८१४	५	लि क शिवलाल
१४०	४६६३		,	१८६६	६	
१४१	७१६२	,, (उदाहरण)	विश्वनाथ	१८३६	३७	
१४२	५४३३(२)	जातकरत्न (जैमिनीयसूत्रसार)		१९वीं श	५५–५६	अपूर्ण
१४३	५६१३	जातकसंग्रह	मदनस्वामी	१९वीं श	२१३	रचनाकाल स० १६००
१४४	५०४७	जातकसार		१८वीं श	३ स १६४	अपूर्ण
१४५	६३६१	, (चमत्कारचिन्तामणिभाषाटीका)	विद्यानारायण	१८१७	११	राजस्थानी भाषासहित श्रीकृष्णगढ में लिखित
१४६	६३६३		,	१८२७	१७	राजस्थानी भाषासहित
१४७	६७६४	जातकाभरण	ढुण्ढिराज	१८७८	६०	लि कल्याणपुरीमध्ये लि क रामवल्लभ
१४८	५३०६	जातकालङ्कार	गणेशदत्त	१९०६	३७	अपूर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४९	६८३३(३)	जातकालङ्कार	गणेशदैवज्ञ	१८८१	७–२५	लि.क अमृतरामजी
१५०	६८३३(५)	जातकत्रिशती	हिल्लाज	१९वीं श	३३–३५	
१५१	५५३३	जैमिनीयसूत्रव्याख्या	नीलकण्ठ	१९२४	४२	लि क. पुरुषोत्तममिश्र
१५२	६२९०	,,	,,	१९११	२७	लि क गुसाई बालमुकुन्द
१५३	७५१०	जैमिनीसूत्रवृत्ति	वृ० बालकृष्णानन्दसरस्वती	१८२१	५९	लि.क. रामनारायण ब्राह्मण
१५४	६३९५	जोतिकरा छुटकसिळोक		१९वीं श	९	राजस्थानी भाषासहित
१५५	५२९०	तत्वप्रदीपजातक	श्रीपतिपण्डित	१८७१		लि क. बालमुकुन्द
१५६	५३४०	,,	,,	१९१७	९	लि क. रघुनाथ चोसावासी स्था. भरथपुर
१५७	५५२२	,,	,,	१९१४	९	लि क रामगोपाल दाधीच मनोहरपुर
१५८	६६०५	,,	,,	१८५३	७	
१५९	५८८४	ताजिककल्पलता	जयराम	१८२६	३५	लि क. व्यास मन्नूलाल
१६०	६२३७	ताजिकतन्त्रसार	समरसिंह	१७१०शाके	१०	लि.क मनसाराम शर्मा
१६१	४७३८	ताजिकनीलकण्ठी	नीलकण्ठ	१८३७	३४	लि क चिमनलाल ब्राह्मण, सवाई जयपुर
१६२	५१२८	,,	,,	१८३५	२६	लि.क. ज्ञानसुन्दर ऊर्जपुर रचनाकाल स० १६४४
१६३	७६५७	ताजिकपद्मकोश		१९वीं श.	९	लि क. आशानन्द
१६४	५२६५	ताजिकफलतन्त्र	नीलकण्ठ	१७६८	५–५८	लि क किशोरीलाल
१६५	६१०१	ताजिकभूषण	गणेशगणक ढुढिराजात्मज	१८९५	२६	लि क विहारी सहोरानगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६६	६२४२	ताजिकभूषण	गणकगणक ढुंढिराजात्मज	१८२१	३१	लि मनसाराम उपाध्याय
१६७	७०५३		"	१७४३	४२	लि चतुर्भुज व्यास कृष्णगढमध्ये
१६८	७१२७			१८६१	४३	लि आत्माराम तिवाडी पत्र ६ से १३ अप्राप्त
१६९	५४५३	ताजिकभूषणटीका बालबोधिकाख्या	मुञ्जादित्य	१९वीं श	४२	
१७०	४७७०	ताजिकसार जिणरस	हरिभट्ट	१८७१	६४	भाषार्थसहित अपूर्ण
१७१	४८४६	ताजिकसार		१८०५	१९	लि क मुनि गागजी मुनिजी धनजीशिष्य
१७२	६०५५	"		१७३९	२६	
१७३	६८७८	"		१७९५	२३	
१७४	६४२०	ताजिकसारवृत्ति	सामन्तहर्षरत्नशिष्य	१८वीं श	२३	*
१७५	७४५५	ताजिकसिद्धान्तसार	समरसिंह	१८६४	२५	लि फतेहचन्द मारोठ स्था सीकर
१७६	४६६०	ताजिकालंकार	सूर्यकवि	१८४१	१०	लि उदयराम ब्राह्मण
१७७	७०९५	ताजिकालङ्कार		१८४६		लि क शिवशङ्कर
१७८	५३५०	ताजिकोदाहरण	नीलकण्ठ	१९वीं श	२३	अपूर्ण
१७९	५१२७	तात्कालिकऋजुचक्रविवरण		१९००	१२	लि अमरराम
१८०	७५७९	ताराविलास	शाम्भववर्धनाथ	१९वीं श	२	लि रामगोपाल
१८१	४७४४	तिथिकल्पद्रुम		१८वीं श	१५	राजस्थानी भाषासहित
१८२	४७६२	तिथिचिन्तामणि	गणेशदैवज्ञ		१८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	४७४२	तिथिमञ्जरी		१८वी श	२२	राजस्थानी भाषासहित १६०३ शाके का उदाहरण है।
१८४	७५९६	द्वादशभावफल		१८२३	३९	
१८५	४७७२	द्वादशभावश्लोक		१९वी श.	१४	लि क. सीताराम चादसेणमध्ये
१८६	४७१३	दशाफल	(ताजिकरत्नान्तर्गत)	,,	३	
१८७	४८६७	दीपप्रकाश (वृद्धपाराशरीय)		१९२६	४५	लि क बाछूराम व्यास जाट का कूवा जयपुर
१८८	७३८०	दोषपृच्छा		१८वी श.	१	राजस्थानी अर्थ सहित
१८९	५७५१	ध्रुवभ्रमयन्त्र	नर्मदाप्रसादसुत	१९१४	६	लि क. व्रजवासी, जयपुर
१९०	५५५५	नरपतिजयचर्या (जयलक्ष्मीनाम्नीटीकासहित)	नरपतिकवि	१८वी श.	१७७	प्रथम पत्र अप्राप्त
१९१	५८३०	नरपतिजयचर्या	,,	१८९९	१२६	* ७३वां पत्र अप्राप्त
१९२	५९४०	,,	,,	१७५८	९०	लि. परमानन्द मिश्र चित्रयन्त्रयुक्त
१९३	६०९१	,, (भूत्रलयपर्यन्त)	,,	१९वीं श.	४३	
१९४	६९१०	,,	,,	१८वी श	९१	१ से १६ व ८४ से ८८ तक अप्राप्त
१९५	७१३२	,,	,,	१८वी श	३९–८०	अपूर्ण
१९६	७८३६	,,	,,	१८४९	१२४	अपूर्ण, रचना १२३२ (?)
१९७	७५८७	नरपतिजयचर्याटीका		१९वी श.	९७	पत्र ३, ६, २७, अप्राप्त
१९८	४७७१(३)	नवग्रहयन्त्रविधि	महाभारतान्तर्गत	१८०५	४६–५२	
१९९	४८५१	नवरोजप्रकाश	शिवलालपाठक	१९वी श	३	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२००	७८१८	नष्टजातक	(रुद्रसहितान्तगत)	१८वीं श	७६	
२०१	७०८८	नष्टोद्दिष्टविधि		,,	२	*
२०२	४७७१(४)	नक्षत्रनिघटु, ग्रहनिघटु		१८०५	५३–५४	
२०३	७६५२	न ड समुच्चय		१९वीं श	३	
२०४	७६६६	नारचन्द्र	नारचन्द्र	१८६६	१८	लि क अमतविजय
२०५	६८२१	,, प्रथम प्रकरण	,,	१७५६	११	लि क रतना तिलकधीरशिष्या जतारणमध्य
२०६	४०४७	,	,,	१८वीं श	१४	
२०७	७०१०	द्वतीय प्रकरण	,,	१८०६	२७	*
२०८	४३५२	नारचन्द्रयन्त्रकोद्धार सटिप्पण	टी श्रीसागरचन्द्रसूरि	१६५१	३०	लि स्था कोरटानगर
२०९	६६५०	नारचन्द्र सटिप्पण (प्रथम प्रकरण)	टी सागरचन्द्रसूरि	१८वीं श	२६	
२१०	६७७६	नारचन्द्रसूत्र	नारचन्द्र	१७९९	१९	राजस्थानी भाषासहित
२११	५३२९	निबन्धचूडामणि	मिश्र यशोधर फसारिमिश्रात्मज	१९वीं श	६६	अपूर्ण
२१२	६२५२		,,	१७५१	२०	
२१३	६७०३	प्रश्नकौमुदी (ताजिकमतानुसार)		१९२५	४८	
२१४	४८९८	प्रश्नग्रन्थ		१८वीं श	२२	
२१५	५०६३	प्रश्नचूडामणि		१९वीं श	२३	
२१६	४६८३	प्रश्नचूडामणिसार		१९४३	७	लि बुद्धिसागरगणि कच्छदेशमध्ये
२१७	५८११	प्रश्नतत्त्व	चक्रपाणि सत्यधरात्मज	१९वीं श	१६	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१८	५५६७	प्रश्नतन्त्र	दुर्योधन	१८३८	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२१६	५२६०	प्रश्नप्रकरण		१६वी श	५	
२२०	५७६८	,, (ज्योतिषकौमुदीगत)	नीलकण्ठ	१८८८ से पूर्व	२८	
२२१	४८६४	,, ,,	,,	१६वीं श	४४	आद्य पत्र खडित
२२२	४७१४	प्रश्नप्रदीपक	काशीनाथ	,,	११	
२२३	५२६७	,,	,,	१८वी श	८	
२२४	४७५५	प्रश्नमनोरमा	गर्ग	,,	२	
२२५	५२६१	,,	,,	१६वी श	४	
२२६	५७२४	,, सटीक	,,	१८वी श	५	लि.क विद्यार्थी लोकमणि, काश्याम्
२२७	७५०१	प्रश्नमाणिक्यमाला	परमानंद शर्मा	१६वी श.	१७८	अपूर्ण
२२८	४१८३	प्रश्नमार्ग	अज्ञात	,,	१६६	* अपूर्ण
२२६	५६३५	प्रश्नरत्न (सटिप्पण) (त्रिपाठ) (स्वोपज्ञ)	नन्दराम कामानिवासी	,,	४६	रचनाकाल १८२४ टीका रचना १८२७
२३०	५३३८	प्रश्नरत्न (केरलीय)	नदराम मिश्र	१८३७	८	
२३१	५२३६	नव द्या		१६वी श	८	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३२	४७१६	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास सिद्ध ब्रह्मदाससुत	१६१५	४७	लि क. केवलचन्द्र गोविन्दजी
२३३	५२६६	,,	,,	१८वी श.	३४	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२३४	६४३२	प्रश्नवर्णव	नारायणदास सिद्ध ब्रह्मदाससुत	१६वीं श	२६	
२३५	७०५०			१८वीं श	२७	
२३६	५५३४			१६वीं श	३४	अपूर्ण
२३७	४६००	प्रश्नज्ञान		१७६७	२३	
२३८	४७३६	(प्रश्नज्ञान)	भट्टोत्पल	१७६४	४	यह ग्रंथ ७० आर्या छन्दोंमें आबद्ध है।
२३९	६५११	प्रश्नशास्त्र (बादरायण) टीका चिन्तामणिनाम्नी	उत्पल भट्ट	१८५३	६	
२४०	४७४०	प्रश्नशास्त्रटीका		१७१०	७	
२४१	५५०५	प्रश्नशिरोमणि	रुद्रमणि	१६२४	१५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२४२	४६६५	प्रश्नसंग्रह		१६वीं श	८	
२४३	४८८३	प्रश्नसंग्रहसार, हृच्चक्र-अवधिविचार		१८८१	८	
२४४	५२६६	प्रश्नसंग्रह		१६वीं श	१७	
२४५	५५३२	प्रश्नसप्तति	भट्टोत्पल		१७	लि क पुरुषोत्तम मिश्र
२४६	७७१५	प्रश्नसार	जीवा गुर्जर याज्ञिक नरहरिसुत	१६०६	३	लि क व्रजवासी सिल्लु
२४७	६४६५	प्रश्नसार (सटीक)	गोविन्ददैवज्ञ विष्णुदैवज्ञसुत	१८६२	१३	राजस्थानी भाषा सहित
२४८	४६७०	प्रश्नसुधाकर	लालमणि (जगद्रामात्मज)	१६२७	८१	
२४९	५७४३	प्रश्नज्ञान (आर्यासप्तति)	भट्टोत्पल	१६वीं श	४	
२५०	५४६४(२)	प्रश्नाक्षरीरत्नमाला		१८७०	४	
२५१	५७३१	प्रासादमण्डन	सूत्रधार मण्डन	१६२८	२८	लि क गोपाल

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०६६	पञ्चतत्वविचार		१६वी श.	४	राजस्थानी भाषा सहित
२५३	५५३५	पञ्चपक्षी सटीक त्रिपाठ	रुद्रोक्त	१६२४	१५	लि.क. पुरुषोत्तम
२५४	५७६३	पञ्चपक्षीसटिप्पण	टी कल्याणकर	१६०८	२	लि क. व्रजवासी, मथुरा
२५५	४४५२(३६)	पञ्चपक्षीप्रश्न	महादेव	१८वीं श.	४२–४३	* लि.क. पं. प्रीतसौभाग्य स्था वणहेडा ग्राम
२५६	४५२३	पञ्चपक्षीशकुन		१८३१	२	लि क नागेश्वर
२५७	६५२४	,,		१६२४	११	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५८	७६७२	पञ्चश्लोकीताजिक टीका	बालकृष्ण	१८६३	५	लि क. व्रजवासी सिल्लुः वाराणस्या ललिताघट्टे
२५९	६५२४	पञ्चशर (पञ्चस्वरा)	परमसुखोपाध्याय	१६वी श	६	
२६०	५७५३	पञ्चशरनिर्णय (पञ्चस्वर)	प्रजापतिदास	,,	५	
२६१	५६४०	पञ्चशरविवृत्ति (पचस्वरा)	,, अप्पय दीक्षित	१६७६ शाके	१४	
२६२	५७३०	पञ्चस्वरा (द्वितीयाध्याय)	परमसुखोपाध्याय	१६वी श.	६	
२६३	५६८३	पञ्चसिद्धान्तमत (भास्वत्युदाहरण टीका)	शतानन्द गगाधर	१८६२	१२	लि.क. व्रजवासी सिल्लु मण्डीमध्ये
२६४	५७९६	पञ्चाङ्गसिद्धि	बाबादैवज्ञ, रामपुत्र, शिवानुज	१६०७	५	सुज्ञजागेश्वरप्रीत्यै रचित लि क व्रजवासी काश्याम्
२६५	६७५६	पञ्चाङ्गाभिधपत्र (लग्नसाधनविधि)		१६वीं श	७	राजस्थानी सहित
२६६	७७१६	पञ्चाशत्प्रश्न	शङ्कराचार्य	१६वीं श.	६	
२६७	४७४८	पद्धतिप्रकाश	दिवाकर	१८६२	९	लि.क. जोशी आशाराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६८	४८६३	पद्धतिप्रकाश	दिवाकर	१९वीं श	८	*
२६९	४८६६	पद्धतिप्रकाशोद्धरण (गणिततत्त्वचिन्तामण)		,	४९	
२७०	४६६५	पद्मकोश			१०	
२७१	७६९६		गोवर्द्धन कण्डोलक द्विजरामसुत	१८७२	९	रचनाकाल १६०१ लि क धीरा रूपनगर
२७२	६३०९	पद्मताजिक		१९वीं श	१६	
२७३	५८१५	पवनविजयग्रन्थ	ईश्वरप्रोक्त	१९०५	१८	
२७४	५७७६	पवनविजयस्वरोदय	शिवप्रोक्त	१९वीं श	१२	
२७५	७०९१	पञ्चांगदर्शन योगसंग्रह		१८वीं श	८४	अपूर्ण/राजस्थानीअर्थसहित/पत्र १ १४ व १६वा अप्राप्त
२७६	९२८४	पाराशरीहोरा		१९वीं श	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२७७	४७३९	पाशाकेवली	गर्गाचार्य	१७९१	१०	लि क श्रा नागरेण द्वारा लिखित हरिदत्तजी पठनार्थ
२७८	४७५२			१९वीं श	६	
२७९	६२५७				१६	
२८०	६४३१				९	लि क अमरचन्द्र
२८१	६६२०		,	१९२७	११	गुरुदयाल सौदावादवासी
२८२	४६७८	पतामहीसारिणी	मधुसूदन दवज्ञ श्रीपतिशिष्य	१९वीं श	३	*
२८३	६४२८	फलकल्पलता (वार्थिक)		१७७४	५	लि क पुण्यविजय श्रीमत्पत्तनपत्तन
२८४	४७३५	ब्रह्मतुल्यगणितक्रम	करणकुतूहलगत	१८८४	३५	लि क हेमसागरशिष्य गुमानसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८५	५६४२	ब्रह्मतुल्योदाहरण (कुलभाष्य)		१९वी श.	५२	
२८६	५८२६	ब्रह्मसिद्धान्त	शाकल्यसंहितागत	,,	४५	आद्यपत्र अप्राप्त । लिपिस्थान काशी
२८७	६१७८	,, सटीक	टी पद्मनाभ नर्मदात्मज	१७००	७८	लि.स्था मथुरा। लि.क. जटमल गौड
२८८	४८६५	बानवोणिनी	श्रीलाल्हिदत्तद्विज	१९वी श.	७	श्रीपतिपादपद्ममधुप श्रीलाल्हिदत्तोद्विज·
२८९	४२७७	बालावबोध	मुञ्जादित्य	१७६९	१७	* लि क खरतरगच्छीय बालचन्द्र स्थान पारापुर/प्रथम पत्र अप्राप्त
२९०	४२५८	बालबोध	,,	१८४७	३४	लि क गंगाविष्णु कान्यकुब्ज स्थान नगर बोली
२९१	४७२८	,,	,,	१९वीं श.	१२	
२९२	४८७६	,,	,,	१८७६	४८	वकपुरमध्ये लिखितम्
२९३	७०३४	,,		१९वी श.	२१	अपूर्ण
२९४	७११२	,,	हरिकर्ण	१८वीं श.	२	*
२९५	५६२६	बीजगणितबालबोधिनीटीका	भास्कराचार्य टी. कृपारामभिश्र	१८९४	६६	लि क. व्रजवासी सिल्लु· काशी रचनाकाल शाके १७१४
२९६	६२१२	बीजवासनाभाष्य	व्रजनाथसूनु	१७७६	१५४	* आद्य १९ पत्र अप्राप्त
२९७	५७४७	बृहच्चिन्तामणिवासनाभाष्य (संज्ञाध्यायमात्र)	मू गणेश दैवज्ञ टी. विष्णु दैवज्ञ दिवाकरसुत	१९वीं श.	२१	
२९८	४१८६	बृहज्जातक	वराहमिहिर	१९वीं श.	६६	* पत्र ४३,४४,४५ अप्राप्त लि क जोसी जीवणराम
२९९	४६५८	,,	,,	१८६५	५८	
३००	४६६७	,,	,,	१८०१	२१	,, सारङ्ग नरपति

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०१	४६६७	वहृ जातक	वराहमिहि	१८३७	४६	लि क महाराजा प्रतापसिंहज राज्ये
३०२	४८८६	,	,	१७२३	५०	आद्य तपत्र खडित
३०३	४६७४	,		१८६६	७२	लि क सदासुख
३०४	६१०८		,,	१८३५	१६	लि क स्वामीबालचन्द्र स्थान—नरवर
३०५	६२०६		,	१८६३	१८६	
३०६	७०५५		,,	१८४१	५५	
३०७	७०१३	(उपसहाराध्याय)	,	१७८५	१६	लि क स्थान–कृष्णगढ
३०८	५३२६	वहज्जातकटीका	भट्टोत्पल	१६वीं श	६६	१ २ ३४ ४४ पत्र अप्राप्त
३०९	६२३६	वहज्जातकविवरण	महोधर	१८५१	८४	
३१०	५५३१	वहज्जातक (सटिप्पण)	वराहमिहिर	१६२२	३४	
३११	५८२८		,,	१६वीं श	४६	अन्तिम पत्र अप्राप्त
३१२	७६२२	वहत्सहिता	,	१६वीं श	१७४	
३१३	५५३६	वहन्नारचन्द्रसारोद्धार	नारचन्द्र	१८वीं श	१०	
३१४	५५४०		,	१७वीं श	१८	
३१५	५६६८	वहस्पतिकाण्ड	शिवपावती सवाद	१६वीं श	६	
३१६	४६८१	भ्रमणसारिणी		१६वीं श	१३८	
३१७	५६४८	भावविवति	माधव	१८६०	१८	लि शिवदास वाराणसी
३१८	४७६४	भावाध्याय	ताजिकभूषणगत	१६वीं श	५	
३१९	४७१८	,	रत्नसारान्तगत	१८१०	१६	लि क ऋषि नागजी
३२०	४८५३	भावेशफल		१६वीं श	१३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	५७३५	भावेशफलाध्याय	जातककामधेनुगत	१९०२		लि क व्रजवासीसिल्लु रीमापुरे
३२२	६८९६	भास्वती	शतानन्द	१९०२	१५	,, ऋषि लाला लक्ष्मीचन्द्र
३२३	४६९३	भुवनदीपक		१७०२	४	,, मुनि दामाख्य
३२४	५७०	,,	पद्मप्रभसूरि	१९वी श.	६४	रचनाकाल—शाके पचरसाधनै
३२५	४७५०	,, सस्तबक	,,	१८वी श	१०	राजस्थानी भाषा सहित
३२६	४४११	,, सटीक	,, टी. सिंहतिलक	१९वी श	५३	* टीका रचनाकाल–१३२६ स्थान—बीजापुर
३२७	४४५२(८१)	भैरवीचक्र		१८वी श	१२३वा	इस चक्रमे दिशानुसार भैरवीके बोलने पर शुभाशुभ फलका निर्णय किया गया है
३२८	६३०१	मकरन्दकारिका	कृपाराम	१९२२	६	लि.क. आनदसिंह
३२९	७५१९	मकरन्दभावविवृति	नीलकण्ठ	२०वी श	५	
३३०	५७३२	मकरन्दविवरण	दिवाकर नृसिंहसुत	१८९४	६	लि.क. व्रजवासी सिल्लु मणिकर्णिकातीरे
३३१	७५१५	,,	श्रीपतिभट्ट	१९३६	१२	
३३२	७५१६	,,	दिवाकर नृसिंहसुत शिवगुरुशिष्य	१९३६	२१	
३३३	६२७५	मकरन्दसाधनप्रक्रिया	चूडामणिचक्रवर्ती	१८९०	१२	
३३४	५७६४	मकरन्दोदाहरण (सूर्यसिद्धातमतानुसार)	विश्वनाथ	१९वीं श	१९	
३३५	५८२२	मकरन्दोदाहरण	,,	१८६७	२७	पत्र १ व ८वां अप्राप्त
३३६	५८१०	मकरन्दोदाहृति	,,	१९३६	५७	
३३७	६८५९	मकरसंक्रान्तिपत्रक (खरडा)		१९वीं श.	१	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३८	६६४३	मयूरचित्र		१८६८	२०	लि क मिश्र भवानीदास, जयनगर
३३९	४२८४	(मयूरपदपूर्वक)	नारदप्रोक्त	१८९७	१६	* लि क गौरपाणिपुर
३४०	६२२२	मयूरचित्रक	,	१८वीं श	१०	
३४१	५७७२	मयूरचित्रकादि	वराहमिहिर	१९वीं श	२९	
३४२	४८४६	महादशाफल			७	
३४३	७१३६	महादेवीवृत्तिदीपिका	धनराजगणि भवनराजगणीशिष्य	१८वीं श	६ से ३२	
३४४	४६८०	महादेवीसारिणी		१९वीं श	६१	
३४५	४७४१			१८१४	१२६	आद्य तपष्ठ सचित्र शोभन
३४६	४७८६	,		१८४९	१५२	रचनाकाल अनुमानत १२३८ शक लि क खरतरगच्छीय शोभा चन्द्रजीशिष्य चन्द्रभाण स्थान—सुभटपुर
३४७	७४७०	मानसागरीपद्धति	नानाग्र थोद्धत	१९वीं श	७७	राजस्थानी भाषा सहित
३४८	६७१५	मासभावाध्याय	ताजिककल्पलतोक्त	१७६८	८	लि क आचार्य किशोरदास औदुम्बर मोढासावासी
३४९	४२८३	माससारिणी		१८वीं श	१५	*
३५०	६४३६	मासेश-मासभावफल	ताजिकमतानुसार	१७८७	१०	लि क लब्धसुन्दर कल्याण सुन्दरशिष्य, फतेपुर
३५१	४७२३	मुक्ताफल		१९वीं श	१	
३५२	७८२८	मुष्टिज्ञान		१८वीं श	२	राजस्थानी भाषार्थ सहित
३५३	४६७३	मुहूर्तगणपतिसार	गणपतिदवन (रावल हरिशंकर सुरिसुन)	१८७३	५१	२४ वा पत्र अप्राप्त रचनाकाल १७५०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५४	४८४३	मुहूर्त्तचिन्तामणि	रामदैवज्ञ	१८००	४०	रचनाकाल–१५२२ शाके लि क. रूपनारायण गौड
३५५	७०११	,,	,,	१७६२	२६	रचनाकाल–१५२२ शाके लि.क. प० गुणमूर्ति
३५६	४११०	,, (प्रमिताक्षराटीकोपेता)	,,	१८६६	१५६	लि.क. रामसुख, जयपुर
३५७	६२५८	,, ,,	,,	१८३२	८२	पत्र ११ से १६,७५,७६,८१वाँ अप्राप्त लि क. व्यास बालकृष्ण नरवर-मध्ये
३५८	४६४८	,, सटीक	,,	१६०३	२१५	
३५६	५६८६	,, (पीयूषधारा सहित)	,,	१६वीं श.	३६	शुभाशुभप्रकरण मात्र
३६०	५६८७	,, ,,	,,	,,	३६	नक्षत्रप्रकरण मात्र
३६१	५६८८	,, ,,	,,	,,	११	सङ्क्रान्तिप्रकरण मात्र
३६२	५६८६	मुहूर्त्तचिन्तामणि सटीक (पीयूषधारा टीकोपेत)	,,	,,	८	गोचरप्रकरण मात्र
३६३	५६६०	,, ,,	,,	,,	३६	संस्कारप्रकरण मात्र
३६४	५६६१	,, ,,	,,	,,	६३	राज्याभिषेकप्रकरण मात्र
३६५	५६६२	,, ,,	,,	१६२०	८२	यात्राप्रकरण
३६६	५६६३	,, ,,	,,	१६२१	२४	गृहारम्भप्रकरण मात्र
३६७	५६६४	,, ,,	,,	१६२०	१७	गृहप्रवेशप्रकरण लि.क. झण्डाराम प्रश्नोरा (मधुपुर्यां)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६८	६२६३	मुहूर्तचिन्तामणि सटबाथ	रामदवज्ञ टी चतुरविजयगणि	१८३०	१०२	रचनाकाल स० १७५७ पत्र १ से ८ तक अप्राप्त
३६९	४७११	, सस्तबक	रामदवज्ञ	१८२७	५०	लि क जीवनविजयगणि
३७०	५६६६	मुहूर्ततत्त्व दीपिकाटीकोपेत	केशवदवज्ञ टी गणेशदवज्ञ	१७६३	१०८	
३७१	४६४७	मुहूर्तदर्पण	ज्योतिर्विल्लालमणि जगद्रामसुत गंगाराम पौत्र	१८२२		ओरछाग्रामवास्तव्यश्यामजू लिखितम
३७२	४८७६	मुहूर्तदीपक	महादेव कान्हजीबाडवसुत	१६६२	१०	लि क परमानन्द
३७३	५७७०	मुहूर्तमञ्जरी	यदुनन्दन	१९०५		लि क अर्जुन पण्डित रचनाकाल १७०६ (?) , १७२६
३७४	५३४८	, सटीक	, टी मनसाराम रामकृष्णसुत	१८५९	२१	* लि क बूचाराम गढ भरतपुर मध्ये
३७५	४६६४	मुहूर्तमार्त्तण्ड	नारायणदवज्ञ अनन्तात्मज चातुर्मास्य पुत्र	१९००	२०	लि क औदीच्यज्ञातीय देराश्री पुरुषोत्तमसुत लीलाधर
३७६	४७३२	मुहूर्तमार्त्तण्ड (मूल)	नारायण	१८३७	२६	रचनाकाल १४९३ शाके
३७७	४८८७	,	,,	१८९०	२३	लि क विजयलाल औदुम्बरज्ञातीय
३७८	५२८६	,,		१८५५	२७	सङ्क्रान्तिप्रकरणान्त
३७९	६७६५	,		१९०३	३५	लि क मोती
३८०	७०४८	,	,	१८६२	२७	लि क दयाशङ्कर व्यास मोतीरामसुत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८१	४६७१	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	नारायण	१७८६	८२	लि.क. महाजन नरसिंह, जयपुर रचनाकाल सं० १६२६
३८२	४७०६	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड टीका	"	१६वी श.	७८	किंचिदपूर्ण
३८३	४७२६	"	"	"	१२१	रचनाकाल १६२६
३८४	६१३०	,	"	१८३७	५६	" १४६३ शाके
३८५	५५२५	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड (वल्लभाख्या टीका सहित)	"	१६वी श.	४७	अपूर्ण
३८६	७३७१	मुहूर्त्तमुक्तावली (सटबार्थ)		१८४६	१०	लछमनपठनार्थ करहेडा मध्ये
३८७	६३६४	" (सटिप्पण)		१६वीं श.	८	राजस्थानी भाषार्थ सहित
३८८	४७१७	" (सस्तबक)	हरिभट्ट	१६६७	६	लि.क ऋषि नानजी
३८९	४८७४	" (मुहूर्त्तप्रदीप)		१७०२	११	लि क. मेदपाटज्ञातीय जोशी सुरजीकेन लिखितम्
३९०	७६५१	" (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित)		१८४७	८	घोडेलावग्राम मध्ये लि क. रत्नसागर समेणमध्ये
३९१	५७१४	मुहूर्त्तसर्वस्व	रघुवीर	१८वी श	१६	रचनाकाल १५५७ शाके
३९२	७१०४	मूलजातकविधान		"	२	
३९३	६३६२	मेघमाला		१६वीं श.	१६	
३९४	५६४६	यन्त्रचिन्तामणि	दामोदर	१६१८	६१	
३९५	५३१७	" सटीक	जगद्दैवज्ञ (?) टी. रामदैवज्ञ	१८४५	१६	लि.क मनसाराम प्रथम पत्र अप्राप्त
३९६	५६१९	यन्त्रचिन्तामणि टीका (यन्त्रदीपिकाख्या)	"	१८६५	१३	लि क व्रजवासी मिश्र, ललिताघट्टे काश्यां

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९७	६१०८	यन्त्रचिन्तामणि सटीक	चक्रधर वामनात्मज टी रामदत्त मधुसूदनात्मज	१८५४	२९	
३९८	६८८५	सटीक	,	१९०३	३६	लि क लाला लक्ष्मीचंद
३९९	४१३२	यन्त्रराज	महेन्द्रसूरि	१८४७	१९	*
४००	५६८२	, सटीक	, टी मलयेन्द्रसूरि	१९३९	५०	
४०१	६२५४	यन्त्रराज टीका	,,	१९०१	४७	लि क सर्वेश्वर
४०२	७०१२	यवनजातक (जातकाभरण)	ढुण्ढिराज	१९१९	१०५	वृद्धयवनजातक
४०३	४४०९	यानयोगार्णव	शिवोदित	१८२५	२३	* लि क प लिखमीराम स्थान नेवय मध्य (निवाई)
४०४	६५१०	युद्धकौशल		१९वीं श	७	
४०५	७६८२		श्रीरुद्र	,	१६	
४०६	६७७५	युद्धजयोत्सव	गंगाराम	१८९९	१७	लि क मोतीराम
४०७	६८६१	योगचिन्तामणि (सबालावबोध)	हर्षकीर्तिसूरि बा नरसिंह रत्नराज गणिशिष्य	१७२४	७३	लि क रङ्गविमल कालूग्रामे
४०८	५७४९	योगशतक	बलभद्र	१९वीं श	१२	
४०९	४८६३	योगार्णव	वेंकटेश		१८	
४१०	५७३६	,	,	१९२१	१३	लि क व्रजवासी सिल्लु
४११	५७६६	योगावली		१९ २०वीं श	२०	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४१२	६०४०	योगिनीदशाकरण	राजऋषि	१८११	१२	लि क भरतदास
४१३	४८९५	योगिनीदशान्तर्दशाफल		१८वीं श	७	
४१४	४६५४	योगिनीदशाफल	रुद्रयामलोक्त	,,	७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१५	७६४५	रत्नप्रदीप		१८०९	१९	लि क. हरवल्लभ पारीक जोसी भूधरजीसुत, ढाण्या
४१६	५६०९	रत्नमाला	महादेव	१८६८	२३	लि क भागीरथ ब्राह्मण रचनाकाल ११८५ शाके
४१७	५८३१	रत्नमाला (विवरणनाम्नी टीका)	श्रीपति टी. महादेव लूणिय पुत्र	१९वी श	२१४	४६,४७,६१,२०८वा पत्र अप्राप्त
४१८	७५७२	रमलग्रन्थ (रमलेन्दुप्रकाशसम्मत)		१८वी श.	२०	
४१९	७५७५	,, (बिन्दुरमलाख्य)		१९वी श	११	ग्रन्थस्वामी भट्ट हरिदत्त
४२०	४७५९	रमलचिन्तामणि सज्ञातत्र (प्रथम)	चिन्तामणि पडित	१८वीं श.	१०	
४२१	४७६०	,, (प्रश्नतन्त्र) द्वितीय	,,	,,	१०	
४२२	५१६५	रमलनवरत्न	परमसुख उपाध्याय	,,	३७	*
४२३	५३०४	रमलनवरत्नम्	परमसुखोपाध्याय	१८८८	२६	
४२४	५६०८	,,	,,	१९वीं श.	३५	रचनाकाल–१८६७
४२५	५७९७	रमलबिन्दु		,,	११	पति के कोण खडित हैं
४२६	४४५३	रमलशास्त्र	राम	१७८०	१२	भुजङ्गमध्ये लिखित
४२७	५३२१	,,	रामरुद्र	१७१५	७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४२८	५४७९	,,	रामदैवज्ञ	१९वी श	४९	
४२९	६८३३(२)	,,		१८४८	६–७	लि.क. लाला अमृतराम
४३०	७५७४	,,	,,	१९वीं श.	१७	
४३१	६८३३(११)	,,		१८५२	५५–६९	
४३२	४७६९	रमलसार	श्रीपति	१८४२	१६	*
४३३	४६५१	रमलेन्दुप्रकाश	रुद्रधर त्रिपाठी	१९वीं श	३४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३४	७५७३	रमलेन्दुप्रकाश	रुद्रधर त्रिपाठी	१८३८	२८	
४३५	५६०७	राजवल्लभ वास्तुशास्त्र	मण्डन सूत्रधार	१६०६	४४	
४३६	७५१२	रामविनोद	रामभट्ट	१७५५	१३	लिपिस्थान नरायणा कूर्मवंशोद्भव महाराजाधिराज श्री रामदास की आज्ञा से रचित ।
४३७	५५६४	रेखागणित	जगन्नाथ सम्राट्	१६२०	२६४	सवाईजयसिंहतुष्ट्यै
४३८	७०६३	लग्नचन्द्रिका		१८वीं श	३४	प्रथम पत्र शोभन
४३९	५५६८	,, (जन्मपत्रीलेखोदाहरण)	काशीनाथ	१६वीं श	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
४४०	७६०५	लग्नवाद	श्री गिरधारी मिश्र मथिल	,,	१	
४४१	४६८२	लग्नसाधनविधि		,,	८	
४४२	६४२६	,		१८६८	६	
४४३	४७३०	लग्नोदाहरण		१६वीं श	४	नागोर मध्ये लिखितम
४४४	६४६४	लघुकामधनुसारिणी	केशव	१८वीं श	१०	लि क धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी
४४५	५५२३	लघुजातक	वराहमिहिर	१६१६	१७	लि क विप्र रामगोपाल केकडी
४४६	६३८२	,	,,	१८१२	७	,, प उदयसुन्दर श्रीबीकानगरे द्वितीय पत्र अप्राप्त
४४७	६८२२		,	१७वीं श	६	
४४८	६६०७	,,	,	१८४४		लि क उदयसुन्दर क्षमासुन्दर शिष्य
४४९	७०६८	, (परिष्टाध्यायान्त)	,	१८वीं श	३	आर्यापद्यबद्ध ग्रन्थ है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५०	४१८७	लघुजातक सटीक	वराहमिहिर	१६५४	५६	*
४५१	४६८४	,, सवृत्तिक	,, टी-मतिसागर उपाध्याय	१८८५	३०	
४५२	४७४६	,, सटीक (त्रिपाट)	वराहमिहिर, टी उत्पलभट्ट	१७२३	१६	
४५३	४७५४	,, ,,	,,	१८४२	१८	लि क. सन्तोषदास वष्णव
४५४	७१०१	,, सटिप्पण		१८वीं श	२	
४५५	५६८५	लघुपाराशरी (योगाध्यायमात्र)	पाराशर ऋषि	१६३२	२	
४५६	७६४३	लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीपोद्योत)	भैरवदत्त व हरिरामशर्मपुत्र	१६वीं श	२६	पत्र १,२,३, अप्राप्त
४५७	५७४६	लघुपाराशरी सटीक (राजयोगाध्यायान्त)	पाराशर ऋषि	१८६४	६	लि क ब्रजवासी सिरलु मणिकर्णिका तीरे अमृतपातातदेवालये
४५८	४७५८	लघुमातण्ड, मुहूर्त्तदीपक	नारायण दैवज्ञ कौशिक	१६वीं श	१४	*
४५६	५६१३	लघुक्षेत्र समास विवरण	चन्द्रशेखर	१४८८	३२	लि. स्था. चित्रकूट दुर्गे
४६०	५७४२	लम्पाकशास्त्र	पद्मनाभ	१८६७	८	लि क. देवीचन्द्र ग्राम सरहुजी काश्याम्
४६१	५६३४	, सटीक (त्रिपाठ)	,,	१६०५	३४	लि ब्रजवासी सिरलु काश्याम्
४६२	६३७२	लल्लवाराही	लल्ल	१८वीं श	३	
४६३	५७२३	लीलावती	भास्कराचार्य	१६वीं श.	४२	
४६४	५७०४	लीलावती विवरण	,, टीका-रामकृष्ण		६३	*
४६५	४७६७	वर्षगणितपद्धति (दिवाकरीपद्धति)	दिवाकर नृसिंहसुत	१८४७	५	
४६६	६३११	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८३२	३०	लि. मनरूप व्यास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६७	६५४५	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८७२	४७	लि क रतनविजय
४६८	४७०६	सटीक	,, टी विश्वनाथ	१७५२	३१	२७ २८ २६वा पत्र अप्राप्त
४६९	७१४२	वर्षसारिणी (वर्षफलपद्धतिसाथ)		१८०२	१६	लि क चिरञ्जी सीतर
४७०	४३५५	वसन्तराज शाकुन	वसन्तराज भट्ट	१७७१	३७	* लि क विद्याविलास पाठक लि स्था श्री वेनातट नगर
४७१	६२०८		,	१८२३	६३	
४७२	६७८८	,		१९१२	१५७	
४७३	७८२०			१८४२	८२	लि क गङ्गाराम
४७४	५५६३	वसिष्ठसंहिता	वसिष्ठप्रोक्त	१९१९	१३३	
४७५	६४२१	वामवर्षफल		१७९९	८	लि क देवचन्द्र मण्डोवरमध्ये
४७६	५१३२	वास्तुशास्त्र	विश्वकर्माप्रकाशगत	१९०६	७२	
४७७	४८७७	विंशोत्तरीदशाफल		१९५८	१०	
४७८	४६५६	विजयप्रशस्ति	स्वच्छन्द शङ्कराचार्य	१८२४	१३	* लि स्था जयपुर, रचनाकाल स० १७४२
४७९	५६३३	विरोधप्रकाश	यज्ञेश्वर	१८९३	३	लि क ब्रजवासी सिल्लु
४८०	४७१२	विवाहपटल		१८५६	६	राजस्थानी भाषार्थ सहित
४८१	५५३७	विवाहपटलटीका		१९१२	१२	काशिनाथकृत शीघ्रबोधानुसार लि क इन्द्रसुन्दर
४८२	६३५२	विवाहपटलसस्तबक		१ वीं श	१९	
४८३	७६५०	विवाहपटल		१८१८	१७	राजस्थानी भाषार्थ सहित लि क नवनिधिविजय
४८४	७६५८			१७८४	२०	राजस्थानी भाषार्थ सहित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८५	६४२२	विवाहमासनिर्णयादि		१८वी श.	२	
४८६	४८५७	विवाहवृन्दावन	केशव	१९वी श	२८	
४८७	६०९९	,,		१७१२	२०	लि क कल्याण
४८८	६३३९	विवाहवृन्दावन टीका	गणेश दैवज्ञ	१८६०	६२	
४८९	७०५१	विवाहवृन्दावनभाष्य	केशवार्क, भाष्य-शिवशकर	१८२१	५७	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४९०	६८३४	वेगराजविवेकनिबन्ध (कर्मविपाक)		१८७८	३८	लि क सुमतिसागर
४९१	४६५७	शकुनप्रदीपचूडामणि	उपेन्द्र	१७९९	१२	लि क छत्रीताराम अर्गलपुरमध्ये
४९२	६३३०	शकुनसार		१९वी श.	३	
४९३	५४५२	शकुनावली		१९१०	८	
४९४	७६३७	शरत्पद्धति	रङ्गनाथ	१७५३	५	लि क व्यास पुरुषोत्तम, स्थान-मथुरा
४९५	५२२२	शिवालिखित मुहूर्त	रुद्रयामलोक्त	१८वीं श	४	
४९६	४६५३	शिवालिखित ,,		,,	६	
४९७	६४३६	शिवालिखित मुहूर्तमातिका	शिवोक्त	,,	६	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९८	४१५५	शीघ्रबोध	काशीनाथ	१९वीं श.	४०	लि.क. रामचन्द्र ब्राह्मण
४९९	४७५६	,,	,,	१७९७	२९	
५००	५०५०	,,	,,	१८९९	३१	
५०१	५७३८	,,	,,	१८८५	४६	लि क देवीदयाल कायस्थ, काशी
५०२	६३९७	,,	,,	१८५१	३४	
५०३	७१५२	शीघ्रबोध भड्डली के दोहे	,, भड्डली	१८६१	६३	लि क यति प्रेमचन्द, हीरापुरोमध्ये
५०४	७६२५	शीघ्रबोध	काशीनाथ	१८७३	७	,, धीरविजय, कृष्णगढ, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०५	४८७१	शुकजातक	शुकसुलोचन	१८४२	३	लि क मुरुजित्सुत दुर्गादत्त
५०६	४४०६	शयवासना	कमलाकर	१७८६	४४	रामकृष्ण कायस्थ
५०७	५१०६	षटपचाशिका	भट्टोत्पल	१८१८	६	, हरिकृष्ण ब्राह्मण दशपुर ग्राममध्य
५०८	४६५०	षटपचाशिका सटीक	पृथुयशा टी उत्पल भट्ट	१६वीं श	२१	
५०९	४६८७	(सबालावबोध)	पृथुयशा	१८वीं श	१४	लि क जीवनविजय, वालीमध्य
५१०	४६९२	सटीक	,	१८१६	२२	, ज्योतिर्विच्छम्भुराम
५११	४८४१		,,	१८२२	१०	राजस्थानी भाषार्थ सहित
५१२	५७१३	षटपञ्चाशिकावृत्ति	उत्पल भट्ट	१८३९	२२	लि क कृष्णचन्द्र विजयराम
५१३	६५९४		,,	१८८४	१७	, रामनारायण ब्राह्मण
५१४	६८१९		,,	१९४५	१९	, ऊदा
५१५	७५७८	षटपञ्चाशिकाटीका	मनीराम	१७६६	११	
५१६	४६७३	,, स्तबक	भट्टोत्पल	१९०१	९	, पुरुषोत्तमसुत लीलाधर देराश्री
५१७	४८००	, (होराध्यायान्त)	पृथुयशा	१९वीं श	४	
५१८	७६२७	,, सबालावबोध		१८१९	९	, दानसौभाग्यगणि
५१९	६८३३(१०)	षष्टिसंवत्सरफलम्		१८५२	५०–५५	
५२०	४८९९	स्त्रीजातक	श्यामल	१७९७	१०	
५२१	५७९१	,,	यवनजातकान्तर्गत	१८९५	११	लि व्रजवासी सिरलु, काश्यास
५२२	४७९३	स्त्रीजातकपद्धति	,	१८५८	१२	रावल जीवा सुत श्रवाराम
५२३	६७४८	स्त्रीजातक (कुण्डलीफल)		१९वीं श	१	
५२४	४५२५	स्वप्नाध्याय	प्रस्तावरत्नाकरोक्त	१८वीं श	३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२५	४६५५	स्वप्नाध्याय		१८०८	३	लि क. वैजनाथ
५२६	५६१४	,,		१९१६	७	लि क रामगोपाल
५२७	५६०६	स्वप्नाङ्कुतावर्तप्रकरण	अङ्कुतसागरगत	१९वी श	११	
५२८	४१०५	स्वरपञ्चाशिका	मिश्र नन्दराम	१८३२	३	रचनाकाल १८२२ स्थान–काम्यकवन
५२९	५३१८	,,	,,	१८६५	४	लि क हरदेवलाल
५३०	५३२२	,,	,,	१७१५	७	
५३१	७१२३	स्वरोदय (सटीक)	शिवप्रोक्त	२०वी श	४०	लि.क नरहरिदास
५३२	४६७९	स्वरोदय शास्त्र	,,	१९वी श	२१	
५३३	४८६८	,,	,,	१८३३	१०	लि.क वखतराम तिवाड़ी, देवगढ
५३४	४८९०	,,	जीवनाथ	२०वीं श	२४	
५३५	५५१७	,, विश्वम्भरी	उमामहेश्वरसवादगत(प्रश्नोत्तरी)	१९१६	३६	
५३६	५४३३(१)	सकेतकौमुदी	हरिनाथ		१–५४	
५३७	५८०२	,,	,,	१९वीं श	१८	
५३८	४९९६	सज्ञातन्त्र	नीलकण्ठ	,,	२१	
५३९	५८०४	,	,,	१८६६	२५	
५४०	६६६०	,,	,,	१९वीं श	२०	
५४१	५१८५	,,	,,	१९१०	५४	
५४२	५५३०	,,	,,	१९वीं श.	८९	
५४३	६०४६	सज्ञातन्त्रोदाहरणम्	,,	१८२२	१०१	लि क. काशीनाथ
५४४	५४७३	सज्ञाविवेकविवृति (रसालाभिधा)	नीलकण्ठसुत गोविन्द दैवज्ञ	१८६२	३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४५	५५८२	संज्ञाविवेकविवृत्ति (पूर्वार्द्ध)	नीलकण्ठसुत गोविन्ददैवज्ञ	१९वीं श	१४४	
५४६	५ ८३	(उत्तरार्द्ध)			१२३	रचनाकाल १५४४
५४७	६०४९	संज्ञाविवेक टीका		१८वीं श	३६	
५४८	५७६४	सन्तानदीपिका	भावचिन्तामणिगत	१८६४	५	लि क ब्रजवासी सिल्नु
५४९	४४५२(८८)	सप्तनाडीचक्र		१८वीं श	१२८वा	इसमें वर्षा सम्बन्धी योगा का वर्णन किया गया है लि क प प्रीतसौभाग्य स्थान–वराहेडा ग्राम
५५०	५७२७	सर्वतोभद्रचक्र		१८९७	१२	
५५१	५६७५	सर्वार्थचिन्तामणि (पूर्वार्द्ध)	श्री वेंकटनिध्य अप्पय (?)	१९वीं श	४९	
५५२	५६७६	(उत्तरार्द्ध)	,	१९०६	५१	
५५३	५२८८	सर्वार्थचिन्तामणि	,	१८वीं श	६२	
५५४	४१०८	समरसार	राम	१९वीं श	७	
५५५	४२७४			१७९७	११	* लि क हरिचयन सवाई जयपुर
५५६	४६९८		रामचन्द्राचार्य सोमयाजी	१९वीं श	१०	
५५७	४८५६		रामवाजपेयी	,	१०	
५५८	५७७४		रामचन्द्र	,	१७	
५५९	६२४१			१८६२	७	
५६०	६३०८		,	१८वीं श	४	
५६१	४७०३	समरसार सटीक	रामचन्द्र टी भरत	१८९१	३२	
५६२	५८१९	,		१८९३	२३	लि क ब्रजवासी सिल्लु, ८वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६३	५३८८	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८५७	३१	
५६४	६१०७	,,	,,	१८४०	४१	
५६५	७५०३	,,	,,	१९१३	३०	लि.क. व्रजवासी, आद्य पत्र त्रुटित
५६६	७८२१	साधितग्रह कुण्डली सग्रह		१६वीं श.	गुटका	
५६७	४३६४	सामुद्रिक (पुरुष स्त्री लक्षण)	समुद्र	१६६४	६	लि क ऋषि मति कीर्ति, स्थान–नावसमा ग्राम
५६८	४४०८	(१) सामुद्रिक, (२) नारचन्द्र (३) भावाध्याय		१७८६	१७	(१) पृष्ठ क से ७ तक, (२) ७ से १४ (३) १४ से १७ लि.क. वैरागी राजपाल स्थान–पाल्हणपुर
५६९	५६६८(२)	सामुद्रिक		१९वी श.	३–१९	
५७०	५३७३(३)	,, सटीक		१८०९	७४–९७	
५७१	४६५९	,, सार्थ	नृपति भूपति	१७०८	१३	लि.क. मिश्र रघुनाथ
५७२	७५१४	सारमञ्जरी पद्धति		१८वीं श	३३	,, जयकृष्ण
५७३	४७३४	सारसग्रह	महादेव राजगुरु राजगुरु	१८८४	१२	,, गुमानसागर, र.का. १७१८ स्थान–भुजपत्तन
५७४	६०१२	सारावली	कल्याण वर्मा	१८वी श.	११८	
५७५	५३१३	सिद्धान्तज्योतिष स्फुटपत्राणि		१९वी श.	१४–३९	
५७६	५६२२	सिद्धान्ततत्त्व	त्रिविक्रमाचार्य	१८९५	७	लि क. व्रजवासी सिल्लुः
५७७	५०४३	सिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१९वीं श	६२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७८	६२२६	सिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१८२२	५५	
५७६	५८०१		,	१७वीं श	७६	
५८०	५२६१	सिद्धान्तशिरोमणि	भास्कराचार्य	१८२८	३३	कुम्भेर क्षेत्र लिखितम्
५८१	५२६२		,	१६वीं श	३०	
५८२	५३३७	,		१८७७	५५	
५८३	५६६६	सिद्धान्तशिरोमणि मरीचि	श्री रंगनाथ	१७वीं श	१८३	
५८४	५६२६	सिद्धान्तशिरोमणि वार्तिक (पूर्वार्द्ध)	भास्कराचार्य	१६वीं श	८१	
५८५	५६३०	, (उत्तरार्द्ध)	,	,,	५०	रचनाकाल–शाके १५४३
५८६	५७८७	सिद्धान्तशिरोमणि वासनाभाष्य		१८८२	१७६	लि स्था० कलकत्ता
५८७	४७३३	सिद्धान्तसुन्दर	ज्ञानराज	१८४३	३१	लि क हरिसुख ब्राह्मण प्रथम आठ पत्र अप्राप्त
५८८	५५४६	सुदर्शनचक्रम		१६वीं श	७	लि क रामनारायण
२८६	५७५०	सुश्लोकशतक	मिट्ठन शुक्ल	१६०३	२	आरम्भ के १० श्लोक नहीं हैं
५६०	४४५२(८७)	सूतिकाज्ञान		१८वीं श	१२६–१२७	
५६१	५२५६	सूर्यचन्द्रग्रहणसारिणी		१६वीं श	५	
५६२	५६५३	सूर्यग्रहादिसाधनसिद्धान्त	दुर्गाशंकर	१८६३	६०५	लि क व्रजवासी सिल्लु
५६३	४४५२(८)	सूर्यपुत्रचक्रादि	अज्ञात	१८वीं श	१२वां	*
५६४	६३७४	सूर्यसिद्धान्त	मयासुर	१६२६	४७	लि क डालचन्द
५६५	६८६२			१८वीं श	१०	, देवसुन्दर
५६६	४५२८			१६वीं श	३४	
५६७	५८७६			१८५५	१०	बालचन्द्र स्वामी ग्वालियर

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५९८	४६५२	सूर्यसिद्धान्त टीका	नृसिह दैवज्ञ	१८वीं श.	६१	
५९९	५५९२	सूर्यसिद्धान्तोदाहरणव्याख्या	विश्वनाथ दैवज्ञ	१९१२	१५०	लि क. रामजीवन
६००	४७५७	सौरवासना	कमलाकर	१८००	४९	,, हेमराजाचार्य, सवाईजयपुर
६०१	६५७४	हस्तरेखाप्रकरण		१९वीं श.	२	
६०२	६२१०	हस्तसजीवन		१९२३	१७	
६०३	५७८९	,,		१९वीं श	३३	
६०४	४१८२	हायनरत्न	बलभद्र	१८३१	१०७	* लि क हरिप्रसाद
६०५	६८३३(४)	हायनसुन्दर		१९वीं श.	२६–३२	
६०६	४८६०	हिल्लाजदीपिका	नृसिह	१९वीं श.	१०	
६०७	५७१८	,,	,,	१८६५	१४	
६०८	४८८५	होराप्रदीप (कर्मविपाकोक्त)	उमामहेश्वर सवाद	१६३६	११	
६०९	४७६५	होरामकरन्द	गुणाकर	१८२४	२४	
६१०	५६७४	होरारत्न	बलभद्र	१९वी श	४६८	रचनाकाल–१७१०
६११	४६११	त्रिपताकीचक्रादि	जातकार्णवान्तर्गत	१८२८	५	लि क चतुरविजयगणि,पालीनगरे
६१२	४२८५	त्रिकालज्ञानमनश्चितामणि	शिवोक्त	१९वी श	८	,,
६१३	४२८०	त्रैलोक्यप्रकाश (ज्ञानदर्पण)	हेमप्रभ सूरि	१७७२	२३	* लि.क धीरसुन्दर गणि
६१४	४३५४	,, (अर्घ्यकाण्ड)	,,	१७१५	२६	* आद्य दो पत्र अप्राप्त लि क प विजयसोमगणि
६१५	७०३७	,,	,,	१७७५	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त लि क सुखविजय,शाकम्भरीनगरे
६१६	५७५४	ज्ञानप्रदीप (प्रश्नादर्श)		१९वीं श	१६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१७	४७७३	ज्ञानप्रदीप प्रश्नाधिकार		१९वीं श	२	
६१८	७६२४	ज्ञानप्रदीपिका		१९०९	३४	लि क बालमुकुन्द
६१९	४४६४	ज्ञानमंजरी (प्रश्नविषयक)	महर्षि ऋषिनर्माचार्य	१८७८	२६	लि क गोवर्द्धननाथ, जयपुर
६२०	४६२१	ज्ञानमंजरी	सोमनाथ (रींवा निवासी)	१९०४	१७	रींवाभिधाने नगरे चतुर्वणसमाकुल । तत्रावसन सोमनाथ करोमि ज्ञानमंजरीम ॥
६२१	७१३१	क्षेत्रसमासवृत्ति (अपूर्ण)		१७वीं	३३	२५ २६,३१वां अप्राप्त
६२२	५०८८			१७५३	१३	लि क दुर्गादास यति
६२३	४४२७	क्षेत्रसमासावचूरि	मू सोमतिलकसूरि, अवचूरि गुणरत्नसूरि	१६वीं	३२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६२२५	छन्द.कौस्तुभ (सभाष्य)	राधादामोदरदास भा. विद्याभूषण	१९०६	२७	लि क. बलदेव गोस्वामी
२	५६६०	छन्दःपीयूष	जगन्नाथ मिश्र	१९०९	४४	लि स्था. वृन्दावने आनन्दघट्टे
३	५५८१	छन्दोमञ्जरी	गङ्गादास	१९वी श	३०	
४	४४३२	वृत्तमुक्तावली	धुरन्धरमल्लारि	१८वी	१२	*लि क. कालिग वम्मणभट्टात्मज वराहग्रामस्थ
५	४३००	वृत्तरत्नाकर	केदार भट्ट	१८२१	६	लि.स्था. कर्णपुरग्राम
६	४४९४	,,	,,	१९वी श	१५	लि क लक्ष्मण, पहार
७	६९५६	,,	,,	१९२०	१०	लि क. गुणाकर विद्यार्थी
८	४३३९	,, (सटीक)	,, टी सोमचन्द्र	१५८२	३८	प्रति जीण, दीमक खाई हुई
९	४४३३	,, ,,	टी भास्कर शर्मा	१८१३	३६	टीका का रचनाकाल चै.शु १ स १७३१
१०	४०३२	,, सवालावबोध	टी मेरुसुन्दर	१८वी	११	टी. गुर्ज्जर भाषा में
११	५१४१	,, सटीक त्रिपाठ		,,	२०	अपूर्ण, त्रुटक
१२	५५५८	,, सटीक	टी श्रीकण्ठ	१९वीं श	१५	
१३	६४४७	,, (सेतु टीका सहित)	टी भास्कर शर्मा दायाजिभट्टसुत	१९०३	३२	प्रक्षवह्निहयभूमितवर्षे टी रचना लि क. कन्हैयाराम
१४	७४८२	,, सटीक पञ्चपाठ	टी सोमचन्द्र	१७वीं	२०	
१५	७५१३	,, वृत्ति	वृ. समयसुन्दर सकलचन्द्रशिष्य	१७५५	३४	*
१६	४३५९	,, सटिप्पण	टी. क्षेमहस	१७वी	१३	पत्र जीर्ण एव कीटविद्ध
१७	६०४३	वृत्तरत्नाकर सटिप्पण		१८वी	६	
१८	४४९२	श्रुतबोध	कालिदास	१७६२	२	लि क. मुरलीधर औदुम्बर,काश्याम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लखनीय
१९	४४९३	श्रुतबोध	कालिदास	१८वीं	५	
२०	५१८०	,,	,,	,,	७	
२१	६६७१	,,		१९११	४	
२२	६०२६	,,	,,	१९वीं	३	
२३	५२१८	,, (ज्योत्स्नाभिधटीकासहित)	टी माधव ववज्ञ गोविन्दसुत नीलकण्ठपौत्र गार्ग्यवंशोद्भव	,,	१४	टीका का रचनाकाल–भूतक बाणद्रुमितेऽब्दे १५६० शाके (१६९५ वि०)
२४	५६६३	सुवृत्ततिलक	क्षेमेन्द्र	२०वीं	२१	अनन्तराजस्य राज्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६७४१	अनूपसगीतरत्नाकर (द्वितीय-रागाध्यायः)	भाव भट्ट जनार्दनसूनु	१८वी	२५६	जीर्ण प्रति *
२	४१६६	रागमाला	व्रजनाथदीक्षित पञ्चनदीय (गोकुलस्थ)	१८६४	१०	*
३	५०६४	,,		१६वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४७७४	कोकशास्त्र भाषार्थ सहित	कोक	१९वीं	१५	
२	५७२०	पञ्चसायक	कवि शेखर	१८वीं	३२	
३	४४२६	रतिरहस्य	कुक्कोक पण्डित	१६वीं	२८	
४	४७७५		,,	१६८३	४२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७०२६	अद्भुतरामायण	वाल्मीकिमुनि	१८६०	४३	लि क हरिलाल
२	४३७६	अध्यात्मरामायण (सुन्दरकाण्ड सटीक)	टी. श्रीराम वर्मा हिम्मतवर्मणः पुत्र	१६२७	१७	लि क व्यास घासीराम
३	४५२०	अध्यात्मरामायण सटीक त्रिपाठ	,,	१८वीं श	१७६	
४	५५८६	अध्यात्मरामायण (अयोध्याकाण्ड)		१६०४	३५	
५	५५८७	,, ,, (बालकाण्ड)		,,	२४	
६	५५८८	,, ,, (सुन्दरकाण्ड)		,,	१७	
७	५५८६	,, ,, (किष्किन्धाकाण्ड)		,,	२८	
८	५५६०	,, ,, (अरण्यकाण्ड)		,,	२६	
९	५५६१	,, ,, (युद्धकाण्ड)		,	५२	
१०	४३३१	अनर्घराघव	मुरारि	१७वी श.	२०	
११	६६६८	,, ,, टीका	मू. मुरारि, टी. महोपाध्याय रुचिपति	१८वीं श	४१से१८६	टी. खोआलकुतोद्भव वैंजोलिया ग्रामवास्तव्य हरि-नारायण-पद-समलकृत महाराजाधिराज श्रीमद्भैरवसिहदेव-प्रोत्साहित
१२	६४०२	अन्यापदेशशतक	मधुसूदन	१८वीं श.	६	लि.क दवे विश्वेवर गोलवाल जयपुरमध्ये
१३	७५१७	अभिज्ञानशाकुन्तल	कालिदास	,,	२१	पञ्चमाकपर्यन्त
१४	४३२५	अमरुशतक सटिप्पण	श्रीशङ्कराचार्य (अमरुक)	१८६१	३६	
१५	५६६५	अमरुशतकम्	अमरुक	१८२७	६	लिखित पडितदेवदत्तेन नाहटा जसरूपपठनार्थम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६८१	अमरुशतक (भावचिंतामणि व्याख्यासहित)	अमरुक टी चतुर्भुज मिश्र	१८६०	९२	लि क गणसागर
१७	५१६८	उद्धवसंदेश	श्रीरूप गोस्वामी	१८वीं	८	खण्डित। ६ से ८ तक पत्र कीटविद्ध
१८	४३३०	ऋतुसंहार	कालिदास	१७६८	८	लि क मुनि श्रीराघव लि स्था हिसार
१९	७४९९	कर्णामृत सटीक	मू लीलाशुक, टी चैतन्यदास	१८वीं	१८	१२वां पत्र अप्राप्त
२०	५१६७	कादम्बरी (पूर्वभाग)	बाण भट्ट		१८५	प्रति सुन्दर है
२१	६१७४	उत्तरार्द्ध	बाण भट्ट तनय (पुलिंद)	१८१५	८२	लि क लालविहारी माथुर
२२	६९२९	,	,	१८८०	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त लि क वैष्णव हरिदास जयपुरमध्ये
२३	६९७४	पूर्वखण्ड	बाण भट्ट	१८व	१५९	
२४	४२०४	किराताजुनीयम	भारवि	१८११	११८	
२५	५१२५	,, सटीक	मू भारवि, टी मल्लिनाथ	१८२५	१३४	लि क चूडामणि सलावदागरे
२६	६००१	,, ,,	टी अनात	१७वीं	४३	आदित अष्टमसर्गपर्यंत प्रथम पत्र अप्राप्त
२७	६३१३	,, ,,		,,	१३	पञ्चदशसर्गपर्यंत
२८	६७९१	,, सावचूरि	भारवि	१८वीं	५४	आद्य ८ पत्र अप्राप्त
२९	६९८२	, मूल		१७७१	९०	लि क साम्वाडा (सागवाडा?) ग्रामस्थितेन रणावस्वीरस वसदादसात्मजेन देवकृष्णेन लिखितमिदम, लवणपुरे'
३०	४३६५	कुमारविहारशतक	रामचन्द्र	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४३९७	कुमारसम्भव सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१६८४ १७५६	५०	लि.क. उदयनिधान मुनि लि.स्था. योगपुर, आदि के २ पत्र अप्राप्त, सप्तम सर्गपर्यंत
३२	७५८६	,,	,,	१८३१	६६	लि.क. [illegible], लि.स्था. [illegible] गढ़ १०वाँ पत्र अप्राप्त
३३	४१९७(१)	,, मूल	कालिदास	१८४०	५४	सप्तम सर्ग पर्यंत, लि.क. पुरुषोत्तम [illegible]
३४	६००५	,, ,,	,,	१७वीं श.	३८	सप्तमसर्गपर्यंत, ३३वाँ पत्र अप्राप्त
३५	६८७०	,, सवृत्तिक	,,	१८वीं श.	७०	सप्तमसर्गान्तक
३६	५५१०	,, सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१७१२	१११	
३७	४१९३	,, अष्टम सर्ग	कालिदास	[illegible]	५	लि.क. [illegible] नागर [illegible]
३८	४४८५	,, अष्टमसर्गपर्यंत	,,	१८६१	४६	लि.क. श्याम [illegible] लि.स्था. जयपुर
३९	७००१	,, सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१८वीं श.	१३३	सप्तम सर्ग के ७४वें श्लोक पर्यंत
४०	५१०७	,, ,,	मू. कालिदास, टी. परमहंस परिव्राजकाचार्य सरस्वतीतीर्थ	१७वीं श.	३२	प्रथम पत्र अप्राप्त, प्रथम सर्ग के [illegible] श्लोक से सप्तम सर्ग के २०वें श्लोक तक टीका है
४१	७७९४	कृष्णगणोद्देशदीपिका		१६वीं श.	६	
४२	५२७१	गण्डप्रशस्ति	हनुमत्कवि	१७५६	२८	लि.क. [illegible]
४३	४३३८	,,	,,	१८वीं श.	१०	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	५९९८	खण्डप्रशस्ति	हनुमत्कवि	१६वीं श	६	जीर्ण और प्राचीन प्रति
४५	४२७६	खण्डप्रशस्तिवृत्ति	वृत्तिकार गुणविनय	१८वीं श	२०	
४६	५०६०	गीतगोविन्द	जयदेव	१९वीं श	३४	
४७	५२०५(१६)		,,	१८वीं श	६६सेद६	
४८	६०६०	,, (सटीक त्रिपाठ)	टी चतुर्भुजदास	१९वीं श	४६	
४९	६७३४		जयदेव	१८१८	३४	
५०	६०६८	,, सटीक	मू , टी चतुर्भुजदास	१८७७	५१	बालबोधिनी टीका लि मथुरामध्ये
५१	६७८६		जयदेव	१९वीं श	६५	१ २ ११ १२ १३,१४ ६१ ६२ ६३ वाँ पत्र अप्राप्त
५२	६८५७		,	,	७२	अपूर्ण प्रथम पत्र शोभन
५३	७६२८		,	१८वीं श	१०	
५४	७७५१	साथ, पदसंग्रह		१६८२	१७७	गुटके के अंतमें सूरदास हरदास परमानन्ददास कृष्णजीवनी लच्छीराम आदिके पद व परशुराम कविके दोहे तथा तुलसी बीजमंत्रादि लिखे हुए हैं।
५५	७७५५	,	,	१९वीं श	५७	
५६	५१५७	, सटीक	जयदेव टी शेष कमलाकर	१८३०	९२	साहित्यरत्नमालाख्या टीका लि क हरिचंद मथेन (मथुरी) रूप नगरमध्य
५७	६९८०	गोवर्द्धनसप्तशती सटीक	मू गोवर्द्धन टी अनन्तपण्डित	१८१२	३०५	टीका नाम व्यङ्ग्यार्थसदीपन' है

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	४४८६	घटखर्पर	कालिदास	१८०५	२	लि.क. भवानीशङ्करात्मज उदयशङ्कर
५९	५१६९	,,	,,	१८वीं श.	४	
६०	६३०६	,, सटीक	मू ,, टी अज्ञात	१८१६	६	
६१	५६४५	चौरपञ्चाशिका	चौर कवि	१८वीं श.	३	
६२	६९२८	जयवंशमहाकाव्य	सीताराम पर्वणीकर	१९४१	१३३	जयपुर के इतिहास से सम्बद्ध काव्य
६३	७७९३	दुर्जनमुखचपेटिका	रामाश्रम	१९वीं श	४	
६४	४४०१	द्रौपदीवस्त्रदानप्रबन्ध	गोवर्द्धन	१८१४	८	
६५	५९०२	धर्मशर्माभ्युदय	हरिश्चन्द्र (आर्द्रदेव कायस्थसुत)	१८२३	३९	
६६	५८७७	नलोदयकाव्य	कालिदास	१८५७	२०	चतुर्थविलासपर्यन्त
६७	४०९२	नलोदयटीका	मू ,, टी. मनोरथ कवि	१८वीं श	३८	विबुधचन्द्रिका टीका
६८	७४५८	,,	मू. ,, टी कविशेखर केशव	१८३५	३२	साहित्यदीपिकानाम्नी विदुषा गणतरामेण लिपीकृतम्
६९	६१६३	,, सटीक त्रिपाठ	मू ,, केशव नृसिंहाश्रम-कृत टीका सहित	१८५५	४८	लिखित भरतपुरमध्ये तृतीयोच्छ्वास के अन्त में कर्ता केशव लिखा है
७०	५९४५	नेमिदूतम् (विक्रमकाव्यम्)	विक्रम	१७वीं श.	५	कालिदासकृत मेघदूत काव्य के श्लोकों के अन्त्यपादपूर्तिरूप
७१	५१६२	नैषधीयचरित	श्रीहर्ष	१८वीं श	१२०	प्रारंभ पत्र अप्राप्त
७२	७०४२	,,	श्रीहर्ष	,,	६९से१९०	पञ्चमसर्ग के १४वें श्लोक से नवमसर्गान्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३	६२६१	नवधीयचरित टीका (पञ्चमसर्ग)	टी विद्यारण्य योगी	१८वीं श	१६	
७४	४३८८	नसिंहचम्पू	केशव भट्ट	१६वीं श	१५	
७५	५१५८	प्रसन्नराघव	जयदेव	१८१५	७३	लि क जोशी रघुनाथ जयपुर सवाईमाधोसिंहजीराज्य
७६	५३६४	,	"	१८५०	३८	लि क चतुर्भुज मिश्र
७७	७२६८	परिशिष्टपर्व (स्थविरावली चरित्र)	हेमचन्द्र	१८वीं श	१२०	
७८	७२१६	पाण्डवचरित्र	देवप्रभ सूरि	१६४१	२४१	लि क राव श्री दुर्गभाणजी विजयराज्य रामपुरामध्ये
७६	५६४२	ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिचरित्र	हेमचन्द्र	१६६६	१३	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रान्तर्गत । लि क प० विद्याकीर्ति पुण्यतिलकशिष्य
८०	७७८६	भट्टिकाव्य (तृतीयसर्गपर्यन्त)		१६वीं श	८	
८१	५१६०	भामिनीविलास	जगन्नाथ पण्डितराज	१८११	३६	अति सुन्दर प्रति
८२	५२४०	भावशतक	नागराज टाकवंशीय	१८वीं श	६	प्रथम पत्ररहित
८३	६६५३	"	,	१६वीं श	१५	
८४	७१३५	मधुकेलिवल्ली	गोवर्द्धन	१६वीं श	३७	पत्र ३ से १० अप्राप्त
८५	७०२२	महाभारत	श्रीवेदव्यास	१८३७	१७१७	लि क हरिदत्तनागर सावरमध्ये
८६	६८१०	आदिपर्व	,	१६वीं श	२१५	अपूर्ण खाण्डववनदाहपर्यन्त
८७	७४६५		,	१७वीं श	३५६	
८८	७८७२	,	,	१७७३	३७१	लि क हीरानन्द औदीच्यजातीय

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	६२४४	महाभारत सभापर्व	श्रीवेदव्यास	१६६४	१४२	लि क गोवर्धन
९०	६०६७	,, ,,	,,	१८१०	९९	लि क मनोहरदास
९१	६१८५	,, ,,	,,	१८वी श	१६	
९२	६९११	महाभारत सभापर्व	,,	१६४५	१५१	लि क हरिदास व्यास गागात्मज माडलमध्ये
९३	७४९४	,, ,,	,,	१६वी श	६२	
९४	६१८६	,, मौशलपर्व सटीक	टी नीलकठ	१८वी श.	१	
९५	५४७५	,, ऐपिक, आश्रमवासिक, मौशलपर्व	श्रीवेदव्यास	,,	ऐपिक ९ आश्रम ३५ मौशल १२	
९६	७४५८	,, मौशलपर्व	,,	१६वी श.	१३	
९७	६१८८	,, आश्रमवासिकपर्व सटीक	टी. नीलकठ	१८वीं श	१	
९८	६१८९	,, सौप्तिकपर्व सटीक	,,	,,	१	
९९	६४७०	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	,,	१५	
१००	७१२०	,, ,,	,,	१८२९	३२	रायचन्द्र ब्राह्मण को शक्तिसिंह-सुत भोपतसिंह द्वारा प्रदत्त प्रति
१०१	६१८७	,, आरण्यक पर्व सटीक	मू. ,, टी नीलकठ	१८वी श.	३९	अन्न मे लिखित 'जयश्री चतुर्भुजरायजी', स्थान-सावर
१०२	५४९८	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	,,	३४७	
१०३	६१९०	,, विराटपर्व सटीक	टी नीलकठ	,,	९	
१०४	६१९१	,, उद्योगपर्व ,,	,,	.	३५	
१०५	७४५३	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	१५३१	१७६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	५४८१	महाभारत कर्णपर्व	श्रीवेदव्यास	१८२८	२२५	लि क विद्याधर गुजरगौड पचोली लिखायित भोपालसिंह शक्तावत, ३रा पत्र अप्राप्त
१०७	६१६२	कर्णपर्व सटीक	टी नीलकठ	१८वीं	६	
१०८	६४७१	मूल	श्रीवेदव्यास	१७८३	११६	
१०९	५४७७	भीष्मपर्व	,	१९वीं	३१६	२४वां पत्र अप्राप्त
११०	७४६३		,	१५वीं	१५४	पत्र ५६ से ७१ तक तथा १३२ से १५४ तक स० १७५८ में लिखित शेष १५वीं शती के हैं
१११	५५०१	द्रोणपर्व		१९वीं	५५१	
११२	५४६२	विशोकपर्व		१८२६	१२	
११३	६१६५	आश्रमधिकपर्व सटीक	टी नीलकठ	१८वीं	१२	
११४	६१६३	शान्तिपर्व राजधर्म सटीक	,	,	१६	
११५	६१६४	, ,, आपद्धर्म	,	,,	६	
११६	६८६७	, , राजधर्म	श्रीवेदव्यास	१९वीं	११०	लि क साधु निरजनी उत्तमराम
११७	७१२१	, स्त्रीपर्व	,	१८२६	३५	लि स्था सावर
११८	६१६६	मोक्षपर्व सटीक	टी नीलकठ	१८वीं (?)	८४	
११९	७४५२	, हरिवंश	श्रीवेदव्यास	१६३०	७०६	
१२०	६७००	महारामायण सटीक त्रिपाठ		१८वीं	१०६	त्रुटित
१२१	६५८८	महारामायणान्तर्गत (सीतारामाभिरक्षणानवर्णन)		१९वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२२	५६७३	महारासोत्सव	हनुमत्संहितान्तर्गत	१८३६	१८	भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी रासलीला वर्णनपरक
१२३	६२३६	,,	,,	१८वीं	१४	,,
१२४	५१६१	मिथ्याज्ञानखण्डन (नाटक)	रविदास	,,	१७	श्रीद्वारकापते प्रसादार्थ-रचितमिदन्नाटकम्
१२५	४३६१	मुद्राराक्षस सटीक त्रिपाठ	मू विशाखदत्त, टी ढुंढिराज	१९वीं	८०	
१२६	६९०६	मूलरामायण	वाल्मीकि	१७९७	१३	
१२७	५०९७	मेघदूत	कालिदास	१६७४	१८	लि. स्था जोधपुर, व्यास माधव-सुत परमानन्द पठनार्थम्
१२८	५१६३	,,	,,	१६वीं	२ से १७	प्रथम पत्र रहित, लि.क हरिकृष्ण
१२९	५७०६	,,	,,	१८६४	२१	
१३०	६१२३	,,	,,	१८वीं	११	लि.क मुनि विनीतसागर भाव-सागरशिष्य सूरतमध्येलिखित
१३१	६२४८	,,	,,	,,	१८	
१३२	६१३७	,, टीका		,,	२२	लि क मुनिवीरविजय सघ-विजयगणिशिष्य
१३३	७२३५	,, वृत्ति		१६८३	४१	
१३४	४३८६	,, सटीक		१८०१	२७	लि क. चतुरविजय गणि लि. स्था श्री कर्णपुर
१३५	४३९०	,,	टी धनेश्वर	१७९३	२६	लि क श्री दर्याति
१३६	५१५६	,, ,	टी पूर्णानन्द यतीन्द्र	१७वीं	६२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३७	५६२५	मेघदूत सटीक	मू कालिदास टी अज्ञात	१७वीं	३०	
१३८	६०५३			१६वीं	२४	
१३९	६१६६	"	,	,	३६	
१४०	६८६१			१७५२	३१	लि क मनि नालचद पाटलिपुत्र पत्तने
१४१	५६४१	, सावचूरि त्रिपाठ		१७८६	२४	लि क फतेविजय गणि रणविजय शिष्य बिलाडास्थाने लिखितम
१४२	६००३	" " पचपाठ		१६वीं	६	विशिष्ट प्रति
१४३	७२६६	सावचूरि	अवचूरिकर्ता श्री लक्ष्मीनिवास	१८०७	२२	लि क अमरहंसगणि कल्याण हंसगणिशिष्य विशिष्ट प्रति
१४४	५१८१	" सटिप्पण		१७वीं	१६	
१४५	६६६३	मोहमुद्गर	श्री शङ्कराचार्य	१७४३	३	लि क राघव शर्मा
१४६	५७५६	रघुनाथार्यारत्नमाला	महामुद्गल भट्ट	१६१२	५	लि क अग्रवासी अलवरमध्ये
१४७	४१६८	रघुवंश	कालिदास	१८४६	१४२	लि क पुरुषोत्तम आचार्य स्था जयनगर
१४८	५१२४		"	१८३६	११६	लि क लाला मयाराम कृपाराम सुत। लि स्था हिडिम्बानगर यति सुखान दपठनार्थ
१४९	६२११	,		१८४५	१२२	आरम्भ के कुछ पत्रो में टिप्पणियां हैं।
१५०	६५६१	"	,	१८६८	८७	लि क मनीराम पण्डित कश्मीरनगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	६७८६	रघुवंश	श्री कालिदास	१८वी	८३	द्वादशसर्गपर्यन्त
१५२	६८४७	"	"	"	५	प्रथम सर्ग मात्र
१५३	६८६६	"	"	"	७४	
१५४	७०५२	"	"	१६३३	११६	पत्र १ से ६ अप्राप्त। लि क. गोपाल व्यास, श्री रङ्ग-स्यात्मज नरसिंहदास, मान्धातुः-पुरमध्ये, श्रीमदकबर पात-साहिराज्ये
१५५		" सटीक (सुगमान्वयबोधिका टीका)	टी. सुमतिविजय	१६०१	१९९ से ३४७	सर्ग १२वे से १९ तक लि क. विरधीचंद बीकानेरमध्ये
१५६	५४६६	रघुवंश सटीक	टी. मल्लिनाथ	१८वी	२२१	पत्र ५४ से ५८ अप्राप्त
१५७	६७६२	"	"	१७वी	१४२	चतुर्दशसर्ग के ७२वें श्लोकपर्यन्त
१५८	६८१४	"	टी. समयसुन्दर	१९वीं	९१	नवम सर्ग पर्यन्त
१५९	७३०२	"	टी. धर्ममेरु गणि	१८३५	२०३	
१६०	५४९१	" सटिप्पण पाठान्तरसहित		१८वी	३८ से १८२	८१वा पत्र अप्राप्त
१६१	६६७६	" सटिप्पण		१५४७	१०६	लि.क. वाचक तिहुणकीर्ति चारुचन्द्र शिष्य श्री मरुस्थलदेशे श्रुतवन्ती श्रीश्रीनगरे सातल-विजयराज्ये मंत्रीश्वर बणवीर वृता श्रीचैत्रगच्छे
१६२	४३२६	" सावचूरि पञ्चपाठ		१६२६	११४	लि क वीरहंस आद्यपत्र त्रुटित
१६३	७०८३	राधाकृष्ण प्रेमसम्पुट काव्य		१८वी	१७	
१६४	७५८५	राधामाधवलीला	राधागोविंद मिश्र, किशोरीरमण-शिष्य नवनन्दशर्मासुत	२०वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५	५२७६	रामकृष्ण काव्य		१६वीं श	२	
१६६	५६५७	,, सटीक	सूर्यकवि	१६२३	२६	लि क घनश्याम व्यास पाराशर सवाईजयपुरमध्ये
१६७	५६८४	रामकृष्णकाव्य सटीक त्रिपाठ	,,	१६१६	१८	
१६८	५६०६	,, सटीक	,,	१६वीं श	६	अव्ययदीपिकानाम्नी स्वोपज्ञ टीका
१६९	५६०७	,,		१७वीं श	७	लिपिकार ने भूल से सम्भवत टीका का नाम 'अनूपदीपिका' लिख दिया है
१७०	६२७३	रामरास श्लोक (सुवर्णसहिता तगत)		२०वीं श	२४	
१७१	४४००	रामहनुमन्नाटक		१७वीं श	८	लि क हृषहसमुनि
१७२	७८३३	रामानुजचरित्र (प्रपन्नामृताभिधान काव्य)		१८३२	१४६	लि क जोशी रघुनाथ सवाईजयपुरमध्य
१७३	७०२०	रामायण	वाल्मीकि	१७९९	८३३	
१७४	५४७१	,, बालकाण्ड	,,	१८वीं श	६०	
१७५	५५१४	,, ,, (मूलरामायण मात्र)		,,	१५	
१७६	४२५०	,,		,,	४०	आद्य पत्र सचित्र
१७७	५६६७	,,		,,	१२३	आद्यन्त शोभन
१७८	६२६१	,, ,,	,,	१८६०	७४	
१७९	७०२५	,,		१८वीं श	६३	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८०	६१४२	रामायण बालकाण्ड	वाल्मीकि	१६ वीं	२०३	तिलकव्याख्यायुक्त
१८१	६५००	,, ,,	,,	,,	१५५	,,
१८२	५६६६	रामायण अयोध्याकाण्ड	,,	१८वीं	२२५	
१८३	७०२६	,, ,,	वाल्मीकिमुनि	१८०८	११५	
१८४	६४६६	,, ,,	,,	१६वीं	३३०	तिलकव्याख्या सहित अपूर्ण
१८५	५४४७	,, ,,	,,	१८वीं	२३१	अपूर्ण
१८६	६१४४	,, अरण्य और किष्किन्धाकाण्ड	मू वाल्मीकि, टी. महेश्वर	१६वीं	३४+२६	दोनो काण्ड एक ही जिल्द में हैं
१८७	५६७०	,, आरण्यकाण्ड	वाल्मीकि	१८वीं	१२३	
१८८	६१४३	,, ,,	,,	१६वीं	१७८	तिलकव्याख्या सहित
१८६	६५०१	,, ,,	,,	,,	११७	,,
१६०	५०४२	,, किष्किन्धाकाण्ड	,,	१७६२	७६	पत्र ६, ६६वा अप्राप्त, पत्र २६ से ८० तक प्राय त्रुटित, प्रति जीर्णशीर्ण, लि.स्था तू गानगर
१६१	५६६८	,, ,,	,,	१८वीं	१२७	आद्यन्तपत्र शोभन
१६२	६०१८	,, ,,	,,	१८६६	१२२	
१६३	६२६०	,, ,,	,,	१६वीं	१२१	प्रति अपूर्ण, अन्त के कुछ पत्र भीगे हुए हैं
१६४	६५०२	,, ,,	,,	,,	१५२	तिलकव्याख्या सहित
१६५	६२०४	, सुन्दरकाण्ड	,,	,,	१००	
१६६	६०१७	,, ,,	,,	१७६६	१३७	भीकाजीलक्ष्मणस्येदं पुस्तकम्
१६७	६१८४	,, ,,	,,	१८वीं	१२८	पत्र स० ११६ तक पत्र प्राचीन हैं और १८वीं श. के प्रतीत होते हैं, स० ११७ से १२८ तक नये पत्र हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लखनीय
१९८	५६७१	रामायण युद्धकाण्ड	वाल्मीकि मुनि	१८वीं श	२८८	
१९९	६०१९	रामायण युद्धकाण्ड		,	२८६	
२००	७८०७	,,			१९६	
२०१	५६७२	, उत्तरकाण्ड		,	१९६	अमतसरे लिखितम
२०२	६०२०	,	,	१८६७	१८६	लि क लक्ष्मण
२०३	४५२१	रामायणसार	श्रीअग्निवेशमुनि	१९वीं श	१२	
२०४	५३६६	राक्षसकाव्य सटीक त्रिपाठ		१८वीं श	६	विद्वज्जनविनोदिनी टीका प्रति सुन्दर है
२०५	५९६२		टी सूरदेव भट्ट गोपीनाथसुत		२	अपूर्ण
२०६	६ ०६	वासवदत्ता	सुबन्धु	१७५३	६९	गोकुलचन्द्रगोस्वामिना लिपीकृतम
२ ७	५३०२	विदग्धमाधव		१७५८	१००	लि क हृदयराम कायस्थ
२०८	५२३०	विप्रमुखचपेटासस्तबक		९वीं श	२९	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०९	६०६२	विश्वगुणादर्शचम्पू	वेंकटाचार्ययाजी काञ्चीनगर–वास्तव्य	१९१८	६०	
२१०	४३३७	वेणीसंहार	नारायण भट्ट	१७वीं श	५४	
२११	६७१७	शतश्लोकी रामायण	अग्निवेश्यमुनि	२०वीं श	११	लि क गोपीनाथ
२१२	५९१२	शत्रुञ्जय माहात्म्य	धनेश्वर	१५११	१८५	आशापल्ली में लिखित
२१३	७२५३		,	१६७१	२२५	
२१४	७०४०	शिशुपालवधम	माघकवि	१६८३	१३८	आद्य २० पत्र अप्राप्त
२१५	६००९	शिशुपालवध टीका	टी वल्लभ (आनन्ददेवायनि)	१८वीं श	२४३	प्रति सुन्दर है
२१६	७०८७	सटिप्पण	माघ वणिक (?)	१५५२	१२८	* विशिष्टतम प्रति

क्रमाङ्क	गन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४३२७	रसदीर्घिका	विद्याराम	१८वीं	४८	र का. स. १७०६, लि.स्था. कोटा
२०	६२९४	रसमञ्जरी	भानुदत्त मिश्र	१९०४	२४	लिखित रामचरणेन
२१	६३१४	,,	,,	१८५३	३२	
२२	६४०४	,,	,,	१७०५	५	लि क. मेघराज ऋषि
२३	६६३१	,,	,,	१९वीं	१७	
२४	६४६८	रसमञ्जरी टीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	मू. भानु कवि, टी. अनन्तपण्डित त्र्यम्बकपण्डितात्मज	१९०९ (?)	४९	काशिराज श्रीचन्द्रभानु-कुतूहलार्थ निर्मित
२५	७५००	रसमञ्जरी सटीक	मू. भानु कवि, टी. शेषचिंतामणि	१६२१	२४	पत्र १–२ अप्राप्त
२६	७७८२	,, रसिकरञ्जिनी टीका	मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट	१९वीं	७२	
२७	६९९७	,, सटिप्पण	भानु कवि	,,	४४	अपूर्ण
२८	७५०७	रसमञ्जरीप्रकाशस्वोपज्ञ टीकासहित	नागेश भट्ट श्रीकालोपनामक शिव भट्टसुत	१८३८	४२	लि स्था कृष्णगढ व्यास मोतीराम पठनार्थम्
२९	७७८४	रसमञ्जरीव्याख्या व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	अनन्त पण्डित त्र्यम्बकात्मज	१९०२	१७४	लि क. साधु प्रभुदास बारहठ पत्र कान्हजी उमेदसिंहजी पाटणवासी वाचनार्थं जोधपुरे लिखितम्
३०	६२६३	रसिकमञ्जरी टीका रसिकरञ्जिनी	मू भानु कवि, टी गोपाल भट्ट	१९वीं	३९	
३१	६००२	वाग्भटालकार टीका		१७वीं	१९	
३२	६८७२	वाग्भटालकार (पञ्चपाठ) पदभञ्जिका व्याख्या	मू० वाग्भट	,,	२०	
३३	७१९१	वाग्भटालकारसावचूरि	,,	१६वीं	८	

ग्रन्थसंख्या ७१६१

वाग्भटालङ्कार (सटीक)

(पन्द्रहवीं शताब्दीमें लिखित पंचपाठ पुस्तक)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	४३०६	वाग्भटालंकारवृत्ति		१६वीं	१५	२,६ ७ और १३ पृष्ठ नहीं हैं
३५	६६४५	विदग्धमुखमण्डन	धर्मदास	१६५७	२८	
३६	६६४६	"	"	१८१२	२४	सूर्याष्टमहीभिपु ते विक्रमे
३७	७६८७	"	"	१८४२	३६	लि क राधाकृष्ण गुरजी शिवरामसुत
३८	७६६२	" सटिप्पण		१६८२	१५	लि क गङ्गदास हीरानन्द सूरीश्वर शिष्य पल्लीवरपुरे (पाली—मारवाड)
३६	६५१६	" सावचूरि	अवचूरिकर्ता अज्ञात	१८३६	४५	लि क शिवनाथ शिवजीरामसुत
४०	६३१०	वृत्तिवार्तिक	अप्पय्य दीक्षित	१७वीं	१६	
४१	६६६६	"	"	१८वीं	१७	
४२	५६०३	श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डन टीका)	नरहरिभट्ट हरिरल्लालनन्दन	१६वीं	८	
४३	५३११	साहित्यरत्नाकर (प्रथम तरङ्ग)	श्रीधमसुधी पर्वतनाथसुत पल्लमाम्वागभज हारीत गोत्रज	१६वीं	१६	वाराणसी में रचित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५६६२	उपदेशशतक (चारुचर्याख्य)	क्षेमेन्द्र	१९३६	९	रसाग्न्यङ्केन्दुहायने लिखित गोपरामेण शुक्रकृष्णेग्निभूतिथौ
२	७२७२	एकषष्टियुतप्रश्नशत	जिनवल्लभ	१७४१	७	
३	४३४७	कर्पूरप्रकरसावचूरि	मू. हरिकवीश्वर टी. जिनसागर सूरि	१६वी	२५	
४	५९४७	"	सोमचन्द्र रत्नशेखरशिष्य	१५६७	२८	रचनाकाल १५०४ लि क. सघमाणिक्यगणि लि स्था. चम्पकनेर महानगर
५	५९५९	"	हरिमुनि वज्रसेनशिष्य	१५५८	५४	अणहिलपुरमध्ये लिखित
६	७३६५	दृष्टान्तशतक (राज. भावार्थ सह)	तेजसिंघ गणि	१७६९	१९	लि.क. सोमचन्द्रगणि लि स्था. पत्तननगर (पाटण गुजरात)
७	७३९७	" मूल	" लूकागच्छीय	१८वी	१८	
८	७५४८	"	" "	"	९	लि.क. कान्हजी मुनि
९	४५३२	नीतिशतक सटीक	मू. भर्तृहरि, टी धनसार	१८२२	२५	लि.क. गगाधर
१०	४४५२(३४)	" सस्तबक	भर्तृहरि	१८०७	१–१३	
११	४५६५	प्रश्नोत्तरमणिमाला	श्रीशङ्कराचार्य	१८वीं	५	
१२	७३७८	प्रश्नोत्तरमाला	विमलसूरि	१७५७	१	लि क. विनोदसागर लि.स्था. श्रीकृष्णगढमध्ये
१३	७४३२	प्रश्नोत्तररत्नमालाविवरण	देवेंद्रसूरि	१६वीं	१३८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१४	४४१५	प्रश्नोत्तरषष्टिशतक सटीक	जिनवल्लभसूरि	"	२३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५०५४	पद्यावली	विल्वमंगलभाषित	१६७६	४५	त्रुटित
१६	५१५६	भर्तृहरिशतक (वैराग्य शृंगार)	भर्तृहरि	१६वीं	२२	अपूर्ण
१७	४४८२	रत्नकोश	वैशम्पायनोक्त	१७४६	६	
१८	४६०७(२)	लघुचाणक्य	चाणक्य	१८३७	२३–३४	
१९	४५७१		"	१८०५	४	लि क सामन्त ऋषि स्था राजपुर
२०	६७५०	वृद्धचाणक्य	,	१६वीं	१६	लि क बालकदास कबीरपंथी
२१	६७७०	वैराग्यशतक	भर्तृहरि	"	६	
२२	४५६१	" सटीक	मू भर्तृहरि, टी धनसार	१८६०	५१	
२३	४४५२(३६)	" मूल		१८०७	२५ से ३६	लि क प्रीतसौभाग्य गणि स्था बणेडा ग्राम
२४	५४३७	शतकत्रय	भर्तृहरि	१८वीं	६२	
२५	६१२७	,	मू भर्तृहरि टी रूपचंद		६३ नीतिशतक १–२० शृं श २० ३९ वै श ३९–६३	
२६	७०८०	शृंगारशतक	भर्तृहरि	१७५६	२०	लि क किशोरदास मुरलीदास शिष्य
२७	४४५२(३५)	,	"	१८०७	१३ से २५	लि क प्रीतसौभाग्य गणि स्था बणेडा ग्राम
२८	६६६४	सभारंजन सुभाषित		१६१४	१७	१३वां पत्र अप्राप्त लि क रामनारायण
२९	४५७२	सभाशृंगार		१७५१	१४	लि क ऋषि धनजी स्था राजपुर नगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०	५२७७	संस्कृतमंजरी	अनन्तपण्डित	१८वीं	२४	
३१	५२७६	"	"	"	४	
३२	५५२१	"	"	१६१७	६	लि.क. रामगोपाल, स्था. चूरो
३३	६५७७	"	"	१६वीं	३	
३४	५६७७	"	"	"	३	
३५	६२५३	"	"	"	१६	
३६	६४०५	संस्कृतलिपि (ज्ञानक्रिया संवाद पत्र)		१७६८	३	लि क प मुक्तानन्द
३७	४५७४	सिंदूरप्रकर	सोमप्रभ	१७वीं	५	
३८	६३८७	"	"	१६६४	५	लि क वीरसुन्दरगणि
३९	७३१६	"	"	१५वीं	५	
४०	४४०४	" सज्ञानावबोध	मू. सोमप्रभ, टी. पाठक हर्षराजशील	१८५२	६१	लि.क. क्षमासौभाग्य लि.स्था श्रीबालानगर
४१	४४५६	" सटीक	मू. सोमप्रभ, टी. हर्षकीर्ति	१८वीं	१७	
४२	६२७६	" "	"	१८७२	४३	लि.क. ऋषि नगराज गोपाचल मध्ये
४३	७३२६	" "	मू. सोमप्रभ, टी पाठक राजशील	१८३०	५०	लि क. हीरसौभाग्य श्रीजिनाइनगरे
४४	७२६२	" " मूल	सोमप्रभ	१७५६	२२	लि क. लक्ष्मीचन्द नागोरनगरे
४५	४३६७	" सावचूरि	"	१७६२	१४	१३वां पत्र अप्राप्त लि क ऋषि भागचन्द
४६	४४१७	" "	"	१७वीं	१२	
४७	४५७०	" सस्तबक	मू. सोमप्रभ, स्त. वीरसागरगणि	१८४७	१६	लि क. सोनाजी, बांकानेरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८	७१४६	सिन्दूरप्रकरसूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभ	१८६०	७	लि क प्रमाणविजय स्या पोहकरण
४६	७४४४(१६)	,	,	१८८६	३१०-३२४	
५०	५३५२	, सूक्तिरत्नकोश		१६०१	६	
५१	४८११	सुभाषित (प्रास्ताविक)		१८३३	१८	
५२	४४५२(१०१)	सुभाषितश्लोका		१८वीं	१३६वाँ	
५३	४५६६	,		१६वीं	८	
५४	७१५३	,		१६वीं		प्रतिलिपि योग्य जीर्ण खरडा
५५	४३४६	सुभाषितसग्रह		१४०८	२५*	लि क मुनिदास शिष्य राणपुर एक हजार से अधिक सुभाषितों का सग्रह महत्वपूर्ण विशिष्ट और प्राचीन प्रति
५६	७१०३	,		१८वीं	२	
५७	४३४८	सुभाषितसूक्तावली		१६८२	२७	लि क विमलहर्ष भीमजी पठनार्थम
५८	५६८४	सुभाषितार्णव		१७३६	६१	लि क सावल पण्डित
५६	६३२२			१८१०	२२	
६०	७७४१(६)	सुभाषितावली		१७वीं	४३-७७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५३७६(९)	चन्दनषष्ठिविधानकथा		१८वीं	१०७–११०	
१६	४३८७	चित्रसेन पद्मावतीकथा	बुद्धिविजय	१८५३	२३	लि क. रामविजय गणि लि स्था. श्रीराधनपुरनगर (गुर्जरप्रांत)
१७	७२९२	,,	राजवल्लभ पाठक	१८वीं	१३	
१८	६९२०	,, सटिप्पण	,, महिमानिधान शिष्य	१८४६	५०	लि क. ऋषिचद्रभाण, बीकासर-मध्ये, रचनाकाल १७२२
१९	४३९८	,, चरित्रसस्तवक	मू. राजवल्लभ, स्तबककार भक्तिविजय	१८५३	१५४	
२०	७१४५	दीपमालिकाव्याख्यान		१९वीं	६	
२१	५३७६(१०)	दुर्धरसकथा		१८वीं	११०–१११	
२२	४४३५	देवकुमारकथा		१५३४	७	विशिष्ट प्रति
२३	७३९६	धर्मदत्तकथा		१६१२	१८	मताणाग्रामे लिखित
२४	७३६३	धर्मबुद्धि पापबुद्धिकथा		१७००	१४	लिखित नन्दरवारनगरे
२५	४४३४	धर्मबुद्धिमंत्रिकथा		१६७४	६	लि.क. जयविजय गणि स्था. माहरजा ग्राम
२६	६४०७	धर्मदत्तकथा	माणिक्यसुन्दरसूरि मेरुतुंग सूरीन्द्रशिष्य	१६३३	१०	
२७	६८२०	धर्मसंवाद (महाभारतीययज्ञकथान्तर्गत)		१७८६	१७	आद्य पत्रद्वय अप्राप्त लि.क. ऊधोदास, हिंडोलीमध्ये
२८	५३७६(८)	निशल्यकथा		१८वीं	१०५–१०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६	६१५३	पापबुद्धिमन्त्रीकथा		१६वीं	६	
३०	७२१३	पार्श्वनाथचरित्र	भावदेव	१७५६	१३६	लि क दाणाऋषि समाणेनगरमध्ये
३१	५६३३	पार्श्वनाथचरित्र	भावदेवसूरि	१५०४	१४७	प्राचीन प्रति
३२	६३१८	मणिमञ्जरीआख्यान (वाल्मीकि रामायण बालकाण्डान्तगत)		१६३०	२२	
३३	४५६०	मथुरामाहात्म्य सग्रह (गोपालोत्तरतापिन्यादिगत)		१६०८	३३	
३४	६१४६	मल्लिनाथचरित्र	सकलकीर्ति	१८१३	५२	लिखापित श्रीनथमलजी खण्डेलवाल बिलाला
३५	७७७६	माधवनाटककथा		१६१५	२६	लि क नानूराम जोशी जोधपुरमध्ये
३६	५६६४	मुनिपतिचरित्र		१६वीं	२२	लि क भावप्रमोद जिनरत्नसूरि शिष्य
३७	४३३३	युवराजऋषिचरित्र		१६६३	७	
३८	५३७६(७)	रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्ति	१८वीं श	६४,६५ १००-१०५	
३६	४४०२	रूपसेनकथा		१७वीं	२६	
४०	५३७६(४)	रोहिणीकथा गोतमोक्त		१८वीं	८०-८७	
४१	४४६०	वत्सराजकथा		१६४०	११	लि क पकवधनशिष्य लाल वधन लि स्था पाडलाग्राम
४२	४४५८	वरदत्तगुणमंजरीकथा	कनककुशल	१८वीं	३	लि स्था मेडता नगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३	६७६६	वैतालपञ्चविंशिका		१८वीं	६८	२५वीं कथा अपूर्ण
४४	६१८२	श्रीपालचरित्र	सकलकीर्ति	,,	२५	पत्र ११, २१ और २३वा अप्राप्त
४५	४३३४	शांतिनाथचरित्र	अजितप्रभ सूरि	१६५१	६५	
४६	५६८०	,, ,,	,,	१६५४	६२	
४७	७२७६	,, ,,	,,	१६३३	१५३	प्रथम पत्र अप्राप्त
४८	७३२२	,,	भायचन्द्र (?)	१८वीं	१३३	
४९	७२६६	शालिभद्रचरित्र	धर्मकुमार	१६०५	२६	झोटापत्तीवासी हुम्बडज्ञातीय शाहादेवसहेन श्रीगुरूणामुपदेशेन मन्त्री चापाकेत लिखित कल्पमेरषु, प्रथमपत्र अप्राप्त (विशिष्ट प्रति)
५०	७३८८	,,	,,	१६वीं	१७	
५१	४३३६	,, सावचूरि	,,	,,	१६	
५२	७३८३	सम्यक्त्वकौमुदी		१७०५	३२	लि क. शिवचन्द्रगणि, माणिक्यचन्द्रसूरिशिष्य
५३	७३५४	,,		१४६६	३१	प्राचीन प्रति
५४	७३४२	,,		१६वीं	३७	
५५	७४३०	,,		१५वीं	४६	
५६	७०८६	,,		१८वीं	२८	अपूर्ण
५७	४३२८	सागरचन्द्रकथादि		१७वीं	१–१२	इस प्रति मे तीन कथाएँ हैं पृ. १ से ३ तक (१) सागरचन्द्रकथा पृ ३ से ६ तक (२) मङ्गलकलशकथा पृ. ६ से पृ १२ तक (३) सुदर्शनश्रेष्ठिकथा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	६४०६	सिंहासनद्वात्रिंशतिका	वल्लालसेन	१७७५	१४६	प्रथम पत्र अप्राप्त जीर्ण प्रति
५९	५३४४	सौभाग्यपंचमीकथा	कनककुशल विजयसेनसूरिशिष्य	१८वीं	५	रचनाकाल सं० १६५५ भूतेषुरसे दुवत्सरे
६०	७२६३	हरिश्चन्द्रचरित्र	भावदेवाचार्य	१६वीं	३२	
६१	६७८७	हितोपदेश	विष्णु शर्मा	१८वीं		पत्र १ २, २०, २१, २३, २४ और २७ से ३५ तक अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६०६४	अञ्जननिदान	अग्निवेश	१८८८	६७	लि क चतुर्भुज
२	५२६८	अग्निवेशनिदान (सटीक)	,,	१८५६	२६	स्थान–नेनवा
३	५८४२	अनुपानमञ्जरी,	पीताम्बर	१९०७	११	
४	५८५४	,,	,,	१९२८	४	लि.क. लक्ष्मीनारायण
५	४१६२	,, सस्तबक	,,	१९वीं	६	लि.क गोमचन्द
६	५८६०	अमृतमञ्जरी (अजीर्णमञ्जरी)	काशिनाथ	,,	३	
७	५११५	अर्कचिकित्सा	रावण	१८वीं	६३	रावण मन्दोदरीसवाद, इसमे गर्भ-रक्षण के उपाय वतलाये गये हैं
८	५८५०	अर्कप्रकाश	,,	१८३९	३८	
९	५८५१	,,	,,	१९२६	२१	लि क. लक्ष्मीनारायण
१०	५४९०	अरिष्टनिदान (रागविनिश्चय)		१९वीं	५४	
११	५६१०	ऋतुचर्या	त्रिमल्ल	१८९५	५	लि.क सिल्लु व्रजवासी
१२	६५१४	कल्पस्थान	वाग्भट	१७३५	१९	
१३	५७५२	कालज्ञान	शिवप्रोक्त	१९४३	१६	लि.क रामविलास नायलावास्तव्य
१४	६८९०	,,	,,	१९०४	३६	लि क. लक्ष्मीचन्द्र
१५	५८६८	कालज्ञानवैद्यक (सस्तबक)	,,	१८४३	४६	लि.क ब्राह्मण चतुर्भुज
१६	४१५०	,, मूत्रपरीक्षा आदि	अनेक	१८५१	१६२	लि क परसराम
१७	५८५२	कूटमुद्गर (सटीक)	माधवपण्डित	१९२५	५	लि क. भवतावर
१८	६८७९	गणपाठचिकित्साकलिका		१८वीं	२	
१९	७५०४	गोपालविनोद	गोपालदास	,,	७२	प्रथम व सप्तम पत्र अप्राप्त
२०	५८६२	चमत्कारचिन्तामणि	तोलिम्बराज	१९३४	६	लि.क लक्ष्मीनारायण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	६८६४	चिकित्सामहार्णव	वगसेन	१८११	३६०	
२२	७४६८	ज्वरतिमिरभास्कर	कायस्थ चामुण्ड	१७४३	५४	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३	४७८०	ज्वरप्रतीकार (ज्वरघटमहिमा)		१८०५	३	
२४	४७८२	द्रव्यगुणशतश्लोकी	त्रिमल्ल	१८वीं	६	लि क वष्णव नारायणदास
२५	७६६१	,		१६५१	१६	, रामनारायण, कृष्णगढ़
२६	६६६३	धातुरत्नमालाव्याख्या		१६वीं	१५	
२७	५२४५	नागार्जुनवद्यक	नागार्जुन	१८वीं	६४	पत्र ८, २० ३५, ६१ अप्राप्त
२८	७७२२(११)	नाडीपरीक्षा		,,	११५–११६	
२९	५४७८	निघण्ट	मदनपाल भूपति	१६०६	१२५	
३०	५८४६	निघण्ट (धन्वन्तरीय)	त्रिमल्ल	१६वीं	३३	
३१	६८१२	,		१८७०	५१	लि क भागीरथराम
३२	६८८२	,	मदनपाल	१७२५	११६	लि क रामचन्द्र
३३	७०३६	,		१८वीं	४७	पत्र ४ ५ ६ अप्राप्त
३४	५६५८	पथ्यनिर्णयलंघन	वाचक दीपचन्द्र	१६वीं	१०	लि क लक्ष्मीनारायण
३५	५८५७	पथ्यनिर्णय	,	१६२७	२	लि क भक्तावर
३६	७००८	पथ्यलङ्घननिर्णय	,	१६३७	२०	
३७	६६८७	पथ्यापथ्यविचार		१८वीं	२५	
३८	५६०४	पथ्यापथ्यविनिश्चय		१६१५	४६	
३९	५८४४	,,		१६वीं	१६	लि क लक्ष्मीनारायण
४०	४०६६	पथ्यापथ्यविबोधक	कैयदेव	१८८७	१६६	
४१	६८७१			१८वीं	१०३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	५८४०	बालग्रहचिकित्सा	रावण	१६वीं	२१	
४३	५८६४	,,	,,	१९२८	२१	लि क लक्ष्मीनारायण
४४	४२००	बालतन्त्र	कल्य	१८वीं	३८	
४५	५८४१	,,	,,	१६वीं	२३	
४६	५८६३	,,	,,	१९२८	१२	लि क लक्ष्मीनारायण
४७	६६५७	,,	,,	१८६४	६०	लि क पोकरमल ब्राह्मण झातरापाटण
४८	५८३४	भावप्रकाश	भावदेव	१६वीं	३३४	
४९	६८०५	भावप्रकाश (मध्यमखण्ड)	भावसिंह	१८७२	१७९	लि क. भागीरथ
५०	६८०९	,, ,,	,,	१६वीं	३५०	
५१	७८०८	भावप्रकाश उत्तरकाण्ड	,,	२०वीं	५७६	
५२	७०२३	मदनपालनिघण्टु	मदनपाल	१८८२	६८	लि क. प मतिमन्दिर, विक्रमपुरनगर
५३	५८३७	मदनविनोद (निघण्टु)	मदननृपति	१९०५	११५	
५४	६८०३	मदनविनोदनिघण्टु	मदनपाल	१६वीं	२–८१	प्रथम पत्र अप्राप्त
५५	६१२०	मधुकोश	वैद्य महामहोपाध्याय जयपारवोक्षित	१८५६	५१–६५	
५६	५८३८	माधवनिदान	माधव कवि	१८६०	११०	
५७	६७४३	,,	,,	१५६२	६८	
५८	७०२४	,,	,,	१७५३	३९	लि क महेश सूरि, बीकानेर
५९	५२८६	,,	,,	१७३६	१२२–१८४	
६०	६८१३	,,	,,	१८वीं	१७०	
६१	६०१३	,, सटीक	,, टी वाचस्पति	१८७३	२३७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५६२८	माधवनिदान सटीक	टी वाचस्पति	१६११	२२६	लि क भगवान विप्र
६३	६८६८	,		१८७४	२१६	लि क रामवुल मिश्र
६४	४०६८	योगचिन्तामणौवद्यकसारसग्रह	हर्षकीर्ति सूरि	१६६६	४७	लि क जगजीवन
६५	४७६६(३)	योगचिन्तामणि	हर्षकीर्ति	१७७५	१–१६८	
६६	५८४३	,	,	१६२०	५०	लि क लक्ष्मीनारायण
६७	६४४१			१८वीं	४३	७वा पत्र अप्राप्त
६८	६८७३	योगचिन्तामणि सटीक	हर्षकीर्ति	१८३१	१३७	
६९	४२६०	, गुजरभाषा टीकायुक्त		१८६६	४६	
७०	६८१७	योगतरंगिणी		१६वीं	४–२४	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त
७१	५८५६	योगशत		१६२३	६	लि क भवतावर शर्मा
७२	४७७६	योगशतक		१७१२	१६	
७३	६६०३	,		१८५६	६	
७४	५८७५	, सबालावबोध	वद्यनाथ	१८४२	२७	लि क चतुर्भुज गोपाल
७५	६३१२	योगसार (योगमालिका)		१८वीं	५	
७६	६८१८	रत्नसागर		१६वीं	२–६२	आद्य पत्र अप्राप्त
७७	६८३२	”		१८८१	३१८	लि क चौधरी खूबकृष्ण
७८	७५६७	रसचिन्तामणि	अनंतदेवसूरि	१८०३		प्रथम पत्र अप्राप्त, १५५ व १५६वां पत्र भी अप्राप्त लि क ब्रह्मजनसागर नागपुर
७९	५६४३	रसमञ्जरी	शालिनाथ	१६वीं	५२	
८०	६०८७	रसमंजरी तन्त्र	,	,	५०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८१	७६४१	रसरत्नाकर तन्त्र	नित्यनाथ	१९वीं	३७	
८२	५८५३	राजमार्तण्ड	भोजनरेश	१९४२	१६	लि.क लक्ष्मीनारायण
८३	५५७६	रामनिदान	राम	१८वीं	१८	
८४	६८०२	रोगविनिश्चय		,,	१–६९	
८५	४१६१	व्याधिनिग्रह सस्तवक	विश्राम	१८५३	४९	
८६	५८६१	विश्ववल्लभ	मिश्र चक्रपाणि	१९२५	११	लि क. लक्ष्मीनारायण
८७	६४५५	विश्वप्रकाश कोश	श्रीमहेश्वर	१७वीं	५५	
८८	५४७४	विपरोगपथ्यापथ्यविचार		१९वीं	३९	
८९	७३८६	वैद्यकउद्धार	राजमार्तण्ड	१९३४	१५	लि क. शिवदास
९०	४७७६	वैद्यजीवन	लोलिम्बराज	१८१६	१०	
९१	४८४४	,,	,,	१७००	१६	
९२	५२६४	,,	,,	१८७९	२७	
९३	५८३५	,,	,	१८९३	१५	लि क लक्ष्मीनारायण
९४	५८८०	,,	,,	१८४८	५३	लि.क उज्जीराम
९५	५५५९	,,	,,	१९वीं	१२	
९६	६०८१	,, सटीक	,,	१९०५	४१	पत्र १ से ३ तक अप्राप्त
९७	६२८८	वैद्यजीवन टीका	टी. हरिनाथ गोस्वामी	१९२२	५०	लि.क मिश्र कल्याण शर्मा
९८	६३२६	वैद्यजीवन सटीक त्रिपाठ		१८८९	५७	३२वां पत्र नहीं है
९९	४७७८	,, सस्तबक	लोलिम्बराज	१७३४	२७	लि स्या बगडो
१००	५८८१	,, ,,	,,	१९वीं	१७	
१०१	६९००	,, ,,	,,	१८६८	२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	५२७३	वद्यरत्न	शिवानद भट्ट	१८वीं	४४	
१०३	७८२६	वद्यवल्लभ (सटबाय)	हस्तिरुचि	१७६८	२१	लि क राजविजयगणि विवोरा नगरे
१०४	५३०८	वद्यविनोद	शकर भट्ट	१८वीं	६६	आद्य दो पत्र अप्राप्त
१०५	५८३६	,		१९वीं	४७	लि क लक्ष्मीनारायण
१०६	५८४८	,		१९०४ १९१२	८०	, , गोपालमहात्मा
१०७	६६०५			१८५७	७४	
१०८	७८१३		,	१९वीं	२४	प्रतापसिंहसुत रामसिंहाज्ञयारचित
१०९	७८१४	,	,		३८–११५	
११०	५८५८	वद्यामृत	मोरेश्वर	१९०६	७	लि क भक्तावर रचनाकाल (१६०३)
१११	५८४६	शतश्लोकी (सटिप्पण)	त्रिमल्ल भट्ट	१९१२	१०	लि क लक्ष्मीनारायण
११२	५८५५		बोपदेव	१९२३	७	लि क भक्तावर
११३	६६०१	,,	,	१९वीं	३८	
११४	६६३२			१८वीं	७	
११५	६०८०	,,	त्रिमल्ल टी कृष्णदत्त	१९०३	६१	पत्र १ से ४ व ६, १० २१, २२ ३१ ३३, ३४ अप्राप्त
११६	६५८६	शतश्लोकी टीका	,	१९वीं	१०	
११७	४३०३	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर		१३१	
११८	५५६३	,,	,,	१९०६	१७३	पत्र १ से १६ व १६५ से १६६ तक अप्राप्त
११९	५८४७	,	,	१८९१	१०१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	६०३०	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर	१६७८	४७	राजलदेसरे लिखितं
१२१	६७९५	,,	,,	१८६४	१२७	लि क रूपचन्द्र
१२२	६८६०	,,	,,	१७वीं	९६	
१२३	५८२४	,,	,,	१९१०	४७१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२४	६०८४	,, सटीक (प्रथमखड)	,, टी काशीराम	१९वी	७५	
१२५	६०८५	,, ,, (द्वितीय)	,,	,,	१४०	पत्र १, २६, २५, ३६, ३७, १००, १०१ अप्राप्त
१२६	७७९५	,, (षष्ठाध्यायपर्यन्ता)	टी आढमल्ल	,,	५७	
१२७	७०३८	,, (अपूर्ण)		,,	१२०	
१२८	५४१४(२)	शारीरनिबन्धसग्रह		,,	१–७१	
१२९	४७८३	शोथनिदानचिक्त्सा		१८वी	३	
१३०	६६७२	सन्निपातचिकित्सा		१९वीं	११	
१३१	६३००	सन्निपातप्रकरण		,,	१२	लि क फतेचद, जयपुर
१३२	५७४५	सिद्धमन्त्रप्रकाश	बोपदेव	१८वीं	२८	आद्य पत्र शोभन
१३३	४१३७	,, (सटीक)	,,	१८४५	८२	लि क. सेठ आदित्यराम
१३४	६०८२	हिकमतप्रकाश (द्वितीयखड)		१९वीं	५५	पत्र २१ से २३ व ३०वा अप्राप्त
१३५	६०८३	,, (तृतीयख०)		,,	४४	
१३६	६८०१	हितोपदेश	शिव पण्डित	१८७०	६२	
१३७	५६३२	क्षेमकुतूहल	क्षेम शर्म्मा	१९वीं	६९	
१३८	७४९२	,,	,,	१८वीं	३६	
१३९	६९३८	त्रिशतिका	दास पण्डित	१८५९	१८	लि.क. देवीदत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४०	५८४५	त्रिशती	शार्ङ्गधर	१६वीं श	१३	
१४१	६६६१	, (सटिप्पण)	,,	१७७०	५०	लि क मनसाराम
१४२	६०८६	त्रिशतश्लोकी सटीक	,,	१६वीं श	११०	पत्र ६ १२ १३ १६, २८ से ३१, ६६ ७६, ८३ ८५ व ८६वा अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेप उल्लेखनीय
१	७७५३ (१-१५)	अकपाटी		१८३७	१३-२६	* पाटियो के नीचे नीति विपयक "दूहा" है
२	४६०७(१)	अकपाटी		,,	१८-२२	
३	४६१६(५)	अकपाटी		१८७५		
४	४४५२(५२)	अगफुरकणविचार	हीररतन	१८वीं	१०८वाँ	
५	५८६३	अञ्जनाचौपई (सचित्र)		१६वीं	४३	चित्र स० ४३, प्रारम्भ के १० दूहे पुण्यसागर वाली प्रतियो से मिलते हैं
६	६५२५	अञ्जनाचौपई	पुण्यसागर	१८६८	२४	* सं० १६८७ में रचित। लिपि-कर्ता ऋषि नोलचन्द, पीहो ग्राम, ऊदावत राज्ये
७	४८१८	अजनाचौपई	पुण्यसागर	१७०२	२०	
८	४१६४(१)	अजनासतीरास		१६२६	१३	अन्तिम पत्र त्रुटित
९	४०४०	अजनारास		१८४६	१७	
१०	५०६३	अजनामतीनो रास		१८वीं	२१	
११	४०३६	अजनासुन्दरीचौपई	भुवनकीर्ति	१६वी	१८	अपर नाम पवनजयप्रिया अजनासुदरी हनुमत चरित्र
१२	४३१६	अजनासुन्दरीचौपई (सचित्र)	भुवनकीर्ति	१८६१	३४	चित्र स० ४०
१३	७०४३	अञ्जनासुन्दरीचौपई		१८वीं	१४	लि क. आर्या हीरा
१४	७२१६	अञ्जनासुन्दरीचौपई	पुण्यसागर	१८५०		वीकानेर मे लिखित
१५	६३६२	अञ्जनासुन्दरीरास		१८६५	२५	पोरवदर मे लिखित। बाई साकर पठनार्थं
१६	५२०२(१)	अकबरनामा		१८८५	४-८७	जयपुर मे लिखित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	४६२०	अक्षरनामो		१६वीं	१४	
१८	४२८७ (१०)	अतीतवारकी कथा	आव कविमण (?) गणगोत्रीय अग्रवाल मल्लपुत्र	१८वीं	४६–७७	
१९	४३१२	अध्यात्मगीता		१८८३	८५	अपूर्ण प्रथम ८ पत्र अप्राप्त। पाली में लिखित
२०	७०४३(१)	अध्यात्मरामायण भाषा	राजसिंह	१७८४	१–३२	० बाई सिरेकवरीलिपित सावर मध्ये
२१	७५२४	अध्यात्मविचार		१८२७	१६	श्रीगारियाधामध्ये लिखित
२२	५४१८(१६)	अनन्तचतुर्दशी कथा		१६वीं	१२१–१२४	
२३	४६१४(१८)	अनन्तव्रतरास	ब्रह्माजिणदास	१८७१	२१२–२१८	
२४	४०३६	अनापोलधि	लेमो	१८वीं	६	गीत दूहाबद्ध
२५	५१०८	अनन्तबोधन		२०वीं	८	अपूर्ण
२६	५४१८(३६)	अजदोषानायनी			१–१०	जन विनतिसहित
२७	४४५२(१६)	अनिसारिकायणन गीत आदि		१८वीं	१८वां	
२८	७१४१	अमरदत्त मित्रानन्दचरित्ररास	देवगुप्त व द्रसूरीश्वर	१७००	२८	१६०६ (?) में रचित। सारण मध्ये ऋषि कचरा कल्याण लिप्यलिखित
२९	४३६१	अमरदत्तमित्रानन्दरास		१६१७	१६	सं० १६०७ व शु ६ रवि रचना काल
३०	५११७	अमरसेनवीरसेनचौपाई	विनयहंस	१८४६	२०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६६०२	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह	१६वीं	२२८	पत्र २,३,४,५ अप्राप्त
३२	६८३१	अमृतसागर	,,	,,	४६७	*
३३	५८३६	अमृतसागर	,,	,,	३३८	अपूर्ण
३४	४२०६	अमृतसागर	,,	१८७६	२७८	
३५	७१३७	अयवतीसुकुमाल चौपई		१६वीं	५	रचनाकाल १७४१
३६	४०४८(२)	अयवतीसुकमाल स्वाध्याय	शान्तिहर्ष	१८६२	१६–२०	लि क धनरूपहंस, सऊपरा ग्रामे
३७	७७४४(२)	अर्जुणगीता	रुघनदास	१७५८	३–८	
३८	४४६१	अर्बुदाचलश्लोक	विनीतविमल	१८वीं	२	
३९	४०३४	अरहन्नकमुनिचरित्र	जिनहर्ष सूरि (?) (सुमतहंस)	१६वीं	६	
४०	७७२४	अवतारचरित	नरहरिदास बारहठ	१७८६	२६७	*
४१	७७२६	अवतारचरित	,,	१६१८	६४६	
४२	७७३३	अवतारचरित	,,	१ १४	४४५	बदनोर में हरिदास कबीरपंथी द्वारा लिखित
४३	७३८७	अवन्तिगजसुकमाल चौपाई	जिनहर्ष	१६वीं	६	रचनाकाल १७४१
४४	७७४५	अश्वपरीक्षा		१६४३	३६	लि क पर्जीसह, पहला लख्या सो नग्न रामगोपालजी का
४५	४७८४	अष्टप्रकारपूजारास	उदयरत्न	१८२६	६१	
४६	५४१८(१६)	अष्टमीकथा		१६वीं	१४०–१४३	
४७	४६१४(२४)	अष्टाणीवरतनोरास (ऊठाई)	शुभचन्द्र	१८७१	२३१–२३२	
४८	४८२३(१)	आणदश्रावकसंधि	श्रीसार	१८१६	१–६	
४९	५६०२	आतमप्रकाश चौपाई	धर्ममन्दिर	१८वीं	२३	रचनाकाल १७४२

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	५४१८(४)	आतमसंबोधरास	बनारसी	१८वीं	८८-९१	
५१	४९१४(२०)	आदित्यकथाव्रत	सूरजो शाह	१८७१	२२२-२२६	
५२	५३७६(२)	आदित्यवारकथा			३१-४२	
५३	५ ७६(१३)	आदित्यवारकथा छोटी			१९७-१९९	
५४	४४२०	आनंदमंदिररास	ज्ञानविमल	१८वीं	२१३	ढाल दूहाबद्ध। अंतिमपत्र अप्राप्त
५५	७०९४	आनंदश्रावक	मुनि श्रीसार	१८७०	२२	लि क साध्वी रतन बावडीनगर मध्ये
५६	४०४२	आनंदसंधि (अनाथीसंधि)		१७५४	१५	लि क आर्या रुपमा
५७	५४१८(३२)	आनंदाके दोहे		१९वीं	१७१-१७३	४१ दोहे
५८	४९११(२)	आभूषणहुणा चिंतावली		१८७६	४१-४२	लि क भागचंद
५९	४०३५	आर्द्रकुमारचऊढालिया	समुद्र मुनि		३	
६०	४८२३(२)	आर्द्रकुमाररास	मान कवि	१८१९	९-११	
६१	६०४५	आराधना प्रकरण	साम सूरि	१८वीं	६	सुलिखित प्रति
६२	४४५२(६)	आवडीजी आदिके छंद	अनेक कवि	१८वीं	१३ वाँ	
६३	७३४४	आवश्यक विधिप्रकरण	जिनवल्लभ गणि	१५वीं	६	
६४	४०५१	आषाढाभूत चतुष्पदिका	भावप्रभ	१९वीं	२	ढाळ गीतबद्ध
६५	५४१८(७)	आषाढाभूति चौपई		,	९७-१०७	
६६	५१२१	आषाढाभूति धमाल	कनकसोम	१८वीं	५	रचनाकाल १६३८
६७	४५७३	इंद्रियपराजय शतक		स १६२८	६	
६८	७२७३	इंद्रियपराजय शतक		१७वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	४०४३	इलाकुमर चौपाई	ज्ञानसागर	१८४३	५	रत्ननाकाल १७१६ आसोज सुदि २ बुधवार
७०	६५३०	इलाकुमार चोपाई	,,	१८वीं	७	
७१	४६१४(२८)	उणतीसी भावना		स १८७७	२४६–२४७	
७२	५६७४	उत्तमकुमार चोपाई	तत्त्वहंस	१७६५	३१	जोधपुर मे लिखित
७३	५०६८	उत्तराध्ययन गीत		१७२२	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
७४	४२८७(१३)	उपदेश को रासो	रामचन्द्र	१८वीं	६८–११४	स्वय कवि द्वारा लिखित। रचनाकाल १७२६
७५	६१०६	ऋषभविवाहलो	सेवक	१७२२	२१	
७६	६१६६	ऋषिदत्ता चौपाई	चौथमल	१८७६	२५	बील मध्ये लिखितम्
७७	७३३३	ऋषिभाषित कुलक		१८वीं	२	
७८	४६१५(६)	एकलगिड वाढाळारी वात		१८८७	१३६–१३६	
७९	४४५२(५५)	एकलगर वाराहरी वारता			१११–११३	अपूर्ण
८०	७२६१	एकविंशति स्थान प्रकरण	सिद्धसेन सूरि	स १७६६	१०	लि क. सुमति हंस
८१	७७४६	एकादशीकथा भाषा (गद्य)		१६१३	५१	२६ कथाओ का सग्रह
८२	४२६३(२)	एकादशीकथा सग्रह			१८	२० कथाओ का सग्रह
८३	४०५५	एकांतरा तावरी वात		१८७६	३	
८४	७४४४(२०)	कका सज्झाय	श्रावक चोथो		३२४–३२६	
८५	५२११	कछवाहोंकी वशावली		१८८४	११४	⁂
८६	४०४६	कनकावती चोपई	जिनहर्ष	१६वीं	२३	अन्तिम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	७७२ (२२)	कपडकुतूहल		१८वीं	६	*
८८	४०४७	कपोतकपोतणीरी वारता		१८५४	१२	*
८९	६६३७(२)	कबीरजीकी बाणी	कबीर	१८११–१८१६	१०६–१८७	लि क रामदास टीकोदासशिष्य निराणा ग्राम
९०	६७३६	कयवन्ना चोपई	गुणसागर	१७१६	१०	लि क ऋषि भरथ
९१	४०४८(१)	कयवन्ना चौपाई	जयरंग	१८९२	२२	रचनाकाल १७४१ व शु ८ शनिवार
९२	४०४९	कयवन्ना रास	सुंदरसूरिचन्द्र (?)	१८वीं	५	आर्या हीरा श्रीमानाजीनी शिष्यणी द्वारा लिखित
९३	५९७६	कर्मग्रन्थ पंचक बालावबोध	मतिचन्द्र	१८वीं	११२	
९४	४९१४(३३)	कर्मविपाक कांड	गुणकीर्ति	१८७७	२५१–२५५	
९५	४४२५	कलावतीचरित्र	विजयचन्द्र	१६७६	४	चौपाईबद्ध दूसरा पत्र अप्राप्त
९६	४०२०	कविकल्पलता	श्रीसार	१८७८	६	* रचनाकाल सं १६८९
९७	४४५२(२६)	कवित्तबावनी	उदयराज	१८वीं	२४ से २६	
९८	४४५२(९५)	कवित्त	उदराज		१३१ वां	
९९	४४५२(४५)	कवित्त सवया	गंग वद	१८वीं	६१ वां	
१००	४४५२(५४)	कवित्त	अनेक कवि		१०९–११०	५० कवित्त
१०१	४४५२(१०३)	कवित्त दूहा आदि	केसरसिंघ आदि	,	१३६–१४१	
१०२	४९१५(२)	कवित्त गीत आदि		१८८७	२ –४१	जगदम्बा आदि के छंद हैं

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	४४५२(७३)	कवित्त गीत आदि		१८वी	१२२वा	दाडिम-फल, मुहम्मद स्तुति आदि
१०४	४४५२(९६)	कष्टावलीचक्र		"	१२६वा	वार और नक्षत्रो से बने योगो का फल-निरूपण
१०५	४६१५(१६)	कागदरी नकल		१८८७	३९८–४०६	* स्त्री, पुरुष आदि के प्रति पत्र
१०६	४०५१	कानड कठियारा री चौपई	मानसागर	१८वीं	८	रचनाकाल १७४७
१०७	४०५०	कान्हण विवाहलो		१७०२	८	लि क आर्या हीरा
१०८	७३७७	कालज्ञान भाषा	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१९वीं	७	
१०९	४०५२	कालीनागदमण पवाडो		१८वीं	७	
११०	५४३०	काव्यविधान		१९वीं	३३–४०	मन-साधनों को काव्य कहा गया है
१११	७७२२(७)	कुतुबशतरी वात		१७२०	९६–१०४	लि क मयेन माथा
११२	७७२१(१०)	कुवदीन शाहजादारी वात		१८२५	१६६–१७७	
११३	५९६१	कुमतिविध्वसण चौपाई	हीरकलश	१७वीं	७	रचनाकाल १६७७ कनकपुरी मध्ये
११४	६४२५	श्रीकृष्णजीरो व्याहलो		१९वीं	४	
११५	७०३०	श्रीकृष्णजीरो ब्याहलो	पदम कवि	"	६४	
११६	४८३८	कृष्णरुक्मिणी वेली सटीक	म पृथ्वीराज	१७४५	२४	लि क भाग्यविजय, तेजविजय-शिष्य, नोमेल नगरे
११७	४४५२(४७)	कृष्णरुक्मिणी वेली सटीक	"	१८१७	८५–१००	लि.क. प्रीत सौभाग्य गणि बोहला ग्रामे मही उपकठे
११८	७७९९(४)	श्रीकृष्णलीना वर्णन		१८५६	२–७	चित्र—१
११९	४९०४(१)	केरडावाली चौथ माताजीरी कथा		१८६१	१–३४	लि.क कल्याण सौभाग्य

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	७१७२(१)	कवाटराजाकी कथा		१९३६	२७	
१२१	५४१८(३०)	खिचडारासा		१९वीं	१६८–१७०	
१२२	४०६०	खीची अचलदासरी वात		१८वीं	६	
१२३	४,८८	खटसिद्धि		१८४८	६	लि क चतुरविजय गणि पोहकर मध्ये
१२४	४६८६	खटसिद्धि	महिमोदय	१८४८	६	लि क ज्ञानविजय रचनाकाल स १७३१
१२५	४४५२(१३)	खजडला माताजीरी नीसाणी	मान कवेसर	१८०८	१६ वा	
१२६	४४५२(८४)	खतरपालजीरो छन्द	कवि देद	१८वीं	१२५ वां	
१२७	५२७६	ग्रहणविचार टीका		,	३	
१२८	६४३७(२)	गजसिंहकुवर कथा			२४–४८	अपूर्ण
१२९	४०५६	गजसुकुमाल चरित्र			१८	त्रुटित
१३०	६५४१	गजसुकमाल रास		१८८७	८	लि व मलूपचन्द
१३१	४६१४(१४)	गजमुनिवीनती		१८७१	२०८ वां	
१३२	४४५२(६६)	गणगजी छन्द अमतध्वनि		१८वीं	१२०	
१३३	६०४१	गर्भोत्पत्तिस्तवन	श्रीसार	,,	३	
१३४	४६१५(५)	गीत		१८८७	१३४–१३५	
१३५	४१३६	गीतगोविन्द सटीक	टी चतुर्भुजदास	१८वीं	४७	अन्त का पत्र अप्राप्त
१३६	४६१५(१५)	गीतकवित्त		१८८७	३६५–३६७	
१३७	७५५६	गीतसज्झाय		१८वीं	४	
१३८	४४५२(६०)	गीत सवया आदि		१८वीं	१२८वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३९	४९०४(३)	गीतामाहात्म्य			६५वां	
१४०	५४५८(४)	गीदोलीकी वारता	जगमाल मालावत	१८५६	१–२७	
१४१	४०२२	गुणकरडगुणावली चौपई	ऋषि दीप	१८२१	२२	
१४२	४०५३	गुणकरडगुणावली चौपई	"	१९वी	२७	लि क आर्या नाथी
१४३	४८२०	गुणकरडगुणावली रास	दीप (?)	१८७४	२०	रचनाकाल स. १७५७
१४४	६०२७	गुणकरडगुणावली		१८३९	१५	"
१४५	६५४२	गुणाकरडगुणावली चौपाई	दीप ऋषि	१८३३	३६	लि क प नवनिधविजय, सम्यणा नगरे
१४६	४०१३	गुणहरिरस		१७९६	७	राबडियास ग्रामे लिखितम्
१४७	५०६४	गुणावली रास	गजकुशल	१९वी	२६	पत्र २ से ९ और अन्त्य अप्राप्त रचनाकाल स १७१४
१४८	४०५५	गुणावलीचरित्र चौपई	शान्तिहर्ष	१८७४	२१	रचनाकाल स १५१३ आश्विन कृ. ३, बडलू ग्रामे लिखितम्
१४९	५१०३	गुरुचेलारी कथा		१७वीं	२	त्रुटित
१५०	७१८०	गुरुपरपरा ढाळ	ज्ञानविमल	१९वी	१२	
१५१	५४५८(३)	गोतमरासा		१८३८	४	
१५२	७५६७	गोतमपृच्छा चौपाई		१७५६	१३	लि क. मुनि गङ्गजी
१५३	६१२८	गोतमपृच्छा बालावबोध	जिनसूरि	१८८३	६८	
१५४	५४३६(७)	गोतमलघुस्तवन	समयसुन्दर		३८–४०	
१५५	५०६९(२)	गोतमस्वामीरास	उदयवन्त	१९०६	३–८	
१५६	५४३६(३)	गोतमस्वामीरास			१७–२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	४४५२(५)	गोरखपनडा	गोरखजी	१८वीं	१० वॉ	
१५८	४१५१	गोराबादलकथा आदि गटका		,,	९०	१४ कृतियो का सग्रह
१५९	७७२२(६)	गोराबादल चौपई	हेमरतन	,,	५७–६५	सादडीमें रचित
१६०	४६२४(२)	गोराबादलरी बात	जटमल	१७८७	९–१५	लि क जयसौभाग्य सिरियारी मध्य
१६१	७४४४(११)	गौतमरासो		१८८५	२०५–२१२	
१६२	४४५२(७६)	घूघूचक्र		१८वीं	१२३ वा	उलूकके सम्बन्धमें शकुन विचार
१६३	४६२४(१०)	घोडारा बखाण		१७९३	११–१२	अन्तमें नाहरखान राजसिघोतरो छद है
१६४	४४५२(९३)	घोडारा बखाण		१८वीं	१३० वॉ	
१६५	४७२६	घटीज्ञान		१९वीं	१	
१६६	५१२३(२)	चक्रकवली		१८वीं	२–११	
१६७	६६१२	चर्चासमाधान		१८१८	२३६	र का स १७८१
१६८	७१५४	चतुमकुटचन्द्रकिरणरी कथा		१८७७	३१	जीर्ण प्रति
१६९	५३ ६(२१)	चतुर्विंशतिस्थानकसूची			२४३–२४८	
१७०	४६१५(१०)	चदकवररी बात		१८८७	३४८–३६०	रचनाकाल स १७४०
१७१	५३६१(२)	चदकवररी बात तथा स्फुट कवित्त		१९वीं	५८–६७	
१७२	७७५३(११)	चदकवररी बात	कलश कवि	१८२७	४७–६०	
१७३	५४५८(१)	चदकवररी वारता	सकलकीर्ति	१८३८	४	चित्र स १ लि क प मनरङ्गसागर
१७४	४६१६(३)	चदकुमररी वार्ता	हस कवि	१८७५	४७–५४	लि क प हुकमसौभाग्य

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७५	४१४८	चदकुवरकी वात		१८१६	१८	०
१७६	४६११(३)	चदकुवरकी वारता	कवि राव	१८३० से १८३७	१–६	
१७७	७३७६	चदनवालाभगवती गीत	भक्तिलाभ	१८वीं	१	
१७८	६०५८	चदनमलयागिरिकी चौपई	भद्रसेन मुनि लिखत (?)	१८६५	१०	[illegible]
१७९	४८२१	चदनमलयागिरि चौपई	भद्रसेन	१७८६	११	[illegible] सं. १७६७ [illegible]
१८०	४६५२(४८)	चदनमलयागिरिरी वारता	भद्रसेन	१८०६	१०१–१०७	
१८१	६३३६	चदनमलयागिरि चौपई	भद्रसेन	१८३९	८	
१८२	७०७६	चदनमलयागिरि चौपई		१८वीं	५	
१८३	५०८४(२)	चदनमलयागिरिरी वात (सचित्र)		१८३९	२६–३५	[illegible]
१८४	५४१८(२४)	चन्द्रगुप्तस्वप्न		१६वीं	१५०–१५२	
१८५	४६१४(३५)	चन्द्रप्रभजिनस्तवनरो ढाल		१८७७	२५६–२५७	
१८६	४६१८(१)	चन्द्ररायकुमरकी कथा		१७६६	४–३०	[illegible]
१८७	७०७२	चन्द्रराजारास	मोहनविजय	१६वीं	१–५	[illegible]
१८८	६८५०	चन्द्रराजाचौपई	[illegible]	१८०६	६१	[illegible] १७७४ [illegible]
१८९	४०५६	चंद्रराजा रास	मोहनविजय	१८१०	८५	[illegible]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९०	६३४९(२)	चदराजानो रास	मोहनविजय	१९०६	७०–३५४	लि क हरकचद पाण्ड
१९१	७२४९	चदराजानो रास		१८४७	६८	रचनाकाल स १७८३
१९२	७४२०	चदराजानो रास		१८४९	१२३	लि क पथीराज
१९३	७४०७	चद्रलेखाचौपाई	मतिकुशल	१७७८	१८	
१९४	४०६०	चद्रलहाचरित्र चौपई		१८०५	१९	रचनाकाल स १७२८
१९५	४७९५	चद्रलहारास	,	१८वीं	२९	
१९६	४७८९	चद्रलेहारास		१९वीं	२४	
१९७	५०९६	चद्रायण कथा	ऋषि कमचद	१८वीं	२	
१९८	५३७६(१८)	चद्रायण कथा	मलयकीर्ति		२११–२१३	
१९९	४७४६	चर्चार्को		१८वीं	११	
२००	४९१४(५७)	चरित्ररत्नत्रयगीत		१८७७	३१२–३१३	
२०१	६३६३	चातुर्मासिक व्याख्यानपद्धति		१९११	२४	लि क टेकचद
२०२	५१०५	चार जणारी वात		१९वीं	३	
२०३	७२३१	चार भावना (गद्य)		१७वीं	११	
२०४	६२९२	चारिप्रत्येकबुद्धचरित्र	समयसुन्दर	१६७६	२७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०५	४४५३(३)	चित्तोडगढ़की गजल	खतल	१८वीं	६	रचनाकाल स १७४८
२०६	४८०६	चित्तोडगजल		१९वीं	२	
२०७	४८२२	चित्तोडगजल	˥	१७८३	५	तीसरा पत्र अप्राप्त
२०८	४४५२(१००)	चित्रबधकाक		१८वीं	१३४–१३५	
२०९	४७९७	चित्रसभूति चौपई	ज्ञानसागर		३५	
२१०	४२८७(१४)	चेतनगीत	मनराम	,	११५–११६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२११	७८१०(३)	चेतनदासकी वाणी	चेतनदास	१८वीं	२३०-२६८	
२१२	४४५२(६१)	चोबोलीराणीरी कथा	जिनहर्ष	,,	११८वां	
२१३	७४४४(१३)	चौढालियो (दानशील तप सवाद)	समयसुदर	१८८५	२४५-२५३	
२१४	४०६१	चौथमाताजीरी कथा		१८वीं	३	बीलाडामें लिखित
२१५	६०६७	चौवीसचौक	अमृत कवि	१८५३	७	लि क. भानुकीर्ति, जयनगरे
२१६	६६१८	चौवीस तीर्थंकरोकी पूजाविधि		१६वीं	६६	
२१७	७४२५	चौसठमार्गणाविचार		,,	१३	
२१८	५०६१	छत्तीस अध्ययनगान	सागरचद	१६४२	१५	लि क. प. हृप, मुलतानमध्ये
२१९	४४५२(७८)	छींकचक्र		१८वीं	१२३वां	छींकके सवरमें शुभाशुभ फलका परिचय
२२०	४३०८(३)	छीतरदासजीका सवैया	छीतरदासजी	,,	४४७-४५५	३५ छद
२२१	४८४७	ज्योतिषवर्त्तारी		१८८३	३०	लि क ऋषि भाणजी
२२२	५५२८	ज्योतिषसार	कवि कृपाराम	१६०७	४०	लि क. रामकुवार
२२३	४४५२(६४)	जगदेवपमाररा कवित्त	ककाळो भाटण (?)	१८वीं	११६वां	
२२४	७१७२(२)	जगदेवपरमाररी वात		१६३६	१-३५	
२२५	७७५२३(१४)	जगदेवपुआररी वात		१८३७	७१-८८	अपूर्ण
२२६	४६१६(१)	जगदेवरी वात		१८७५	४४	वात में ५ अन्य वार्ताएं हैं।
२२७	४४५२(७१)	जड भरथरा कह्या श्लोक आदि		१८वीं	१२१ वां	सवाई कूरम नरेश (जयपुर) को पराजय और मारवाड़के बखत-सिहको विजयका वर्णन, बखतसिह हाडाका नाम भी है।
२२८	४८४८	जन्मपत्रीगणित		१६वीं	२६	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२९	४५२४	जन्मपत्रीगणितक्रम (ब्रह्मतुल्य)		१९वीं	२५	
२३०	६४३४	जन्मपत्रीप्रकार		१७५९	६	
२३१	७४२७	जम्बूअज्भयण		१८८०	५८	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३२	६२९८	जम्बूगुणरत्नमाल		२०वीं	३६	
२३३	४२७३	जम्बूगणरत्नमाल	आणद जेठूमल	१९वीं	४३	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३४	४१५७	चम्पूचरित्र रास	पदमचद मुनि		३३	लि क परताबाई स्थान–अजमेर
२३५	७०४६	जम्बूचरित्र		१८७२	५५	
२३६	७५३३	जम्बूचरित्र		१७९६	६०	
२३७	७६०३	जम्बूचरित्र		१८९१	११३	
२३८	५३७६(३)	जम्बस्वामी कथा			४२–८०	विहारी विप्रण लिखित
२३९	६७३५	जम्बूस्वामी कथा		१८५६		लि क ऋषि माणकचद
२४०	६७८१	जम्बूसरकी कथा		१९वीं	४	
२४१	४०६३	जम्बूस्वामीचरित्र चौपई	पद्मचद	१८५६	३३	लि क जीवनराम ऋषि स्थान–नागोर
२४२	७३५२	जम्बूस्वामीकथा		१८६६	२०	चुरू मध्य लिखित
२४३	६८८४	जयसखवधक		१७३३	८	लि क मतिविमल
२४४	५४१८(१३)	जलगालणविधि		१९वीं	११४–११६	
२४५	४४५२(३२)	जलाल गहाणीरी वात		१८०७	३५ से ४०	लि क प प्रीतसौभाग्य गणि
२४६	४०६२	जलाल गहाणीरी वारता		१८६०	२०	लि क ऋषि टेकचद सरियारीग्राम
२४७	७७९९(५)	जलाल गहाणीरी वारता		१८५६	२–४२	
२४८	५८९५	जलालबूबनावारता सचित्र		१८वीं	३२	चित्र स १२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४६	४०६४	जामवतीचोपई	सूरसागर	१८४७	७	बीकानेरमें लिखित
२५०	४८१७	जिणरस	वेणीराम	१८४१	१७	
२५१	७१०७	जिनेश्वरपूजापद्धति		१८वीं	१६८	र.का स १६५१
२५२	५०७३	जीवदयासज्झाय	सोमसुन्दर सूरिशिष्य	,,	१	
२५३	७४४४(३)	जीवविचार		१८८५	१२१–१२६	
२५४	४६१४(२६)	जीवसिखामण रास	प्रभुचद	१८७७	२४२–२४४	,, स १८५८
२५५	४६०५ (७-६)	जुवानीरा दूहा आदि			३१–३६	अर्थ सहित पहेलियां भी है।
२५६	५४५२	जैनबोलसग्रह		१६वीं	५३	
२५७	४६१४(५४)	जोगीरास	जिनदास	१८७७	३००–३०२	०
२५८	५४१८(२०)	जोगीरासा	,,	१६वीं	१४३–१४५	
२५६	५४१८(२५)	जोगीरासा	भगोतीदास	,	१५२–१५४	
२६०	४२८७(४)	जोगीरासो	जिणदास	१७७६	१४–१८	लि स रामचन्द्र
२६१	५४१८(३१)	टण्डाणा गीत		१६वीं	१७०–१७१	०
२६२	६८४१	ढाल, पट्ट आदि		,,	६६	
२६३	४०६७	ढालसार	जोरमल	,,	१६	रचनाकाल स. १८७६
२६४	६७३७	ढालसागर		१८६७	११६	लि क सूरि गुणसागर
२६५	६१२२	,,	केशराज	१८वीं	१०१	देशी रागोंमें पद
२६६	७२२४	,,	गुणसागर	,,	७७	रचनाकाल स १६७६ हरिदास-गाता
२६७	७३७५	,,	,	१७६८	७६	
२६८	४०३३	ढालसागरप्रबन्ध	,,	१७४०	१०४	ढाल १५१

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लखनीय
२६६	४०६६	ढालसागरप्रबन्ध	गुणसागर	१७५६	८६	लि क ऋषि जोधराजी स्थान–मेदपाट श्रीसाहबा नगर
७०	५०८४(१)	ढोलामारू सचित्र अपूर्ण त्रटित		१८३६	१४	चित्र स ३६ बीकानेर में लिखित पत्र स ४० पर ग्रन्थ का अन्तिम अश है
२७१	७७२०(१)	ढोलामारुचौपई	कुशललाभ	१७५६	१–२३	
२७२	६४३८	ढोलामारवणीचौपई	वाचक कुशललाभ	१८वीं	२४	रचनाकाल स १६७३ स्थान–जसलमेर, अमरसा पठनार्थ
२७३	५८६६	ढोलामारवणीरा दूहा सचित्र			६१–११४	रचनाकाल स १५३०, चित्र स ३३
२७४	७७४७	ढोलामारूनी वात	कुशललाभ		५६	रचनाकाल स १६१७, भवरजी अजयसिंहजी पठनार्थ जसलमेर में लिखित।
२७५	६७२०	ढोलामारूरा दूहा		१६वीं	४७	
२७६	४६२४(१३)	ढोलामारूरी चौपई	कुशललाभ	१७७०	१–३४	
२७७	७७४८	तकप्रबन्ध	सरूपदास	१६वीं	५७	
२७८	७००७	ताजिकसार	हरि भट्ट	१८५०	२६	
२७६	४८७५	तुरकशकुनावली (रमलग्रन्थ)		१७६६	३	लि क देवेन्द्र सौभाग्य
२८०	७५३५	तेजसिंहजीरा सवया		१७४३	१७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२८१	४६१४(५०)	तेरहकाठिया		१८७७	२७१वां	
२८२	७६०४	तडलवेयालियपइन्न	पाशचन्द्र	१८३३	४१	लि क ऋषि मोतीचद डूगरसी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८३	७२६५	थावच्चाचौपई सविवरण	समयसुन्दर	१८वीं	१८	रचनाकाल १६६१
२८४	४६०४(२)	थावरचेवतारी वात		१८६१	३५–६५	लि क कल्याणसौभाग्य
२८५	४०६८	थूलभद्रनवरसो	उदयरतन	१८४६	५	रचनाकाल स. १७५६
२८६	४८३२	थूलभद्रनवरसो	,,	१८५२	८	लि क राजविजय
२८७	६२५५	थूलभद्रनवरसो	,,	१८वी	२	
२८८	७४४४(१४)	थूलभद्रनवरसो		१८८५	२५३–२६०	
२८९	७४२१	वण्डक सस्तवक		१९वी	९	
२९०	६५३१	द्रौपदीरास	कनककीर्ति	१८वी	४१	जैसलमेर मे रचित
२९१	६३५९	द्रौपदीरास चौपई	,,	१८१५	४०	जयपुर मे लिखित
२९२	६४१९	द्वादशभावफल		१९वीं	४	
२९३	७४४४(५)	दण्डकप्रकरण सटबार्थ		१८८५	१३६–१४३	लि क. नेमविजय
२९४	६४४६(५)	दत्तलाल को कक्को	दत्तलाल	१९वी	५–११	
२९५	४६१४(४९)	दर्शन बत्तीसी		१८७७	२७७–२७८	स १८५४ मे रचित
२९६	६५४४	दशार्णभद्र चौढाळियो	दीप ऋषि	१९वीं	३	लि. स्थान–प्रह्हिपुर
२९७	६३९९	दशावती		,,	६	लि.क. उपाध्याय पद्मउदय गणि
२९८	६९४८	दादूजीका शब्द	दादूजी	१८००	७८	आद्यन्त पत्र शोभन
२९९	६९२६	दादूजीकी वाणी आदि गुटका	दादूजी आदि	१७८७	२९८	गुटके में विविधि कृतियो का सग्रह है
३००	६९४९	दादूजीकी साखी	,,	१८वी	९६	
३०१	६९५०	दादूजीकी साखी	,,	१८६९	६७	लि क लक्ष्मणदास
३०२	४३०८	दादूवाणी आदि	,,	१८वी	४१०	विभिन्न सन्तो के ४४४० पदो का सग्रह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०३	६६३७(१)	दादूवाणी आदि	दादूजी आदि	१८११–१८१६	१०९	लि क रामदास, निराणा ग्रामे
३०४	६६५४(१)	दादूग्रन्थ		१९वीं	६५	दादू कबीर सूर मीरा आदि के पदो का संग्रह
३०५	४१४९	दाढाळारी वात		१८१७	२३	
३०६	५४३६(९)	दानशील तपभावना			४८वां	
३०७	५४३६(११)	दानशील तपभावना	दशाण भद्रराज		४६–५९	
३०८	६८४५	दानशील तपभावनासंवाद	ऋषिकुशलशिष्य	१९वीं	४५	
३०९	५९९७	दानादिकसंवाद	समयसुंदर वाचक (?)	१६६२	५	सागानयर मध्यादि
३१०	५४१८(१७)	दानाधिकार	समयसुंदर	१९वीं	१२४–१३४	
३११	७७२०(२४)	दिल्लीपातसाहीरो विवरो		१८वीं	१२–१८	
३१२	४ १७	दिवालीकल्प बालावबोध	जिनसुंदर	१९वीं	२६	
३१३	४४५२(२८)	दूहा	कवि ज्ञान		२६वां	पुरुष शृंगार और स्त्री शृंगार के १६ १६ दूहा
३१४	७७२१(१३)	दूहो श्रीमहाराज जसवंतसिंहजीरो	म जसवंतसिंहजी	१९३१	२००वां	हरिरस की प्रशंसा में रचित
३१५	६०१५	देवकीरी चौपाई		१९वीं	९	
३१६	४४५२(७९)	देवीचक्र		१८वीं	१२३वां	
३१७	७३७३	देशना शतक		१७वीं	१९	
३१८	४८५५	दोषवेवली		१८वीं	१	लि क मानसिंह
३१९	४९१४(५)	दोहाशतक	रूपचंद	१८७१	१६२–१६५	
३२०	४९१५(१३)	धमाळ		१८८७	३८४–३८९	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	४५५२(५१)	धमाळ धमाल		१८वीं	१०७ वाँ	
३२२	७३६६	धर्मबुद्धि चोपाई	लालचंद	१७६०	१६	लि.स्था जैसलमेर
३२३	५४१८(१५)	धर्मवत्तीनी		१६वीं	११८–१२१	
३२४	७७५३(१२)	धर्मबावनी		१८३७	६०–६६	अपूर्ण
३२५	४०६६	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चोपाई	लालचंद	१८२५	२५	र.का. सं० १७४२
३२६	५२२३	धर्मोपदेश		१६वीं	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२७	४८०८	धामनो वर्णन		,,	६	
३२८	५४३६(१२)	नरक रो चोढाळियो	गुणसागर		३	
३२९	६६५४(२)	नरसीमाहेरो		१८८८	६५–६६	६८वा पत्र अप्राप्त
३३०	५२०२(२)	नरसीजीको माहेरो	वसन्त	१८८५	८७–६१	
३३१	४०७०	नलदमयन्तीचौपई	समयसुन्दर	१८३६	२५	रचनाकाल सं १६७३
३३२	६६१३	नवकारमन्त्रदर्शन		१६वीं	१३५	
३३३	७६६७	नवकारवालीनो सज्झाय	लब्धिविजय	,,	१	
३३४	६४१२	नवपदपूजा		१८८५	१४	
३३५	५४८१	नसीहतनामा और देवीदासके कवित्त		१६वीं	१३८	स्फुट
३३६	४४५२(४)	नागदमण		१८वीं	७ से ६	
३३७	७०७३	नागदमणचौपई	साईदास	१८२४	६	
३३८	६३६०	नागदमण छंद		१८वीं	४	
३३९	४६२४(३)	नागदमणकथा		१७८७	१५–१८	
३४०	४४५२(२२)	नागमंतर		१८वीं	२३ वाँ	सर्प-विष उतारनेके २० मंत्र
३४१	५०६६	नागिला भवदेव रास	समयसुन्दर	१७४१	५	लि.क प. ईश्वर, अहमदावादे

ग्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामन्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	४३१२	नाथियाका सोरठा	नाथिया (?)	१९वीं	११	१४० सोरठे
३४३	६९३७(३)	नामदेवजीका सबद	नामदेव	१८११-१८१६	१८७-२०१	लि क रामदास निरोणा ग्रामे
३४४	४८३१	नामप्रताप	रामचरण	१९वीं	१२	
३४५	७८१६( )	नारायणलीला	माधवदास	१८३१		लि क कायस्थ भावसिंह
३४६	४४५२(५०)	नासिकाविचार		१८वीं	१०७वाँ	
३४७	६७४६(१)	नासिकेतपुराणकथा	वार्तिक नन्ददास	१९वीं	८८	
३४८	६११०	नासिकेतपुराण भाषा	नन्ददास		५१	
३४९	४२९३	नासिकेतमहापुराण भाषा	स्वामी नन्ददास	१८३७	४४	लि स्था लालुवास प्रतापसिंहराज्ये
३५०	५४१८(३३)	निर्वाणकांड		१९वीं	१७३-१७५	
३५१	४४५२(२५)	निसाणी	सूरज	१८वीं	२४वाँ	
३५२	५०७७(२)	नेमराजीमती सज्झाय	यशोविजयसूरिशिष्य	१८०२	१ ला	
३५३	४९१४(३४)	नेमिनाथनी साखी		१८७७	२५५-२५६	र का स १६७० सूरतबंदर
३५४	५३३०	नेमराजलका सवया		१९वीं	२५	
३५५	७३०३	नेमराजल बारामास	कवियण (?)		१	
३५६	६३०४	प्रत्यकबुद्धचोपई	समयसुन्दर	१८६७	२४	लिखित जयपुरमध्ये
३५७	६५२९	प्रत्यकबुद्धचोपाई		१८२५	२८	लि क परमान द शिष्य जतसी
३५८	५२७०	प्रद्युम्नप्रबन्ध	कमलबधु	१८१३	२८	र का स १७२२
३५९	५२७४	प्रद्युम्नप्रबन्ध	समयसुन्दर	१७३९	२०	चूडामणिन लिखनाया प्रथम पत्र अप्राप्त
३६०	५०६८	प्रदेशीरायचोपाई		१८९०	२९	पाटणमध्ये लिखित

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६१	६०३३	प्रबोधचिंतामणिचौपई	धर्ममदिर गणि	१८५८	७७	लिखित बीकानेरमध्ये
३६२	५१३७	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक		१९वी	५७	
३६३	४६१५(१४)	प्रश्नोत्तरीरत्नमाला	मगनीराम		३८६–३९५	र का स १८८६
३६४	५१०१	प्रहेली	जिनहर्ष	१९वी	५	आद्य २ पत्र मसीप्लुत
३६५	५३२६	प्रश्नशकुनावली		,,	१२	
३६६	६३४९(१)	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक	क्षमाकल्याण	१९०६	७०	लि क. हरकचद पाडे
३६७	६८५४	प्राकृतप्रबन्धसग्रह	मोहनविजय	१८६८	११९	लि क वखतावर, बीकानेरमध्ये
३६८	४७९२	प्रास्ताविक दूहा	जसराज आदि	१८वीं	३	
३६९	५३६५	प्रास्ताविक दूहा		,,	६	
३७०	४८०९	प्रास्ताविक दोहरा	वृन्द आदि	१९वीं	३	
३७१	४८१५	प्रास्ताविक दोहरा	,,	१८३९	३	लिखित राजपुरमध्ये
३७२	५३४५	प्रास्ताविक पत्र		१९वीं	८	पत्नी का पति के प्रति आदि
३७३	४४५२(९९)	प्रास्ताविक श्लोकदूहा आदि	उदैराज आदि	१८वीं	१३२–१३४	
३७४	४७९३	प्रियमेलकचौपई	समयसुन्दर	,,	७	ऋषि भीकमजीपठनार्थं
३७५	४८२१	प्रियमेलकचौपई	,,	१७वीं	६	
३७६	६८७५	प्रियमेलकचौपई	,,	१९वीं	८	लि क लब्धिकीर्ति गणि राणपुरमध्ये
३७७	५४१८(२८)	पचगतिकी वेली	मुनि हर्षकीर्ति	,,	१६५–१६७	र का. स १६२३
३७८	४८५०	पञ्चागानयनविधि भाषा	मेघराज लब्धिविजयशिष्य	,,	२	र का १७२३
३७९	४६१४(५८)	पचेन्द्रियकी वेली	ठाकुरसी	१८७७	३१३–३५	र. स. १५८५
३८०	५२९५	पचेन्द्रियचौपाई		१८७२	५	उज्जैनमध्ये लिखित
३८१	५३४१(१)	पन्नावीरमदे वात		१९वीं	२ से ५७	लि क बोरा वीरानन्द

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८२	४९१५(४)	पन्नावीरमदेरा वात	नेतसिंह	१८८७	७६–१३४	७८वां पत्र खंडित
३८३	७१६६(१)	पन्नावीरमदेकी वात		१९७७		गुटका
३८४	४८०७	पद्मिनीचौपई	हेमरतन	१८२७	५१	
३८५	४९१०	पद्मिनीचौपाई	हेमरतन	१९वीं	३१	
३८६	६९१४(१०)	पद	सकलकीर्ति	१८७१	२०७वां	
३८७	४९१४(३१)	पद		१८७७	२४८–२४९	स्फुट
३८८	४०७२	पदमसीपदमावतीचौपाई	मुनि माल	१८वीं	२२	
३८९	७७२१(५)	पनरवावनागकुनावली		१८२५	११८–११९	
३९०	४९१६(६)	पनरमी विद्या		१८८१	८४–९६	
३९१	४४५२(४९)	पनरमी विद्या स्त्री चरित्र		१८०५	१०३से१०७	लि क प प्रीतसौभाग्य गणि
३९२	४०७९	परदेसीप्रबन्ध	ज्ञानचंद	१८४८	३१	
३९३	७४१२	परदेसीप्रबोधचौपई	,	१७५५	२२	
३९४	४८२७	परदेसीराजारी चौपई		१८८५	२९	लि स्था बडलो
३९५	५४१८(२९)	परमादि (प्रमाद)	गोपालदास	१९वीं	१६७–१६८	
३९६	४०७३	परस्वरियावरी वात		,	३६	लि क अखुजी
३९७	४०७४	पांडवचरित्रचौपई	लाभवर्द्धन	१७८५	५६	र का १७६७
३९८	७७२३	पांडवविजय	मलूकदास	१९२९	३७७	लि क जीताराम फतेहपुर मध्ये
३९९	४९१४(५५)	पार्श्वनाथप्रासादवारकथा		१८७७	३०२–३११	स १६७० की प्रति से प्रतिलिपि की गई
४००	६४३३	पाशाकेवली	गर्ग ऋषि	१९९९		लि क रूपां साध्वी
४०१	७६७०	पाशाकेवली		१९वीं	५	जोधपुर में लिखित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४०२	५१२३(३)	पाशाकेवली अवचूरी		१८वीं	१२–१६	
४०३	६२८२	पाशाकेवली अवचूर		१६वीं	१६	
४०४	७८२३	पिङ्गलरो समीयो	चन्द (?)	१८वीं	८	चित्र सं.७ ग्र सं ५४५७ के साथ संयुक्त।
४०५	४४५५	पिङ्गलशास्त्र टीका		१८७१	२३	शाजतानगरे, मालवदेशे लिखितं
४०६	७१४३	पुण्डरीककुंडरीकनी ढाळ	मुनि हर्ष	१६वीं	५	
४०७	५११६	पुण्यसारचरित्र	हर्षचन्द्र गणि	१८७५	३	र का सं. १६६२ सांगानेर में रचित
४०८	७५३०	पुण्यसारचौपाई	पुण्यकीर्ति	१८वीं	५	जीर्ण और त्रुटित प्रति
४०९	६४३७(१)	पुरन्दरकुंवरकथा	मालदेव	,,	४८	
४१०	४८२६	पुरन्दरकुंवरचौपई	रतनविमल	१९वीं	२१	
४११	४६७६	पूर्णिमाविचार		,,	४	
४१२	५३३२	पूर्वदेशचैत्यप्रवाडी		,,	३	जीर्ण और त्रुटित प्रति
४१३	४९०३	पृथ्वीराजरासो	चन्द कवि	,,	१२६	
४१४	७१२८	पृथ्वीराजरासो	,,	१७४७ से १७५३	६६	,,
४१५	७१५०	पृथ्वीराजरासो	,,	१८वीं	१६२	जीर्ण गुटका
४१६	७१६४	पृथ्वीराजरासो (पद्मावतीको समो)	,,	१९४१	७६	लि क. चिरञ्जी मुफसताल केकड़ी निवासी
४१७	७१६८	पृथ्वीराजरासो आदि		२०वीं	११८	कई रचनाओं का संग्रह
४१८	७१६९	पृथ्वीराजरासो आदि		,,	,,	
४१९	७१६६(२)	पृथ्वीराजरासो (महोबाको समो)		१९७७	,,	
४२०	४९१४(१६)	पोरुतीनोरास	ज्ञानभूषण	१८७१	२१८–२२२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२१	४०७१	पोमतीरा रासो	बखतो	१८८२	४	
४२२	७७२२(१२)	फुटकर ओषध		१८वीं	११६-१२५	बधिरता वायगाठ आदि रोगो को ओषध
४२३	४६२४(१८)	फुटकर कवित्तादि		१८वीं	२७-२६	
४२४	४६२४(७)	फुटकर ज्योतिष		१७६३	१४-१५	पन्द्रह तिथियो के दोहे आदि
४२५	५२७२	फूलकुवर फूलकुवरीरो वात		१६१२	१४	र का स १८५२
४२६	५०८१	फूलकुवर फूलकुवरीरो वात		१८६०	७२	चित्र स ४५, र का स १८३०
४२७	५५००	फूलजी फूलमतीरी वात		१८४६	२६	अन्त में चोढाळिया आदि
४२८	४६१४(३७)	ब्रह्मजिणदासनी वीनती	ब्रह्म जिणदास	१८७७	२५८-२५६	
४२६	७७४३(३)	ब्रह्मनिरूपण	राजसिंघ	१७८४	४६-५३	लि क वाई सिरेकवरी
४३०	५८६७	बगसीराम प्रोहित हीराकी वात	कवि तेण	१६वीं	६५	*
४३१	७७५३(७)	बामणवाडरो स्तवन	कमलकलश शिष्य (?)	१८३७	३६-४१	
४.२	४६१४(६२)	बाई जतन न जीवणनी विगत		१८७१	३२१ वां	
४३३	७१३६	बाईस परीक्षाकी चोपाई	ऋषि रामचन्द्र	१८२२	४	र का स १८२२
४३४	४३२०	वातसग्रह		२०वीं	५२२	राजस्थानी भाषा की चौबीस प्रकीर्ण वार्ताओं का सग्रह,
४३५	७८१७	बादशाही हाल		१६वीं	८-५०	
४३६	४६१४(२७)	बारह अनप्रेक्षा	चन्द्रकीर्ति	१८७७	२४४-२४६	
४३७	४७२१	बारह पुनमरो विचार		१६वीं	१	
४३८	४७३७	बारह भवनफळ		१८४०	५	लि क सुमतिसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३९	७४४४(१५)	बारहभावना	जयसोम शिष्य	१८८५	२६०-२७०	जैसलमेर में रचित
४४०	७७५४ (१,२,३)	बारहमासीसंग्रह		१९२२	१५	भक्तराजका बारह मासा र.का.स. १८९०
४४१	४२८७(१५)	बारहमासो	रामचंद्र	१८वीं	११६-१२७	
४४२	७६२१	बालचन्द्रबत्तीसी	बालचन्द्र	२०वीं	७	
४४३	४१४२	बुद्धिसेणचौपाई	तिलक सूरि	१९वीं	६६	
४४४	७५४२	बोलविवरण	आचार्य केशवजी (?)	१७वीं	६२	
४४५	७७५३(१०)	भमरगीत	महमद	१८३७	४५-४६	
४४६	५८८५	भक्तमार	शालिग्राम	१९वीं	२२	
४४७	७७२१(१)	भक्तीपुराण	हरदास	१८२५	१-२५	र.का.स. १८५५ शिव-स्तुति, कई स्थानों पर चित्र भी हैं।
४४८	७७४४(४)	भजनसंग्रह	चैना	१७५८	१८-२२	
४४९	५१२३(७)	भडुली	भडु कवि	१८वीं	२६-४१	लि.क. नेतकुमारी
४५०	४४५२(१७)	भडलीदूहापचीसी	"	"	१६ वां	
४५१	६७२८	भडलीपुराण		१८८१	१०	
४५२	५१२२	भडलीरा दूहा	भडु कवि	१८२८	३	
४५३	४४५२(६८)	भडलीवाक्य	"	१८वीं	१३२ वां	
४५४	५८००	भडुलीवाक्य	"	१९१३	१४	१५ दूहा लि.क. प्रागदासो, खतार
४५५	७६३०	भरताधिकार		१७९३	५३	लि.क. जोकमजी, पट्टणमध्ये
४५६	४८३०	भवानीछन्द		१९वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५७	४७६६(२)	भाषा लीलावती (पद्यानुवाद)	लालचंद	१७७५	१ से १५	म रायसिंह, बीकानेर के अमात्य कोठारी नेणसी पुत्र जतसी की प्रार्थना से उनके गुरु द्वारा रचित
४५८	७४१०	भुवनद्वारविचार		१६वीं	२०	
४५९	७७२२(१०)	भरथ आदि की बोलीविचार		१८वीं	१०७-११४	
४६०	६७०२	भोगलपुराण (उमामहेश्वरसंवाद)		१७७२	३०	लि क टीकूदास
४६१	४८२५	मच्छोदरचौपई	शान्तिहंस	१८४८	२३	लि क क्षमा सौभाग्य
४६२	४७६८	मदनवार्ता	खुश्यालचंद जालधरी	१८वीं	१०	
४६३	४४५४(१)	मदनगीत (अपूर्ण)			२	
४६४	४३१५	मधुमालतीकथा	चतुर्भुजदास कायस्थ	१८८८	८१	लि क तुलसीराम कनौजिया, सवाई जनगर
४६५	४६११(१)	मधमालतीकथा		१८३२	१ से ४१	
४६६	५४५७	मधुमालतीकथा (सचित्र)		१६वीं	२-८७	चित्र स ८७
४६७	५०७८	मधुमालतीकथा (सचित्र)	,	१८८१	२१६	चित्र स २२३ लि स्था पालनपुर
४६८	५०७६	मधुमालतीकी वात		१८वीं	८८	चित्र स ६०
४६९	४०८४	मधुमालतीचौपई	चतुर्भुजदास	१६वीं	६०	लि क सेसमल्ल, कापरडा नगर
४७०	५०८०	मधुमालतीरी कथा		१८वीं	१२५	हाडोती कलम के २७० चित्र
४७१	४६१५(८)	मधमालतीरी वात	,,	१८८७	१४१-१६६	लि क हररूप जालोर
४७२	५४१८(१२)	मनभवरा गीत	कवि माल	१६वीं	११३-११४	
४७३	४६१४(२६)	मनोरथमाला		१८७७	२४८ वाँ	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
४७४	७७२२(४)	[illegible] दूहा		१९वीं	४८–५२	३० पद्य
४७५	४८१४(४४)	मरुदेवीरो [illegible]		१८७७	२७२–२७४	
४७६	५०७७(५)	मलयासुन्दरीचोपई	गोपालदास		६४–१४८	र का. १६९९
४७७	४४५२(१८)	महादेवजीरो छन्द	[illegible]	१८वीं	१९ वां	
४७८	४६१४(५३)	महाराणारो गीत	गङ्गदास पर्वतसुत	१८७७	२८८–३००	
४७९	६८५१	महाबलमलयासुन्दरीरास		१९वीं	२१	
४८०	४७४३	महाराजा [illegible]सिंहजीजन्मो-त्सव[illegible]		१८वीं	८	
४८१	५४३५(५)	महावीरजीरो पारणो		१९वीं	३३–३६	
४८२	७३५६	महावीर दसोठण जीमणवार विगत		१७६८	२	
४८३	७०५८	महासती सीताचरित्र	पुन्ह कवि	१८७१	८८	लि. स्था. अयोध्यापुरी र. का १७७३ (?)
४८४	४४५२(१०)	माताजीरो चरजा		१८वीं	१३ वां	
४८५	४४५ (१२)	माताजीरो गीत		१८०८	१६ वां	लि.क. प्रीतसौभाग्य
४८६	४४५२(११)	माताजीरो [illegible]	[illegible]जी	१८०७	१४–१६	लि क प्रीतसौभाग्य, वणेडा ग्राम
४८७	४४५२(८५)	माताजीरो छन्द	कवि सारग	१८वीं	१२६ वां	
४८८	७७२१(११)	माताजीरो छन्द	चारण [illegible]	१९३१	१७७–१७९	लि क अमरसिंह खिडियो
४८९	४६११(४)	माधवानल कामकन्दलाचोपई	कुशललाभ	१८३०	६	विजयपुरमध्ये लिखित
४९०	४६२४(१६)	"	"	१७९२	१–२२	
४९१	५११८	मानतुङ्ग मानवतीचोपाई	मोहनविजय	१८वीं	२१	अणहलपुर पाटण, दुर्गादास राठोड़ राज्ये रचित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	६१३८	मानतुङ्ग मानवती रास	मोहनविजय	१८०६	४४	र का स० १७१०
४६३	६१३६(१)	मानतुंग मानवती रास (सचित्र)		१८७८	६५	चित्र स० ८८
४६४	६२६७	मानतुंग मानवती रास	,	१६१४	३६	
४६५	६३३५			१८२४	५०	लि क आलमचंद मकसूदाबाद अजीमगजमध्ये
४६६	६५३४			१८७६	७६	
४६७	७३६६		अभयसोम	१८२८	११	र का स १७२०
४६८	७५२८	मानवतीरास	मोहनविजय	१८६२	८४	
४६६	७५५७	,,		१७६७	३५	र स्था अणहिलपुर पाटण
५००	४४५२(८०)	मासधिचक्र		१८वीं	१२३ वां	बोलन के फलाफल का विचार
५०१	६५२६	मुनिपति चरित्र (गद्य)		१६वीं	२१	
५०२	६३५५	मनिपति चरित्र बालावबोध		१७६६	३१	
५०३	५४३६(४)	मुनिमालिका			२६–३३	
५०४	६२७२		कल्याण	२०वीं	२०	र का स १६३६
५०५	५८६१	मृगलखाचौपाई (सचित्र)	मुनि सागरचन्द्र	१८३८	५३	चित्र स ४८
५०६	६७४५	मृगाङ्कलखाचौपाई (सचित्र अपूर्ण)		१६वीं	३६	चित्र स ४२
५०७	७०५७	मृगावतीचरित्र	समयसुन्दर	१८वीं	३८	र का स १६२८ प्रथम पत्र अप्राप्त
५०८	४०८६	मृगावतीचरित्र चौपई		१८वीं	२४	र का स १६६१ (?)
५०६	६५३३		,		२३	
५१०	६२५०	मगावतीचौपाई			१३	
५११	६८३८	मेघकुमार चोढाळियो आदि		१७३८–४६	५३	जीर्ण प्रति १२ कृतियोंका संग्रह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१२	४२८२	मेघमाला		१९वी	५	लि क. भगवानदास
५१३	४९१४(१६)	मेरुजयमाला		१८७१	२०९वां	
५१४	४८५२(६०)	मेषसक्राति आदि		१८वीं	११७वां	
५१५	६९२२	मैणरेहा चौपई		१९४९	७	लि.क मुनि केशरीचद
५१६	५१०२	मोती कपासिया वाद	श्रीसार	१८वीं	५	लि.क मुनि नित्यसागर खेडामध्ये
५१७	७०७७	मौनएकादशीकथा (गौतममहावीर-सवाद)		१८२४	५	
५१८	६७६२	मोहमरदराजाकी कथा (पद्य)		१९५३	१३	लि क. गरीबदास
५१९	५६०१	मोहविवेक चौपाई	धर्ममन्दिर	१७९९	६६	लि क भीमविजय
५२०	६४००	योगदृष्टिस्वाध्याय	नयविजय	१९वी	५	दीमक से कटे जीर्ण पत्र
५२१	५४१८(१८)	योगसारके दोहे	योगचन्द मुनि	,,	१३४–१४०	१०७ दोहा
५२२	५४५०	योगासनमाला (सचित्र)		१८४६	११०	लि.क. स्वामी शोभाराम खातीपुरामध्ये
५२३	६०३८	रत्नकुमाररास	सहजसुन्दर	१८वी	११	
५२४	४०८७	रत्नचूड चौपई	कनकनिधान	१८१४	१२	र.का स, १७३८
५२५	४८१९	रत्नपालरास	मोहनविजय, वुधरूपविजयशिष्य	१८६७	५४	लि क. हितसौभाग्य क्षमा–सौभाग्यशिष्य
५२६	६०५७	,,	सूरविजय	१९००	७६	
५२७	४९१४(३०)	रत्नत्रय		१८७७	२४८वां	
५२८	६५३२	रतनपालरास	सेवक सूर	१८२७	३२	र.का. स १७३२, छोटी खाटू-मध्ये, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२९	४८३३	रतन महेशदासोतरी वचनिका	खडियो जगो	१७४१	७	लि क प्रमोद मुनि रोहितासपुरे
५३०	४९१५(३)	रतनाहमीररी वात (पद्यबद्ध)	कवियण (?)	१८८७	४२–७५	२०० पद्य लि क प्रभुदान
५३१	५४१८(२६)	रविकथा	तिहुरा गिरिनिवासी गगगोत्रीय म लूकपुत्र (?)	१९वीं	१५४–१६३	लि क रामसागर
५३२	५४१८(२७)	,	भानुकीर्ति	,,	१६४–१६५	
५३३	७४४४(१६)	रागपदबहोतरी	आनन्दघन	१८८५	२७०–२९४	लि क नेमविजय
५३४	४२८७(९)	रागपदसंग्रह		१८वीं	१७–२८	
५३५	५१००			१९वीं	३	
५३६	५४१८(३४)	रागरासाष्टक			१७५–१७६	
५३७	७७२०(२३)	रागानामोपरि विरहसुभाषित		१७६५	९–११	
५३८	४९०६(२)	राजसभारंजन	रसिक (?)	१७९८	१–२५	* र का स १७५९ ३७० दोहा
५३९	४९१५(१७)	राजावतरी वातरा दूहा		१८८७	४०६–४१०	
५४०	४९१६(२)	राजाभोज माघपडित न डोकरीरी वात		१८७५	४५–४६	लि क सोभाग्य गणि
५४१	७७२१(६)	राजा रतनरी वचनिका	खिडियो जगो	१८२५	११९–१४१	
५४२	७७२०(२१)	राजावली			७ वां	स १२९७ से १७७० तक के सीसोदिया राणाओंका वंशपरिचय
५४३	४७९९	राणारी वंशावली		१८वीं	१	नागधरानरेश से अमरसिंहपुत्र संग्रामसिंह तक
५४४	४९१४(८)	राजुलपचीसी बारहमासी	राजुल	१८७१	१६७–१६८	
५४५	५४१८(३५)	राजुलपचीसी	आनन्दघन	१८०६	१–६	लि क दयानिधि

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४६	७१४४	राजुलपच्चीसी	लालचंद	१८५८	४	लि क सम्पा, आगरामध्ये
५४७	७२४३	राजुलपच्चीसी	,,	१९वीं	२	
५४८	५१०४	राठोड रतनमहेसदासोतर वचनिका	खिड़ियो जगो	१८०२	३७	लि.क धर्मसुन्दर, प्रथम पत्र अप्राप्त
५४९	४४५२(९१)	राठोड़ारी वंशावली		१८वीं	१२९ वां	१११ राजाओं के नाम
५५०	४८३४	राठोड नाहरखानरो छन्द	गाडण माधोदास	१९वीं	१	*
५५१	६४४६(७)	राधाजीकी बारहखड़ी		,,	१४–१६	
५५२	७७४४(३)	रामविलास		१७५८	८–१७	
५५३	४४५२(१९)	रामकिशनजीरो छन्द		१८वीं	१९ वां	
५५४	५६०३	रामकृष्णचौपाई	लावण्यकीर्ति	१७११	३०	र का स १६७७
५५५	६४६७	श्रीरामचन्द सवारी (गद्य)	रामनाथ	१९वीं	६	
५५६	७८१०(२)	रामचरणदासजीका कृतिसंग्रह	रामचरणदास	१८वीं	२६–२३०	७ कृतियों का संग्रह
५५७	६८५३	रामजसरसायन		१८९४	११४	र का स १६८७
५५८	७७४४(१)	राममञ्जरी	गोविन्ददास	१७५८	१–२	
५५९	६३५७	रामयशोरसायन	केशराज	१७९४	८९	
५६०	६७४९(२)	रामरक्षाभाषा	रामानन्द	१९वीं	८८–९२	
५६१	७६०९	रामरक्षामंत्र	,,	,,	३	लि.क केशवराम
५६२	४९२४(५)	रामगुणरासो	माधोदास दधवाड़िया	१७८८	१–३२	लि.क जयसौभाग्य गणि
५६३	७७२१(२)	रामरासो	,,	१८२५	२५–९९	
५६४	७७३५	रामरासो	,,	१८वीं	८१	गुटका, अपूर्ण
५६५	७१४०	रायप्रश्नश्रेणीमध्ये ईग्यारह प्रश्न		२०वीं	७	
५६६	७७२२(८)	राव सत्रसालरो गीत		१८वीं	१०५ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६७	४४५२(७५)	रासभचक्र		१८वीं	१२३ वां	गधे के विषय में शकुन विचार
५६८	४४५७	रात्रिभोजन चउपई	धमसमुद्र	१७२३	७	लि क भक्तिविशाल
५६९	४६१४(४३)	रात्रिभोजन रास		१८७७	२६८–२७२	
५७०	४६१४(४१)	रात्रिभोजन सज्झाय		१८७७	२६६ वां	
५७१	४६१४(४२)	रात्रिभोजन सज्झाय	कवियण	१८७७	२६७–२६८	
५७२	४६०५(१२)	रीसालुकुवररी वात स्फुटदोहा	नवदो चारण	१८७५	१–२५	लि क अनूपविजय
५७३	७१२२	रुक्मिणीमंगळ(कृष्णको व्याहलो)		१९वीं	१२–४२	अपूर्ण
५७४	६६७५	रुक्मिणी व्याहलो		१८६७	१३२	गुटका, स ४८ से ६४ तक के पत्र अप्राप्त
५७५	४०७६	रुक्मिणीवेली (सबालावबोध)	मू पृथ्वीराज, टी कुशलधीर गणि	१८२६	४३	लि क जीवणदास, रेवां ग्राम
५७६	४०७७	रुक्मिणीवेली (सस्तबक)	मू पृथ्वीराज टी लब्धिविशाल शिवनिधान	१७८९	२८	
५७७	७१६५	रुक्मिणीवेली नागदमण आदि		२०वीं	गुटका	जीर्ण
५७८	४०७८	रुक्मिणीवेली (राजस्थानी अर्थसहित)	पृथ्वीराज	१८वीं	२७	
५७९	५२२१	रुक्मिणीहरण रास		१९वीं	१५	पत्र १, १२ अप्राप्त
५८०	५८६४	रूपसेनकुमार रास (सचित्र)		१८वीं	१३	लि क साध्वी मेरुश्री चित्र स १६
५८१	६६३७(४)	रैदासके पद	रैदास	१८११–१८१६	२०१–२०९	लि क रामदास निराणाग्राम
५८२	४०२७	रोहिणीतपस्तवन आदि	श्रीसार, राज आदि	१८वीं	२२	
५८३	६११९	लीलावती चौपाई	लाभवर्द्धन	१७४२	१४	पत्र १ से ३ अप्राप्त
५८४	६३७८	लीलावती चौपाई		१९वीं	३६	
५८५	६०५६	लीलावती भाषा	लालचन्द	१७८३	२०	र का स १७३६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८६	४८३६	लीलावती रास	उदयरतन	१८०७	१६	लि क मुनि जेठा
५८७	५२८६	लीलावती रास	,,	१९वीं	१२	र का स १७६७
५८८	४९१४(२५)	लूंकामतनिराकरण प्रतिमास्थापन रास	सुमतिकीर्ति	१८७७	२३४ से २४२	
५८९	४०८८	वच्छराजहंस चौपाई	जिनोदय	१८६१	३३	लि क रूपविजयजी वातानगर
५९०	४७८१	वध्याकल्प		१८१४	४	
५९१	७७२६	वंशभास्कर	सूर्यमल्ल	१९४३	१८४	लि.क. बारहठ बालावक्सजी, ग्राम हणूत्या, काशी ना. प्र. सभा में ग्रन्थमाता के संस्थापक
५९२	७७२७	वंशभास्कर	,,	१९४०	१८४	
३९३	७७२१(३)	वमेकवारतारी नीसाणी		१८२५	९९-११०	लि क श्वेताम्बर पञ्चायण
५९४	७१५१	वर्षाऋतुका कवित्त आदि		१८७६	७५	लि क नैन्दास, गोरपुरमध्ये
५९५	४७१६	वर्णोत्पत्ति		१९वीं	२	
५९६	५३७६(२०)	वारसेनमुनिकथा			२२९-२४२	
५९७	६७३८	विक्रमखापरा चौपई	अभयसोम	१९वीं	१६	खण्डित
५९८	६४१४	विक्रमचरित्र (वैतालपचीसी)	हेमानन्द	,,	२७	
५९९	६९१५	विक्रमचरित्र (चौबोलीसतीचौपई)	उभयसोम	१८९५	११	र.का. स १७२४
६००	७०१४	विक्रमादित्यभूपालपञ्चदण्डकचरित्र	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७६२	५५	र का स १७२८
६०१	६४१५	विक्रमादित्य लावणी	धर्मदेव (?)	१९७७	६	लि स्था. देवगढ
६०२	७६२०	विजयसेठ विजयासेठाणीलावणी	लालचंद	२०वीं	३	र.का. स. १८६१
६०३	६१११	विद्याविलास चौपाई	जिनहर्ष	१८२९	१८	
६०४	४०९९	विनयभट्ट श्रेष्ठिपुत्रकथा	ऋषभसागर	१९वीं	७०	र.का. स. १८१०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०५	४९२४(६)	वमक (विवेक) बाररी नीसाणी	कनयदास	१७९३	१–१४	लि क जयसौभाग्य, आठपहररा दूहा आदि भी हैं।
६०६	४४५२(४१)	विमलशाहजीरो सिलोको	शांतिविमल	१८वीं	४५–४८	
६०७	४१४५	विमलशाहको सिलोको	पंडित विमल	१९वीं	१४	
६०८	४४५२(५३)	विवहुरा विचार		१८वीं	१०९वां	
६०९	४९१४(४)	विषापहार स्तोत्र	अचलकीर्ति	१८७१	१६०–१६१	
६१०	६३३४	विषापहार स्तोत्र		२०वीं	१३	
६११	७७२२(१४)	वीरम देईडरिया आदिके कवित्त		१८वीं	१५२–१५६	* लि क प्राणदराम
६१२	७७९९(१)	वीरमदे पत्नीरी वार्ता (सचित्र)		१८५६	१–३७	चित्र सं० १८
६१३	८१३९	वीरसेन राजकथा आदि		१९२४	८	लि क प० जीवो
६१४	४४५२(६२)	वद्धमानको काडो		१८वीं	११८वां	लि क प० प्रीतसौभाग्य
६१५	७७४३	वेदस्तुति भाषा	राजसिंघ	१७८४	३३–४६	* लि क बाई सिरकवरी, सामरगढमध्ये
६१६	५३६८	वैतालपच्चीसी		१९वीं	४०	लि स्था –जोधपुर
६१७	६४४३	वैतालपच्चीसी	म अनूपसिंह	१८६१	४४	लि क पुरुषोत्तम व्यास
६१८	७०४४	वैतालपचीसी	शिवराम	१७२६	५२	६१ कवित्त
६१९	७७२२(२)	वैतालपचीसीरा कवित्त		१९वीं	३७–४५	
६२०	७४४४(८)	श्रावक अतिचार		१८८५	१८०–१९०	
६२१	७१२२	श्रावक कथाकोश भाषा (अपूर्ण)		१९वीं	२१	
६२२	७७५३(८)	श्रावकरी सज्झाय	जिनहर्ष	१८३७	४२–४४	
६२३	७८१६(१)	श्रीधरलीला		१८३१से १८३३	४८	
६२४	६०२४	श्रीपालकथा	रत्नशेखर	१७२७	२६	लि क शांतिलाभ जैतारणमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२५	६२०५	श्रीपालचरित्र चौपाई	परमल्ल	१८५८	१००	लि.क ब्राह्मणगुलाब, भगवतगढमध्ये
६२६	४००२	श्रीपाल चौपाई	जिनहर्ष	१८२३	२५	
६२७	६६१६	श्रीपालचरित्र	सुजसविजय	१९२८	७८	लि क. मगूमल,प्रथमपत्र अप्राप्त
६२८	६३५१	श्रीपालचरित्र भाषा		१६१७	१०२	
६२९	६५२७	श्रीपाल चौपाई	ग्यानसागर	१७६१	३४	र का. स० १७२६
६३०	४१३८	,,	जिनहर्ष	१८६४	३५	
६३१	७२४८	श्रीपाल नरेन्द्रकथा		१६वीं	३१	
६३२	७०८६	,,	हेमचन्द्र, रत्नशेखरशिष्य	१८२३	१३७	लि क. गोवीचन्द्र
६३३	४४६३	श्रीपाल रास	ज्ञानसागर	१७३२	१३	र का. सं० १७२६
६३४	६५२८	,,	विनयविजय	१८५७	५५	र का. १७३८
६३५	६७४६	,,		१८७७	गुटका	र का. १७३८
६३६	५३७३(५)	श्रीपाल रास (अपूर्ण)		१८०६	१०६–११८	
६३७	४४५२(७७)	श्वानचक्र		१८वीं	१२३ वां	कुत्तेके कान फडफडानेके विषय मे फलाफल-विचार
६३८	६८६३	शकुनदीपिका चौपई		१६वीं	८	
६३९	४४५२(६२)	शकुनरा कवित्त तथा जैसिंह सवाई-		१८वीं	१२० वां	
३४०	४४५२(३०)	वखतेसयुद्ध				
		शकुनरी चौपाई (अपूर्ण)		१८वीं	३१–३२	
६४१	४४५२(७)	शकुनविचार		,,	११ वां	
६४२	४१६०	शकुनावली		१७वीं	२	४ पत्रो का फल
६४३	५१२३(४)	,,		१८वीं	१६–२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४४	४६८६	नतसवत्सरी		१९वीं	९	
६४५	४७२५	,		१९वीं	४६	
६४६	४४५२(६५)	नतीसरो गणधर	हेम कवि	१८वीं	११६ वां	लि क प्रीतसोभाग्य
६४७	४१६६	नन्चरकथा (स्नहनीला) आदि		१८४०	२१	लि क गोपाल मिश्र, पीरागपुरा घाला
६४८	४७८८	नन्चर कथा		१९वीं	६	
६४९	४८२४	,		१८३६	२	आसोपनगरे लिखितम
६५०	६३०७	नन्चर छन्द		१९वीं	२	
६५१	६३८९	नत्रुञ्जयउद्धार	भानुमेरु	१६६७	६	* र का स० १६३८
६५२	५४३६(२)	नत्रुञ्जय रास		,	५–१७	
६५३	६५३८	नत्रुञ्जयोद्धाररास	नयसुन्दर	१८वीं	६	लि क दानविजय श्राविका लाडमरेपठनार्थम
६५४	५८९०	नान्तिनाथ रास		१८५४	२२०	१०४ १०५ पत्र अप्राप्त
६५५	७७२०(७)	नारदाष्टक		१८वीं	४५ वां	
६५६	४०२४	नालिभद्र चरित्र	मतिसार	१८वीं	१२	र का स० १६७८
६५७	४८०४	नानिभद्र चौपई		१८वां	१२	
६५८	५०६५	नालिभद्र चौपाई		१८४३	१८	लिखित सवाईजयपुरमध्ये
६५९	६१३१			१७७५	२५	लिखित ग्वालियरमध्ये
६६०	६१४०			१८१८	४८	
६६१	६५४३		"	१८५१	२३	लि क शिवदत्तसागर
६६२	६८४६	,	"	१८२८	१७	लि क खुस्यालचन्द

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६३	७५६३	शालिभद्र चौपाई	मतिसार	१७७२	१३	लि क ऋषि चापो
६६४	७५६४	,,	,,	१८०६	२६	लि क खुशाल, बेगमपुरमध्ये
६६५	५४५८(५)	शालिभद्र श्लोक		१८५६	१–१०	
६६६	४७७७	शालिहोत्र		२०वीं	६०	
६६७	६८२६	,,		१९१५	१०५	पत्र १ से ३ अप्राप्त
६६८	७७३०	शालिहोत्र ग्रंथ (गुटका)		१९४३	३४	लि क राव जयसिंह बदनोर, फतहबुर्जमध्ये
६६९	७७६७	शालिहोत्र (सचित्र गुटका)		१९वीं	१३९	चित्र स० ११८
६७०	७८३७	शालिहोत्र (सचित्र)	महाराज नकुल पडित	,,	६–७२	चित्र स० ४८
६७१	७७२२(१३)	शिवरात्रि कथा		१७२७	१२५–१५२	लि क. कासटीहा
६७२	५२९६	शीयलबावनी		१९वीं	२	५८ दोहे
६७३	४०७१	शीलरास (नेमिनाथ रास)	विजयदेव सूरि	१७९२	७	लि.क लब्धिसागर
६७४	५४१८(२३)	शीलरासा	कवि जैत	१९वी	१४९–१५०	
६७५	४०१०	शकजहोत्तरी	देवीदान	१८९९	४७	लि क विजयसमुद्र, जेसलमेर
६७६	४४१९	,,	देवदत्त	१७९०	५०	प्रथम पत्र अप्राप्त
६७७	७०१८	षट्पञ्चाशिका भाषा	मूल-पृथुयशा, टी उत्पल भट्ट	१७६९	१५	
६७८	५३७६(६)	षोडश कारण कथा	शुद्धकीर्ति	,,	९०–९४	
६७९	५३७६(१७)	,,		,,	२०६–२११	
६८०	५३७६(१६)	षोडश कारण रासा	सकलकीर्ति	,,	२०३–२०६	
६८१	६९३७(६)	सर्वंगी	दादूजी	१८१६	२९३–४३०	
६८२	६५३९	साम्बप्रद्युम्न चौपाई	समयसुन्दर	१७२४	१९	लि क मनि सुन्दरसौभाग्य कृष्णदुर्गमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६८३	७४०१	साम्बप्रद्युम्न चौपाई	समयसुन्दर	१६७३	३१	लिखित आर्या मरूपठनार्थम
६८४	४६१८(२)	सावलिगा सदयवच्छकी वात		१७९९	२१–५२	लि क प्रोहित जोधा, मनोहरपुर का
६८५	७१७३	सावलिगारी वात		१६७६	२७	लि क मथुरालाल
६८६	७७२२(५)	सावलिगासूरेरी वात		१९वीं	५३–५६	६८ पद्योमे रचित
६८७	५४५८(२)	सदयवच्छसावलिगारी वात (सचित्र)		१८३८	१–५४	चित्र स० ७
६८८	४६२४(१)	सदय वत्स सावलिगारी वात		१७८७	१–८	जीर्ण प्रति
६८९	४६१६(४)	"		१८७५	५४–७२	लि क सौभाग्य गणि
६९०	४१४७	"		१८१९	३९	
६९१	६९८९	"		१८५६	१९–१०८	लि क राधाकृष्ण ब्राह्मण
६९२	७७२०(२०)			१८वीं	१–७ १९ २५	
६९३	७७६८	सदयवच्छ सावलिगारी वात (सचित्र गुटका)		१८५४	७५	चित्र स० ७७
६९४	७८४५			१८४८	७–८४	चित्र स० १४
६९५	५२०२(७)	सदयवच्छ सावलिगारी वात (अपूर्ण)		१८८५	१२३–१४१	
६९६	४६१५(११)	साहजादा कुतुबदीनरी वात		१८८७	३६१–३७६	
६९७	४४५२(६६)	सिखामण		१८वीं	१३१ वां	७३ शिक्षाके वाक्य
६९८	७२४७	स्थूलभद्रस्वाध्याय	सिद्धिविजय	१९वीं	१	
६९९	४६२४(१४)	स्थूलभद्र सज्झाय		१८वीं	३५–३६	
७००	७४४४(१२)	स्नात्रविधि	देवचन्द्र	१८८५	२१२–२४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७०१	४४५२(७४)	स्यालचक्र		१८८५	१२३वां	सियार के बोलने का शुभाशुभ विचार
७०२	५१२३(८)	स्फुटज्योतिषचक्रादि		१८८५	४१–४९	गोरखचक्र, धातुचक्र आदि
७०३	७७५३(१५)	स्फुटपद्य		१८३७	८९–१०६	सोरठ, राजुल आदिके दूहा, पद आदि
७०४	४४५२(८२)	सक्रान्तिफलचक्र		१८वीं	१२४वां	
७०५	४६७५	सक्रान्तिविचारआदि		१९वीं	५	
७०६	४६८५	,,		१८वीं	५	
७०७	७३३२	सस्तारकप्रकीर्णकसवालावोध		१७वीं	१६	
७०८	४९१५(१२)	सज्जनप्रेमदूहा		१८८७	३३७–३८४	११० दूहा हैं
७०९	७४४४(१)	सज्झायसग्रह		१८८६	३२७–३७३	
७१०	७५३८	,,		१८वीं	४	लि क ऋषि रामाजी
७११	६२८६	सत्तरभेदीपूजा	साधुकीर्ति	१८५३	१४	
७१२	७४८०	सत्तरीशयठाणप्रकरण		१९२३	४०	
७१३	४०५४	सतीगुणावलीचोपई	गजकुशल	,,	१२	र.का स० १७१४
७१४	७८१०(१)	सन्तदासकीवाणीआदि	सन्तदास	,,	४–२६	प्रारंभ ३ पत्र अप्राप्त
७१५	६७४७	सन्तवाणीगुटका		१८९४	९९७	जीर्ण प्रति
७१६	७०९०	सन्ध्याप्रतिक्रमणविधि		१९वीं	१४	
७१७	४४५२(६)	सन्यासीरादशनाम		१८वीं	१०वां	
७१८	५११६	सनत्कुमारप्रबन्धचोपई		१८४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
७१९	४९१४(५१)	सम्बोधसत्तानू दूहा	वीरचन्द लक्ष्मीचन्दशिष्य	१८७७	२७९–२८३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२०	४७२४	समयरे राजारो फळ (वर्षफल)		१६वीं	१	
७२१	५३७६(१८)	समाधि रास		१७६१	२०२–२०३	
७२२	४६१४(३)	सम्मेद शिखर निर्वाणकांड		१८७१	१५८–१६०	
७२३	४८०२	सरस्वती छंद		१६वीं	३	
७२४	४२८७(१६)	सवाई जसिंघजीकीजोधपुर चढ़ाई		१८वीं	१२७–१३०	
७२५	४४५२(८३)	सवयासंग्रह	श्याम कान्हीराम आदि		१२४ वां	
७२६	७७५३(१३)	सवया		१८३७	७० वां	
७२७	४२८७(२)	सवया इकतीसा	बनारसीदास	१७२६	१२–१३	स्वयं बनारसीदास के अक्षरों मे लिखित ५ पद्य
७२८	४०८१	सवयाबावनी	राजसी	१६वीं	५	
७२९	४६०६(४)	,,	राज कवि	१७६८	२५–३४	लि क केवलसौभाग्य
७३०	४४५२(१४)	सवयासंग्रह	प्रताप ब्रह्मगुलाल आदि	१८वीं	१७ वां	लि क प्रीतसौभाग्य
७३१	४४५२(२०)	सवया सपखरा आदि			२० वां	
७३२	५५२४	सत्रह भेद पूजा	साधुकीर्ति	१८६४	६	र का १६१८ लाखमण ढोलीरी पोशाळमध्ये
७३३	५४१०	साठी सवच्छरी आदि		१८वीं	८३	प्रश्नावली और महरम के चाद आदि का फल
७३४	४६२४(१२)	सात वारांरा विघड़िया		१७_०	१३–१४	लि क जयसौभाग्य गणि
७३५	४६२४(११)	सात ससीरो सवाद		१७६३	१२–१३	
७३६	४४५२(६४)	सात ससीरो सवाद (प्रहेली)		१८वीं	१३० वां	
७३७	७३०५	सिद्धान्तबोल		१६१०	४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३८	७५४६	सिद्धातसारोद्धार		१७७६	५६	अन्तिम तीन पत्र त्रुटित
७३६	६३८३	सिरी सातणी भास	लावण्यसमय	१८वीं	२	सा चन्द्रावलि पठनार्थ
७४०	४००६	सिंहलसुत चोपई	समयसुन्दर	१७६४	६	लि क कुशलहर्ष
७४१	४८२८	सिंहलसुत चौपई	,,	१७वीं	६	
७४२	६५३६	सीताराम चौपाई	,,	१८वीं	६२	
७४३	७७५३(२)	सीतासज्झाय	जिन हर्ष	१८३७	३०–३१	
७४४	५३७६(१)	सुदर्शनसेठकी कथा	नन्द (?)	१७६१	१–३१	र का स० १६६३
७४५	४००७	सुदर्शनसेठरा कवित्त	दीयो कवि	१८८०	२१	लि.क ऋषि इन्द्रभाण
७४६	४०८६	सुदर्शनसेठरा कवित्त	,,	१८८४	२०	लि.क बाई चपा
७४७	६२७४	सुबाहुचरित्र आदि		१६वीं	८	
७४८	६३८८	सुबाहुचरित्र	जिनमाणिक्य सूरि	१८वी	६	र का स १६००, जैसलमेरमध्ये
७४६	४००८	सुभद्रासतीरो चौढाळियो	मानसागर	१८७६	५	लि क स्थाविरजी श्रीचैन-रामजी
७५०	४६१२	सुभाषित		१६वीं	४	६५ पद्य हैं
७५१	५४१८(३)	सुरतपचमी कथा	वनवारीदास	१६वीं	१–८७	
७५२	५६३०	सुरसुन्दरी चौवई	धर्मवर्धनदास	१८४२	२८	
७५३	५६७५	सुरसुन्दरी चौपाई	,,	१७८२	२५	पत्र स० २० से २३ अप्राप्त
७५४	४००६	,	शुभशील	१६वी	१७	लि क नेमचन्द
७५५	७२४४	,,	धर्मवर्धन	१८४८	२१	
७५६	४८०१	सुरसुन्दरी रास	नयसुन्दर	१६८८	२६	लि क. राघवकेशव, राजकोटमध्ये
७५७	७३७४	सूक्तिमुक्तावली	केशरविमल गणि	१६वीं	२५	लि क. इष्टहस

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७५८	६४१८	सूरजजीरो सलोको		"	२	
७५९	७७२५	सूरजप्रकाश	करणीदानजी	१८४१	३००	र का स १७८७ लिपिस्थान–बदनोर
७६०	६७५२	सेऊसमनकी परची	गोविन्दराम (?)	१९२९	३	
७६१	४०११	सोमवती श्रमावसरी वार्ता		१८४३	३	लि क जीवणराम
७,२	७७२२(३)	सोरठरा दूहा		१८वीं	४६–४८	४३ दूहा
७६३	५४१८(२२)	सोनह कारण का रासा		१९वीं	१४७–१४९	
७६४	४९१४(४५)	सोलह स्वप्न वीनती		१८७७	२७४ वा	
७६५	६३५८	सौभाग्यपचमी चौपई	जिनरग	१८वीं	२५	
७६६	५८६२	हसराज वच्छराज चौपई (सचित्र)	जिनोदय सूरि	१८३५	४४	र या स० १६८० चित्र स १०३
७६७	५४३१(२)	हसराज वच्छराज चौपई (श्रपूर्ण)		१६१०	६४ से ९६	१४३ पद्य
७६८	७४०२	हसराज वच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	१८६६	३४	लि क ऋषि वद्धिचन्द
७६९	६५३५	,	"	१९वीं	४२	
७७०	७२२७	हंसराज वत्सराज रास	,	१८८३	४६	र का स १६८०
७७१	५२०९	हसवत्स चौपई (सचित्र)		१८वीं	६२	चित्र स ६५
७७२	५४३१(१)	हसावली (श्रपूर्ण)		१६१०	१५–६४	
७७३	४४५२(७०)	हणमतरो छन्द			१२० वा	
७७४	७७२१(१४)	हनुमान छन्द	नरहरदास	१९३१	२०१–२०२	
७७५	४९०२	हम्मीर रासो	कवि महेश	१७८७	५९	लि क पाडे नाथूराम गौड
७७६	५३८४(१)		,	१९४४	१–७०	लि क मनसाराम ब्राह्मण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७७	७१६७	हमीरहठ वार्ता		१८६७	६६	गुटका
७७८	६४४६(४)	हरजस		१९वी	१–४	
७७९	४०१२	हरिचद रास	जिनहर्ष	१८८२	२५	लि क प क्षेमाब्धि
७८०	४८२९	,,	कनकसुन्दर	१८८५	१७	र का स १६९७
७८१	७७२१(९)	हरिजस नाममाळा	रतनूहमीर	१८२५	१४४–१६५	
७८२	४९०५ (१०,११,१२)	हरियालीरा दूहा आदि		१९वी	३६–३८	
७८३	४९२४(८)	हरिरस	ईसरदास	१७९३	१–१०	प्रतिम पत्र पर सोलह श्रृ गारो की सूची
७८४	७७२१(१२)	,,	,,	१९३१	१८०–१९९	लि क फूलगिरि
६८५	७७५०(१)	,,	,,	१८६०	१–२१	लि.स्था. वीरधार
७८६	५३४३	,, आदि	,,	१८वीं	५	
७८७	४९१४(२)	हरिवशपुराणनो रास	ब्रह्मजिणदास	१८७१	७–५७ १७१–२०१	लि क चन्द्रकीर्ति, एहमदावाद-नगरे
७८८	४४५२(९२)	हाथियारा वखाण	नाहरखान राजसिहोत	१८वी	१३० वां	रोमकद छन्दो मे वर्णन
७८९	४९२४(९)	हागीरा वणाव		१७९३	११वां	
७९०	४४५२(२४)	हिंगुलाष्टक		१८वीं	२४ वां	
७९१	७४१७	हिंडोलण आदि	रामसरण (?)	१७वीं	१	लि क प खेतसी
७९२	४१६८	हीर राझ्या को तमासो		१९५४	३२	लि क नाथूनारायण शर्मा
७९३	४८३९	क्षेत्रसमास	रत्नशेखर सूरि	१७८२	७१	पत्र स. १,२ अप्राप्त, जैसलमेरनगरे लिखित
७९४	७३६७	,,		१७वीं	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६५	७४०३	क्षत्रसमास		१८५१	६	र का स १५३६
७६६	७५२३	, गणित		१८३६	१२	तालिब ग्रामे लिखित
७६७	४४२४	चौपाई	मतिसागर	१६८२	१४	र का स १५६४
७६८	४०२१	प्रकरण सबालावबोध	रत्नशेखराचार्य	१८२१	२०	र का स १६८६ (?) उदयपुर नगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४५२(१०२)	अकडमचक्र	हीर	१८वी	१३६वाँ	
२	४०३८	अगद वसीठी सवैया	कवि भान	१९वी	३	अगद रावण सवाद का वर्णन है
३	७७२०(६)	अध्यात्मछत्तीसी	बनारसीदास	१८वी	४३–४५	
४	४९१४(६)	अध्यात्मवत्तीसी	,,	१८७१	१६६-१६७	
५	७७२०(५)	,,	,,	१८वी	४२–४३	
६	५३९२	अध्यात्मरामायण भाषा (बालकाड)	भगवान अर्जुन नागा शिष्य	१८वी	३२	रचनाकाल स० १७४१
७	५३९३	अध्यात्मरामायण भाषा (अयोध्याकाड)	(निरजनी)	,,	४८	
८	५३९४	अध्यात्मरामायण भाषा (वनकाड)	,,		३७	
९	५३९५	अध्यात्मरामायण भाषा (किष्किधाकाण्ड)	,,	,,	३१	
१०	५३९६	अध्यात्मरामायण भाषा (सुन्दरकाड)	,,	,,	२१	
११	५३९७	अध्यात्मरामायण भाषा (युद्धकाण्ड)	,,	,,	६५	
१२	५३९८	अध्यात्मरामायण भाषा (उत्तरकाण्ड)	,, ,,	१७८३	३९	* रचनाकाल स० १७२८ लि.क मेघा, नागपुरमध्ये
१३	४२१६(३)	अनेकार्थी	नन्ददास	१८५९	१६२–१६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	६७५३	अमृतधारा	भगवानदास निरंजनी	१८२२	५६	
१५	४८०३			१६वीं	५२	अपूर्ण
१६	७४६१	अलङ्कारदीपक	शम्भूनाथ मिश्र (सुखदेव शिष्य)		२८	
१७	४०३७	अलङ्कारमाला	सूरत मिश्र	१८वीं	५	र का सं० १७६६ आगरा में रचित
१८	४२७०	अलङ्काररत्नाकर	दलपतिराय	१६वीं	६०	वंशीधर कवि की व्याख्या सहित
१६	६६५३	अष्टावक्र प्रकरण भाषा		१८६४	१४	लि क बुधराम दादूपंथी
२०	४२८७(१)	अक्षरबत्तीसी		१७२६	१-४	लि क रामचन्द्र
२१	४२८७(१२)	अक्षरबावनी	सुन्दरदास	१७२८	६३-६८	,
२२	५६८०	आत्मप्रकाश	आत्माराम (दौलतरामजी शिष्य)	१६वीं	३६२	
२३	६२४०	आत्मानुशासन भाषा	गुणभद्र	१८८८	१३८	लि क ताराचंद ब्राह्मण डागरवाडा का नगर महुवा मध्ये
२४	७७२०(१७)	आत्माराम गीत		१८वीं	५१ मा	
२५	५४१८(६)	आदीश्वर के रेखते		१६वीं	१०५-१०६	
२६	४६१७	आनन्द विलास	महाराजा यशवन्तसिंह	१७४३	११	
२७	६७२१	इतिहाससमुच्चय भाषा	लालदास	१८१२	८६	
२८	४२६३(३)	इश्क दरियाव	रसराशि	१८८२	६-१६	कवि जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह का आश्रित था
२६	४२६३(४)	इस्कफद			१७-१६	
३०	४६२४(१७)	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	१८वीं	२२-२७	लि क जयसौभाग्य गणि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६३२३	उपदेश बावनी	कृष्णदास	१६वीं	१०	र का स० १७७२
३२	५१६६	उपाख्यान सहित दश लीला		१६२१	३–२६	लि.क ब्राह्मण बालमुकुन्द, मथुरा मध्ये
३३	४३१३	ऐन पचीसी	लाला सुन्दरलाल	१८६७	८	जयपुर में रचित
३४	५४०१	कर्मविपाक		१६०७	२५	लि क. हरिदास
३५	७७४४(५)	करुणाभरण नाटक	कृष्णजीवन लच्छीराम	१७५८	२३–५१	लि क. चैनकुवरी
३६	७७५६(२)	कालकी अग	सुन्दरदास	१६वीं	२२–३?	
३७	४४५२(२७)	कवित्त कुण्डलिया	केशव, गङ्ग	१८वीं	२६वां	
३८	४४५२(२१)	कवित्त बावनी	खेमचद आदि	,,	२१–२२	
३९	५३७४	कवित्त सग्रह	आनदघन	१८४६	५६	५३२ कवित्त है
४०	५३८२	,,	जगदीश कवि	१८६३	१६३	० १००० कवित्तो का सग्रह
४१	४२१७(२)	कविप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	पत्र स० ७६ से ८४ अप्राप्त
४२	५३८०(१)	,,	,	१८४६	६६	
४३	७०६४	,,	,,	२०वीं	१६६	
४४	६६७६(२)	काव्य सिद्धात	सूरति मिश्र	१८६०	७४–८८	
४५	४१४०	,,	,,	१६०१	३१	लि क ऋषि देवराज
४६	४२६४	किशोर कल्पद्रुम	शिव कवि	१८वीं	१६६	प्रथम पत्र अप्राप्त
४७	५२०१	किस्सा गुलबकावली		१६वीं	३–७६	
४८	७७४४(७)	कृष्णजीकी रसोई		१७५८	५७–६२	
४९	६८२८	कृष्णसागर		१६वीं	२००	
५०	५४१७	कृष्णायन कथा चौपई		,,	१७५	१८४६ पद्य। र का स० १८३६ स्थान–आगरा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७१	६६८८	गोपीजनवल्लभोत्सव प्रकाशिका		१९वीं	४२	जयपुर के गोपीजनवल्लभ मंदिर की निम्बार्कीय पूजा प्रणाली
७२	७७२०(१६)	गोरखवचनिका		१८वीं	५१वां	
७३	७७३४	गोवर्द्धननाथजी की प्राकट्य वार्ता		१९२३	४८	वदनोरमध्ये लिखित
७४	५३६७	गोविन्दविलास	कृष्ण कवि	१८९७	११६	र.का. सं० १८६३, कवि गोपाल-सुत, ग्वालियर वासी
७५	५३८१	गोविन्दानन्दघन	गोविन्द नाटाणी	१९वीं	३०	कवि जयपुर वासी र.का. सं० १८५८
७६	५३८३	चकत्ता पातशाही की परंपरा		"	१४१	
७७	५३४७(१)	चन्द्रमुकुट चन्द्रकिरण रानीकी बात		१८३७	१–३०	लि.क. लाला तुलसीराम सेनवंशी
७८	६३४६	चरनाई की पाटी आदि		१८८७	८५	
७९	५४३८(५)	चिन्तामणि माला	नन्ददास	१८९०	६२–६६	
८०	४९१३	चितावणी संग्रह	रामेश्वरदास आदि	१९वीं		र.का. सं० १८०८
८१	७७२०(१८)	चेतन सुमति गीत	बनारसीदास	१८वीं	५१–५२	
८२	७११५	चौरासी वैष्णवो की वार्ता		१९वीं	२७०	रूपनगर मे उम्मेदकुंवर चाकावती ने लिखवाई
८३	५३८२(२)	छक पचीसी	जगदीश कवि	१८६३	१८९–१९३	लि.क. भट्ट श्यामसुन्दर
८४	५३७७	छद्मषोडशी	वृन्दावनहित	१८९०	७१	राधाकृष्ण लीला वर्णन, वृन्दावनमें लिखित
८५	६७६३	छन्दरत्नावली	हरिराम	१९२०	१०	र.का. सं० १८२५, पुरनगर मे लिखित
८६	५८१६	छन्दलता	चिन्तामणि	१९०६	३१	लि.क. व्रजवासी, वृन्दावन मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	४२१३	छन्द विचार	सुखदेव मिश्र	१८७६	२५	लि क सगम कवीश्वर
८८	५३७६(२२)	ज्येष्ठजिनवर कथा		१८वीं	२४८–२५३	
८९	६३०३	जिनदत्तचरित्र चौपई	विश्वभूषण	१७९६	७१	
९०	७७४६(१)	जोग लीला	उदय (?)	२०वीं	१–७	
९१	४२८७(७)	तर्क चिंतामनी	सुन्दरदास	१७२८	२६–३३	लि क आनंदराम
९२	५३७१(२)	तत्तिरीयोपनिषत भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट		३४	
९३	७७२०(१०)	दसदान		१८वीं	४६ वाँ	
९४	५४०७	दक्षनविलास	दक्षन कवि (अहमदउल्लाह, बहरियाबाद के)	१८९४	३७	र का स० १७२२ राधाकृष्ण के शृगार का वर्णन
९५	४३१६	दानलीला	कृष्णदास	१९२८	१४३–१५२	
९६	५४३८(४)	,	परमानन्ददास	१८९०	५६–६२	
९७	४२६३(१५)	दुलहरण वेलि	म प्रतापसिंहजी	१८वीं	३४ ३५	
९८	४३०९(१०)		,	१९वीं	१९ २०	
९९	७४४१(११)		,,	१९१४	५९, ६०	
१००	५३९१	दोहासार		१८८४	१०३	संग्रह समय–१७२० भरतपुर में लिखित, प्रथम पत्र अप्राप्त
१०१	५४५५(१)	ध्यानमञ्जरी	अग्रदास	१९वीं	१६	
१०२	६०८८		,	,,	५	
१०३	६३६४		,,	,,	९	
१०४	४२८८(२)	ध्रुवचरित्र	गोपाल	१८८९	१७–४५	
१०५	५४१२(२)	,	गणिनाथ माथुर (सोमनाथ)	१८५७	१–२०	र का स० १८१२, कवि भरतपुर वासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	७१५८	ध्रुवचरित्रादि		१८०५	८८	आद्य पत्र अप्राप्त
१०७	६३१९	धर्मपरीक्षा	मनोहरदास सोनी	१८६०	८७	र का स० १८११
१०८	६३१६	धर्मसार चौपाई	प० शिरोमणिदास	१९वी	३४	र का स० १७३२
१०९	६१४५	नयचक्र भाषा	विलास	१९०७	४७	र का सं० १८६७ करोलीमध्ये लिखित
११०	७३५१	नयतत्त्वविचार सार्थ		१९वी	११	
१११	७७६९(२)	नयनसुख (वैद्यमनोत्सव)	नयनसुख केशवपुत्र	१८५६	१–४४	चित्र स० २
११२	७००९	नयनसुख	,,	१८८४	२६	
११३	६८३५(१०)	नवकारमंत्र		१८६९	३	
११४	७४४२(१)	नवतत्त्वभेद		१७६४	१–४६	
११५	७७२०(८)	नवदुर्गाविधान		१८वी	४५ वां	
११६	७७२१(७)	नवरत्नकवित्त	बनारसीदास	१८२५	१४१–१४२	
११७	६८३५(५)	नागोरीगच्छपट्टावली		१८६९	१	
११८	७७२०(९)	नामनिर्णयविधान		१८वी	४५–४६	
११९	६३४३(४)	नाममंजरी (मानमंजरी)	नन्ददास	१८८९	४२–६९	
१२०	७७९७	,,	,,	१८१३	१८	लि क उदयराम ब्राह्मण
१२१	६८३३(१)	नायिकाभेद		१८४८	२–५	अपूर्ण, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२२	५४१६	नासिकेतकथा भाषा	नन्ददास	१८८५	४७	लिखित जिगनीमध्ये
१२३	४५५७(१)	नीतिमंजरी	म. प्रतापसिंह	१९वीं	१–१३	लि क महात्मा ज्ञानीराम
१२४	७४४१(१)	नीतिमञ्जरी	,,	१९१४	१–२	लि स्था उदयपुर, सेठ गंभीरमल पठनार्थं
१२५	७७४९(१)	,,	,,	२०वीं	१–१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२६	५३७२	नहनिदान	रस आनन्द	१८६६	१२	स्वयं कवि द्वारा भरतपुर में लिखित
१२७	४४५२(४०)	ननबत्तीसी	वृन्द कवि	१८वीं	४४–४५	र का सं० १७४३
१२८	७७२१(८)	प्रकीर्ण कवित्त		१८२५	१४३–१४४	
१२९	७७२०(१९)	प्रकीर्ण पद	बनारसीविलासान्तर्गत	१८वीं	५२ वाँ	
१३०	५४०८	प्रतापविलास	वृन्द कवि	१९वीं	१९	काव्यप्रकाश पर आधारित रस ग्रन्थ
१३१	६२६२	प्रबोधपचासिका	पदमाकर भट्ट	१८६३	२०	
१३२	४८०५	प्रबोधपचीसी	सुन्दर कवि	१९वीं	२	कवि खरतरगच्छीयमानतिदास का शिष्य है
१३३	४२८८(३)	प्रल्हादचरित्र	गोपाल	१८८९	४२–८८	
१३४	५३७१(३)	प्रश्नोपनिषत भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	३५–६४	
१३५	७७२०(१२)	प्रास्ताविक सवया		१८वीं	४७–४८	
१३६	५२२४	प्रास्ताविक सवया (प्रश्नोत्तर)		१९वीं	६	५१ सवया हैं
१३७	४३०९(१२)	प्रीतिपचीसी	म प्रतापसिंहजी		२३–२७	
१३८	७४४१(१६)			१९१४	७५–८०	
१३९	७७४९(६)		रसराशि	२०वीं	१–५	
१४०	४२६३(११)	प्रीतिलता	म प्रतापसिंहजी	१८वीं	१०–१६	
१४१	४३०९(६)			१९वीं	१०–१३	
१४२	७४४१(८)	,	,,	१९१४	४६–५२	
१४३	४२६३(८)	प्रेमतरङ्गिणी	मुरलीधर भट्ट	१८वीं	१–२३	कवि म प्रतापसिंहका आश्रित था

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	४२६३(१२)	प्रेमप्रकाश	म प्रतापसिंह	१८वी	१७–२०	
१४५	४३०९(४)	,,	,	१९वी	६–८	
१४६	७४४१(१३)	,,	,,	१९१४	६३–६६	
१४७	५३४७(२)	प्रेमरत्नाकर	देवीदास	१८३७	३०–४०	र.का स० १७४२, म कु रतनपाल, करौली प्रशस्ति परक
१४८	४७९४	पचाध्यायी	नन्ददास	१८वीं	१७	
१४९	५२०२(६)	पचाध्यायी (भाषानुवाद)	वशीअली	१८८५	११४–१२३	
१५०	४२६५(१)	पचाध्यायी	नन्ददास	१८४३	१०–२९	
१५१	७७५६(१)	पञ्चेन्द्रियोपदेश	सुन्दरदास	१९वी	३१	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१५२	४२९२	पदमुक्तावली	श्रीनागरीदासजी	,,	६२	त्रुटित
१५३	५३७८	पदसग्रह	किशोरीअली गोस्वामी	,,	२१२	जलविहार भ्रमर गीत, साझी आदि से सम्बन्धित पद
१५४	५४४०	,,		,,	६६	निम्बार्क सप्रदाय सम्बन्धी पद है
१५५	६८४२	,,		,,	११०	जैन धर्म सम्बन्धी पद
१५६	७८१५	,,		१८८६	१२८	वल्लभ सप्रदाय के पद
१५७	७८३९	,	रसनायक	१९वी	५९	३०८ पद
१५८	५१७७	,,	नन्ददास आदि	१८वी	५५	
१५९	७७३८	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका	स्वरूपदास	१९२३	१३९	लि क पठान उमेदखां, बदनोर राज्ये
१६०	७७४२	,,	,,	१९१४	११२	लि क. वैष्णव हरिदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६१	७७३६	पाण्डवयशश्चन्द्रिका	स्वरूपदास	१६४१	२६६	लि क॰ वैष्णव सीतारामदास
१६२	६३३१	पातसाहनामोपरि रमल		१६१२	३	
१६३	६१७७	पार्श्वनाथपुराण भाषा	भूधर	१८०१	६५	र का सं० १७८६ आगरा में रचित
१६४	६६२१			१६वीं	६४	पत्र सं० ४०, १५ अप्राप्त
१६५	७१०८		भूधर बुध	१७२५	८६	र का सं० १७८२
१६६	५६६६	पारासोमल का क्रिया		१६वीं	६	रजत आदि धातुओं की निर्माण विधि
१६७	६३४३(३)	पिंगलसार	मोहन	१८८६	२७-३८	
१६८	५२०५(१८)	पूजाविधि	श्रीवल्लभाचार्य	१८वीं	८८-६१	
१६९	७७४४(१०)	पूरणमासी कथा		१७५८	७२-११५	
१७०	४३०६(१३)	फागरंग ग्रन्थ	म प्रतापसिंह	१८६६	२८-३१	
१७१	७४४१(४)	फाग रंग	,	१६१४	३५-४०	
१७२	५१२३(६)	फालनाम फारसी		१८वीं	२८-२६	
१७३	४२६४	फुटकर कवित्तसंग्रह	अनेक कवि		११८	४२५ कवित्त हैं
१७४	४३०६(१५)	ब्रजसिंगार	म प्रतापसिंह	१६वीं	४५-५०	
१७५	४२६३(१०)	ब्रजशृंगार	,	१८वा	१-६	
१७६	७४६०	ब्रह्मविलास	भगवतीदास	१८४६	१२४	र का सं० १७५५ कर्ता आगरा निवासी लालजी कटारिया का पुत्र
१७७	५३७१(१)	ब्रह्मसूत्र भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	१-२७	लि क महात्मा म्योजी (शिवजी)

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	४७८५	बनारसीविलास	बनारसी गर्ग, अग्रवाल	१८वीं	११५	र का. स० १७७१, पत्र ८६ से ६६ अप्राप्त
१७६	७४४२(२)	बनारसीविलास भाषा	,,	१७६४	१–११६	
१८०	५४२८	बल्लभाख्यान	गोपालदास	२०वीं	५३	
१८१	५३८७	बहुत्तरी	मोहनदास	१७६७	८	लि.क नरसिंह अग्रवाल
१८२	५२०२(५)	बारहखड़ी	दत्तलाल	१८८५	१०६–११४	भाषा पर पंजाबी प्रभाव है
१८३	५४२०(४)	,,	,,	१६वीं	६७–१०३	
१८४	५४२६(१)	,,	विष्णुदास ठण्डीराम शिष्य	,,	१–१२	
१८५	५४२६(३)	,,	दत्तलाल	,,	२६–३५	
१८६	५४२६(६)	,,	भवानी	,,	४६–५३	
१८७	५४२६(११)	,,		,,	१–५	
१८८	५४२६(४)	,, प्रह्लादजी की		,,	३५–३८	
१८६	५४२६(५)	,, परमेश्वरजी की	कुशला	,,	३८–४२	
१६०	५४२०(६)	,, रामायण की	रामरत्न	,,	१०३–१०७	
१६१	५४२०(५)	,, विरह की (ब्रह्मस्नेह बारहखडी)		,,	१०३	
१६२	५४०३	बारहखडी सूरत की	सूरत, देवधरशिष्य	,,	८	
१६३	५४२६(६)	बारहमासी	मुरलीदास	,,	४२–४७	
१६४	५४२६(७)	,,	भवानी (गवधपुर वासी)	,,	४७–४६	
१६५	५४२६(८)	,,	सूरदास	,,	४६ वां	
१६६	४७६०	बावनी सवैया	जसराज	,,	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९७	४३०७(१)	विहारीसतसई	विहारी	१७८७	६६	लि क यति कुसला मालपुरामध्ये
१९८	४४१२		,	१८१२	५०-६१	लि क प्रीतसौभाग्य गणि खारिया ग्रामे
१९९	४६०७(३)		,	१८३७	३५-१३५	अंत में होराचक्र और स्फुट कवित्त हैं
२००	६३४२(४)			१९वीं		
२०१	४१५४	विहारीसतसई सटीक	टी कृष्ण कवि	१८०२	१३२	
२०२	४२१६(२)	विहारीसतसई टीका		१८५९	७२-१६०	
२०३	६३१५	,		१९वीं	५६	अपूर्ण
२०४	४४१२	विहारीसतसया	विहारी	१७६६	१५	लि क मुनि मनोहर
२०५	४२६१	वंद्धिसागर	कवि जान	१८९८	२००	लि क झूंझणू वासी बिरंमण रामधन
२०६	५४२६(२)	भ्रमरगीत टीका भ्रमरसपुञ्जनी	मकुंददास		१२-२६	
२०७	६७२६	भवरगीत		१९वीं	१७	प्रथम पत्र खण्डित
२०८	७७४९(५)	भँवरगीत	नन्ददास	२०वीं	१-६	
२०९	७७४४(६)		रसिकराय	१७५८	५१-५७	
२१०	५४००	भक्तमाल टीका	मू नाभादास टी प्रियादास	१९वीं	१६५	
२११	५४७६	भक्तमाल टीका रसबोधिनी	,,	१९००	३०६	र का सं० १७६५ बूंदी में लिखित
२१२	५४०९	भक्तमाल टीका	,,	१७६९	१४१	लिखायित माजी जोधपुरीजी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१३	६७५५	भक्तमाल टीका	लालदास	१८९३	१०४	लि क. हेमदास, कबीरशाह को साधक
२१४	६६३९	,,	लालदास	१८७०	१९८	लि.क. गोपालदास अवन्तीमध्ये शेषशायीमन्दिरे
२१५	६५७१	,,	प्रियादास नारायणदासशिष्य	१८६४	११९	र का स० १७६९ लि क रामकृष्ण महाजन
२१६	६०५४	भक्तमाल टीका रसबोधिनी		१८वीं	२०५	
२१७	६४४८	भक्तमाल सटीक		,,	२७६	
२१८	७७३२	,,	प्रियादास	१९२५	१६५	र का १७६९ लि स्था० बदनौर
२१९	७८३१	,,	लालदास	१८५६	१३२	लि.क. शिवरामदास, गङ्गापोल, जयपुर
२२०	६५७६	भक्तमालमाहात्म्य	कृष्णदास	१९वीं	४	
२२१	५४२४	भक्तितरङ्गिणी	चरणदास	१९४१	४०	लि क. इन्द्र मिश्र, स्थान नगर
२२२	६८२९(१)	भक्तिपदार्थ		१९०२	१–१४४	अन्त मे भजन हैं
२२३	५४१३	भगवद्‌गीता भाषा पद्य		१९००	८९	लि क हरिदास ब्राह्मण, वैराठ
२२४	७५०८	भगवद्‌गीता भाषा पद्यानुवाद		१७७४	८८	लि.क डालचद ब्राह्मण, शाहगज दिल्ली
२२५	६१४८	भद्रबाहुचरित्र चौपाई	किशनसिंह सागानेर के	१८२७	४७	र का. स० १७७०, कई स्थानो पर प्राचीन पत्रो के स्थान पर नये पत्र लिखे हुए हैं
२२६	६१५१	,,	किशनसिंह सिंघवी	१९०६	३९	
२२७	६१५६	भद्रबाहु चरित्र भाषा	किशनसिंह	१९०६	४०	लिखित अलवरसहरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२८	५४२०(३)	भक्त हरिनामत्रय भाषा पद्यानुवाद	म प्रतापसिंह	१९वीं	६५-९७	
२२९	४३०८(४)	भरथचरित्र	जनगोपाल (?)	१८वीं	४५६-४६७	१०५ छन्द हैं
२३०	६०१०	भविष्यदत्त चौपाई	ब्रह्म रायमल	१९वीं	४७	
२३१	६९३७(५)	भागवत एकादशस्क धानुवाद	चत्रदास	१८११	२१०-२९३	लि क रामदास निराणा ग्राम
२३२	४२५६	भागवतचरित्र नारायण लीला	माधवदास	१८वीं	३८	लि क जती जीवणसागर
२३३	७१७०	भागवत दशमस्कन्ध की भाषा	हरिवल्लभ	१९८०	९१	गुटकाकार
२३४	६८३०	भागवत भाषा	कविराय मोतीराम श्राण इसुत	१९वीं	१ ३	जीर्ण प्रति
२३५	६०९८	,	हरिवल्लभ	१७८९	६५	लिखित रूपावास मध्ये ब्राह्मण केशवरायजी
२३६	६०९०	भागवतभाषानुवाद (द्वितीय स्कन्ध)	नागरीदास	१९वीं	३३	पत्र स० ५ ६ १७ अप्राप्त
२३७	४२६५(२)	भावपञ्चाशिका	वृन्द कवि	१७९३	४-१४	लि क डालूराम
२३८	४८१३	,	,	१८३९	६	लि स्था०-लींबडी
२३९	४९०६		"	१७९८	१३	र का स० १७४३ लि क केवलसौभाग्य
२४०	५४३२	भाषाभरण	सरस्वती (वरीसाल)	१९वीं	२५	
२४१	५०४८	भाषाभूषण	म जसवन्तसिंह		२९	लि क गोपाल ब्राह्मण
२४२	६९७६(१)	भाषाभूषण टीका	नन्ददास	१८६०	१-७३	
२४३	४२९३(६)	भाषासरोदय	रसराशि	१८८२	२५-२९	
२४४	५३०९	भास्करवशप्रदीपिका	तेजसिंह	१८वी	५३	
२४५	४०८२	भीषमबावनी	भीषम		१०	
२४६	४१७६	भोगलपुराण		१९वीं	२०	
२४७	५४१८(५)	मङ्गल गीत	रूपचन्द		९१-९६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	४७२२	मतिचन्द्रिका		१९वीं	४	मोहर्रम और वारो का विचार
२४९	४३०९(१)	मनीरामपचीसी	मनीराम	१९०२	५१	
२५०	६८३५(७)	महावीरस्तवन		१९६६	१	
२५१	६८३५(११)	,,		,,	२	
२५२	७१५६	माखन लीला	नन्ददास	१९१४	४३	
२५३	५३७१(४)	माण्डूक्योपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१९वीं	१–२०	
२५४	७६४८	मातृकाक्षरबावनी कवित्त-सग्रह	सार कवि	१८वीं	८	अन्तिम पत्र त्रुटित
२५५	४२१६(९)	मानमञ्जरी नाममाला	नन्दराम	१८५९	३६०–३७०	
२५६	४९१५(१)	,,	,,	१८८७	२–१९	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५७	४२६३(२)	मानमञ्जरी नौका	रसराशि	१८८२	२	
२५८	४२६३(५)	मालिकमुकाम	,,	,,	२०–२४	
२५९	७७२०(११)	मिथ्यात्वबानी		१८वीं	४६–४७	
२६०	४३०९(५)	मुरलीविहार	म. प्रतापसिंहजी	१८९९	८–९	
२६१	७४४१(१०)	,,	,,	१९१४	५७–५८	
२६२	४४५२(१५)	मुहूर्तचक्र		१८वीं	१८वीं	लि.क प्रीतसौभाग्य
२६३	५४१९	यदुराज विलास	रघुनाथ द्विज	२०वीं	२२५	र का. सं० १९३३
२६४	७५९४	याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा	गुरुप्रसाद	,,	२१	लि क. गोपीनाथ शर्मा
२६५	४३७१	योगवाशिष्ठसार भाषा पद्य	कवीन्द्राचार्य सरस्वती	१८वीं	२०	
२६६	४३०९(१६)	रग चौपाई	म. प्रतापसिंहजी	१९वीं	५०–५६	
२६७	७४४१(१४)	,,	,,	१९१४	६६–६८	
२६८	६७७९	रत्नपरीक्षा	रत्नसागर	१९वीं	२१	र.का. सं० १७५५

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६६	४३०६(८)	रमकझमक बत्तीसी	म प्रतापसिहजी	१६वीं	१५–१६	
२७०	७४४१(६)			१६१४	४२–४३	
२७१	४६६६	रमलशानशकुनावली		१६वीं	४	
२७२	५४३४	रसकवित्तसग्रह	शेख आलम	२०वीं	१५४	
२७३	५४२२	रसपीयूषनिधि	सोमनाथ आचार्य	१८५५	१३३	र का स १७६४
२७४	४६२३(२)	रसमजरी	नन्ददास	१७२८	१८–२४	
२७५	६३३७	रसरतन काव्य	प्रधान पुहकर	१८५०	२३२	आद्य पत्र अप्राप्त स० १७२३ में रचित
२७६	४२१६(६)	रसराज	मतिराम	१८५६	२६४–३१८	
२७७	६३४२(२)	रसराशिपच्चीसी	रसराशि	१६वीं	१०–१६	
२७८	७०६२	रससमुद्र	चनराम (भोलानाथपौत्र)	१८६१	१३६	र का स १८६१ मूल प्रति
२७	४४५२(२)	रसिकप्रिया	केशवदास	१६वीं	३–५	द्वितीय प्रभाव तक अपूर्ण
२८०	४०१४	रसिकप्रिया	,	१७६६	६८	र का स १६४८
२८१	५३८०(२)	रसिकप्रिया	,	१८४६	१–६६	
२८२	७७२०(३)	रसिकप्रिया	,	१७५६	१–४०	लि क लखमीचद गढ हर्णोरमध्ये
२८३	४६२५(१)	रसिकप्रिया राजस्थानी भाषा मे अर्थ सहित		१८२६	१–१७५	
२८४	७०६३	रसिकप्रिया टीका जोरावरप्रकाश	जोरावरसिंह	१६२१	१५४	लि क कवि मन्नालाल
२८५	४२१६(५)	रसिकप्रिया टीका		१८५६	१६२–२६४	
२८६	४२१७(१)	रसिकप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	प ७६ से ८४ तक अप्राप्त
२८७	४२६३(१)	रसिकपच्चीसी	रसराशि	१८८२	१–६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२३	४१२७	रामचरितमानस (कि का)	तुलसीदास	१८६६	४६	लि क. परमानन्द कायस्थ
३२४	५१६०	,, ,,	,,	१८३८	१८	
३२५	४२२५	,, (सु का)	,,	१८३२	२४	लि.क. नरेन्द्र सौभाग्य
३२६	६२००	,, ,,	,,	१६१०	१७	
३२७	६७३१	,, ,,	,,	१६वीं	४३	लि क हरदयाल
३२८	७८०२	,, ,	,,	१८५५	२४	मिश्र मोहनलाल
३२९	६०७२	, (ल.का)	,	१६वीं	६२	दो प्रकार की लिखावट है
३३०	६३२१	,, ,,	,,	१७८०	९८	लि.क. सरदारसिंह विद्यार्थी
३३१	६६२४	,, ,,	,,	१८०३	३६	लि.क काशीराम व्यास, भीरा की पोथी सू
३३२	७८०३	,, ,,	,	१८४४	७२	लि क. मिश्र मोहनलाल
३३३	६२१७	,, (यु.का.)	,	१८९५	६३	
३३४	४२२६	,, ,, ,, (उ का)	,, ,,	१८२१	७८	लि क. कृपाराम पुरोहित जयनगरे
३३५	६२१८	,, ,,	,,	१८९५	६८	
३३६	६२४५	, ,,	,,	१९११	४८	
३३७	४२२७	,, (उ का) चातकसोलसी	,,	१८२७	७६	लि क. वैष्णव भगवानदास
३३८	४२२८	, (उ का)	,,	१६वीं	६५	
३३९	६६२५	,, ,	,,	१८०३	३८	लि क. काशीराम प्रतिमपत्रत्रुटित
३४०	६९९६	,, ,,	,,	१८८३	६९	लि.क. बलदेव
३४१	७६२३	,, ,,	,,	१८७९	१२५	

२२८

लेसते मति मद तुलसी दासहू॥ पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाही कहू॥ दोहरा॥
मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर॥ अस विचारि रघुवंसमनि हरहु विषम
भव भीर॥ कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम॥ तिमि रघुनाथ
निरंतर प्रिय लागो मुहि राम॥१२०॥ इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलु
ष विध्वंसिने अविरल भक्ति संपादनी नाम सप्तमो सोपान॥७॥ शुभमस्तु॥
इति श्री उत्तरकाण्ड समाप्त॥ यादृस पुस्तकं दृष्ट्वा तादृसं लिखितं मया॥ यदि शु
द्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते॥ अथ शुभ संवत्सरा १७३७ समये मार्गशिरमा
से कृष्णपक्षे पंचम्यां सोमवासरे हस्ताक्षर उपाध्याय लिखमी रूपविचारार्थ॥

२२८

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	७८०४	रामचरितमानस (उ कां)	तुलसीदास	१८४८	४०	लि क मिश्र मोहनलाल यह प्रति ग्रन्थाङ्क ७७९८ की बलभद्र उपाध्याय द्वारा लिखित, स० १७३७ की प्रतिलिपि है
३४३	७७९८	,, ,,	,,	१७३७	७७	* लि क बलभद्र उपाध्याय
३४४	७५७१	,, वैराग्यसंदीपन नाम द्वितीयसर्ग	,,	१८८६	५	लि क मिश्र आनन्दनारायण
३४५	४२५७	राम चरित्र	सुन्दरदास	१८वीं	८	
३४६	४२३५	रामनखशिखवर्णन	माधोदास		३	
३४७	६०७१	रामनौरत्नसार संग्रह	रामचरण	१९वीं	३१	सम्बन्धित ग्रन्थो से संग्रहीत
३४८	४८४५	रामविनोद	रामचंद्र मुनि	१७६३	७८	र का स १७५०, आद्य पत्र ११ खण्डित
३४९	६१३६	रामविनोद वैद्यक		१८३२	८६	
३५०	४२७१	रामविलास काव्य	कालिदास	१९व	१०	कृति के अंत मे 'हनुमान छंद" है
३५१	५४११	रामस्तवराज भा टी	रामप्रसाद सीतापतिशरण	२०	९९	र का स १९०१
३५२	४२४३	रामस्तुति गीत	तुलसीदास गोस्वामी	१८वीं	४	
३५३	४२४२	रामस्तुति पद	,,		२	
३५४	५३६२	रामायण (यु कां)	मनोहर, कविकलानिधि	१८२०	२९३	नि प युगलकिशोर मिश्र
३५५	८३८९	रामायण (यु कां)	,,	१८३७	३४१	* प्रतापसिंहाज्ञया निर्मित लि क रामसेवक पत्र १–७९ २१०–२३१ अप्राप्त
३५६	७११३	रामायण (यु कां) सीताराम रामायण	कश्चित शर्मासिंह निर्देशित	१९वीं	१३८	५० पत्र रिपुदुरवाह और ८८ पत्र युद्धकाण्ड सम्बन्धी हैं

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५७	६३७३	रामाज्ञा	तुलसीदास	१८वी	३६	
३५८	७७४६(७)	,,	,,	२०वी	१–२१	
३५९	६८२८(२)	राव हमीरकी वारता		१९वीं	७	
३६०	४२६३(१७)	रासको रेखता	म. प्रतापसिंहज	१८वीं	४०–४२	
३६१	४३०६(६)	,	,,	१८६६	१७–१८	
३६२	७४४१(१२)	,,	,,	१९१४	६१–६३	
३६३	५२०२(६)	रासपञ्चाध्यायी	वशीअली	१८८५	११४–१२३	
३६४	५३९९	,,	नन्ददास	१९४३	१२	
३६५	४९२३(१)	रूपमञ्जरी	,,	१७२८	१–१८	* लि क मुरलीधर मिश्र ३०० पद्य हे
३६६	५२०२(४)	रेखता		१८८५	१०८–१०९	भाषा पञ्जाबी प्रभावित हे
३६७	५४२६(१०)	रेखता लैलामजनूका			५३–५९	
३६८	६८३५(२)	लघुचाणक्य		१८६६	२	
३६९	७७२८	लीलालिलितविनोद	डेडराज (जनराज)	१९०४	२७७	लि.क. ऊकारनाथ व्यास, रामद्वारा उदेपुरमध्ये
३७०	५८६६(२)	लैलाभजनुका किस्सा	कवि खेतसी	१९वी	१–११	*
३७१	७७४४(६)	व्रजनागरी		१७५८	६६–७२	
३७२	६९७८	व्रजविलास (सचित्र)	व्रजवासीदास		१६३	चित्र स १७
३७३	७४४१(१५)	व्रजशृङ्गार	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	६८–७५	
३७४	६०१६	व्रतकथाकोश भाषा	श्रुतसागर	१९२३	९२	* भाषाकार सुन्दर के पुत्र खुशालचद्र, लक्ष्मीदासका शिष्य हे
३७५	४१४३	वृन्दसतसइया	वृन्द	१८८१	४६	लि क. मनसुख कदोई, बीकानेर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७६	४२१६(४)	वृन्दसतसई	वृन्द	१८५६	१६७–१६१	
३७७	४६१६	वनपर्वकी कथा		१८६६	१३	
३७८	६२३२	वरांगनपतिचरित्र भाषा	नथमल शोभाचंद का पुत्र	१८२७	७४	
३७९	५२०५(१)	वल्लभाचार्यविनन्ति और स्तोत्र नामावली		१८वीं	२–३२	
३८०	६०७८	विक्रमविलास	गणेश मिश्र	१८६६	१०२	* र का स १७३६
३८१	५४१५	विक्रमादित्यचरित्र (पचदंडकथा)	वैद्यनाथ कवि सोमनाथका वंशज	२ वीं	५–३३	र का स १८८४ आद्य ४ पत्र अप्राप्त
३८२	६६५२	विचारमाला		१८६३	५	र का स १७२६
३८३	६१५७	विजयमुक्तावली(महाभारतअनुवाद)	छत्रसिंह श्रीवास्तव	१८६५	२३१	अटेरपुर (भदावर) के राजा कल्याणसिंह के राजमे स १७५७ म रचित
३८४	५३७५	विजयसुधानिधि	कविवर रामलाल	१९०३	१४१	कर्णपर्व से आगे पद्यानुवाद है व्रजेन्द्र बलवन्तसिंह के लिए रचित
३८५	६३४१	विदुरप्रजागर	कृष्ण कवि	१८६५	६४	स १७६८ मे राजा आयामल्ल की आज्ञा से रचित, म भा उद्योग पर्व का अनुवाद
३८६	७७४०(१)	विदुरप्रजागर भाषा	गणपति मिश्र	१९३७	१–४६	
३८७	७५६२	विनयपत्रिका	गो तुलसीदास	१९१४	८२	लि क हरिदास कबीरप थी बदनोरमध्य
३८८	६०८६		,,	१९वीं	८१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२४	५४३९	सिखनखवर्णन	बलभद्र	२०वी	२४	
४२५	५४२१(१)	सिद्धान्तके पद	वृन्दावनदास	१९वीं	१–२५	
४२६	७४४१(७)	स्नेहबहार	म प्रतापसिंहजी	१९१४	४३–४६	
४२७	४४५२(३१)	स्नेहलीला	,,	१८वी	३३,३४	
४२८	५२३४(१)	,,	कवि गिरिधरराय	१९११	१–१०	* लि क बद्रीनाथ व्यास
४ ९	५४३८(३)	,,	विष्णुदास	१८९०	४०–५६	
४३०	६७४९(३)	,,	,,	१९वी	९२–१०५	
४३१	७४४१(९)	स्नेहसग्राम	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	५२–५७	
४३२	४९२३(३)	स्फुट कवित्त आदि			१–१४	
४३३	४२२९	स्फुट कवित्त, रेखता आदि		१९वी	३३	
४३४	६३४२(१)	स्फुट कवित्त		,,	१०	
४३५	६३४३(१)	स्फुटोक्ति		१८८९	१२	
४३६	६९९२	स्फुट पदसगह	सूर आदि	१७४२– १७४४	६८	
४३७	६८ ३(६)	स्फुट राग पद		१८५२	३५–३७	
४३८	७७५३(६)	स्फुट सवैया		१८३७	३८–३९	
४३९	४२६३(१३)	स्नेहसग्राम	म. प्रतापसिंहजी	१८वी	२७–३०	
४४०	४३०९(२)	,,	,,	१९वीं	१–३	
४४१	४२६३(१४)	स्नेहबहार	,,	१८वी	३१–३३	
४४२	४३०९(३)	,,	,,	१९वीं	४,५	
४४३	६३२८	स्मरणदर्पण	रामचन्द्रदास	,,	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४४	७१३३	स्वरोदय	गोरक्षोश्त	१६४६	११	लि क प्रभु पुरोहित नागोर का
४४५	५७१७	स्वरोदय भाषा		१८वीं	१४	
४४६	५६५७	स्वरोदय टीका	लालचन्द्र	१६वीं	६	
४४७	५७८५	संग्रामदर्पण	सोमनाथ नीलकण्ठात्मज	१६१५	३४	र का स १७८६ ग्र था त में कविकुल वर्णन है
४४८	७७३६	संग्रामसार, द्रोणपर्वका अनुवाद	कुलपति मिश्र	१६५७	१६५	म रामसिंह की आज्ञा से निर्मित लि ब कृष्णचंद्र, बूंदी
४४६	७७३७	, ,	,	१६वीं	१५२	
४५०	७८१६	संगीतदर्पण भाषा	हरिवल्लभ	१८३१	३-७६	आद्य २ पत्र अप्राप्त
४५१	४००५	संयोगद्वात्रिंशिका	मानकवि	१८४८	४	
४५२	६४१७	संयोगबत्तीसी	,	१६वीं	२	
४५३	७७२१(४)		,	१८२५	१११-११८	
४५४	५३४६	सत्यनारायणव्रत कथा	हरिदास	१८२५	२४	र का स० १६२२ लि व प्रताप मिश्र,
४५५	५२४२	सत्यनारायणकथाका ग्रंथ		१६वीं	१४	
४५६	७८१६(२)	सपमन्त्रावि		१८३१	६	
४५७	६६८६	सदाशिव भट्ट प्रशस्तिपरक पद्य		१८४१ से पूर्व	७	फतहचंद्र गणपति, भोलानाथ आदि द्वारा रचित पद्य
४५८	५३८४(२)	सनेहलीला	मनोहरदास	१६०४	७०-८२	
४५६	७६०७	सनकादिबीजमन्त्र		१६वीं	१	लि क केशवदास
४६०	४६०८	सभासार आदि	रघुराम कवि	१८५२	११४	लि क मगनीराम ब्राह्मण माडळगढ़मध्ये
४६१	४००३	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४५	२०	रा का स १७५७ स्था सारंगपुर अहमदाबाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	४०२८	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४२	१६	* लि.क. ऋषि किशोर, सोभ्नत प्रथम पत्र अप्राप्त
४६३	५४२१(२)	समयप्रवन्ध	वृन्दावनदास	१६वीं	१–३११	
४६४	४४५२	समयसार नाटक	बनारसीदास	१८१२	६२–८४	लि क प्रीत सौभाग्य
४६५	४७६१	,,	बनारसीदास	१८वी	६६	र.का.स १६६३
४६६	४८१६	,,	बनारसीदास	१८०२	१३६	
४६७	४८१२	,,	,,	१८६०	१२५	
४६८	६४४२	,,	,,	१८२४	६०	लि क. मोहन, रचना स्या० आगरा ।
४६९	७७२०(२)	,,	बनारसीदास, आगरानिवासी	१७२५	१–५४	लि क मतिवर्द्धन, हमीरगढमध्ये द स श्री थावा पठनार्थम्
४७०	६३५३	समयसार नाटक भाषा	,,	१६	८६	
४७१	६८४४	समयसार भाषा नाटक	बनारसीदास	१७५३	११७	र.का. स० १६६३
४७२	५३७३(२)	समयसार नाटक, सिद्धान्त भाषा			४–७३	
४७३	५३७६(१२)	,, ,,			११२–१६७	
४७४	७४४२(३)	समयसार भाषा	बनारसीदास	१७६४	१–७१	
४७५	७४४३	समयसार नाटक भाषा	,,	१६१३	१३२	लि क वये अमरचद
४७६	५३८०(२)	समरविजय		१८४६	१६	प्रल्हावदास वैष्णव पठनार्थ
४७७	६७६६	सरसरस	राय शिवदास	१६वीं	१५	
४७८	६८३५(३)	सवा सौ सीख			४	
४७९	४४५२(२३)	सवैया	बालपुरी	१८वीं	२३ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८०	४४५२(३३)	मवपा	चंद कवि आदि	१९वीं	४० वाँ	
४८१	४४५२(६३)	„			११८ वाँ	लि क प्रीत सौभाग्य
४८२	६२२७	सियरघवीरविवाह	तुलसीदास		९	
४८३	५०३५	सिंहासनबत्तीसी (अपूर्ण)		१८९९	६३	लि क काशीराम पचोली
४८४	५८५५	„	कृष्णदास	१९वीं	१०२	*
४८५	६०११	सीताचरित्र चौपाई	चन्द कवि	१७४७	१२३	जीर्ण प्रति
४८६	६१४६	सीताचरित्र चौपाई	कवि बालक (चन्द ?)	१८९८	१००	र का स १७१३
४८७	७७५९(१)	सीताराम ध्यानमञ्जरी	अग्रदास	१८६४	१-२३	
४८८	६६३१	सीताराम रामायण (अयो कां॰ वनवास काड)		१९वीं	१५६	गोगावत कुलावतंस शंभूसिंह कृत प्रणीत
४८९	६६३२	सीताराम रामायण (आर कांड, सीतापहरण कांड)		”	५९	
४९०	६६३३	सीताराम रामायण (कि कां कपिमित्र का)			५९	
४९१	६६३४	सीताराम रामायण (सु कां रिपुपुरदाह का)			६२	
४९२	७१५५	सुखदेव लीला	मुरलीदास	”	४७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९३	६४४६(६)	सुदामाकी बारहखडी		”	१२-१४	
४९४	५४१२(१)	सुदामाचरित्र	नरोत्तमदास	१८९३	१-१३	
४९५	१८८७	सुदामाचरित्र (ककरा प्रणाली)	खुशाल शाण्डिल्य विप्र	१८वीं	१२	
४९६	६६८६	सुन्दरदासकी साखी	सुन्दरदास	१८८९	५६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९७	६९४७	सुन्दरदासजीके शब्द	सुन्दरदास	१८८९	४५	लि स्था फतेहपुर
४९८	४३१३(२)	सुन्दर भक्तिविलास	लाला सुन्दरलाल	१८९७	६–७१	लि स्था. जयपुर
४९९	४२१६(८)	सुन्दरशृगार	सुन्दरदास	१८५९	३३३–३५९	
५००	४३०७(२)	,,	,	१८३७	८७	लि क वेणीराम
५०१	४८१४	,,	सुन्दरदास	१८१३	२३	लि क त्रीकमजीशिष्य डाह्याजी
५०२	४८३५	,,	,,	१७८९	२१	लि क मुनीलाल सूरत वन्दरे
५०३	४०२९	,, व द्वादशमास वर्णन	,,	१७४२	२२	र का स १६८८
५०४	६३१७	,,	सुन्दर कवि	१९वीं	४०	र का स. १६८०
५०५	६९४४	सुन्दरसवैयासग्रह	सुन्दरदास	१८८३	७६	लि स्था फतेहपुर
५०६	६९४५	,,	,,	१८०४	४४	लि क. प्रेमदासशिष्य भिखारीदास
५०७	७७२०(१९)	सुमतिकुमतिसवाद (कहरामामाकी चाली)		१८वीं	५०वां	
५०८	४३०६(७)	सुहागरैन	म प्रतापसिहजी	१९वीं	१४,१५	
५०९	७४४१(५)	,,	,,	१९१४	४०–४२	
५१०	५४३५	सूरजपुराण		१८९२	२२	पद्मपुराणोक्त
५११	६३४२(३)	सूरसागर पद	सूरदास	१९वीं	१६–२४	लि.क. मनसाराम कायस्थ
५१२	७७२२(१)	सूरसारङ्ग (अपूर्ण)	,,	१८वीं	१–३६	१७२ पद है
५१३	५८६६(१)	सौदागर वच्चेका किस्सा		१९वीं	१–१०	
५१४	६२०२	हनुमानबाहुक	तुलसीदास	१९१७	१४	
५१५	७७३१	हयगुणप्रकाश प्रश्नोत्तर	लक्ष्मणदान वारैठ	२०वीं	५२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१६	७८११(५)	हरबोलचिंतामणी	सुन्दरदास	१८वीं	१८–१६	
५१७	४२६३(७)	हरिकीर्तनमाला	रतराणि	१८८२	३०–४४	
५१८	४४६५	हरिनाममाला		१६वीं	१	
५१६	४२८७(६)	हरिबोलचितावनी	सुन्दरदास	१७२८	२३–२५	लि क आनंदराम
५२०	६३४०	हरिवंश भाषा		१६वीं		आदि के १५३ पद्य त्रुटित
५२१	५३६०	हरिवंशपुराण भाषा	लालचंद	१७१६	१५४	लि स्था अबावती पत्र १ से ७ अप्राप्त
५२२	६१५८	,,	सालवाहण	१७८४	५८	पत्र ४ से ६ ७ १६,१७,३०,३४ ४२ से ४६ नहीं हैं
५२३	६१७५		खुशालचन्द	१८४२	१६७	
५२४	७१३४	हितहरिवंश जन्मोत्सव	व्यास हरिलाल	१८३७	७	लि क स्वय रचयिता वृन्दावन मध्य
५२५	५३७६	हितामननीतिका	राम कवि	१६वीं	१३३	व्रजेन्द्र बलवन्त सिंहाज्ञया रचित
५२६	४२१६(१)	हितोपदेश टीका	विष्णु शर्मा	१८५६	३७०	
५२७	४०१५	हितोपदेश पचाख्यान		१८५६	७२	लि क ऋषि टकचद्र
५२८	४३१६(१)	हितोपदेश भावानुवाद		१८६४	१५८	
५२६	४६१५(६)	हितोपदेश भाषा		१८८७	२००–३४७	लि क मुशी पन्नालाल जोधपुर
५३०	५०८२	हितोपदेश (सचित्र)		१८वीं	१७६	* चित्र संख्या ४७ कोटा कलम
५३१	६३४४	हितोपदेश (पद्यानुवाद)	कोविद मिश्र	१८८८	७८	बुन्देलखंड के महाराजा पृथ्वी सिंह की आज्ञा से रचित
५३२	४०६५(३)	हितोपदेश (चतुर्थ तंत्र तक)	विष्णु शर्मा	१८०१	१५–१६७	लि क डालूराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५३३	७७४०(२)	हितोपदेश भाषा पद्यानुवाद		१६३७	४६–१२५	लि स्था लोचनपुर (बूंदी)
५३४	६२५६	हिम्मतिप्रकाश	श्रीपति भट्ट	१६०८	४५	र का स १७३०, प्रथम पत्र अप्राप्त
५३५	४३०६(१६)	होरीवहार पद टीका	सवाई प्रतापसिंह	१६वीं	३२–४४	
५३६	६३४५	हृदयाभरण कवित्त	व्रजजीवन	१८६१–६२	१८२	
५३७	६६५१(२)	ज्ञानचरणवाचिका		१८६१	२०	
५३८	६२०६	ज्ञानप्रकाश	कृष्णदास	१८८०	४	गोपालदासजी पठनार्थम्
५३९	४६१४(७)	ज्ञानपचीसी	बनारसीदास	१८७१	१६७–१६८	
५४०	७७२०(४)	,,	,,	१८वीं	४१–४२	
५४१	६६५१(१)	ज्ञानमञ्जरी	मनोहरदास निरञ्जनी	१८६१	२०	लि क दुल्हेराम मिश्र, हस्तेडा मध्ये
५४२	६७६७	ज्ञानमञ्जरी भाषा	,,	१६वीं	२६	र का स १७१६
५४३	४०६५	ज्ञानवचनचूर्णिका	,,	१८५५	१८	लि क सहजराम दादूपंथी
५४४	६७७१	,,	,,	१८५२	२२	
५४५	४०५७	ज्ञानशृङ्गार	सुमति रग	१८५०	२२	र का स १७२२ मुलताणमध्ये
५४६	६६०८	ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	१६०७	३१	लि क बलदेव ब्राह्मण
५४७	४३०८(२)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१८वीं	४१०–४४६	६०० छन्द हैं
५४८	६८३७	,,	,,	,,	६१	र का.स १७१०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४९०९	अंतरिक्षपार्श्वना छंद	भाव विजय	१८४५	३	लि क हर्षविजय
२	५०७०			१८११	२	
३	४१४६	स्तव		१९वीं	७	
४	४३४६	अजितशान्तिस्तव सबालावबोध		१७वीं	४	
५	४६१४(३९)	आराधना	सकलकीर्ति	१८७७	२६२–२६४	
६	५९६०	चौपई		१५९२	१८	
७	७७५३(९)	इलापुत्रस्तवन	लब्धिविजय	१८३७	४४–४५	
८	४३६२	एकादशगणधर स्तवन		१७वीं	५	
९	४४५२(६८)	ऋषभजिनस्तवन	भावकवि	१८वीं	१२० वाँ	
१०	४६१४(२३)	ऋषभनाथजीनो छंद		१८७१	२३०से२३१	
११	४६१४(६०)	,	मूना मयारामसुत	१८७७	३१७से३२०	
१२	७३७२	ऋषभदेवजीरो छंद	धर्मसी	१९वीं	१	
१३	४६१४(१७)	ऋषिमंडलस्तोत्र		१८७१	२१०से२१२	
१४	७५५०	कल्याणमन्दिरस्तोत्र (राजस्थानीटबार्थसहित)		१७५७	१२	लि क धनजी
१५	५३७३(१)	मूल		१८वीं	१–३	
१६	५९८२	(सटीक त्रिपाठ)	कुमुदचन्द्र	१७वीं	१२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७	६२५९		हर्षकीर्ति	१८४८	२५	लि क हेतराम यता अमीचंद की पोथी सू राजराजा रणजीतस्यघजी ने लिखी
१८	७३६८	(राजस्थानीभाषार्थसहित)		१८वीं	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	६६१४	कल्याण मंदिर स्तोत्र राजस्थानी भाषार्थ सह		१७८२	१८	
२०	४०३०	कायस्थिति स्तोत्र (सबालावबोध)	साधुकीर्तिगणि	१७वी	३	लि.क समयकीर्तिमुनि
२१	५०६६(७)	गौडीयपार्श्वस्तुति		१९०६	१३ वां	
२२	५०६६(१)	गौडीयपार्श्वनाथ चौढालियु	लावण्यविजय	१९०६	१९३	
२३	५०६६(४)	,, छन्द	कुशललाभ	१९०६	१० से १२	
२४	५०७७(१)	गौडीपार्श्व स्तवन	कीर्तिविलास	१८०२	१ला	पत्र का कोण कटा हुआ है
२५	४३६३	गौतमदीवाली का स्तवन	सकलचद्रसूरि	१६८५	६	
२६	४३६६	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसक्षेपवृत्ति	सोमप्रभाचार्य	१५२४	५	लि क धीरमूर्ति गणि शिष्य लि स्था श्री भृगुपुर महानगर
२७	६३२६	,, स्तुति		१७८२	६	लि स्था. मसूदा
२८	७२७५	,, (सावचूरि, पचपाठ)	वप्पभट्टिसूरि	१६वीं	४	
२९	४२८७(५)	चतुर्विंशतिस्वयभूस्तोत्र		१७२६	१९–२२	
३०	४९१४(३२)	चैत्यवदन चौपाई	वीरचद्रमुनि	१८७७	२४९से२५१	
३१	४९२४(४)	,,	लावण्यसमयमुनि	१७८७	१	
३२	५४३६(१)	,,		१८५३	१ से ३	लि क दौलतराम मुनि लि स्था. मारोट
३३	५४४१	चैत्यवदनादि जिनस्तवनसग्रह		२०वीं	२४२	
३४	७४४८	,,		१९१५	१२६	लि.क अमरचद ? स्तवविषयक ३१ कृतियो का सग्रह
३५	५०७२	चौबीस जिनस्तवन	गुणविजय	१८वीं	५	
३६	७५९९	,, भाषा	महानन्द मुनि	१९वीं	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	७४४४(१)	चौवीसी	ज्ञानवचन	१८८५	१–५३	इस गुटके मे १९ कृतियो का संग्रह है
३८	४६१४(३८)	चौरासी लाख जीवयोनिवीनती	ज्ञानभूषण	१८७७	२५९से२६२	
३९	४६१४(५९)	,	हर्षकीर्ति	१८७७	३१५से३१७	
४०	७३६६	जयतिहुयण (सावचूरि)	अभयदेव	१८८२	५	लि स्था जसलमेर
४१	७४०९	, (सबालावबोध)		१६६५	६	लि क भुवनसुन्दर
४२	५४३६(१८)	जिणकुशलसूरिवृद्धिस्तवन		१९वीं	३	दो स्तवन हैं
४३	५४३६(१९)	जिणकुशलसूरिलघुस्तवन			१	
४४	६३८५	जिननमस्कार	जिनकीर्तिसूरि	१८वीं	४	
४५	४२८७(११)	जिनाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य		७८से९२	
४६	४६१४(४०)	जीवदया छन्द	भूधर	१८७७	२६५–२६६	
४७	६१८०	जैनचैत्यस्तव (सरस्वतीस्तोत्र)		१९वीं	५	
४८	५३७३(४)	जैनशतक	भूधरदास	१८वीं	९७से१०९	रचना सं० १७८१
४९	५४१८(८)	तिरेपन क्रिया	ब्रह्मगुलाल	१९वीं	१०१से१०५	
५०	५४१८(१४)				११६से११९	
५१	४६१४(५६)	तिरेपन क्रिया वीनती	प्रभाचन्द्र	१८७७	३११–३१२	
५२	५४३६(६)	तीर्थावलीस्तवन		१९वीं	३६–३८	
५३	७०८४	दण्डकविचारषट्त्रिंशिकासूत्र सटिप्पण	गजसारसाधु धवलचन्द्र महोपाध्यायशिष्य टि क यश सोम	१८वीं	१०	
५४	५४३६(१७)	दादेजीरा स्तवन		१९वीं	११	
५५	५४३६(८)	नवकारमन्त्रमहिमालघुस्तवन			४०–४३	
५६	७२९०	नवकारमहामन्त्रस्तवन	जयवल्लभसूरि	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७	५४३६(१४)	नवकारमहिमास्तवन			३	
५८	५४२७(१)	नवस्मरणस्तवन		१९वीं	१–३१	
५९	४९१४(२१)	नीगोदनी वीनती		१८७१	२२९–२३०	
६०	४८३७	नेमनाथसिलोको	उदयरतन	१८७१	४	लि.क फतेचद्र लाधडामध्ये
६१	४९१४(१२)	प्रभाती	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वाँ	
६२	७२५७	प्राचीनकर्मस्तवटीका	गोविंदगणि	१७वीं	१७	
६३	५४३६(१३)	पचकल्याणस्तवन			२	
६४	४९१४(१)	पचकल्याणीक	रूपचद	१८७१	१–७	
६५	४२९८	पचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ	समयराज मुनि	१६३५	४	श्रीपार्श्वनाथसमसस्कृतस्तव भी साथ मे हैं, लि क नयनकमलगणि
६६	६२९९	पचमगलस्तवन	रूपचंद	२०वीं	८	
६७	४९१४(१५)	पचमेरु अष्टक	सुदर्शनविजय	१८७१	२०८–२०९	
६८	५४३६(१५)	पचसवरस्तव			२	
६९	५०९९(५)	पद्मावतीछन्द	हर्षसागर	१९०६	१२–१३	
७०	४९१४(४६)	पद्मावतीवीनती (१)	पुजराज	१८७७	२७५ वाँ	
७१	४९१४(४७)	,, (२)	,,	,,	२७५–२७६	
७२	४९१४(४८)	पद्मावतीस्तोत्र (अष्टक)	जिनसागर देवेंद्रकीर्तिशिष्य	,,	२७६–२७७	
७३	५१३१	पद्मावतीस्तोत्र		१९वी	२	
७४	७४४४(१७)	पनरे तिथिरी थुई		१८८५	२९४–३०२	लि क नेमविजय मानविजयशिष्य गोघूंदा नगर में लिखित
७५	७४४४(९)	पाँच तिथिरी थुई		,,	१९०–१९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लखनीय
७६	७२६४	पार्श्व जिन यमकमयस्तुति		१७वीं	१	
७७	५४३६(१०)	पार्श्वनाथजिनलघुस्तवन			४४–४६	
७८	४६१४(५२)	पार्श्वनाथजीनो छन्द	भुवनकीर्ति	१८७७	२८३से२८८	
७९	४४५२(६६)	पार्श्वनाथजी पाढगत छन्द	अभयसोम	१८०५	११९ वां	लि क प्रीतिसौभाग्य लि स्था नींवडा
८०	७४०४	पार्श्वनाथ तथा साधारण जिनस्तवन	प्रभविमल	१९वीं	१	र का वि० १५३५
८१	६९८४	पार्श्वनाथस्तवन		१८वीं	७	
८२	७७५३(५)	पार्श्वनाथस्तवन	कीर्तिप्रभ	१८३७	३७–३८	
८३	७५६५	पुद्गलपरावर्त्त स्तवन सबालावबोध		१७वीं	१	
८४	५४३६(१६)	बीसविहरमानस्तवन		१९वीं	१	
८५	७१३८	बीसस्थानकस्तुति		२०वीं	१८	
८६	५२९८	भक्तामर बालबोध टीका	हरिदास	१८वीं	१८	कमलमपुरमध्ये रचित
८७	५४१८(२)	भक्तामर भाषा	मानतुग (हेमराज)		८	४९ पद्य
८८	७१०९	भक्तामर भाषा कानभरवाष्टकादि		१८वीं	८८	इस गुटके में आबूस्तवन स्थूल भद्र सज्झाय, साधुवन्दना मग लाष्टक चतुर्विशतितीर्थकर स्तव सरस्वती अष्टक आदि विविध रचनाओं का सग्रह है
८९	६३४७	भक्तामर महाचरित्र भाषा	विनोदीलाल	१८२८	२९३	र का स० १७४७
९०	५४२७(२)	भक्तामरस्तोत्र		१९वीं	३१से४५	
९१	४०२५	प्राकृत वार्तिक सहित	मानतुग सूरि	१६८९	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि क शिव दास वसताणी, स्था देशलहरान, श्रीफतेपुरमध्य
९२	४३६०	„ सबालावबोध		१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
९३	७२७१	भक्तामरस्तोत्र	मानतुग सूरि, बाला. मेरुसुंदर	१७००	१४	
९४	७४०८	,,	मू. मानतुग	१८२६	१९	लि.क रूपचद
९५	५९०५	भक्तामर टीका	गुणाकर	१६वी	३२	
९६	४२८७(२)	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	१७२६	५-११	लि क रामचद्र
९७	६०००	भक्तामरस्तोत्र पचपाठ	अमरप्रभ सूरि	१७वी	७	लिपि सुन्दर है
९८	६०३९	,, सार्थ	भा विनयसुन्दर	१८वी	१६	
९९	६२७१	,, भाषा टीका	मू. मानतुग, भा. अखैराज श्रीमाल	१७८४	२४	लि स्था तुगा
१००	६२७७	,, भाषा	हेमराज	१९४१	१६	लि. स्था. अमदा नगर
१०१	७४५०	भक्तामर भाषा आदि विविध कृतियाँ		२०वी	२३२	* कृतियो के नाम परिशिष्ट मे देखिये
१०२	६२८९	भक्तामरस्तोत्र सटीक	मानतुगाचार्य	१८वी	६	
१०३	६३६१	भक्तामर सटीक त्रिपाठ	टी कनककुशल	१९२८	२४	लि स्था विराट नगर
१०४	७१८४	,, (सुखबोधिका)	टी अमरप्रभ	१७वी	५	
१०५	७३८१	,, वृत्ति (सुबोधिका)	वृ का समयसुन्दर	१८२१	७०	रचनाकाल-सप्तवसु शृंगावसति १३८७ (?) पत्तने नगरे
१०६	७७६४	भवारिवारणस्तोत्र सटीक पचपाठ	जिनवल्लभ सूरि	१७वीं	५	
१०७	४९१४(११)	मदिरस्वामीनी वीनती	सकलकीर्ति	१८७१	२०७-२०८	
१०८	५४३६(२०)	मरोटकोटमडण, दादेजी श्रीजिन-कुशल सूरिजीरी नीशाणी		१८५३	८	
१०९	५०७१	राणपुर मडन वीरजिनस्तवन		१८वीं	२	लि क दौलतराम मुनि
११०	७८२७	लघुशातिस्तव सटीक	मानदेव आचार्य	,,	१६	र का. १६११

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	७४३७	ललितविस्तरा पञ्जिका (चत्यय दना वत्ति)	मुनिचद्रसूरि	१५वीं	४०	
११२	७३५५	वधमानस्तुति	कनककुशलगणि विजयसेन सरिशिष्य	१६५७	१	लि क साह हरष (ख) ग्राम-हालीवाडा
११३	५०७६	वासुपूज्यस्तवन	प्रेमविजय	१६वीं	७	
११४	४३४४	वीतरागस्तोत्र	हेमचन्द्रसूरि	१७वीं	८	
११५	५६३५	वीतरागस्तोत्र सावचूरि पचपाठ	हेमचद्र सूरि	१६वीं	६	सहजातिशयनामक द्वितीयस्तव
११६	५६३६	"		,	१०	आशीस्तवे विंशतिप्रकाश
११७	५४१८(११)	वीरजिणन्द		१६वीं	११२-११३	
११८	५०७४	वीरस्तवन सस्तबक	वीरविजय शुभविजयशिष्य	१८५८	१०	
११९	६४४६(२)	वीरस्तुति			४०-४१	
१२०	७३७६	बीस विहरमान गीत, पुरोहितपुत्र स्वाध्याय	जिनसागर सहजसागर	१८वीं	६	लि क खमधम लि स्था पीपाड नगरे
१२१	५०६९(३)	वद्धचत्यवन्दन	मूला वाचक	१९०६	८-१०	
१२२	४३४५	श्रीऋषिमडलस्तवन	धमघोष सूरि	१७वीं	११	
१२३	४१५९	श्रीदेवीछद शनश्चरस्तुति		१९वीं	३	
१२४	५०७५	शखेश्वरपार्श्वछद	हृषरुचि		३	
१२५	७७५३(४)	शान्तिनाथस्तवन	गुणसार	१८३७	३४-३६	
१२६	७७२०(१५)	शान्तिनाथ त्रिभङ्गी छद	बनारसीदास	१८वीं	५०-५१	
१२७	५३८५(७)	शीतलनाथस्तोत्र	सिंहनन्दि	१६वीं	१८६वा	
१२८	४५११	शोभनस्तुति		१७वीं	६	
१२९	७४७२	, पचपाठ	धनपाल पडितबा धव	१६३४	१०	लि क पूरणमल माथुर कायस्थ लि स्था गढ रणथम्भोर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३०	७२७८	शोभनस्तुति सटीक	शोभन	१६वी	११	
१३१	४८४०	स्तभनपार्श्वनाथस्तवन जम्बूकुमार स्वाध्याय	कुशललाभ कवियण हरिविजय-शिष्य	१८२८	३	
१३२	६८३६	स्तभन पार्श्वनाथस्तुति आदि		१६वी	७२	* लि स्था सांगानेर, इस गुटके की अन्य कृतियो का विवरण परिशिष्ट मे देखें
१३३	४६१४(१३)	स्तवन (मुजरा)	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वां	
१३४	६१६०	स्तवन (स्वयभूस्तोत्र)	समतभद्र स्वामी	१८वी	१६	इस प्रति मे २४ स्तोत्र हैं
१३५	७५६८	स्तवन (शातिजिन)		,,	३	
१३६	७४४७	स्तवनसज्झाय पवसग्रह		१६१६	१७०	लि क अमरचद्र, सेठ गभीरमल-पठनार्थम्
१३७	७४४६	,, आदि		१६११	२००	*
१३८	७४४४(१०)	स्तुतिम्तवन		१८८५	१६४–२०५	इसमे पजूसणरी थुई, सेत्रुंजाजीरी थुई, पांचमरो तवन, आठमरो तवन, इग्यारसरो तवन हैं
१३९	६८२५	स्तोत्रसग्रह		१६वीं	४	* इसमें ५ स्तोत्र है, नाम परिशिष्ट में देखिये
१४०	७४४४(६)	सप्तस्मरण		१८८५	१४४–१६८	
१४१	५४२७(३)	,,	नानू ऋषि		४५–४६	
१४२	४६१४(३६)	सात वसणनी वीनती	ब्रह्महस	१८८७	२५७–२५८	
१४३	७३६४	साधारणजिनस्तोत्र (सावचूरि)	जयानन्द, अव वानर ऋषि	१७५८	५	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	५०७७(३)	साधारण स्तवन	मोहनविजय रूपविजयशिष्य	१८०२	१ला	
१४५	५४१८(२१)	साधवंदना	बनारसीदास	१९वीं	१४५–१४७	
१४६	५११४	सीमंधरवीनती		१८वीं	२१	
१४७	४९१४(२२)	सीमंधरस्तवन		१८७१	२३० वां	
१४८	७७५३(३)	„	भक्तिलाभ	१८३७	३२–३४	
१४९	६८४०	„ आदि (विंशतिविहार स्तवनादि)		१९वीं	२२६	फुटकर ढाल, भक्तामर, तथा घंटाकर्ण स्तुति आदि कृतियां हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७२५८	अन्तकृद्दशाविवरण तथा अनुत्तरोपपातिकविवरण		१७वीं	११	संस्कृत-प्राकृत
२	७६४०	अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र		,,	१२	प्राकृत
३	७५३४	अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र (प्रा० राजस्थानीभाषार्थसहित)		१७६६	६२	प्रा. रा. लि क ऋषि त्रीकम, राणकपुरे
४	७२५४	अन्तगडदशा (राजस्थानीभाषार्थसहित		१६३६	३८	प्र प्रा., लि कर्त्री-जिया अमराजीशिष्या
५	७४६४	अनुत्तरोपपातिकसूत्र		१८वीं	१०	प्राकृत, लि.क ऋषि हरजी
६	७६३८	अनुत्तरोपपातिकसूत्र (राजस्थानीभाषार्थसहित		१७७३	१६	प्रा. रा., लि क ऋषि धनजी
७	७२१२	अनुत्तरोववाइसूत्र		१६वीं	४	प्रा अ
८	७२०२	अनुयोगद्वारवृत्ति	श्रीहेमचन्द्रसूरि मलधारी	१६६६	१०४	संस्कृत, लि क. गुणनन्दन मुनि विशालकीर्ति, लि. स्था. पुष्करिणीनगरी (पोहकरण)
९	७४११	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध, राजस्थानीभाषार्थसहित)		१७वीं	१०१	प्रा रा.
१०	७४१५	,, ,,		१६वीं	६६	,,
११	७५५१	,, ,,		१७२७	५६	,, लि.क. मुनि मनोहर लि स्था. वीरमग्राम
१२	५६३२	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध बालावबोध)	वा. पासचन्द साधुरत्नशिष्य	१५८६	१४२	प्रा रा, लि.क. रतनभट्ट गुजरगौड लि. स्था. सोमतपुर, आद्य पत्र अप्राप्त
१३	५६३१	आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध बालावबोध)	,,	१७६६	८१	प्रा.

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	७,५८	आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध राजस्थानीभाषार्थसहित)		१६२३	६५	प्रा रा लि क गोडा अमरदत्त
१५	७५४०	आचाराङ्गनिर्युक्ति		१७वीं	१४	प्राकृत
१६	७२८०	आचाराङ्गप्रदीपिका	श्रीजिनहंससूरि	१६६५	२१६	स प्रा
१७	७२२२	आचाराङ्गवृत्ति	शीलाङ्क	१६वीं	२८१	,
१८	७२७४	आचाराङ्गसूत्र		१७वीं	११५	प्राकृत
१९	७४२६	आवश्यकनिर्युक्ति		१६वीं	६१	, प्रथम पत्र अप्राप्त
२०	७४३६	,,			४७	प्राकृत
२१	७४४०	,		१६२२	८१	लि क ऋषि बाथा
२२	७७६६	,		१६वीं	११९	प्राकृत
२३	५९४६	आवश्यकनिर्युक्तिसूत्रम		१५४९	१२७	, लि स्था अणहिल्लपुर पत्तन
२४	७२०४	आवश्यकबृहद्वृत्ति	श्रीहरिभद्रसूरि (?)	१६३१	४०५	संस्कृत लि क लक्ष्मणमुनि लि स्था जसलमेर
२५	७४००	,		१७वीं	५४९	संस्कृत प्रति में ५४७ ४८, ४९वें पत्र खण्डित हैं
२६	७३३४	आवश्यकसूत्र (सटीक बृहद्वृत्ति)	हरिभद्रसूरि		२०१	संस्कृत
२७	४३५८	आवश्यकसूत्र (सबालावबोध)		,	१९	* प्रा रा
२८	७५५४	आवश्यकसूत्र			४	प्राकृत, लि क प० धर्मकीर्तिमुनि
२९	७१८८	आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति (सचित्र)		१५०१	६८	प्रा चित्र संख्या २ लि क जिनदास, लि स्था माण्डली नगर
३०	७११६	उत्तराध्ययनसूत्र		१५४८	३५	प्राकृत अद्यह श्रीघोघावेलाकूले माणिक्यन लिखितम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४	७२८६	उपासकदशाङ्गविवरण		१६४७	२०	सस्कृत, लि.क मुनि लषमन, जिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये
५५	५२२६	उपासकदशाङ्गसग्रह	शिवचन्द (कल्याणसूरिशिष्य)	१७१३	४७	रा प्रा., लि क. छीतर (शिवचन्दशिष्य वैराठदुर्गे, आसन्दी ग्रामे, पाचवा पत्र अप्राप्त
५६	७३१८	उपासकदशाङ्गसूत्र (राजस्थानी-भाषार्थ सहित)		१७५२	५३	प्रा रा , लि.क लालसागर
५७	७६३४	,, ,,		१६८०	६६	प्रा.रा.
५८	७२२८	उववाइसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ-सहित)		१८९९	८९	प्रा.रा , लि क. ऋषि हुकमचद, राणावासनयरमध्ये
५९	७४१९	उवाइसूत्र		१६८४	९५	प्राकृत, प्रथम पत्र अप्राप्त
६०	७४८५	ओघनिर्युक्ति		१६वी	२३	प्राकृत
६१	७५५३	औपपातिकोपाङ्गसूत्र (सस्तबक)	स्त पार्श्वचन्द्र (सीधुरत्नशिष्य)	१७वी	११५	प्रा रा.
६२	६८५२	कल्पवार्ता		१९वीं	१५२	रा., अपूर्ण, पत्र १०, ३८, ३९ तथा ११४ से ११८ तक अप्राप्त
६३	४३१८	कल्पसूत्र (सचित्र)			१३१	प्राकृत, चित्र स ३४
६४	५३५६	,, ,,		१६वी	८५	स प्रा., राजस्थानी कलम के चित्र९
६५	५३५७	,, ,,		१५वी	७२	प्रा , चित्र स १९
६६	५३५८	,, ,,		,,	५३	प्रा., चि सं. १४
६७	५३५९	,, ,,		१५०२	९१	प्रा , चि. स. ४०
६८	७८४१	,, ,,		१४वी	१३३	प्रा , चि सं ३६



ग्रन्थसंख्या ७८४६

कल्पसूत्र

(सुप्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य श्रीसोमसुन्दरसूरिके उपदेशसे स० १४८५ में सुलेखित सचित्र प्रति)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	७८४२	कल्पसूत्र (सचित्र)		१४वीं	१०३	प्रा चि स ८
७०	७८४६			१५५० से पूर्व	५०	प्रा चि स २८
७१	७८४७	"		१५३१	१०	प्रा स्फुट पत्र, चित्र स १०
७२	७८४९	" "		१४८५	९	प्रा त्रुटित चि स ३ सुप्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य सोमसुन्दरसूरिके आदेश से आलिखित
७३	७८५०	" "		१४६०–१४९० के मध्यवर्ती	३६	प्रा त्रुटित चि स ७
७४	७८५१			१५५० के लगभग	४	प्रा, प्रति मे पत्र ८ १७, २३ व ८२वें ही प्राप्त हैं
७५	७३८९	कल्पसूत्र		१८९५	५४	प्रा, लि क सन्तोषचन्द्र मुनि, नागोरमध्ये
७६	७३९०	कल्पसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८३३	१७२	प्रा रा १ से १० पत्र अप्राप्त, लि क ऋषभविजय बहुत्सप्त च्छवी (बडी सादडी, मेदपाट देशे ?) नगरे
७७	७४१३		भा गुणविजय	१८वीं	१३१	प्रा रा प्रति के अन्त में जिन धर्मप्रवर्त्तक विद्वानों की जन्म तिथि विभिन्नगच्छो की स्थापना नामकरण का समय एव विविध आचार्यों की कृतियों का परिचय लिखित है अन्तिम पत्र अप्राप्त
७८	७४२६	"		१८४५	१७५	प्रा रा प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७९	७३६१	कल्पसूत्र (राजस्थानीभावार्थसहित)		१८३९	१३६	प्रा रा., लि स्था फलोधी
८०	७५५५	,, ,,		१७२९	८८	प्रा.रा , लि क मुनि मनोहर, वतूवा ग्रामे
८१	४४१३	कल्पसूत्र (सस्तबक)	स्त सोमविमल	१६७२	१०९	* प्रा.रा.
८२	७५२६	,, ,,		१७२६	६१	प्रा रा., लि.क मनोहरऋषि, अहमदपुरमध्ये
८३	७०७५	,, (सटिप्पण)		१८वी	९९	प्रा अ., अपूर्ण प्रति किन्तु प्रदर्शनीय
८४	५३५४	,, (सावचूरि, सचित्र)		१५६३	१३६	प्रा स , चि. स. ३६, भिन्नमाल मे लिखित
८५	७८४०	,, ,, ,,		१५२३से पूर्व	१०५	प्रा., चि स. २४, धनेश्वरसूरि द्वारा लिखापित, इस प्रति को स. १५२३ में आचार्य को भेंट करने का उल्लेख है
८६	७४८९	,, (सावचूरि)		१४१६	१११	प्राकृत-सस्कृत
८७	७८४४	,, ,,		१६२१	६५	,, ,,
८८	५३५५	,, (सटीक, सचित्र)	टी सुमतिहंससूरि	१७३४	११५	प्रा.सं., चि स ८६, सोजत में लिखित
८९	७२४१	कल्पसूत्रकिरणावलीटीका	टी. धर्मसागरगणी	१६७६	३२२	स.प्रा., प्रथम पत्र अप्राप्त लि क. कमलसी, महतवसीसुत, ईदलपुरा (अहमदाबाद) स्थाने
९०	७२२६	कल्पसूत्रटीका		१९वीं	११८	संस्कृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	७५५६	कल्पसूत्रटीका	लक्ष्मीवल्लभ (लक्ष्मीनिधि)	१६वीं	१११	स प्रा रा
६२	६ ३२	कल्पसूत्रबालावबोध	शिवनिधान	१७६४	१२८	राजस्थानी लि क प हरराज श्रीनगरे
६३	७५५८	„ „ (सप्तमवाचना)		१७१२	२२	प्रा रा लि क मानविजय मालपुरामध्ये
६४	६६१७	कल्पसूत्रभाषा		१६३३	१२७	राजस्थानी, लि क ऋषि केशरीचन्द्र, विक्रमपुरमध्य
६५	६८४८	कल्पसूत्रसिद्धान्तवाचना		१६५७	१६६	राजस्थानी, १-२ पत्र कीटविद्ध लि क ऋषि लक्ष्मीचन्द सरूपचन्द रेवासी (पालणपुर, गुजरात) मध्य
६६	७३१०	कल्पान्तर्वाच्य		१६६२	५४	प्रा स, लि क सौभाग्यविमल श्रीसिरोहीनगरे रचनाकाल १५७० (?)
६७	७२६०	कल्पान्तरवाच्यटीका		१७वीं	५०	प्रा स
६८	७४६६	चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र		,	३६	प्राकृत
६६	४३०४	चित्तसभूति (ऋषीश्वराध्ययनानन्तरम्)		१५वीं (?)	७	प्रा रा
१००	७२०१	जीवाभिगमवृत्ति	व श्रीमलयगिरि	१६वीं	२६२	प्रा स
१०१	७२१४	ठाणाङ्गसूत्र			७७	प्राकृत
१०२	७२२६	ठाणाङ्ग (स्थानाङ्ग) सूत्रवृत्ति		१६०८	१८२	प्रा रा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७२३२	दशवैकालिकसूत्र		१७वी	२७	प्राकृत
१०४	७४२४	,,		१८७८	२०	,, लि क अखु
१०५	७४८८	,,		१६६६	२६	,, लि क. हरजी (ललित प्रभशिष्य)
१०६	७६३९	,,		१७७७	२५	प्राकृत, लि.क. ऋषि धनजी, कालावडनगरे
१०७	७३१७	दशवैकालिकसूत्र (राजस्थानी भावार्थ सहित)		१७वीं	५८	प्रा.रा.
१०८	७५५२	दशवैकालिकसूत्र (सावचूरि)		१६२३	३७	प्रा स.
१०९	४४५९	, (सटबार्थ)		१८वी	५४	प्रा रा., ३९वां पत्र अप्राप्त
११०	७३२३	दशवैकालिकसूत्रटीका	टी सुमतिसूरि (बोधकशिष्य)	१७वीं	५४	सस्कृत, टीकाकार ने अपनी पुष्पिका में हरिभद्राचार्य की एक टीका का भी उल्लेख किया है
१११	७४७४	दशवैकालिकसूत्रटीका (शिष्य बोधिनीनाम्नी)	हरिभद्रसूरि	१६१७	१२४	सस्कृत, लि.क जिनचन्द्रसूरि मुनिराज, अणहिलपुरपत्तने
११२	७२८७	दशवैकालिकसूत्रावचूरि		१५वी	१६	सस्कृत
११३	७६५४	दशाश्रुतस्कन्ध		१६७०	२६	प्रा , लि.क. मुनि महावजी, म्वीरपुरनगरे
११४	७४८४	नन्दीसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
११५	७२५९	निरयावलिका (राजस्थानी भावार्थ सहित)		१८९७	६२	प्रा.रा., लि.क मूल० सुमतिहंस, भाषा उमवहस, कोसाणामध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११६	७३०७	निरयावलिकासूत्र		१६६५	२६	प्रा , लि क बच्छा
११७	७३६५	निशीथसूत्र (लघु) (राजस्थानी भाषाय सहित)		१८३२	७७	प्रा रा लि क कपूरविजय हरचन्द पीपाडनगरे
११८	७४८१	निशीथसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
११९	७५४१	,		,	२३	, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०	७०८५	प्रतिक्रमणसूत्र		१६वीं	२३	प्रा अपूर्ण १६वां पत्र अप्राप्त
१२१	७४४४(७)			१८८५	१६८–१८०	प्राकृत
१२२	७४४५	, आदि		१८८७	४६१	* विविध भाषा जरी के कपड़े के जिल्दबन्ध गुटके में आठ कृतियो का संग्रह है
१२३	७४४६	,		१६२२	६६	* वि भा , सुन्दर जिल्दबन्ध गुटके में १० कृतियोका संग्रह है
१२४	५६७३	प्रतिक्रमणसूत्रबालावबोध	सहजकीर्ति	१८८६	६१	प्राचीन राजस्थानी
१२५	६८५६	प्रश्नव्याकरण		१५६८	४३	प्रा द्वितीय पत्र अप्राप्त
१२६	७२५६			१७वीं	२६	प्राकृत
१२७	७२११	प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका	अभयदेवसूरि	१६०२	८३	संस्कृत
१२८	७३४५	,,	,	१५वीं	४८	* संस्कृत
१२९	७५४७	प्रश्नव्याकरणाङ्गसूत्र (सबालावबोध)		१७वीं	६५	प्रा रा
१३०	७३१५	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (सबालावबोध पचपाठ)		१६५४	११२	प्रा अपभ्रंश
१३१	७३४६	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (प्राचीन राजस्थानी भाषायसहित)		१७५६	७३	प्रा रा लि क ललितहंस तत्व हंस शिष्य सप्तसदी नगर मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	७१८१	प्रज्ञापनासूत्र		१७वी	३२०	प्राकृत
१३३	७५४५	,,		१६५६	२२७	,, १–२ पत्र अप्राप्त
१३४	७१९७	प्रज्ञापनोपाङ्ग (सटीक, पञ्चपाठ)	मू श्रीश्यामाचार्य ? टी श्रीमलयगिरि	१७वी	४२६	प्रा. संस्कृत
१३५	७२८३	प्रज्ञापनोपागसूत्र		,,	१७१	प्राकृत, १–२ पत्र अप्राप्त
१३६	७६६८	पाक्षिकसूत्र		१६वी	१४	प्राकृत
१३७	७४८३	पिण्डनिर्युक्ति		१७वी	३२	,,
१३८	७२३३	भगवतीसूत्र		१६२५	४५७	प्राकृत, संवत् १६ आषाढादि २५ वर्षे फाल्गुन वदि द्वादशाया- तिथौ भगवतीसूत्र लिखितम्
१३९	७२८९	भगवतीसूत्र		१६०२	३०४	प्राकृत, लि स्था अणहलपुर
१४०	७२०३	,, टीका	अभयदेवसूरि	१७३०	३४२	संस्कृत, लि स्था. जैसलमेर राउल श्रीअमरसिंहजीराज्ये
१४१	७२२०	,, वृत्ति	,,	१६वी	४१०	संस्कृत. लि क ब्राह्मण जीवा
१४२	७५६६	राजप्रश्नीयसूत्र		१६७०	८३	प्राकृत, लि. क मोढज्ञातीय जोशी कुलसी
१४३	७६३५	,, (राजस्थानीभाषार्थसहित)	भा० मेघराजवाचक	१७वी	२०९	प्रा. रा.
१४४	७३००	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सटीक, पञ्चपाठ)		१४१५	८१	प्रा स, प्रदर्शनीय प्रति
१४५	७२८४	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सबालावबोध, पञ्चपाठ)		१७०२	७७	प्रा. रा , लि. क. मुनि मानसिंह
१४६	७५२९	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानीभाषार्थसहित)		१७वी	१३९	प्रा. रा.

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४७	७६३१	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी भाषार्थसहित)		१७८६	९२	लि क मुनि मनोहर बोटाद ग्रामे
१४८	७२२५		भा० मघराज वाचक	१६१२	११८	प्रा रा ऋषि रूपचन्द पीहीमध्ये
१४९	७३१६	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्रवृत्ति	व मलयगिरि	१७वीं	७७	संस्कृत
१५०	७१८५	व्यवहारसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
१५१	७४६६	,		१७वीं	१४	
१५२	७१८७	विपाकसूत्र (सटिप्पण)		१५१३	२४	, त्रि क वाद्यक
१५३	७७६३	विपाकाङ्गसूत्रटीका	टी अभयदेवाचार्य	१५६१	१६	प्रा स
१५४	७३८४	श्रमणसूत्र (सबालावबोध)		१८वीं	८	प्रा अ लि क मुनि मिरकू भाभणजीशिष्य
१५५	७२३८	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	श्रीरत्नशेखरगणि	१६५५	१८५	प्रा स संशोधनकर्त्ता श्रीलक्ष्मीभद्र
१५६	६१३५	षडावश्यकबालावबोध	बा हेमहंस	१८वीं	१२१	अ स
१५७	७४२३	षडावश्यकसूत्र		१६८८	१३	प्राकृत
१५८	७२९६	स्थानाङ्गसूत्र		१६७२	७७	, लि स्था गुजाउलपुर
१५९	५९७८	स्थानाङ्गसूत्र (सबालावबोध, त्रिपाठ)		१७८७	२०९	प्रा रा लि स्था बीकानेर
१६०	७२२३	समवायाङ्गवृत्ति	अभयदेवसूरि	१६१८	८४	* स प्रा रचनाकाल ११२० वि
१६१	७१८३	समवायाङ्गसूत्र		१६५८	५०	प्रा पातशाहअकबरराज्ये लिपीकृतम
१६२	७२१५	,		१६६७	३३	प्राकृत
१६३	७४६५	,		१६वीं	५०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६४	७४६७	समवायाङ्गसूत्र		१६६२	६८	प्राकृत
१६५	७५६१	,, ,,		१८१४	१६५	प्रा रा., लि क हीराचन्द भावसारी, लींबडीमध्ये
१६६	६४४५	सूत्रकृताङ्ग (सटीक)		१८वीं	७३	प्रा स, अपूर्ण
१६७	७१७८	सूत्रकृताङ्गसूत्र		१६वीं	५७	प्रा, लि क माणिक्यचन्द्र, नागेन्द्रगच्छे
१६८	७२०७	,, ,, (द्वितीय स्कन्ध, सस्तबक, पञ्चपाठ)	स्त पार्श्वचन्द्र (सीमाधरत्नशिष्य)	१६५०	४८	प्रा रा, लि क लूणिया-पोमसी पुत्रेमालूरताण, जेसलमेर-मध्ये
१६९	७२०९	सूत्रकृदङ्गटीका	शीलाचार्य (वाहरिगणसहायेन)	१६वीं	२४५	प्रा स
१७०	७४३९	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध		१७वीं	३५	प्राकृत
१७१	५९९६	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (सज्ञातावबोध)		१६०१(?)	५१	प्रा रा
१७२	७४३३	,, ,, (पञ्चपाठ)		१७वीं	३४	,, ,,
१७३	७५३१	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (राजस्थानी भाषार्थसहित		१६५३-१६६७	७३	,, , मू. १६५३, भाषा-१६६७, लि.क ऋषिनारा
१७४	७५३२	,, ,,		१६६८	८४	प्रा. रा.
१७५	७३०१	ज्ञाताधर्मकथाङ्ग		१६७५	१८९	प्रा, लि क ऋषिवणायग पुना, केसीयामध्ये
१७६	७३५६	,, ,, (राजस्थानीभाषार्थसहित)	भा पेमजीगणि	१८४८	२२७	प्रा रा, लि क. जीवनराम, नागोरमध्ये
१७७	७३९८	,, ,,		१८६६	२९८	प्रा रा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	७४३५	ज्ञाताधर्मकथाङ्गवृत्ति	व अभयदेवसूरि	१६३८	७०	प्रा स , प्रथमपत्र अप्राप्त
१७९	७१६२	ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र		१६वीं	१३६	प्राकृत
१८०	७२३४	,,		१७वीं	१५०	
१८१	७४७८	,		१४८३	६४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१२५	अङ्गचूलिया		१८वीं	२१	अपभ्रंश
२	७५६१	अन्तसमाधि		१६०६	७	राजस्थानी
३	७२६७	अष्टप्रकारप्रकारपूजाकथा (स्नात्रपचाशिकावृत्ति)	माणिक्यसुन्दरसूरि	१६४८	४०	संस्कृत, रचनाकाल १४८४, लि स्था अणहिल्लपुरपत्तन
४	७५२५	अष्टाह्निकव्याख्यान (पर्यूषणादि)		१८८८	१०	संस्कृत
५	७५३७	आगमवाणी आदि	आगमसारोद्धारगत	१८वीं	१४	राजस्थानी
६	६१६२	आगमसार	देवचन्द्र (खरतरगच्छीय)	१६वीं	५६	हिन्दी-रा , र का १७८३ लि र मुनि दुर्गदास जालोरमध्ये, पत्र ५६–७६ तक भिन्नलिपि है
७	७०१६	आगमसारोद्धारभाषा	देवचन्द्र	१८६०	७६	० हि रा र का १७७६ लि क मयेन उमकरण, कृष्णगढनगरमध्ये
८	७३३१	आगमसारोद्धाररास	,, मनि	१८३२	२८	हि रा लि स्था पुष्पाजीनगरे
९	७२७३(३)	आदिनाथदेशनोद्धार		१७वीं	१२–१६	प्राकृत
१०	४७६६	आदिपुराण	सकलकीर्ति भट्टारक	१८वीं	२०४	संस्कृत, अन्तिम पत्र अप्राप्त
११	७११०	आराधनासूत्र (सार्थ)		१७३६	६	प्रा रा प्रथम पत्र अप्राप्त अन्त्य पत्र शोभन
१२	५६३४	उपदेशबालावबोध	सोमसुन्दर	१७वीं	७६	म प्रा
१३	७३०८	उपदेशमाला (सावचूर्णि)	श्रीरत्नशेखर	,,	२३	प्राकृत-संस्कृत
१४	४०१८	उपदेशमालाप्रकरणकथा (सबालावबोध)	धर्मवाससगणि (वृद्धिविजय ?)	१८५६	२१८	प्रा स रा , लि क विजयानन्द स्थविर, पाल्लीदुर्गे
१५	५६६०	उपदेशमालासूत्र (सटिप्पण)		१६६३	३६	प्राकृत, लि क मुनि कल्याणसुन्दर, लिपि सुन्दर व दर्शनीय

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	४३०२	ऋषभपचाशिका		१७वीं	७	* प्राकृत
१७	७४६३	ऋषिमण्डलप्रकरण			१२	प्राकृत
१८	७२६८	(सावचूर्णि पञ्चपाठ)			१६	प्रा स
१९	७२४२	ऋषिमण्डलवृत्ति	शुभवर्द्धनगणी, (श्रीसाधुविजय गणिशिष्य)	१८वीं	३५३	„ लि स्था रामगढ़
२०	७३०६	कर्मग्रन्थपञ्चकावचूरि		१६वीं	४३	स प्रा
२१	७२८८	कर्मग्रन्थषट्क (स्वोपज्ञटीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि ?) मलयगिरि	१७वीं	२६२	१ से ५ तक स्वोपज्ञटीका तथा ६ठे की मलयगिरिकृत टीका है
२२	७२३९	कर्मग्रन्थषट्कसूत्रवृत्ति (स्वोपज्ञ सटीक त्रिपाठ)	देवेन्द्रसूरि मलयगिरि	१६४९	२२५	,
२३	७२६७	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक	१६०२	१२	प्रा लि क लक्ष्मीरत्न
२४	५४१८(१०)	कर्मपचीसी		१९वीं	१०९–११२	हिन्दी
२५	५०९०	कर्मविपाक (सटिप्पण सप्ततिका पर्यन्त)		१८वीं	४७	अपभ्रंश
२६	६८८०	कर्मविपाकग्रन्थव्याख्या	मतिचन्द्र (गुणचन्द्रशिष्य)	१९वीं	५६	स प्रा रा
२७	७८५५	कालकसूरिकहाणय (सचित्र)		१६वीं	९	प्राकृत चि स ६
२८	५३६१	कालकाचार्यकथा (सचित्र)		१५वीं	१२	५
२९	७८४८	, ,		१५३१	६	, ३ त्रुटित अपूर्ण
३	५३६०	कालकाचार्यकथानक (सचित्र)		१५वीं	२५	१२ पत्र ७९–१०३ तक

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४२२	कालिकाचार्यकथा		१७वीं	१६	प्रा रा
३२	७२५१	गुणस्थानकवृत्ति	रत्नशेखरसूरि	१६८८	१४	सस्कृत
३३	७३६४	गुणस्थानविचार	,,	१६वीं	३	,,
३४	५४२७(६)	गुणसख्या (१०८ गुणोकी सख्या)		१६वी	१४८-१४६	प्राकृत
३५	६०२८	गुर्वावली	क्षमाकल्याणमुनि	१८७२	२८	सस्कृत, रचनाकाल १८३०
३६	६३३८	गुरुचारगूढाषट्पचाशिका आदि		१८वीं	६२	हिन्दी, गुटका
३७	७७४१(४)	गौतमपृच्छा		१७वी	३८-४१	प्राकृत
३८	७२४६	गौतमपृच्छावृत्ति	मतिवर्द्धन	१७५७	३१	प्रा. सस्कृत, र का. सिद्धौरामे मुनीचन्द्रे (१७३८) लि क ऋषि रत्ना
३६	७५२७	,, ,,	,, (पाठक)	१८वीं	४३	प्रा स
४०	७३०४	चउसरण (सबालावबोध)		१७वीं	१०	प्रा ग्र
४१	७३८५	चउसरणप्रकीर्णक		,,	६	प्रा, मोढजातीय जोशी माहव (माधव) लिखितम्
४२	७१२६	चतुर्वशस्थानकविचार		१७७५	१६	ग्र, लि क निहालचन्द, पाडली-पुरे, पत्र १५-१८ तक अप्राप्त
४३	५०६२	चतुर्विंशतिदण्डकसूत्रम् (सबालावबोधम्)	गजसागरगणी (धवलचन्द्रशिष्य)	१६६८	५	प्रा ग्र., लि क सौभाग्यगणि शिष्य, भट्टनेरकोटमध्ये
४४	७५६०	चातुर्मासिकव्याख्यानपद्धति		१६०४	७	स प्रा, लि.क हमीरविजय, कृष्णगढमध्ये
४५	७४६८	ज्योतिष्करण्डकसूत्र		१७वीं	११	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६	६१०४	जम्बूअध्ययन (जम्बूचरित्र)		१६८७	१६	अपभ्रंश प्रथम पत्र अप्राप्त
४७	५३२७	जिनदर्शन (जिनरक्षितजिनपालको चौढालियो)		१८३६	२	संस्कृत
४८	५१३६	जिनप्रतिमापूजापद्धति		१७वीं	२६	स प्रा, अपूर्ण
४९	७१८९	जीतकल्पवृत्ति	तिलकाचार्य	१६वीं	४०	संस्कृत
५०	७१८६	जीवविचार (सस्तबक)		१७५८	१०	प्रा अ लि क मोहनविमल
५१	७२३०	जीवविचार (सटीक)		१५८१	२	प्रा स, लि स्था गंभीग्राम सौभाग्यनन्दिसूरिविजयराज्य
५२	६८४३	जैनपूजाविधि स्तुति आदि		१९वीं	२३७	विविध भाषाके इस गुटकमें तीर्थङ्करोंकी पूजाविधि आरती स्तुति क्षेत्रपालपूजादि संग्रहीत हैं
५३	५३३४	तत्त्वार्थाधिगमसूत्र		१९०१	२५	स लि क देवचन्द्र
५४	६३०२	(सटिप्पण)	उमास्वामि	१८वीं	७	,, विमलदास
५५	४६१४(९)	(सार्थ)		१८७१	२०१–२०७	सं रा
५६	७७६१	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रटीका	सिद्धसेन	१६३१(?)	४४४	संस्कृत
५७	७७६०	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रभाष्य	उमास्वाति (मि)	१६३१	६६	, लि क प नाइया श्री अचलगच्छेश्वर श्रीधर्ममूर्त्ति सूरीश्वर विनयोपदेशात्
५८	६२६६	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रभाषाटीका		१८वीं	१०४	स रा ऊपरके पत्र पर सुगनजीकी टीका लिखा है
५९	६०३५	द्रव्यसङ्ग्रहवृत्ति	मू नेमिचन्द्र व ब्रह्मदेव	१६३१	९१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०	६२७६	दीपमालिकाकल्प	जिनप्रभसूरि	१८२३	२२	स , प्रतिका शोधनकर्त्ता ऋषि सुखदेव है
६१	७६३२	दीपमालिकाकल्प, दीपमालिकाकल्प बालावबोध		१८११	२०	स रा , र का 'शरयुग शिखिशशिवर्षे (१६४५)' लि क कृष्णाजी ध्राड् वडामध्ये
६२	७३६२	दीपालीकल्प (दीपमालिकाकल्प)	जिनसुन्दरसूरि (सोमसुन्दरसूरि-शिष्य)	१८वीं	१५	स , लि क हेमविजय 'सवत्सरेऽग्निद्विपविश्वसमिते'
६३	६०३६	दीपोत्सवकल्प		,,	६	अपभ्रश
६४	५४२७(४)	देवमहिमादि		१६वीं	४६–६४	स.रा अ , प्रतिमापूजन एव स्तवन भी लिखित है
६५	५६४६	धर्म्मप्रश्नोत्तरमहाग्रन्थ	सकलकीतिभट्टारक	१६१३	७४	स , इसमे १११६ प्रश्न हैं तथा ७२वें पत्र की लिपि नूतन है ।
६६	४५६२	धर्म्मोपदेशश्लोक (सार्थ)	महावीरभगवदुक्त अ भीमविजय	१८४६	८०	प्रा र , पादलिप्तनगरे शत्रुञ्जयतीर्थे लिपीकृतम्
६७	४५६६	धर्म्मोपदेशश्लोका	जैनपुराणोक्त	१६वीं	६	** सस्कृत
६८	५३७६(१६)	न्हवणकथा (स्नपनकथा)		१७६१	२१८–२२६	सस्कृत
६६	४०१६	नवकारबालावबोध		१८२१	४	प्रा रा , लि स्था जैसलमेर
७०	६३२०	नवकारमन्त्र आदि		१६वीं	६१	हि , इस गुटके मे जिनदर्शन, श्रीपालदर्शन, पार्श्वनाथस्तोत्र, बारहभावना जैनशतक' भक्तामरबालावबोध (हेमराजकृत) भी लिखित है ।
७१	७४४४(४)	नवतत्त्व (सटबार्थ)		१८८५	१२६–१३६	प्रा रा , लि क नेमविजय

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२	४०१९	नवतत्त्व (सबालावबोध)	पद्मचन्द्रशिष्य कश्चित (खरतर गच्छीय)	१८०३	५२	स प्रा रा र का १७६६ लि क ऋषिदेवचन्द्रादि लि स्था आगरा
७३	४०९१	„ „	मेरुतुङ्गसूरि (श्रीगच्छेन्) शिष्य कश्चित	१६५२	७१	प्रा रा लि क केशराज श्रीरामपुर
७४	४४६२			१७वीं	१०	प्रा रा, लि क हंसविजयगणि
७५	७६५६		बा पार्श्वचन्द्र		८	प्रा रा
७६	७५२१	नवतत्त्वटीका		१८७७	९	स प्रा लि क नमचन्द्र फलोधीग्राममध्ये
७७	७५३६	नवतत्त्वप्रकरण (सबालावबोध)		१८०७	१३	प्रा स लि क विजयगणि रामसेणनगरे
७८	४४२३	नवतत्त्वविचार (सबालावबोध)		१६वीं	६	प्रा रा
७९	६२३०	नमिपुराण		१८८६	२१२	स, लि क हेतराम
८०	७४७९	प्रत्याख्यानभाष्यत्रयावचूरि	सोमसुन्दरसूरि	१६वीं	२३	प्रा स
८१	७४७६	प्रत्याख्यानसूत्रभाष्यत्रय (सावचूरि, त्रिपाठ)	मू देवेन्द्रसूरि, अ सोमसुन्दरसूरि	१६५७	१९	प्रा स
८२	७५४४	प्रत्येकबुद्धचरित्र		१७वीं	१०	लि क धर्मकीर्ति
८३	७८२४	प्रतिष्ठाकल्प		१८वीं	१५	स प्रा
८४	७२००	प्रबोधचिन्तामणि	जयशेखरसूरि	१५	७२	*संस्कृत, र का-१४६२
८५	७३२१	प्रवचनसारोद्धार		१७वीं	४४	प्राकृत
८६	७३४७	„ „ (सटीक)	सिद्धसेन	१६५०	३७९	*प्रा स
८७	७२७६	पञ्चनिर्ग्रन्थिप्रकरण (सावचूरि पञ्चपाठ)		१७वीं	५	„
८८	७३०९	पञ्चनिर्ग्रन्थसूत्र (सावचूरि)	मू अभयदेवसूरि	१७८०	७	„ लि क प कल्याणचन्द्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता ग्रादि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८६	७१६३	पञ्चपरमेष्ठिपूजनप्रकार		१६वी	३६	सस्कृत, ग्रपूर्ण
९०	६२८७	पञ्चेन्द्रिय चौपाई		१८५३	६	हि र का १७६१
९१	५१३०	पद्मावतीकल्प		१७वीं	२	सस्कृत, त्रुटित एवं ग्राद्य पत्र ग्रप्राप्त
९२	६४०१	पर्यन्ताराधनासूत्र	सोमसूरि	१७४०	७	प्रा स , लि क ऋपि छीतर, विराटनगरे, पातसाहिश्रीरग-विजयराज्ये
९३	७७४१(३)	परमात्मप्रकाश		१७वीं	१२–३८	प्राकृत
९४	७१५६	पार्श्वनाथपूजाद्यभिषेकान्त ग्रादि		१६वीं	१२१	स हि रा , ग्रभिषेकनामक कृति ग्रभयनन्दि द्वारा रचित, र का १५६७, इस गुटकेमे तत्वार्था-धिगमसूत्र, भक्तामरस्तोत्रादि ग्रनेक कृतिया भी लिखित हैं।
९५	७१८२	पिण्डविशुद्धि (सावचूरि, पञ्चपाठ)	मू. जिनवल्लभ, वृ श्रीचद्रसूरि	१७वीं	१२	प्रा स.
९६	७२०६	पिण्डविशुद्धि		१६वी	४	प्रा पति के कोण भग्न हैं।
९७	६६०६	पूजाविधि (जैनतीर्थङ्करपूजाविधि)		१६वीं	११३	विविधभापा के इस गुटकेमें चौबीस एव बीस तीर्थङ्करोकी पूजाविधि तया दशवैकालिक, तत्वार्थाधिगमसूत्र एव विविध स्तोत्रादि सगृहीत हैं।
९८	७४१८	पोपधादिविधि		१८७५	६	प्राकृत, लि क कवीन्द्रसागर
९९	७५२२	बृहच्छान्तिटीका ग्रादि		१६०१	२७	सस्कृत, इसमे लघुशान्तिटीका, दण्डकवृत्ति नवग्रहस्तोत्रवृत्ति एव विद्याविलासकथा लिखित है।
१००	४३०१	बृहदाराधना		१५६०	१३	प्रा रा., लि स्था श्रीनारदपुरी, लि क गुणलाभगणि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०१	५२८७	भक्तामरपूजापद्धति		१९वीं	१८	संस्कृत
१०२	७३३९	भगवत्यङ्गबीजक		१७वीं	९	प्राकृत
१०३	६०५०	भद्रबाहुसंहिता		१९वीं	६६	संस्कृत
१०४	७१९६	भवभावना (मूल)		१५६८	१८	प्राकृत
१०५	७१९९	,	श्रीहेमचंद्रसूरि	१७वीं	२६	
१०६	७२८५	भवभावना (मूल)	हेमचन्द्रसूरि मलधारी	,	९	प्राकृत
१०७	७३२०	भवभावनामूलप्रकरण	,	१८६७	२५	, अन्तिम पत्र अपेक्षाकृत नवीन है उसी पर उक्त संवत लिखा है किन्तु मूल प्रति इससे पूर्वकी प्रतीत होती है
१०८	७२५२	भवभावनासूत्रप्रकरण		१७वीं	३७	प्राकृत
१०९	७२७३(२)	भववैराग्यशतक			६–१२	,
११०	५४१८(६)	भवसिन्धुचतुदशी	रूपचन्द्र	१९वीं	९६–९७	हिन्दी
१११	४०८५	मङ्गलकलशचोपाई	लक्ष्मीहर्ष	१८१९	२७	* अ प्रा लि स्था खींवसर ग्राम रचनाकाल १७१९, स्था –काकदीनगर
११२	५१२०	मङ्गलकलश तथा द्वितीयवाचना	मं कनकसोम	१७वीं	१०	प्रा द्वितीयवाचना पत्र १ ५ तक में लिखित है मङ्गलकलशका र का १६४९ है उक्त दोनों ही प्रतियां अपूर्ण हैं
११३	५३०१	महापुराणसंग्रह	गुणभद्राचार्य	१९वीं	१३८–१८१, १८४–२५८	संस्कृत अपूर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	७१०५	मौनएकादशी		१८वीं	२	स. प्रा.
११५	७२६३	मौनएकादशीकथा		१७वीं	२	संस्कृत, लि.क. प० सोमनन्दन
११६	८०८७	लोकनालात्रयबालावबोध	नयविलास (जिनचन्द्रसूरिशिष्य)	१८वीं	५	,,
११७	७२६४	वन्दारुवृत्ति		१५५६	७८	,, अन्तिम पत्र के अक्षर उड गये है
११८	७३४३	वनस्पतिसित्तरीअवचूरि	प्रज्ञापनोपाङ्गसूत्रगत	१६वीं	३६	प्राकृत
११९	६०३४	वर्द्धमानदेशना (गद्यबन्ध)	कीर्तिगणि	१८६०	१०६	संस्कृत
१२०	६२२०	वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्ति	१७९८	१४६	,, लि.क. गुणविजय
१२१	४२९९	विंशतिस्थानकविचारामृतसंग्रह	जिनहर्षगणि (श्रीजयचन्द्रसूरि-शिष्य)	१७वीं	६६	* प्रा.स., प्रथम पत्र अप्राप्त, र.स्था. वीरग्राम, र.का. १५०२
१२२	७४७७	विचारामृतसंग्रह	कुलमण्डनसूरि	१५वीं	३१	* सं.प्रा, र.का. १४४३
१२३	७१७९	विवेकविलास	जिनदत्तसूरि	,,	२१	संस्कृत
१२४	७०७९	विशेषणवती	जिनभद्राचार्यगणि क्षमाश्रमण	१८वीं	९	प्राकृत
१२५	६१८३	श्रावकातिचार		१५५८	१०	अपभ्रंश
१२६	५९७०	शतककर्मग्रन्थबालावबोध	देवेन्द्रसूरि	१८वीं	१८	,, लि. क. ऋषि विश्राम परगरायपुरे
१२७	४०२६	शीलोपदेशमालाबालावबोध	मू. जयकीर्त्ति, बा. मेरुसुन्दर	,,	१५०	* प्रा. रा., लि.क. गुणपति-सागर
१२८	४०३३	,, ,,	,, ,, ,,	१६११	१६५	प्राकृत
१२९	७३३०	षडशीतिकशतककर्मग्रन्थ (स्वोपज्ञ-टीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि	१६५४	११०	संस्कृत
१३०	७४१६	षष्ठिशतक		१६वीं	४	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३१	५६८६	षष्टिशतकबालावबोध		१८वीं	१६	प्राकृत
१३२	७३५३	स्थविरावली		१६वीं	४१	प्रा स
१३३	६३२७	स्वर्णाचलमाहात्म्य	देवदत्त दीक्षित (हर्षसागरात्मज)	१८४७	६७	स, लि स्था भरथपुर
१३४	७२२१	संग्रहण्यवचूरि	देवभद्रसूरि	१४६६	२०	संस्कृत
१३५	७३२५	"	श्रीचन्द्रमुनि (हर्षपुरीय)	१६वीं	२३	"
१३६	६१३३	संग्रहणी		१६२४	१७	प्रा, लि स्था अलवर प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१३७	७४०५	, (मूल)		१८६६	४०	प्राकृत, लि क ऋषि वृद्धिचन्द्र, चूरूनगरमध्ये
१३८	७५४६	\		१७०२	८	प्रा, इसमें दण्डक भी लिखित है। लि क यशसागरमुनि सादडीमध्ये
१३६	७४७५	, (सटीक, त्रिपाठ)	श्रीचन्द्रसूरि श्रीदेवचन्द्रसूरि	१६६०	५१	प्रा स लि क नयनगणि जीव कलशगणिशिष्य
१४०	७५६२	संग्रहणीप्रकरण (सस्तवक)	स्त वच्छराज	१७१०	३१	प्रा रा
१४१	७६३३	संग्रहणीप्रकरण	उत्तमऋषि	१८वीं	३५	" रचनाकाल अष्टचतुरशीतिके आगराख्ये महानगरे
१४२	४३५६	संग्रहणीबालावबोध	शिवनिधानगणि	१८३७	८५	* प्रा रा, लि क ऋषि आनन्दचन्द्र, श्री बेनातटपुर
१४३	५६७२	,	"	१८३६	६२	प्रा रा, लि क शिवराज, श्रावलभा (भी) पुर
१४४	७३२६	संग्रहणीवृत्ति	देवभद्रसूरि (श्रीचन्द्रसूरिशिष्य)	१८७७	१०१	संस्कृत ३४ वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४५	४००४	सङ्ग्रहणीसूत्र (सघेणनो रासछन्द)	मतिसार	१८४५	२५	* राजस्थानी, प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क प्रमोदतिलक, राजनगरे
१४६	४०३१	सङ्ग्रहणीसूत्र (सस्तबक)	लेख(श)सूरि	१६९२	२७	* प्रा.अ., लि कर्त्री-आर्याश्री ५ सज्जनजीरी शिष्यना आर्यसू-वट, बीलाडाग्राम
१४७	५३५३	,, (सचित्र)		१८वीं	९७	प्रा रा., चि स. ३२
१४८	६१४१	,, ,,		१८३०	४७	हि रा.अ., लि स्था डीडवाना
१४९	७१७५	,, ,,		१८२१	६४	प्रा. अ , चि स ३५
१५०	७८४३	,, ,,		१६७५	२४	प्रा , चि स ५
१५१	७२७७	सङ्ग्रहणीसूत्र		१७वीं	२०	प्राकृत
१५२	७३२४	,,		१८६०	२२	,, लि क. सुन्दरहम, राणा-वासमध्ये
१५३	७३२७	,, (सबालावबोध, पञ्च-पाठ)	देवभद्रसूरि	१६७८	३१	प्रा. अ
१५४	७४४४(२)	,, (सटबार्थ)		१८८५	५४–१२०	,, लि क. नेमविजय, गोघु-न्दाग्राममें लिखित, टिप्पणीका नाम रूपाली है
१५५	४१४३	सप्ततिशास्त्रबालावबोधविवृति	मतिचन्द्रमुनि	१७वीं	९२–१८३	सं ,अ रा., प्रति सुन्दर किन्तु अपूर्ण है
१५६	६२०७	सप्तव्यसनकथासमुच्चय	भारामलसघी (परसरामसुत)	१८७८	६२	हिन्दी, लिखित महाचन्द्र श्रीमालवासी पापडदाका पटवारी
१५७	७५४३	सप्तस्मरणसूत्र (राजस्थानीभाषार्थ-सहित)		१८४३	३६	प्रा रा , लि क रूपसोम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातय	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५८	७०१५	सप्तमव्याख्यान		१८वीं	१७	स श्र इसमे ऋषभदेव आदि नाथ आदिके चरित्रका व्याख्यान है प्रतिके पत्र चिपके हुए हैं
१५९	७६६९	सम्बोधसत्तरीप्रकरण		१९वीं	७	प्राकृत
१६०	६२०३	सम्मवणिखरमाहात्म्य	देवदत्त दीक्षित		८१	# सस्कृत
१६१	७११८	समवस्तुतिपूजा			४०	,, अपूर्ण
१६२	७२१७	समाधिशतकटीका	प्रभाचन्द्र	१६६५	२५	# ,, लि क प केशव
१६३	७१६३	साधुसमाचारी		१८वीं	६	प्रा श्र लि क कमलविजय साध्वी श्रीसौभाग्यश्रीपठनकृते, प्रति सुन्दर व चित्रित है
१६४	७२१८	साद्धशतकवृत्ति	धनेश्वरसूरि	१६वीं	७०	स श्र आद्य ४ पत्र अप्राप्त प्रतिके कोण खण्डित
१६५	५१३४	सारोद्धार (पचखाणा सटिप्पण)		१७वीं	४०	प्रा श्र
१६६	७३८२	सिद्धान्तसार		१७६३	६५	प्रा स रा लि क नालसागरगणि
१६७	६१४७	सिद्धान्तसारप्रदीपक	सकलकीर्ति	१८११	१२६	स लि क प मयारुचि जयसिंहपुरामध्ये (माधवसिंहराज्य)
१६८	७२६९	सिद्धिदण्डिका		१६वीं	४	प्रा
१६९	७५३९	सूयप्रज्ञप्ति		१७वीं	९२	,
१७०	६१०९	सस्तारकप्रकरण (सबालावबोध, पञ्चपाठ)			१०	अपभ्रश
१७१	५९११	हरिवशपुराण	जिनसेनसूरि	१६वीं	२९९	# सस्कृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७४१(१)	अपभ्रशस्फुटपद्य		१७वी	१०—१२	
२	७७४१(५)	,,		,,	४२—४३	
३	६०२५	इग्यारसितपसुव्रतकथा		१८वी	४	अपभ्रशमे
४	५२०७	औदुम्बरवशपरिचय		१६०८	१	यह एक प्रकारका पञ्चनामा है जिसमें जयपुरके महापण्डितो एव राजगुरुओकी मूल सम्मतिया अकित है।
५	६८२७	औषधसग्रह आदि		१६वी	१६३	इस गुटकेमे औषधिके नुस्खे, यत्रमंत्र, शकुन आदिका सग्रह है
६	७७२२(६)	,,		१८वी	१०६	इसमें अदृष्टव्रणकी औषधि द्रष्टव्य है
७	५१२३(१)	गगास्तोत्र		,,	१	प्राचीनसस्कृतमिश्रित हिन्दी
८	४४५२(४२)	चण्डिकादेवीचित्र		,,	४६ वां	
९	४४५२(४३)	,,		,,	५० वां	
१०	४४५४	चन्द्रायणा, कवित्त		,,	१	२३ दोहे, २ कवित्त राजस्थानी एव व्रजभाषा
११	७१७७	जन्मपत्र (सचित्र गोलक)				नवग्रहोके सुन्दर चित्र अकित हैं
१२	६६६०	जयपुरराज्य एव सदाशिवभट्टसे सम्बद्ध टिप्पणिया आदि			प्रकीर्ण पत्र	कामदारी लिपिमे इतिहास
१३	७०६०	ढाईद्वीपका पटचित्र				
१४	७०५६	,,				

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	७८०६	तांत्रिकयन्त्र (भूगोलपदचित्र)		१६वीं	१	
१६	४८१	तारतम्य (गद्य)			६	श्रीकृष्ण विषयक व्रजभाषागद्यमें
१७	१५०६	द्वात्रिंशदपराधा दशमहापराधा माघमासोत्सवादि			४	संस्कृत राजस्थानी इसम वसन्त पञ्चमी के दिन भगवतप्रतिमा के शृङ्गार की विधिद्रष्टव्य है
१८	५३७६(५)	दशलाक्षणिककथा	शद्धकीर्ति	१८वीं	८७–९०	प्राकृत
१९	७७४१(७)	प्रकीर्णपद्यानि		१७वीं	८०	संस्कृत अपभ्रंश
२०	७०००	प्राकृतगाथाकोशटीका	मू शालिवाहन टी. गङ्गाधरभट्ट	१६वीं	१६	प्राकृत संस्कृत अपूर्ण
२१	७३३८	पुष्पमालाप्रकरण	सोमतिलकसूरि	१५वीं	१४	प्राकृत
२२	४४८१	वृहत्क्षत्रसमास		१७८५	१६	विषय ज्योतिष लि क दौलत सागरगणि
२३	६३६८	बलिदानपद्धति		१६	६	तन्त्रोक्त
२४	६८५५	भागवत (मराठी अनुवाद)		१६वीं		प्रकीर्ण पत्र एकादशस्कध पर्यन्त
२५	४०८३	मजलस		१८५२	३	प्राचीन हिंदीगद्य जिनसुखसूरि प्रशस्ति, लि क प गोडिदत्त स्थान पालीग्राम
२६	१४५४८(१)	मोक्षखडा	बनारसीदास	१६वीं	१–३	पंजाबी में
२७	५४८४	रामविजयमहाकाव्य	श्रीधर	१८५२	५६४	र का शक स १७१७, मराठी भाषा में, लि क बालाजी नीखाजी, रेवातटे राजराजश्वर सन्निधौ
२८	५५५०			१८वीं	६८	आरभसे लेकर दशम अध्याय तक

क्रमांङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६	७११६	,,		१८६१	३६७	र.का १६२५ शाके(१७६० वि.) अध्याय ११ से ४० तक स. ५५५० और ७११६ की प्रतियोको मिलाकर ग्रथ पूर्ण हो जाता हे
३०	५३७६(११)	रोसहकीजयमाला		१७६२	१११–११२	लि क. डालचन्द नथमलसुत लि स्था. दरियाबाद
३१	६०६२	विष्णुमहोत्सवमाला	केसरीकवि बालकृष्णभट्टसुत	१८६५	२४	
३१	५२३७	वैराग्यशतक		१७४५	१५	प्रा रा गु, लि क मनोहर इन्द्रजीत शिष्य
३३	६६७७	षट्चक्रनिरूपणखरड़ा		१६००	१	
३४	५२३६	त्रैलोक्यसाधना		१६७६	१२	लि क. धर्मकीर्ति उपाध्याय मागलोर मध्ये
३५	७१७६	ज्ञानबाजीकापटच्चित्र		१६वीं	१	

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]

१—स्तुतिस्तोत्रादि

८ ४२३४[1] अहल्यास्तोत्र

आदि– ॐ ततो दृष्ट्वा रघुश्रेष्ठ पीतकौशेयवाससम
धनुर्बाणधरं रामं लक्ष्मणेन समन्वितम् ।

अंत– ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुष स्तेयी सुरापोऽपि च
भ्राता रा [मा] मविहिंसको पि सतत भोगकबीधा (बद्धा) तुर
नित्य स्तोत्रमिद जपन रघुपतिन भक्त्या हृदिस्थ स्मरन
ध्यायन्मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ स्वाचारयुक्तो नर ॥ २८

इति श्रीअध्यात्मरामायण उमामहेश्वरसंवादे बालकाण्डे अहल्यास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

६ ४२५४ अज्ञानविमोचनस्तोत्र

आदि– ॐकारे आदिरूप सुहृतवहुविधे श्वेतपक्षे च कृष्ण
नील रक्ते कपाते तदुपरि रहिते मत्तवर्णे विवर्णे ।
प्राणापाने समाने विपरितकरण यान उद्यानपीठ
एको व्यापी शिवोऽयं इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीय ।

अन्त– ध्याता ध्याने विज्ञाने जयविजयकरे भावभावे विभावे
रामारामति रामे भ्रमनविषमय सुधचद्र अनुष्य
स्वर्गे नर्के अनर्के अखिलसलिलमय चतिचेते अचते
एको व्यापी शिवोऽय इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीय ॥१०

इति श्रीनन्दीपुराण नारायणकृत अज्ञानविमोचनस्तोत्र सपूर्ण ।

४८ ७१४८ गङ्गस्मरणाष्टक (स्तोत्रसग्रह)

पत्र– १ १४ १६ १८, १९ वां अप्राप्त

(१) श्रीनस्तव (२) गोपालमन्त्रध्यान (३) राधिकाशतनाम (४) कृष्णशरणागति स्तोत्र (५) श्यामलोकी (६) राधाष्टक (७) चतुश्लोकी (८) आन्दियस्तोत्र (९) निवदाष्टक (१०) नारायणशरणागतिचतुष्क (११) निम्बार्कशरणागतिचतुष्क (१२) आचार्य पंचकस्तोत्र (१३) पचरत्नी (१४) राधास्तव (१५) आदित्यप्रस्तव (१६) निम्बार्कस्तव सपुस्तव (१७) युगलपीठनामस्तव (१८) यमुनाष्टक (१९) गोपालस्तवराज (२०) हरिव्यासाचार्याष्टक (२१) गुरुस्मरणाष्टक (हिन्दी) ।

---

१ प्रथम संख्या क्रमाङ्क और द्वितीय संख्या ग्रन्थाङ्क सूचक है ।

१३६ ६७०१ यमुनाष्टकादिस्तोत्र, ४८ कृतिया ।

श्री वल्लभाचार्य रचित—१ यमुनाष्टक २ बालबोध ३ सिद्धातमुक्तावली. ४ सिद्धान्तरहस्य ५ नवरत्नस्तोत्र ६ अन्त करणप्रबोध. ७ विवेकधैर्याश्रय ८ कृष्णाश्रय ९ चतु श्लोकी. १० पुष्टिप्रवाहमर्यादा ११ भक्तिवर्द्धिनी १२ जलभेद १३ स्वतन्त्रपद्यानि १४ सन्यासनिर्णय १५ निरोधलक्षण. १६ सेवाफल. १७ पचश्लोकी । (विट्ठलेशरचित) १८ यमुनाष्टपदी १९ गोपीजनवल्लभाष्टक २० गोकुलाष्टक २१ मधुराष्टक (वल्लभाचार्य) २२. भागवतसारसमुच्चयेनामसहस्रम् २३ नामावलीनिविधलीला २४ सेवाफलविचार २५ पूतनामोक्ष २६ गोपालाष्टक २७ नवनीतप्रियाष्टक. २८ शरणाष्टक २९ दैन्याष्टक ३० बलदेवाष्टक ३१ गिरिवार्यष्टक ३२ गोकुलेशाष्टक. ३३ जन्मवैकल्यनिरूपणाष्टक ३४ वल्लभभावाष्टक ३५ स्वामियुगलाष्टक ३६ पचाक्षरगर्भितस्तोत्र ३७ वल्लभशरणाष्टक ३८ सप्तश्लोकी भागवत ३९ स्वामिन्यष्टक ४० स्वस्वामिनीस्तोत्र ४१ आर्या (वल्लभ) ४२ आर्या (विट्ठलेश) ४३ आर्या (रघुनाथ) ४४ शिक्षाश्लोकी ४५ दैन्याष्टक ४६ भुजगप्रयाताष्टक ४७ अष्टाक्षरमन्त्रार्थ ४८ स्फुट पद्य ।

◆

३—कर्मकाण्ड

२६ ५७३९ कुण्डकल्पद्रुम

आदि— ॐ मित्यक्षरमद्वितीयमनघं तत्सद्हृदन्त स्थित,
नत्वा सौति बिभर्ति विश्वमखिल यस्मिन् पुनर्लीयते ।
शास्त्र वीक्ष्य समुद्धराम्यथ मता श्रीमाधवोऽह सुधी-
र्निर्मथ्याङ्कसमुद्रमिष्टफलद श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥ १

अन्त — आसीत् काश्यपवशज क्षितितले श्रीमानुदीच्याग्रणी-
र्गोविन्द श्रुतिवित्तदात्मज इहाभूत ·· नारायण ।
तत्सूनुर्निगमक्रियासु निपुण कूकाभिधस्तत्सुत
शुक्लो माधवसज्ञको रचितवान् श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥
भ्रान्ता भद्रा ये गणिताटवीषु फलाशयादौ विकलाश्च तेषाम् ।
कृते सुखेनेष्टफल. शिवाग्रे 'तापीपुरे'ऽरोपि सुकल्पवृक्ष ॥
सवर्द्धितो य कृपया शिवेन फलप्रदोऽस्माविति बालकानाम् ।
शिव प्रसन्नो भवतीह येषा तेषा फलाप्तिर्नहि सशयोऽत्र ॥
पद्य सबाध यदि मत्कृतो चेद् ग्राह्य च तत् साधुजनैर्विशोध्य ।
स्वर्वाहिनीसङ्गमत कुवीथ्या कुनिम्नगायाञ्च यथैव तोयम् ॥
रविधनमितवर्षे विक्रमार्के प्रयाते (१७१२)
नगनगतिथितुल्ये (१५७७) शाककाले प्रवृत्ते ।
शरदि मनुजमाने मन्मथे चैषशुक्ले ॥
परिणतिथियुतचन्द्रे कुण्डकल्पद्रुमोऽभूत् ।

२७ ४६६० कुण्डतत्त्वप्रदीप

आदि– नत्वाऽच्युतब्रह्ममहेशमूर्तीस्त्रिषु पूर्तेषु यदङ्गमाद्यम् ।
साग मम कुण्डमनेकभेदं ब्रूतेऽखिल तन्त्रवनभद्रसूरि ॥ १

अन्त– कल्पे श्वेतवराहनाम्नि विदिते वैवस्वत सप्तम
मन्वन्तरकेऽष्टविंशतितमे प्राप्ते कलौ सम्प्रति ।
अब्दे स्व प्रथमेऽग्निनक्षितिपतिश्रीविक्रमार्कप्रभो
वर्षाणामतिसहैव पाण्डवगतातीते च काले त्विह ॥
श्रीमद्भूपतिशालिवाहनशकान पञ्चाग्नितिथ्यन्विते
श्रीमर्यं गतसौम्यदिग्दिशय वसन्तर्तौ च चैत्र शुभ ।
शकेते (गच्छति) पूर्णमासि हिमगौ सावित्र्यधिष्ण्य यतौ
कन्यास्थे हिमगावथार्वनियुत मेष बुध मीनग ॥
सिंहे देवगुरौ सिते मकरग कर्के शनौ संस्थित
कन्यायां तमसि प्रवेतुष केष सस्थ च पुण्येऽहनि ।
सुव्यक्तया करण च सनमिथुनक लग्नेऽभिजिते मुहू
र्तेसत्कुण्डविचारणार्थमुदिता दीप प्रकाश प्रयात् ॥
श्रीमत्स्तम्भसुपत्तने (स्थित) महेशाम्भाधिमाग वसन् ।
नानाशास्त्रविचारण पटमति श्रीगौडरत्नाकरात ॥
जातो वत्सकुलाधिनीतकिरण सत्कुण्डतत्त्व स्फुट
शुक्लस्थावरगनुरत्नवनभद्राख्य प्रवक्ति स्वयम् ॥
य पूर्व सहिरण्यगर्भमतुल रूप दधन वाग्विलाम
मध्य भट्टसमाख्ययाऽभवत्सौ वेदान्ततत्त्व स्वराट ।
भूय श्रीजयदेवदीक्षितमणि सम्राट सुविस्तारितु
सान्द्र यमपथ चरन विजयते श्रीमन्नृसिंहाश्रमः ॥
यत श्रीभगवान् मखबहुविध सन्तर्पित शान्ततो
यत क्षादशमीत्यवाग्निचयन सम्राजपेयादिभि ।
दृष्ट तेन गुणाम्बुधदविदुषा तत्त्वोपदेशाय चा–
नल्पेनाप्यमगाधसागरजलात पूर्णेन्दुवाकाशित ॥

२८ ४६७८ कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)

रचना– रसगगननिधिप्रमाणवर्षे गतवति विक्रमभूमिका [पा] लात'
[नि]र्ण सरापार भग्निरेन्द्रगुत महानकरोत जागरपन्नायम् ।
शम्भ निवासी ।

३३ ४१२८ कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)

आदि– कृष्णात्रिगोत्राद्भवभूबनिया समुन्नत विद्वन्नपुराणचन्द्र ।
तस्यात्मज श्रीरघुनाथ शास्त्रि कुण्डार्कमरीचिमालाम् ॥१

अन्ते– शाखा सप्तभिरावेष्ट्य वेदी पञ्चभिरेव च ।
कलश तु त्रिरावेष्ट्य स्थापयेद्देवताक्रमात् ॥ इति श्री०

४१. ४१८५ ग्रहशान्तिपद्धति

अन्त– त्रिशरगजकुमब्दे (१८५३) विक्रमातीतकाले
रवितिथिबुधवारे माधवे कृष्णपक्षे ।
रचितमिदमनूप ग्रेहशान्तिप्रकार
सुमतिभिरवलोक्य योद्धराजाह्वयेन ॥ १ ॥

इति श्रीग्रहशान्तिप्रकार समाप्तिमगात् ।

लिपिकर्ता—प० नाथूरामपुरी बचूणी[1]मध्ये ।

१०० ४६४६ मूर्तिप्रतिष्ठाविधि

अन्त– व्योमाचलाबनिनिशाकरनाम्नि' वर्षे
पक्षे सिते तपसि रमाधवाह्निवारे ।
विधौ जयपुरे च गुरोर्निदेशात्
प्रालेखि पुस्तकमिद गिरधारिशर्मा ॥ १ ॥

११३ ४६६४ रुद्रपद्धति (रुद्रार्चनमञ्जरी)

अन्त– नवद्विक्रमभूपस्य तर्कचन्द्रशते गते । (१६७७)
पञ्चराशोत्तरे वर्षे कार्तिक्या च प्रकाशके ॥
औदीच्यज्ञातिविप्रेण श्रीत्यगलात्मसूनुना ।
मालजिना कृता चेय महारुद्रस्य पद्धति ॥



४–तन्त्रमन्त्रादि

१७ ४३२६ कृष्णचरित

आदि—देव्युवाच—भगवन् सर्व भूतेश सर्वात्मन् सर्वसभव ।
देवदेव महादेव सर्वज्ञ करुणाकर ॥१॥
त्वयानुकम्पितेवाह भूयोप्यद्यानुकपय ।
त्रैलोक्यमोहनोमत्रस्त्वया मे कथित प्रभो ॥ २ ॥

---

[1] यह ग्राम बिचूण ज्ञात होता है जो जयपुर से पश्चिम उत्तरमे १६ कोस पर है ।

अंत– अथ वक्ष्यामि भार्गाख्य मुनेश्वरि तमद्भुतम ।
भुज्य नाम्ना मुने सोऽभूत पुत्र कनकसप्रभ ॥
तस्यास्यादवना भक्तिहरौ गोपालरूपिणि ॥२८२॥

इति समाहि (हृ) नी (न) तरौ श्रीकृष्णचरित समाप्त ।

२४ ६२४७ गद्योत्तमानिणय

अन्त– संदिग्धसंदेहविनाशमुद्गर चक्र म ग्रथ गुरुमेवको मुदे ।
एन सुधीश्रीगुर्जकुलधरे नागश्वर कौलवत्ता प्रपद्य द्वि ॥ १ ॥
सिंहस्थे द्युमणौ गुरौ घटगत मासे नभस्याभिध ।
मन्दे ब्रह्मतिथौ विधौ तिमिगते पक्षे शुभे मेचके ॥
शाके विक्रमभूपते परिमिते द्वयाभ्राब्जिवातक
(१७०२) विप्रप्रायनयासमाप्तिमगमद् गद्योत्तमानिणय ॥
इति श्री कालेत्युपनामकयुक्मेवक कृत गद्योत्तमा निणय ।
गुजरज्ञुम्नीनानेन कु भावरया लिपाकृतम ॥
नहुशास्त्रान्वितो ग्रथो कौलग्रथविनिणयम् ।

३२ ४८६७ नवलीलावती

आदि– कुंजे मञ्जुलमंजरीपुलकिते भृंगागनासगते ।
माद्यत्कोकिलकामिनीविलपिते मन्दान (नि) लान्दोलिते ॥
सानन्दव्र [व्र] जसुन्दरीभिरभितो निःशपमालिंगिते ।
वन्दे सान्द्रपयान्सुन्दररुचिं शृंगारिण माधवम ॥१॥
श्रीमत्सूरतनूद्भवो गुणनिधि सत्कीर्तिचन्द्राकर
ख्यातो विक्रमवत्सरा जगति यो दारिद्रयनागातक ।
नानाशास्त्रविचारवन्निचतुरश्रीवणभूमि
पतिर्द्धीर मतनुत मितन वचसा श्रीतन्त्रनीलावली ॥६॥
आलोक्य तन्त्राणि विचाय सार निष्कृष्य यत्नादिह साधकानाम्
विनोदहृतागुरुवक्त्रगम्य सिद्ध निदान प्रकटीकरोति ॥७॥
अन्त– होमाद्यप्यशक्तश्चेद्द्विगुण जपमाचरेत् ॥
इद तु पञ्चाङ्गपुरश्चरणविषयम ।
अयत्र ह्यपानीनामनुतत्त्वात ।

इति श्रीनवनीलावत्यां ततीय पटल समाप्त ।

३३ ७७११ तन्त्रस्थहृदय

आदि– श्रुतानां तन्त्राणां बहुतरयनारसनगपुरे
समायाते मोह द्विजवरगणाना च विदुषाम ।
अतस्त सम्पश्य हरिहरविरिञ्च्यादि चरणे
स्तुवन् भानानाथो रचयति हि तन्त्रस्थहृदयम ॥ ४ ॥

अन्त – सुग्वजनक साधूना बालमुकुन्ददीक्षित स्वार्थम् ।
व्यलिखत् परार्थमेतत् हृदय यत् सर्वतन्त्राणाम् ॥ १
शिष्यकल्पतरुकल्पितकल्प वेदबोधितविधिप्रभुमल्पम् ।
शुद्धमार्गपरम व्यलिखित् श्रीकृष्णदीक्षितसुत स्त्रपरार्थम् ॥ २

४४. ७७०८ परशुरामकल्पसूत्र

अन्त– इति श्रीदुष्टक्षत्रियकुलकालान्तकरेणुकागर्भसम्भूतमहादेवप्रधानशिष्यश्रीमन्नारायणावतारमहामहोपाध्यायश्रीपरशुरामविरचित कल्पसूत्र समाप्तम् ।

७३ ४२९६ महाविद्यादशश्लोकीविवरण

आदि– अपक्षसाध्यवद्वृत्ति विपक्षान्वयि यत्र तु ॥
साध्यवद्वृत्तितायुक्त साद्‌न्तने साध्ययवर्जिते ॥१॥

अन्त– तदर्थमाकाशान्येति । तथापि द्रव्यत्त्वेन व्याघातस्तदवस्य एव तदर्थमनित्यनित्यावृत्तीति तथापि न विवक्षितसिद्धिरिति ।

७९ ४११८ रामपद्धति

आदि– श्रीगणेशाय नम । ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वर ।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नम ॥ १ ॥
अन्त– सर्प दृष्ट्वा यथा लोके दुर्दुरा भयकपिता ।
ऊर्ध्वपुण्ड्र कृत तद्वत्कम्पन्ते यमकिंकरा ॥ ५९ ॥
इति श्रीरामानुजकृता श्रीरामपद्धतिर्वेदोक्ता सम्पूर्णा ।
लिपिकर्ता—विप्रजयराम ।

८३ ६७४२ रामपूजापद्धति

रचना काल— इन्दुवाणरसोर्वीभिर्वत्सरे याति वैक्रमे ॥ (१६५१)
कार्तिकमासिशुक्लाया द्वादश्या भोमवासरे ।
काश्या कृताऽनवद्येय रामोपाध्यायसूरिणा ॥
राम एवार्पिता रामपूजापद्धतिरीदृशी ॥ १ ॥

९३ ५२३६ वसुधारा

आदि– ससारद्वयदैन्यस्य प्रतिहन्त्रिदिवावहे ।
वसुधारे सुधाधारे नमस्तुभ्य कृपामए [यि] ॥

९४ ५२२५ वसुधारानाम धारणीकल्प

आदि– ससारद्वयदैन [न्य] स्य प्रतिहन्त्रिदिनवहे ।
वसुधारे सुधाधारे नम तुभ्या कृपामए (यि) ॥१॥

अन्त– वसुधारा नामधारणी कल्पमित्यपि धारय इदमेवोचद्भगवान्नात्मना आयुष्मान् नन्दस्ते उभिक्षवस्ते च बोधिसत्त्वा सालसवति परिषत् सदेवमानुषासुरगधर्वाश्च लोको भगवतोभाषितमस्यनदन्निति ॥ इति श्रीवसुधारानामधारणीसमाप्ता ।

११३ ४४६६ शिवपञ्चाक्षरी न्यासविधि

आदि- ऋषय ऊचुः-कथं पञ्चाक्षरी विद्या प्रभावो वा कथं वद ।
कथं क्रमो महाभाग श्रोतुं कौतूहलं हि तं (?) ॥
सूत०॥ पुरा देवेन रुद्रेण शिवेन परमेष्ठिना ।
पार्वत्या कथितं पूर्वं प्रवदामि समासतः ॥

अन्त- गहे जपं समं विद्याद् गोष्ठे शतगुणं भवेत् ।
नद्यां सहस्रगुणितं अनन्तं शिवसन्निधौ ॥
इति शिवपञ्चाक्षरन्यासविधि समाप्त ।

११६ ४२०५ सिंहसिद्धान्तसिंधु

आदि- यस्याङ्घ्रिद्वयपूजनेन निखिला सिद्धीर्लभन्ते नरा
वृद्धीं प्राप्य वसन्ति वश्मसु परास्तेषां समा सपद ॥
भक्तध्वान्तनितान्तमोहदलनं दक्षं विपश्चं वरं
विघ्नानां प्रणमाम्यनारतमहं तं श्रीगणाधीश्वरम् ॥ १

इति गोस्वामिश्रीजगन्निवासात्मजगोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट
विरचिते सिंहसिद्धान्तसिंधौ द्विनवतितमस्तरङ्ग ।

अन्त- चन्द्रवह्नितुरगक्षमिते वत्सरे सहसि शुक्लपक्षतौ ॥
शीतरश्मिसितवासरे शुभे ग्रन्थ एष परिपूर्णतामगात् ॥ २

संवत् १८२५ वर्षे राजाधिराजश्रीमज्जयसिंहतनुजश्रीमन्माधवसिंहोपन्हरेण स्वात्मा वलोकनाथ लिखापितं पुस्तकमिदं श्रीमज्जयसिंहनिर्मित जयनगराख्य शुभपत्तने लखाय लखक ग्रथागाम् श्री श्री ॥

५—धर्मशास्त्र

१५ ४११३ आशौचदशक सभाष्य

आदि- मातुर्गर्भविपत्स्ववद्य त्रिदिनं मासत्रयतो यथा
मासान् त्रिषु सूतिकावधिरतः स्नानं पितुः सर्वदा ।
ज्ञातीनां पतनादिजातमरणं पित्रादनान् सन्
नाम्न प्राक तदपति सूतकवनान्भ्रातुर्न्नान् परम ॥ १

भाष्यादौ- विज्ञानेश्वरविरचितमुनिजनवाक्यमिताक्षरामध्यात ।
आशौचदशकवृत्ति कुर्वन्ति हरिहरहरिहरौ नत्वा ॥ २

अन्त- शद्रो धर्म कलिधर्म इति व्यासवाक्यात । शूद्रधर्मसंस्काराणामादृत । धर्म शब्दो मंगलवाचक इति । इत्याशौचदशकभाष्य हरिहरविरचित सम्पूर्णम ।'

२४ ४३५१ कालनिर्णयसिद्धात सटीक

आदि– प्रणम्यैकरद देव, शारदा गुरुमेव च ।
कालनिर्णयसिद्धान्त व्याकुर्वे विशदोक्तित ॥ १

अन्त– एतादृशे समये भुजनगरे द्विवेदिअग्निहोत्रिश्रीजयरामजेन रघुरामेण ग्रन्थस्येयं व्याख्या बुद्ध्या मनीषया कृतेति ।

इति द्विवेद्यग्निहोत्रिश्रीजयरामसुतरघुरामविरचितो निर्णयसिद्धात सटीक समाप्तिमगमत् ।

२५ ६२४६ कृत्यरत्नावलि

रचनाकाल– भूतशून्य ऋषिचन्द्र मिते (१७०५ वि०) माघकृष्ण गहरौ रविवारे ।
ग्रन्थपूर्तिमकरोत् किल राम श्रीरमापतिसमर्पणबुद्ध्या ॥

प्रति पर पुस्तकके स्वामीका पश्चाल्लेख इस प्रकार है—

"श्रीवीसलनगरवास्तव्यनागरज्ञातीयत्रिपाठीकालात्मजप्रह्लादसुतहरनाथतदात्मज भा. आ नत्सूनुत्रि० त्रिविक्रम तदात्मज त्रि० मोहनसूनु त्रि० प्राणनाथात्मजबालकृष्णस्येद पुस्तकम् । श्रावण शुक्लैकादश्याम् गुरौ सवत् १७५६ ।"

३२. ४१२६ तिथिनिर्णय

आदि– सा द्विविधा शुक्ला कृष्णा च । तत्र एकैककलावृद्ध्यवच्छिन्न काल शुक्लतिथि तत्क्षयावच्छिन्न काल कृष्णातिथि ।

अन्त– योऽनन्तदेवकृतमथनसन्निबन्ध–
क्षीराब्धिजोथ कमलापतिना धृतो य ॥
नित्यं निजे हृदि सता प्रमुदे तु तस्य
तिथ्याख्यदीधितिरिय स्मृतिकौस्तुभस्य ॥

इति तिथिनिर्णय समाप्त ।

४० ४६८४ दानवाक्यसमुच्चय

आदि– पुराणश्रुतिवाक्यानि परामृश्य बुधै सह ।
पुरुषोत्तमेन क्रियते दानवाक्यसमुच्चय ॥

४३ ४६०५ धानतपद्धति

आदि– धानत इति भविष्योक्ते । जात कसब(व)धार्थायेत्यस्य परभागोऽत्र न सगृहीत ।
अन्त– ऋक्षादिभिर्भाव्यमिति तच्चेष्णादिकमनुकर्तव्यमित्यर्थ ॥ ४३ ॥ इति समाप्तम ।

४६ ४१८४ प्रायश्चित्तमयूख

आदि– नमामि भास्वत्पदपकजतच्छ्रीनीलकठोऽहमथ प्रकुर्वे ।
स्मृत्वोपदेशान् गुरुशकरस्य विनिर्णय पापविशुद्धिहेतुम् ॥ १

अन्त- निशायां वा दिवा वापि यदज्ञानकृतं भवेत ।
त्रिकालसंध्याकरणात्तत्सर्वं प्रविणश्यति ।।

४ ४४४६ मदनपारिजात

आदि- प्रवाराश्रिप्रम्भद्युतिनिचयपर्यायवपुष
नमो विघ्नश्रेणीविघटनवरिष्ठाय महसे ।
जगत्प्रादुर्भावस्थितिनियनिरायासरचना-
विनोदासक्ताय प्रणतिफलसिद्धिप्रतिभुवे ।। १
साऽयं कौशिकवंशभूषणमणिश्रीभट्टविश्वेश्वरो ।
वन्स्मात्तमत नयेच सय(प)दे वाक्यं कृतौ बद्धत ।। २

अन्त- ' मतिर्येषां शास्त्रे प्रकृतिरमणीया व्यवहृति'
परा शीन श्लाघ्य जगति ऋजवस्ते कतिपय ।
चिरं चित्ते तेषां मुकुरतलभूते स्थितिमिया-
दियं व्यासारण्यप्रवरमुनिनिष्पन्दस्य भक्ति रिति ।। '

इति पण्डितपारिजातकहरिमल्लत्यादिविरुदराजीविराजमानस्य श्रीमदनपालस्य निबन्ध मदनपारिजताभिधाने नवमः स्तवकः समाप्तः ।

१६ ४४४४ महाव्रतभाष्य

आदि- मधुसूदनं गुरुं च स्वमातं त्रयीविदम् ।
कृष्णं विनायकं रामं हरिरामं हलायुधम् ।। १
सप्त चैतान् गुरून्नत्वा तथा च पत्पामव ।
भाष्यं महाव्रतस्याहं कुर्वे गोविन्दसनक ।। २

अन्त- चातुर्विशकान पुच्छानीत्पुच्छमस्य चातुर्विशकानीत्यादिनिरम्यास्तेष्यायपरि समाप्त्यर्थ । इति शाखायनसूत्रभाष्य द्वादशोऽध्याय ।।

६२ ४५१६ मानवधर्मशास्त्रसंहिता

आदि- स्वयम्भुवे नमस्कृत्य ब्रह्मणेऽमिततेजसे ।
मनुप्रणीतान विविधान धर्मान व यामि शाश्वतान् ।। १

अन्त- इत्येतन्मानवं शास्त्रं भृगुप्रोक्तं पठन द्विज ।
भवत्याचारवान्नित्यं यथेष्टां प्राप्नुयाद्गतिम ।। १२६

इति श्रीमानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां द्वादशोऽध्याय ।

७६ ४३५ रत्नसंग्रह

आदि- नत्वा रामं घनं श्यामं शारदां च महेश्वरम ।
बालबोधाय गोविंद कुरुते रत्नसंग्रहम ।। १

अन्त– धर्माधिकारिणामन्य निर्ममे तनुज कृती ।
निवधान् वीक्ष्य निर्व[त्व]न्नाद् गोविंदो रत्नसंग्रहम् ॥

इति श्रीधर्माधिकारिपण्डितरामसुतश्रीमद्गोविंदपंडितकृतो ज्योतिषरत्नसंग्रह समाप्त. ।

८८ ४५३३ शातशास्त्र

आदि– स्वयम्भुवे नमस्कृत्य सृष्टिसंहारकारिणे ।
चातुर्वर्ण्यहितार्थाय शंख. शास्त्रमकल्पयत् ॥ १

अन्त– शंखप्रोक्तमिद शास्त्रं योऽधीते द्विजपुङ्गव. ।
सर्वपापविनिर्मुक्त स्वर्गलोके महीयते ॥

इति शाखे धर्मशास्त्रेऽष्टादशोऽध्याय. ।

८६ ४४४७ शांखायनसूत्र भाष्य

आदि– ॐ श्रीऋग्वेदमूर्तये नम । ओम् । पुरुषस्य वुद्धिपूर्वकारिणोऽभ्युदयनि.श्रेयसमुपादित्सित तच्च विशिष्टक्रियासाध्यं, सा च वैदिकी क्रिया नान्या, या काचित् कुत एतत् इत्यादि ।

अन्त– शाखायनस्य सूत्रस्य मम शिष्यहितेच्छया ।
वरदत्तसुतो भाष्यमानर्तीयोऽकरोन्नवम् ॥

इति शाखायनसूत्रभाष्येऽष्टमोध्याय समाप्त ।



६–पुराणकथामाहात्म्यादि

७७ ४२३० भागवत

१. भागवत द्वादशस्कन्ध के १२वें व १३वें अध्याय पृ. १ से ३८ तक ।
२ नारायणकवच पृ० ३९ से ५६ तक
३ सप्तश्लोकी गीता पृ० ५७ से ६० तक
४. चतुश्श्लोकी गीता पृ० ६१ से ६३ „
५. एकश्लोकीरामायण पृ० ६४ से ६५ „
६. भारतसावित्री पृ० ६५ से ६७ „
७ रामरक्षाकवच पृ० ६८ से ८१ „
८. रामाष्टोत्तरनामस्तोत्र पृ० ८२ से ९९ „
(पद्मपुराणान्तर्ग)
९ नारदगीता पृ० १०० से १०१ तक, और
१०. इन्द्राक्षीस्तोत्र पृ० १०२ से ११३ तक हैं ।

६७ ६४८५ भागवतक्रमसन्दर्भटीका

अन्त– इति कलियुगपावनस्वभजनविभजनप्रयोजनावतारश्रीश्रीभगवच्चैतन्यदेवचरणानुचरणाचार विश्ववैष्णवराजसभाजनभाजनरूपसनातनानुशासनभारतीगर्भे श्रीभागवतसन्दर्भे क्रमसन्दर्भो नाम सप्तम सन्दर्भ समाप्तश्चायं भागवतसन्दर्भ ।

१३३ ६४८८ भागवतसन्दर्भे तत्त्वसन्दर्भ प्रथम

आदि– जयता मथुराभूमौ श्रीलरूपसनातनौ ।
यौ विलेखयतस्तत्त्व ज्ञापिकौ पुस्तिकामिमाम ॥ ३
कोऽपि तद्बान्धवो भट्टो दक्षिणद्विजवंशज ।
विविच्याऽथ्यलिखद्ग्रन्थं लिखिताद्वृद्धवैष्णव ॥ ४
तस्याद्य ग्रन्थमालेख्य क्रान्तव्युत्क्रान्तखण्डितम् ।
पर्यालोच्याथपर्याय कृत्वा लिखति जीवक ॥ ५

७–वेदान्त

२ ४५६४ अन्तःकरणबोध सविवृतिक

अन्त– पितपादाब्जपरागधनिना मया श्रीवल्लभेन रचिता वि(वि)वृति पूर्णतामगात ।

३ ४२४४ अनुस्मृति

आदि– शतानीक उवाच–
ॐ महातेजा महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।
अक्षीणकर्मबंधस्तु पुरुषो द्विजसत्तम ॥ १
अन्त– ननु ध्यायति यो देहो कथयामि च तत्त्वतम् ।
सर्वबन्धविनिर्मुक्त परंपदमवाप्नुयात ॥ ७३
इति श्रीमहाभारते विष्णुधर्मोत्तरे अनुस्मृति सम्पूर्णा ।

२३ ४१४१ आत्मबोध सटीक

आदि– टीका– शतमखपूजितपादं शतपथमनसाप्यगोचराकारम् ।
विकसज्जलरुहनेत्र(त्र)उमाछायाङ्कमाश्रयं शम्भुम ॥ १
मूल– तपोभि[ ]क्षीण[प]मानां[णा]ना शान्ताना वीतरागिणाम ।
मुमुक्षूणामपेक्ष्योयमात्मबोधो विधीयते ॥ १
अन्त– दिग्देशकालाद्यनपेक्ष्यसर्वग शीतादिहृन्नित्यसुख निरञ्जनम् ॥
य स्वात्मतीर्थ भजते विनि क्रिय स सर्ववित् सर्वगतोऽमृतो भवेत ॥ ६७

टीका– शीतादिद्वन्द्वदु खानि हरतीति शीतादिहृत् नित्यमुख मोक्षानन्दप्रापकत्वाद् । इतरतीर्थसु तद्विपरीत द्(द्र)ष्टव्यम् तस्मादात्मतीर्थे स्नातस्य न किञ्चिदवशिष्यत इति भाव ।

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यगोविन्दभगवत्पूज्यपादश्रीमच्छकराचार्य-
विरचितात्मबोधप्रकरण समाप्तम् ।

५८. ६०६१ नाटकद्वीपाख्याव्याख्या

श्रीगणेशाय नम ॥

नत्वा श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनीश्वरौ ।
अर्थो नाटकद्वीपस्य मया सक्षिप्य वक्ष्यते ॥ १

चिकीर्षितस्य ग्रन्थस्य नि प्रयूहपरिपूर्णायाभिमतदेवतातत्त्वानुस्मरणलक्षण मङ्गलमाचरन् मन्दाधिकारिणामनायासेन नि प्रपञ्चब्रह्मात्मतत्त्वप्रतिपत्तयेऽध्यारोपापवादाभ्या नि प्रपञ्च प्रपञ्च्यते शिष्याणा बोधसिद्ध्यर्थं तत्त्वज्ञैकककल्पित क्रम इति न्यायमनुसृत्यात्मन्यध्यारोप ताव-दाह परमात्मेति—

परमात्माद्वयानन्दपूर्ण पूर्व स्वमायया ।
स्वयमेव जगद्भूत्वा प्राविशज्जीवरूपत ॥ १
देवाद्युत्तमदेहेषु प्रविष्टो देवताऽभवत् ।
मर्त्याद्यधमदेहेषु स्थितो भजति देवताम् ॥ २

अन्त– न तत्र मानापेक्षास्ति स्वप्रकाशस्वरूपत ।
तादृग्व्युत्पत्त्यपेक्षाचेच्छ्रुति पठ गुरोर्मुखात् ॥ २५
यदि सर्वग्रहत्यागो शक्यस्तर्हि धिय व्रज ।
शरण तदधीनोऽन्तर्बहिर्वैषोनुभूयताम् ॥ २६
इति श्रीनाटकद्वीपाख्या नाम दशम ॥ १०

यद्यप्युक्तन्यायेन स्वात्मा परिशिष्यते तथापि तदापरोक्ष्या (य) यत्किञ्चित् प्रमाणम-पेक्षितमित्यत आह न तत्रेति तत्र हेतुमाह स्वप्रकाशेति नन्वात्मा प्रकाशतया स्वस्फूर्तौ मान नापेक्ष्यत इति व्युत्पत्तिसिद्धये मानमपेक्षितमित्याशङ्क्य श्रुतिरेवात्र प्रमाणमित्याह तादृ-गिति ॥२५॥ एवमुत्तमाधिकारिण आत्मानुभवोपायमभिधाय मन्दाधिकारिणस्त दर्शयति यदि सर्वेति बुद्धिशरणत्वे किं फलमित्यत आह तदधीन इति बुद्ध्या यद्यत्परिकल्पयते बाह्यम-भ्यन्तर वा तस्य तस्य साक्षित्वेन तदाधीनपरमात्मा तथैवानुभूयतामित्यर्थ ॥२६॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्य्यकिङ्करेण श्रीराम-कृष्णाख्यविदुषा विरचिता नाटकद्वीपाख्या नाम दशम ॥१०॥

११–ज्योतिष

५ ६४४२ अद्भुतसागर

इति श्रीपाक्समयाद्भुतावर्त ॥ इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शङ्कशङ्करश्रीमद्बल्लाल सेनदेवविरचित अद्भुतसागर समाप्त ।

पुस्तकके अन्तमें इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न मानसिंहादि राजाओंका वर्णन है ।

लिपिकर्ता—पुरोहित सदाराम, ठाकुर भरू सिंघजीपठनार्थम ।

लिपिस्थान—शिवपुरी ग्राम । संवत १७८७ माघ शुक्ला १ बुधवार ।

६ ४६३० • अद्भुतसागरी प्रथम खण्ड

पूरा ग्रंथकी पत्र संख्या ऊपर २६० लिखी है किन्तु यह प्रति अपूर्ण है । प्रतिमें ऊपर 'पुस्तकमिदं शुक्लसन्तासुखजीवस्य' ऐसा लेख है ।

७ ४३१४ (अयनांशादिकरणविधि)

इस गुटकेमें उपर्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त शीघ्रबोध करणकुतूहल शनिचारफल वध्या भद, सन्तानार्थ औषधविधिके दोहे व यन्त्र बीच बीचमें दिये हुए हैं । दोहे उपयोगी हैं । २४ पृष्ठ तक अयनांशादिकरणविधि है । फिर १ पृष्ठसे ७८ पृष्ठ तक शीघ्रबोध है । इसके बाद प्रकीर्ण है ।

१४ ७०६१ आकाशपुरुषचित्र

यह सुषुम्णाचक्र है जिसमें पुरुषाकारमें सुषुम्णा नाडीमें नक्षत्रमालाकी स्थापना करके बताया गया है । चित्र अध्यतन है ।

५० ४१०४ ग्रहणपद्धति

आदि– श्रीमद्दोवद्ध नगर नत्वा गौरमतानगाम ।
स्वल्पानल्पाययुता कुर्वे ग्रहणपद्धतिम् ॥ १

अन्त– नगधृतिविक्रमवर्षे काम्यकवनवासिनानन्दरामेण ।
रचितापरागपद्धतिरियमतिहृद्या ग्रहनानाम ॥ २४
इति श्रीमिश्रनन्दरामविरचिता ग्रहणपद्धति समाप्ता ।
रचनाकाल—१८२० संवत । स्थान—काम्यकवन ।

६१ ४ ६२ गणितनाममाला

आदि– गणितस्य नाममाला वक्ष्ये गुरुप्रसादतः ।
बालानां सम्बोधाय हरिदत्तो द्विजाग्रणी ॥ १

अन्त– कृष्णलालाविप्रेण हरिदत्तेन धीमता ।
नाममाला कृता श्रेष्ठा देवगुर्वोः प्रसादतः ॥ ०

श्रीश्रीपतिसुतेनैषा बालाना वृद्धिवृद्धये ।
गणितस्य नाममाला या रचिता शास्त्रसग्रहे ।। ३१

इति श्रीज्योतिषनाममालेयं सपूर्णा ।

६३ ४६७१ (१) गणितलीलावती आदि

लिपिस्थान—१६७० शाके विभवनामवत्सरे वसन्ततौं वैशाखमासे शुक्लपक्षे नवम्यामिन्दुवासरे सर्प्पपिक्षेत्रमध्ये लिखितम् ।

ग्रथके प्रारम्भमे मराठी भाषामे गजेन्द्रमोक्ष आदि स्तोत्र हैं ।

७८. ४६७२ चमत्कारचिन्तामणि

अन्त– दर्भावे पुरे लाटहासे पुराणा गणाच्छ्रीहरे स्थापित स्थानपाल द्विजोऽचीकरात्सुन्दराल द्विजन्मा नृपाणामपि नाम चिन्तामणीय ।

लिखित देराश्री लीलाधर पुरुषोत्तमसुत कुकनपुरमध्ये ।

६६ ४२८६ ज्योतिषरत्नमाला

आदि– प्रभवविरतिमध्यज्ञानवन्ध्या नितान्त
विदितपरमतत्वा यत्र ते योगिनोऽपि ।
तमहमिहनिमित्त विश्वजन्मात्ययाना–
मनुमितमभिवन्दे भग्रहे कालमीशम् ।। १
विलोक्यगर्गादिमुनिप्रणीत
वराहलल्लादिप्रपचशास्त्रम् ।
दैवज्ञकण्ठाभरणार्थमेषा–
विरच्यते ज्योतिषरत्नमाला ।। २

अन्त– सुवृत्तया श्रीपतिदृब्धयानया
कठस्थितज्योतिषरत्नमालया ।
अलक्षणोप्यर्थपरिच्युतोप्यल
सभासु भूम्ना गणको विराजते ।। १३

इति श्रीश्रीपतिविरचिताया ज्योतिषरत्नमालाया प्रतिष्ठाप्रकरण विंशतितमम् ।

६७ ४४०५ ज्योतिषरत्नमाला

अन्त– श्रामदपडे चन्द्रा उत्तरउ श्रीदुर्गाजीराज्ये रामपुरानगरे श्रीकाशद्रावालगच्छे भट्टारक श्रीगोइदपत्पट्टे आचार्य श्रीकान्हाउपाध्यायशिवदासलिखित स्वशिष्यपरपरावाचनार्थ तथा स्वकार्यार्थं तथा च परोपकारार्थं उन्छकेन लिखिता ।

१०८. ४४०७ ज्योतिषसार सग्रह

आदि– लग्न लग्नपतिर्बलान्वितवपु केन्द्रत्रिकोणे शिवे
पृच्छाजन्मविवाहयानतिलके कुर्यान्नृपति ध्रुवम् ।

सच्छाल विभवान्वित गतरुज मुक्तातपत्रान्वितम्
जातो निम्नकुले विभूतिपुरुष नासन्ति गगादय ॥
अन्त- सत्वेन जायन सिद्धि रजसिद्धिगुण फलम ।
तामसे फलता नास्ति शिवस्य वदन तथा ॥

१०६ ४४१० ज्योतिषसारसग्रह

आदि- यदा मेष गुरुरुदय करोति तदा दुर्भिक्षमनावृष्टि ।
अन्त- देवता मार्गे पुरे ग्रामे मत्र श्रौषध देवता ।
स्वामिनो भूमिकार्येषु नवस्थाने निरीक्षयेत ॥

११८ ६३६६ जन्मपत्रीप्रकार

यह ग्रथ मारवाड़म रचित है क्योंकि चरखड जोधपुर, जालार साजत आदि स्थानो के दिय गय हैं।

१२० ५२१५ जन्मपत्रीपद्धति

यह प्रति राजस्थानम ही लिखी गई है। कारण यह है कि 'राजस्थानके प्राय सभी नगरोके अक्षाश इसम विद्यमान है।

१७४ ६४२० ताजिकसारवृत्ति

वर्षे नन्दहयाङ्कभूपरिमित मास तथा फाल्गुन
पक्षे शुभ्रतर तिथौ दशमित श्रीमरखातपुरे
श्रीमति विष्णुदासनृपतौ वरीभवन्त हरौ
वृत्ति [त्ति] श्रीगम्हयरत्नकृपया सामन्तनामाऽकरोत् ।

१६१ ५८३० नरपतिजयचर्या

पूर्णामिश्रशभौम शिवपतिवृषभ माधव शुक्लपक्ष
सत्यानन्दाप्तचन्द्र गमयति तदा मामवनावतम ।
देशऽनर्काक्षिमध्य विदितखरपुटारामभित्रो निलय
पाठाय पाण्योाय कलयति सदा श्राजयपार्सिह ।

१६६ ४८५१ नवरोजप्रकाश

आदि- हैय्यतजीजमिजस्तिरोमकयवनादिगदितशास्त्राणाम ।
मतमवलोक्यामय वक्ष्य विचित्य रम्यम ॥

अन्त- श्रीगौरीपतिनगरे यवनशाहमाहम्मानश सुक्ष्मम ।
शिवलालपाठकेन प्रकाशित शिष्यजनतुष्ट्य ॥
रन्ध्रोश्येन्दु भूताब्दे माघशुक्लनिवासरे ।
सम्पतिरामतोषाय मगाराम समालिखत ॥

२०१ ७०८८ नष्टोद्दिष्टविधि

अन्त- विसमजसविरागधवलिय महिया मरनिवहनमिपय
पयजुयलम तिहुयणगिरिवर कुलहर मणहर गुणनिलय जिणजयहि ।

२०६ ७०१० नारचन्द्र (द्वितीयप्रकरण)

लिपिस्थान—मारमामध्ये महोपाध्यायगुणसुन्दरशिष्यकर्मचन्द्रशिष्य चिर० दीना-पठनहेतवे ।

२०७. ४३५२ नारचद्रयत्रकोद्धार सटिप्पण

आदि– अर्हंत जिन श्रीन नत्वा नारचन्द्रेण धीमता ।
मारमुद्धियते किंचित् ज्योतिषक्षीरनीरधे ॥ १

अन्त– इति नारचन्द्रटिप्पनके श्रीमागरचन्द्रसूरिकृते द्वितीय प्रकीर्णक समाप्तम् ।

इति श्रीनारचन्द्रयोभयप्रकीर्णके शतकसार्द्धशत १५० यत्रकाणि समाप्तानि ।

२२८. ४१८३ प्रश्नमार्ग

आदि– श्री गुरुभ्यो नम । मध्याटव्यविप दुग्धसिन्धुकन्याघव श्रिया ।
ध्यायामि साध्वह बुद्धे शुद्धर्थं वृद्धर्थं च सिद्धये ॥ १

अन्त– कुम्भपूर्तितिथिभानुचन्द्रमोवृद्धिरिष्फरिपुचन्द्रमदहक् ।
धान्यवृद्धिशुभदत्रवृत्तिका शत्रनक्षत्रणिकायराशय ॥ ३६
विदुमल्लिपिविसर्गवीचिकाश्रृ गवद्विपदहीनदूषण ।
हस्तवेगजमबुद्धिपूर्वक क्षन्तुमर्हति मर्मोऽस्य सज्जन ॥

श्रीसाबशिवार्पणमस्तु । इति प्रश्नमार्गस्समाप्तिमगमत् ।

२५५ ४४५२ पञ्चपक्षी प्रश्न

आदि– अभिवद्य महादेव सर्वशास्त्रविशारदम् ।
भविष्यदर्थबोधाय पप्रच्छुर्मुनयो मुदा ॥ १

अन्त– भोज्ये च मासे गमने च पक्षे राज्ये दिनानित्ययनच स्वप्ने ।
मृत्येषु वर्षं सुखता विचार्या कालप्रमाणे मुनयो वदन्ति ॥

ग्रन्थाङ्क ५५५६ 'पञ्चपक्षी' मे यह श्लोक निम्नप्रकार है—

भुक्ते तु माम गमने तु पक्ष राज्ये क्षणानीत्ययनच स्वप्ने ।
मृतेषु वर्षं शकुनाख्यया च कालप्रमाण मुनयो वदन्ति ॥

२६८ ४८६३ पद्धतिप्रकाश

आदि– नन्देन्दुवर्षेण मया कृतोऽय ग्रन्थो रवे पादयुगप्रभावात् ।
शाके नगाम्भोधिशरेन्दु (१५४७) तुल्ये प्राचा प्रबधान्यभिभाव्य सम्यक् ॥१०४

२८२. ४६७८ पैतामही सारिणी

अन्त– आसीत्पार्थपुरे वरे द्विजन(व)र श्रीगोपिराजाभिध ।
सिद्धान्ताभिनवोद्यमैककुशलो दैवज्ञचूडामणि ॥
तज्ज श्रीपतिरग्रणी कृतिविदो सिद्धान्तपारगम ।
तत्सूनुर्मधुसूदनाख्यगणक पैतामही निर्ममे ॥ ––

२८६ ४२७७ बालावबोध

अन्त– अद्ध प्रहरजं त्याज्य चतुर्थ सप्तमस्तथा
द्वितीय पचमा षष्ट पष्ठा रविपूर्वक ॥

आदि– उन्याचलपर्यन्तामस्ताचलमहीमिमां ।
विख्याता बालबोधाख्य मुञ्जादित्या ॥
पूर्वमागरपर्यन्ता पश्चिमोदधिसयुता
बालमाग्रमत नित्य समां तु दिनेश्वर ॥

इति श्री मजादित्यविरचित ज्योतिशास्त्र बालावबाधाख्यम ।

२६४ ७११२ बालबोध

अन्त– इति श्रीगोविन्दपदारविन्दमकरन्दवदाङ्गपाठन्धिणहिमारनगराधिवासश्रीसुन्दर नमहृदयानन्द–श्रीहरिकृष्णकृते बालबोधमकरन्दपद्धतिमणी ग्रहाणामुदयाधिकार पचम ।

२६६ ६२१२ बीजवासनाभाष्य

अन्त– इति श्रीमन्मार्तण्डात्मजप्रज्ञद्रपगोकुलग्रामनिवासी श्रीमत्प्रचण्डपाण्डित्य मण्डितोद्दण्डपण्डितमण्डलीमण्डनबलभद्रभट्टात्मजमाधवभट्टसुतव्रजनाथभट्टसूनुना गणकमण्डली मण्डनेन ज्योतिर्विन्नितातत्तोपहेतव विरचित बीजवासनाभाष्य सप(क)नम देहापनान्नवस श्रीमत्प्रचण्डप्रतापमावभोमरामसिंहराज्यऽम्बावत्यां अम्बिकश्वरपुर्यामवाभनप १६०६ मित नव चत्रशुक्लपश्र गुरौ सप्तम्या ममाप्तिमगमत् । सवत १७७६ शाके १६४१ प्रथम आश्विनकृष्णा १२ सोम लि० इन्द्रमणिना ।

२६८ ४१८६ बृहज्जातक

आदि– मूर्तित्वे परिकल्पित शशभता वर्त्मा पुनर्जन्मना–
मात्मेत्यात्मविदा क्रतुश्च यजना(ता)भर्ता मह ज्योतिषाम ।
नाकाना प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानकधा य श्रुतौ ।
वाच न स्वनेकरिरणास्त्रलोकयदीपो रवि ॥ १

अन्त– दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेद ।
शास्त्रमुपसग्रहा नमोऽस्तु पूर्वप्रणतम्य ॥ १०

इति वराहमिहिरकृतौ बृहज्जातके उपसहाराख्य पड्विंशोध्याय ।

३३६ ४२८४ मयूरचित्र

आदि– अथ मयरचित्र लिख्यत ।
यस्योदयास्तसमय सुरमुकुटनिघृष्टचरणकमलोपि ।
कुरुतेऽञ्जलिं त्रिनेत्र स जयति धाम्ना निधि सूर्य ॥

३४ ४२८३ मासमारिणी

आदि– सूर्ये स्पष्टग्रवधि ५२ ।

४ ८ ८ १
अन्त– वेदाष्टगजभूराज्याद्गता विक्रमवत्सरा ।

शालिवाहन
मार्गशीर्षे सिते पक्षे नष्टेन्दुचन्द्रवासरे ।
मानाना सारिणीश्रेष्ठ बालाना शीघ्रवृद्धिदम् ॥ २

४२२. ५१६५   रमलनवरत्न

नगरसवसुचन्द्रे (१८६७) वत्सरे विक्रमार्के ।
शिववाटिकाया अवन्त्या सीतारामपुत्रेण अनूपदेव्या· सुतेन परमसुखमनाख्येन रचितमिदम् ।

३३२ ४७६६   रमलसार

(लक्ष्मीनृसिंहभट्टसुनगरे कुलवास्तव्यश्रीपतिविरचित ।)

आदि– य सिद्धनदपुर्या स मे हरेत्युग्नामत
गुलाबरायो धर्मात्मा यशस्वी तत्तनूद्भव ॥ ३
गुरोर्गोविन्दरायस्य क्षात्रवशशिरोमणे
प्रसादात् कुरुते रम्लसार श्रीपतिना मया ॥ ४

४७० ४३५५   वसन्तराजशाकुन

आदि– विरचिनारायणशकरेभ्य शचीपतिस्कदविनायकेभ्य ।
लक्ष्मीभवानीपतिदेवताभ्य सदा नवभ्योऽपि नमो ग्रहेभ्य ॥ १

अन्त– इति श्रीवसन्तराजशाकुने सदागमार्यशोभने ।
समस्तसत्यकौतुके कृत प्रभावकीर्तनम् ॥ विशतितमो नय ॥ २०

इति भट्टवसन्तराजविरचित दारिद्र्यविद्रावण नाम सर्वशाकुन समाप्तम् ।

६२३ ४४२७   क्षेत्रसमासावचूरि

आदि– श्रीवीरजिनेन्द्र सर्वकाततमोरविम् ।
नत्वा नव्यो लघुक्षेत्रसमासोहयवचूर्यते ॥
ऐद युगीनान् सक्षिप्तरुचीनपेक्ष्य भगवद्भि
श्रीसोमतिलकसूरीश्वरैर्विदधेयमति महार्थ ॥ २

अन्त– एव सर्वद्वीपसमुद्रादिसख्या आनेया तथात्र मनुष्यक्षेत्रे सर्वत्रे सर्वेऽपि शशिनोरवयश्च पृथक् प्रत्येक द्वात्रिशच्छत तथा बहिर्मनुष्यक्षेत्रात् शशिनोरवयश्च स्थिरा अर्द्ध-प्रमाणाश्च ज्ञेया ॥ ८७ ॥८८॥ इति नरक्षेत्रविचार इति श्रीसोमतिलकसूरिविरचितायां नव्यक्षेत्रसमासस्यावचूर्णि· श्रीगुणरत्नसूरिविरचिता ।

१२–छन्द शास्त्र

४ ४४३२ वृत्तमुक्तावली

आदि– मवलघुमपूर्णं तत्कृतानां कवीना
म्प्रभवति रागहेतु सश्रितायन ।
शुभगणाढ्या स्यालल्लावसान
ङ्कलयति भवतीय छन्दसा मानिनीव ॥ १

अन्त– अता मेरोर्धल्लगविषयणीजातिपुलाग्निवामक्रमा
दस्द्वयादिप्रमितिरचिराङ्गाति र वो युत स्यात ।
०दङ्क स्यात्सम्या भवति यदि या मिश्रिनरवयुक्त
ममुद्दिष्टाङ्क स्याद्द्विगुणवपुषा मत्ययस्योनमाध्वा ॥

इति श्रीमत्स्वविधुर धरमल्लारिविरचितायां वृत्तमुक्तावली(ल्या) प्रस्तराग्निरूण नामा
ष्टमो गुच्छ ॥

लिपिकर्त्ता—वराहग्रामस्थ वम्मणभट्टात्मज वालिङ्ग ।

१५ ७८१३ वृत्तरत्नाकरवृत्ति

अन्त– नरवाणपञ्चतये न्दे चम्पक विनादे उष ।
एकादश्यां तिथौ रात्रौ वलक्षि विक्रमे पुर ॥ १
भूतनाथप्रमादन शर्मणा लिपीकृतम् ।
कल्याणमस्तु श्रेयोऽस्तु विजयोऽस्तु शमस्तु च ॥ २
पुस्तिवेय वदत्ययोऽविघ्नमस्तु प्रजासु च ॥

१३–संगीत

१ ६७४१ अनूप संगीतरत्नाकर

आदि– श्रीगुरुगणाधिपवटुकशारदाभ्यो नम ।
श्रीमज्जनार्दननत्वा संगीतार्थप्रग्र ।
तन्यते भावभट्टेन रागालापनमंजरी ॥ १
विंशतुग्रामरागास्यु नवोपरागका स्मृत ।
रागाणां विंशति प्रोक्ता भाषा षण्णवति स्मृता ॥ २

अन्त– इति श्रीमद्राठोडकुलदिनकरमाहाराजाधिराजश्री हारमजनयश्रीविराज
मानचतु समुद्रमर्यादावच्छिन्नमेदिनीप्रतिपालमचतुरवदान्यतागुण (सर) निर्जितचिंतामणिरवि

प्रतापतापितारिवर्गधर्मावतारश्री ५ माहाराजाधिराजश्रीमदनूपसिंहप्रमोदितश्रीमहीमहेंद्रमौलि-मुकुटरत्नकिरणनीराजितचरणकमलश्रीसाहिजहाँ सभामउणमगीतराजजनार्दनभट्टागजानुष्टुप-चक्रवर्तिसगीतराजभावभट्टविरचिते श्रीअनूपसगीतरत्नाकरे रागाध्यायो द्वितीय समाप्त ॥ २ छ॥ छ॥ ॥ छ॥ छ॥

२ ४१६६ रागमाला

आदि– नत्वा शम्भुपदाम्बुज तदनु च श्रीशैलकन्यापद-
द्वन्द्व विघ्ननिवारक च सतत त वारणास्य स्मरन् ।
रागाणा किलभैरवादिसुमनोमोदप्रदाना ब्रुवे
षण्णा लक्षणरूपगानसमयान् सगीतवित्तुष्टये ॥ १

अन्त– रागाणा भैरवादीना षण्णा रूपनिरूपणम् ।
हरिदत्तबुधप्रीत्यै व्रजनाथेन सूचितम् ॥ २

श्री पञ्चनदान्वयसम्भूतगोकुलस्थव्रजनाथदीक्षितविरचिता हरिदत्तभट्टप्रीत्यै रागमाला समाप्ता । लिपिकर्ता—पुरुषोत्तम आचार्य ।



१४—कामशास्त्र

३ ४४२६ रतिरहस्य

आदि– येनाकारिप्रसभमचिरादर्द्धनारीश्वरत्व
दग्धेनापि त्रिपुरजयिनो ज्योतिषा चाक्षुषेण ॥
इन्दोर्मित्र सजयति मुदा धाम वामप्रचारो
देव श्रीमान् भवरसभुजा दैवत चित्तजन्मा ॥ १

अन्त– सुरतरुतगरवचागरुमृगमदमलयजगन्धरसधूप ॥
वेश्मनि विहितस्तेषा परस्पर प्रीतिमातनुते ॥७१॥

इति सिद्धपटीय पण्डितश्रीकोकक्कृतौ रतिरहस्ये योगाधिकारो दशम परिच्छेद ॥

४ ४७७५ रतिरहस्य

अन्त– शाके वेदनगेषुचन्द्रमितिगे संवत्सरे नन्दने
माघे मास्यथ धर्मदैवततिथौ सौरस्यवारे पुन ॥
तापीतीरनिवासिना द्विजवरेणालेखि वै पुस्तक ।
शिष्याणा पठनाय वामलधिया सौख्याय शैवेन यत् ॥

१५-काव्य नाटक चम्पू (१)

२ ४३७६ अध्यात्मरामायण सुन्दरकाण्ड सटीक

आदि- श्रीमहादेव उवाच- शतयोजनविस्तीर्ण समुद्रं मकरालयम् ।
लिलंघयिषुरानन्दसन्दोहो मारुतात्मजः ॥ १

अन्त- यत्पादपद्मयुगलं तुलसीदलाद्यैः
संपूज्य विष्णुपदवीमतुलां प्रयाति ॥
तेनैव किं पुनरसौ परिरब्धमूर्ती
रामेण वायुतनयः कृतपुण्यपुञ्जः ॥ ६४

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे सुन्दरकाण्डे पंचमः सर्गः ॥

३ ४५२० अध्यात्मरामायणमत्

अन्त- इति श्रीमत्मण्डलराजविपदुद्धारणसमर्थेत्यादिविरुदावलीविराजमानस्य हिम्मति वर्मणः पुत्रस्य श्रीरामवर्मणः कृताध्यात्मरामायणसत्ववृत्तरकाण्डे नवमः सर्गः ॥समाप्त॥

१० ४३३१ अनघराघव

आदि- ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥
निष्प्रत्यूहमुपास्महे भगवतः कौमोदकीलक्ष्मणः ।
कोकप्रीतिचकोरपारणपटू ज्योतिष्मती लोचने ॥
याभ्यामर्धविबोधमुग्धमधुरश्रीरर्धनिद्रायितो ।
नाभीपल्लवपुण्डरीकमुकुलः कम्बोः सपत्नीकृतः ॥१

अन्त- दृष्ट्वा तुष्यत्पुलत्या जगति विजयते जानकीजानिरेकः ।

इति निष्क्रांताः सर्वे । इति दशग्रीवनिग्रहो नाम षष्ठाङ्कः समाप्तः ।

१२ ६४०२ अन्यापदेश शतक

लिपिकर्ता—अभयराम दादूपंथी नागपुर—

नर्मदा नभदो तपोभिरमलः श्रीपद्मनाभात्सुतः ।
यद् गो मिथिलाखिलावनितलालंकारचूडामणिः ॥
तेनेदं मधुसूदनेन कविना विद्यावता निर्मितं
श्लोकानां शतकं मुदे सुकृतिनामन्यापदेशाह्वयम् ॥ १५

१४ ४३२५ अमरुशतक सटिप्पण

अन्त- प्रासादे सा दिशिदिशि च सा पृष्ठतः सा पुरः सा ।
पर्यंके सा पथि पथि च सा तद्वियोगातुरस्य ॥

दृष्टो नैव प्रकृतिरपरा नास्ति मे कापि सा सा ।
सा सा सा सा जगति सकले कोऽयमद्वैतवादः ॥ १०२

इति श्रीमदमरुकनाथविरचितममरुशतक समाप्तिमगमत् ।

१८ ४३३० ऋतुसंहार

आदि– प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमा ।
सदावगाहक्षतवारिसंचयः ॥
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो ।
निदाघकालः समुपागतः प्रिये ॥ १

अन्त– आलम्बचन्दनरसा स्फुरमानहारा ।
कन्दर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्ट्या ॥
मासे मधौ मधुरकोकिलभृङ्गनादैः
नार्यो हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम् ॥ २८

इति श्रीविशेषाख्ये श्रीकालिदासकृतो ऋतुसंहारे वसन्तवर्णनो नाम षष्ठः सर्गः समाप्त तत्समाप्तो समाप्तोऽयं ग्रन्थ ॥

३० ४३६५ कुमारविहारशतक

आदि– तेजः पुष्णातु पार्श्वो दुरितविजयि व शान्ततानन्दबीजं ।
सप्रान्त सप्तरत्न्या भुजगपतिफणाचक्रवर्येकभाजि ॥
कर्माण्यष्टौ समन्तात्त्रिभुवनभवनोन्नगताना जनाना ।
यश्चेत्तु तुल्यकालं वहति निजतनुस्तत्पनामान्यरूपाम् ॥ १

अन्त– आस्ता तावन्मनुष्य प्रकृतिमलिनधी शाश्वतालोकचक्षु-
र्वक्तुं वक्त्रैश्चतुर्भिर्विबुधैरपि किमन तस्य सौन्दर्यलक्ष्मीम् ।
स्त्रीणा शेषाभिलाष परमलयमय स्थानमाप्तोऽपि यस्मि-
न्नास्था श्रीपार्श्वनाथस्त्रिभुवनकुमुदारामचन्द्रश्चकार ॥ ११६
इति विहारशतक समाप्तम् ॥छ॥छ॥

४१. ७७६४ कृष्णगणोद्देशदीपिका

अन्त– शाके दृशश्चशक्रे नभसि नभोमणिदिने षष्ठ्याम् ॥
व्रजपतिसद्मनि राधाकृष्णगणोद्देशदीपिकाऽदीपि ॥

६५ ५९०२ धर्म्मशर्म्माभ्युदयम्

आदि– श्रीनाभिसूनोश्चिरमंघ्रियुग्म-
नखेन्दव कौमुदमेधयन्तु ॥
यत्रानमन्नाकिनरेन्द्रचक्र-
चूडाश्मगर्भप्रतिबिम्बमेण ॥ १

अन्त- प्रभवदथ विचित्रैर्विनयसूपोपचार
　　प्रभुरिहहरिचन्द्राराधिता मांगलक्षमाम ॥
　　तदनु तदनुयाया प्राप पयन्तपूजो
　　ऽपचितसुकृतराशि स्वपद नाविरतोऽ ॥ १८५

इति महाकविश्रीहरिश्चन्द्रविरचिते श्रीधर्मशर्माभ्युदय महाकाव्य श्रीधर्मनाथनिर्वाणगमनो नाम एकविंशतितम सर्ग पूर्ण । कविवंशवर्णन तत्रैव-

मुक्ताफलस्थितिरलंकृतिषुप्रसिद्ध
स्तत्राद्रदेव इति निमलमूर्तिरासीत् ॥
कायस्थ एव निरवद्यगुणग्रहस्स
न्नकोऽपि धूलमनपमल चकार ॥ २
लावण्याम्बुनिधि कलाकुलगृह सौभाग्यसद्भाग्ययो ।
क्रीडावेश्मविलासवासवलभीभूषास्पद सम्पदाम् ॥
शौचाचारविवकविस्मयमहीप्राणप्रिया शूलिन —
र्शर्वाणीव पतिव्रता प्रणयिनी रथ्येति तस्याभवत् ॥ ३
अहत्पदाम्भोरुहचचरीक
स्तयो सुत श्रीहरिचद्र आसीत् ॥
गुरुप्रसादाग्मला बभूवु
सारस्वते स्रोतसि यस्य वाच ॥ ४
रा वणपीयूषरसप्रवाह
रसध्वनरध्वनि सार्थवाह ॥
श्रीधमशर्माभ्युदयाभिधान
महाकवि काव्यमिद व्यधत्त ॥ ७

६६　　४०६२　　　　नलोदय टीका

आदि- नत्वा हरिकमलशाङ्खगदासिपाणि ।
　　लक्ष्मीनखांकविलसदहृदय दयाब्धिम् ॥
　　वागीश्वरीमथ गुरूश्च परापरेषा ।
　　टीका मनोरथकवि स्वधिया विधत्त ॥ १
　　नलादयपदावोधादबुधा खेद विमुञ्चत ।
　　मनोरथकृता टीका शुद्धा सम्प्रति पश्यत ॥ २

अन्त- नलोदयमहाकाव्यटीका विबधचन्द्रिका ।
　　आचन्द्रतारक यावन्भूयादानन्दवर्द्धिनी ॥ ३
　　एवैन यमकालापो निस्तरीतु सुदुशव ।
　　तस्मात्सन्तो दयावन्त स्निह्यन्तु मयि निभरा ॥ ३

इति श्रीमन्मनोरथविरचिताया विबुधचन्द्रिकाया नलोदयमहाकाव्यटीकायां चतुथ आश्वास ॥ ४ ॥ समाप्त ॥

७४   ४३८८   नृसिंहचम्पू

आदि– कनकरुचिदुकूल कुण्डलोल्लासिगल्ल
शमितभुवनभार कोऽपि लीलावतार ॥
त्रिभुवनसुखकारी रूपधारी नृसिंह
परिकलितरमाङ्गो मगल नस्तनोतु ॥ १

अन्त– इति श्रीमन्महाराजधिराजमूर्द्धन्यशौर्यौदार्याद्यनेकानवद्यपद्यगुणगणविराजमान-श्रीमदुमापतिराज्योद्योतितभट्टकेशवविरचिते नृसिंहचम्पूकाव्ये पञ्चम स्तवक ॥ ५ ॥

८६.   ६२४४   महाभारत सभापर्व

लिपिकर्तुर्गोवर्धनस्य ग्रन्थान्ते वशवर्णन यथा–
गोविन्दात्मजजीवनाथनिपुण शास्त्रप्रवाहागमे ।
तेषामात्मजरुद्रभक्तिनिपुण ख्यातो हि शैवागमे ॥
सोऽय लिखितग्रन्थमेव सुधियो गोवर्धनख्यातिवान् ।
पाठे चात्मपरार्थमेव सकल तस्माच्छिवप्रीतये ॥ २
अस्मत्पितामातुलपुण्यमूर्ते-
र्विख्यातनाम्ना हरजीति नाम्ने ॥
गोवर्धनोऽह इदमालिलेख
प्रसाद तेषा गुरुमातुलस्य ॥ ३
वर्षातीते वेदगोभूपचेति ।
मासेऽषाढे पूर्णिमाभूमिजेति ॥
ग्रन्थेऽलेखी विप्रगोवर्धनेति ।
तीर्थेपुण्ये क्षेत्र भूतेश्वरेति ॥ ४

स० १६६४ वर्षे आषाढमासे शुक्लपक्षे पौर्णमास्या भौमवासरे च ठाकुरगोविंदसुतठाकुर-जीवनाथात्मजगोवर्धनेन लिखित इद पुस्तक मथुरामध्ये श्रीमहान्हरजीपितामातुलप्रसादेन ।

१०८.   ६४७१   महाभारत कर्णपर्व

अन्त– हुताशनागाद्रिकुभिर्मिते शके ।
श्रीविक्रमार्कस्य च कार्तिके सिते ॥
त्रयोदशी भौमदिने समाप्त-
मिद तु शास्त्र हरिलालमिश्रात् ॥
लिखनत इति शेष । दांता मध्ये ।

११८.   ६१६६   महाभारत मोक्षपर्व

अन्त– मनरामेणालेखि नभोत्यशरारे धृत्यब्दशके भारत्या सेश जगति शमस्तु ।

१२५   ४३६१   मुद्राराक्षस सटीक

आदि– सिंदूरारुणगण्डमण्डलमदामोदभ्रमद्भृ गिका ।
झकारेण कलेन कर्णमुरजध्वानेन मद्रेण च ॥

तत्तीयत्रिक्रीतिमेति गिरसश्शश्वमदादोलन ।
मस्य श्रीगणनायक स दिशतु श्रयामि भूमासि व ॥ १

अन्त– बाणाग्यतुमहीसख्यामिलन्ते जयनामके ।
ढन्गिना व्याकृत जीयामुद्राराक्षसनाटकम ॥

रचनाकाल—शाके १६३५ फाल्गुने । रूपजित्तनयहरदत्तस्येद पुस्तकम ।

१३५ ४३६० मेघदूत सटीक

अन्त– आसीन्निर्मलवन्यलरणिस्वाचारचिंतामणि
सद्विद्यासरणिभवान्वितरणि श्रीसोमनाथा द्विज ॥
सूनुस्तस्य धनेश्वरो व्यरचयट्टीका शिशूदायिनीं ।
काव्य स्मिन् सरसप्रबधविषमे श्रीमेघदूताभिध ॥ १

१३६ ५१५६ मेघदूत सटीक

अन्त– श्रीवकुण्ठाभिधगुरुवचोल धतत्त्वावबोधो ।
वाराणस्या विबुधनिकरालकृताया मतीन्द्र ॥
पूर्णानन्दश्चतुररचना मघदूतस्य टीका ।
काव्यच्छन्दानिगमनिपुणो बालबुद्धय व्यतानीत ॥ १

१५६ ७३०२ रघुवशटीका

अन्त– चन्द्रवसुसम्वतसम वह्निबाण परमानिय ।
आसोज सुदि एकादशी भगुवार इह जानिये ॥

लिक्ष कुशालसागरगणि मदपाटदेश वराटमडले सग्रामगढनगरे तथा टुकरवान्ग्रामे ।

१६३ ७०८३ राधाकृष्णप्रेमसम्पुटकाव्य

अन्त– षट्शून्यत्ववनिभिगुणिते तपस्य ।
श्रीरूपवाक् मधुरिमामृतपानपुष्ट ॥
राधागिरीन्द्रधरया सरसोत्सटान्ते ।
तत्प्रेमसम्पुटमविन्दत कोऽपि काव्यम् ॥

१७१ ४४०० रामहनमन्नाटक

आदि– आरामे दशरथन कवयी वाक्पाशा वन प्रति प्रय्यमाण लक्ष्मणस्य भाव ।
निर्यातमाकर्ण्य कथाय राम ।
सौमित्रिरत्तभिनमापकम्प ॥
विश्रान्तदृष्टि किल चापयगो ।
दध्यो स च लक्ष्यमिश हृदन्त ॥ १

अन्त– रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति ।
मन प्रसन्नतामेति रामनामाभिशकया ॥
इति रामहनूमन नाटकम् ।

२०२　६०२०　　　　　रामायण उत्तरकाण्ड

अन्त– वाल्मीकिना विरचित श्रीरामायणपुस्तकम् ।
लिखित लक्ष्मणाख्येन समाप्त भक्तनुष्टिदम् ॥

२१६.　७०८७　　　　　शिशुपाल ब(व)ध

अन्त– इति श्रीमाघवणिग्विरचिते महाकाव्ये श्रघ'के शिशुपालवधो नामविंशति(त)म सर्ग ॥ सम्पूर्ण माघकाव्यम् ॥ स० १५५२ वर्षे चैत्रसुदिद्वादशीदिने सोमवासरे ब्रह्मश्री(षि)रतन पठनार्थं श्री माघकाव्यं लिखित ज्योतिरगुमन्न शुभ भवतु ।

२२१.　६१७६　　　　　शृङ्गारमाला

अन्त– श्री गुरुदेव ।
ससारसर्पमुखमर्दनतार्क्ष्यरूपा
विज्ञानभापटलपाटितमोहकूपा ॥
येषा कटाक्षकलिता. फलिता लसन्ति
गङ्गेशमिश्रगुरव सततं जयन्ति ॥ १

कविवंशवर्णनम् ।
पानीयप्रस्थात् परतन्तु मार्गो
षट्क्रोशमध्ये हि घटोत्कचस्य ॥
ग्रामो 'घरोडे'ति प्रसिद्धनामा
पूर्वेस्थितास्तत्र पुरा मदीया. ॥ १०
श्रीविष्णुदत्तस्वकुलाब्जभानु–
र्नारायणस्तत्तनुजो बभूव ॥
कौशल्यगोत्रो यजुषामधीता
माध्यन्दिनीयो द्विजगौडजोमी ॥ ११
तस्यात्मजो स्यादगमत्तु काश्या ।
षड्दर्शिनीवैरमपुनमश्री ॥
दामोदरो वैद्यकग्रथकर्ता
श्रीरामकृष्णस्तदपत्यमासीत् ॥ १२
तुलसीमाधवगगारामाख्यास्तत्तनूद्भवाश्चासन् ।
माधवरामसुपुत्रो हृदयराम इति सुगीयते मनुजैः ॥ १३
साहित्ये रसग्रथकृद्बुधवरस्तस्याङ्गजात कवि-
र्बाबूराय इति प्रसिद्धिमगमद्वासीपुरे चार्गले ॥
तत्पुत्रेण कृता मया रसमयी माला रसोपासकाऽऽ-
ज(ज्ञ)प्ता प्रापयितु गुणैरपि युता कल्पारसब्रह्मणि ॥ १४
सुखलालेन सुकविना रचिता शृंगारमणिमयीमाला ।
सा रसिकाना सगुणसुवर्णा विलासमातनुताम् ॥ १५
सुधागुव्योमवस्विन्दौ वर्षे ज्येष्ठसिते रसे ।
शुभा शृंगारमालेय रविपुष्ये सुगुम्फिता ॥ १६

इति श्रीमत्साहित्यशास्त्रानुभावरसिकगौडविप्रवरबाबूरायमिश्रसूनुसुखलालमिश्रेण विरचितायां शृंगारमालायां सकीर्णवर्णनं नाम तृतीयं विरचनम् ॥ श्रीरस्तु ॥

प्रथमं विरचनम्—नायिकाभदविवरणम् ।

द्वितीयं ,, —शिखनखवर्णनम् ।

तृतीयं ,, —षड्ऋतुवर्णनम् (सकीर्ण विरचनम्) ।

२२३ ५३०३ सवित्प्रकाश

अन्त- श्रीगोविन्दकवीन्द्रमीशभजनप्राप्त कवीनाग्रणी ।
श्रीमत्कान्हकवि सुत प्रसुपुवे श्रीकमदेवी च य ॥
वेदान्ताम्बुजभास्वतायबहुल सवित्प्रकाशाभिधं ।
काव्य तेन कृत समाप्तिमगमदविद्वज्जनानन्दनम् ॥

२२४ ४१२६ सप्तशती आर्यावृत्तबद्धा

आदि- पाणिग्रहे पुलकित वपुरश भूतिभूषित जयति ।
अङ्कुरित इव मनोभूयन्द्रुरमावन्दापऽपि ॥ १

अन्त- हरिचरणलीलाकविवरवचनवामनशीला वामन इव कविपद निष्ठय ।
अकृतार्याय सप्तशतीमेका गोवर्धनाचार्य ॥ ७५०
इति गोवर्द्धनाचार्यकृता सप्तशतीयं समाप्तम् ।

सवत १८०७ मिती माघ शुक्ल २ गुरुवासरे सम्पूर्णम् । लीखतं जोसी परसरामेण । पञ्चणीकरोपनामरघुनाथस्येदम् पुस्तकम् । लेखकपाठकयो शुभमस्तु ॥
॥ शुभ भवतु कल्याणम् भव ॥

२२५ ६०६३ सुन्दरमणिसन्दर्भ

अन्त- मधुराचार्यनाम्नैव गानवाश्रमवासिना ।
सुन्दराभिधसन्दर्भो भावबोधाय निर्मित ॥



१६—रसालङ्कार

२ ४३६६ अलंकारचन्द्रिका (कुवलयानन्दटीका)

आदि- अनुचिन्त्य महालक्ष्मी हरिलोचनचन्द्रिकाम् ।
कुर्वे कुवलयानन्दस्यालङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

अन्त- असौ कुवलयानन्दश्चन्द्रालोकोत्थितोऽपि सन् ।
प्रतिष्ठां लभते नैव विनालङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारीणभट्टारामजवैद्यनाथकृतालङ्कारचन्द्रिकाख्या कुवलयानन्दटीका ।

४   ५९८३   काव्यकल्पलतावृत्ति (कविशिक्षा)

आदि– विमृश्य वाङ्मय ज्योतिरमरेण यतीन्दुना ।
काव्यकल्पलताख्येय कविशिक्षा प्रतन्यते ॥

अन्त– इति श्रीजिनदत्तसूरिशिष्यमहाकविचक्रचूडामणिश्रीमदमरसिंहविरचिताया काव्यकल्पलताकविशिष्या(क्षा)वृत्तौ अर्थसिद्धिप्रताने तुर्ये(तुरीये) समस्यास्तवक सप्तम समाप्त ।

१३.   ६०७३   चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)

अन्त– इति श्रीरामचन्द्रदेवात्मजयुवराजश्रीवीरभद्रदेवादिष्टमिश्रवलभद्रात्मजसकलशास्त्रारविन्दप्रद्योत्तमभट्टाचार्यविरचिते चन्द्रालोकप्रकाशे शरदागमे दशमो मयूख समाप्त ।

२४.   ६४६८   रसमञ्जरीटीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी

वर्षाश्राकसुधांशुभिश्च मिलिते सवत्सरे भाद्रके ।
पक्षे मेचकसज्ञके कुजदिने व्यङ्ग्यार्थविद्योतिकाम् ॥
व्यालेखीद्रसमञ्जरीतिलकिका गोविन्दशर्मा द्विजो ।
राज्ये भारतपत्तने च वन्नवसिंहस्यपुण्यात्मन ॥

प्रति के आदि २½ पत्रो मे काशिराज श्रीचद्रभानु के वश का विस्तार से वर्णन है। (स०)

३४   ४३०६   वाग्भटालकारवृत्ति

आदि– श्रिय दिशतु वो देव श्रीनाभेयजिन सदा ।
मोक्षमार्गं सदा ब्रूते यदागमपदावली ॥ १

व्याख्या–श्रीनाभेयजिनो वो युष्मभ्य श्रिय दिशतु ददातु किंविशिष्ट श्रीनाभेयजिन देव· दीव्यति क्रीडते परमानन्दपदे इति देव यस्य भगवत आगमपदावली सिद्धान्तपदपरम्परा सता सत्पुरुषाणा मोक्षमार्ग ब्रूते सिद्धे पथान वदति । अन्यापि पदावली मार्ग ब्रूते ॥ १

अन्त– अनुमानमाह–
प्रत्यक्षाल्लिगतो यत्र कालत्रितयवर्तिन· ।
लिगिनो भवति ज्ञानमनुमान तदुच्यते ॥ ३८

व्याख्या–लिगतोहेतोरतीतानागतवर्तमानकालत्रितयवर्तिन सलक्षणस्य लिगिनो ज्ञान भवति तदनुमानम् ॥ ३८ ॥ इत्यादि ।

४२.   ५९०३   श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डनटीका)

आदि– अर्हं ॥ ॐ ॥ नमो वीतराग ।
हेरम्ब क्व किमम्ब किं त(व)करे तातस्य चान्द्रीकला
कृत्य किं शरजन्मनोक्तमनया दन्तान्तर स्यादिति ।
तात कुप्यति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्या कला-
माकाश जयति प्रसारितकरस्स्तम्बेरमग्रामणी· ॥
य· साहित्यसुधेन्दुर्नरहरिरल्लालनन्दन ।
कुरुते स श्रवणभूषणाख्या विदग्धमुखमण्डनव्याख्याम् ॥

अन्त- इति श्रीनरहरिभट्टविरचितायां श्रवणभूषण चतुर्थ परिच्छेद ।
मगल जयधर्मो उदेवसवेगमगल । मगल गच्छमघन लेखके मगल भव ।। श्रीश्रमणसधाय ।। श्रीविदग्धमुखमण्डनवत्ति ।।

१७-सुभाषितादि

२ ७२७२ एकषष्ठिपुतप्रश्नशत

अन्त- अचलावेदवार्द्धी दुवत्सरे श्रीरिणीपुरे ।
विद्याविलासगणिना लेखीद कृति हृदकृत ।।

३ ४३४७ कपूरप्रकर सावचूरि

आदि- कपूरप्रकर नामामतरस ववनेंदुचद्रातप
गुणाध्यानतरप्रसूननिचय पुण्याब्धिफनोदय ।
मुक्तिश्रीकरपीडनेच्छसि च यो वाव्कामधनो पयो
व्याख्या नद्यजिनेन्पेनलरज्योतिश्चय पातु व ।। १

अन्त- श्रावज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्टि
सारप्रबधस्फुटसदगुणस्य ।
निष्पण चक्र हरिणेयमिष्टा
सत्कावना नमिचरित्रकर्त्ता ।। ७८

इति श्रीजिनवधनसूरिपट्टे श्रीजिनचद्रसूरिपट्टालकारभाग्यसौभाग्यसारश्रीजिनसागरसूरिवरेणकपूरप्रकराभिधसुभाषितकोशस्यावचूर्णि समासत कृता ।। १४००

१० ४४५२ (३४) नीतिशतक

आदि- या चितयामि० इति ।। १

अन्त- भन हरिभूपतिना रचितमिद नीतिरीतिविनन ।
नाते यत्र न मुह्यति धीरोऽधीर प्रमाण स्यात् ।।
इति श्रीमत हरिकृत नीतिशतक सम्पूर्णम् ।।

१४ ४४१५ प्रश्नोत्तरषष्टिशतक

आदि- द्विरसि यस्य चकासति दीपिका
इव फणामणिसप्तकदीप्तय ।।
निखिलभीतितम नमनाय कि
सपदि पार्श्वजिनं विनवीमितम् ।। १

अन्त- किमपि यच्छिल्पिष्ट विनष्ट तथा चिरमतत्रवि
प्रकटितपथानिष्ट निष्ट मया मतिदोषत ।।

रिणीपुर को तारानगर कहते हैं जो कि बीकानेर डिवीजन के चूरू जिले (राजस्थान) मे है। (स०)

तदमलधिया वोक्ष्य शोध्य सुबुद्धिवनैर्मन-
प्रणयविशद कृत्वा धृत्वा प्रसादलवं मयि ।। ६१
इति अलङ्कारविदग्धप्रश्नोत्तरपष्टिशतककाव्य समाप्तम् ।

१७. ४४८२ रत्नकोश

आदि– वैशपायन उवाच–
रत्नकोश प्रवक्ष्यामि लोकाना हितकाम्यया ।
पृथिव्या यानि रत्नानि तेपामुद्धरण प्रभो ।। १
कथयिष्ये महाराज शृणु त्व पाडुनन्दन ।
सर्वशास्त्रमय दिव्य सर्वज्ञानप्रकाशकम् ।। २
अल्पग्रथं सुबोधार्थी रत्नकोश समभ्यसेत् ।। ३

अन्त– पचविधा गति. नरकगति । तिर्यक् । मनुष्य । देव । मोक्षगति ।
इति श्रीरत्नकोशरत्नाकर सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—कान्हीराम ।

२५. ६१२७ शतकत्रय

अन्त– पुष्पिका– इति श्रीवोधमते गोतमरिषीशिष्यअमरसिंहतच्छिष्यरूपचदविरचिते मानुष्यवोधे त्यत्रवोधमतसम्पूर्णं । समत १४३४ वर्षे आपाढशुक्ल १५ काशीनगरमध्ये लिपत श्रीवाडीगुजरातीवशे हरीशर्माभट्टतत्पुत्रविष्णुभट्टशर्मा लिपीचक्रे लिपायत महाराष्ट्रभट-रामकिसनजीवाचनार्थं सर्वसमुच्चयटीका सूत्रग्रथ ५१७५ सर्व ।

४१. ४४५६ सिंदूरप्रकरसटीक

आदि– श्रीमत्पार्श्वजिन नत्वा स्त्रोवशीयमकारकम् ।
सद्य सस्मृतिमात्रेण प्रत्यूहव्यूहकारकम् ।। १
श्रीचद्रकीर्तिसूरीणा सद्गुरूणा प्रसादत ।
सिंदूरप्रकरव्याख्या क्रियते हर्पकीर्तिना ।। २

अन्त–सिंदूरप्रकरस्यव्याख्याया हर्पकीर्तिभि सूरिभि विहितायातु सामान्यप्रक्रमोऽजनि ।। १ तपागणे नागपुरीयपूर्वे । श्रीचद्रकीर्त्याह्वयसरिराजा । तेपा विनयहर्षकीर्तिसूरिश्वरो वृत्तिमिमामकार्पीत् ।। इति श्रीसिंदूरप्रकरस्यटीका समाप्ता ।

५७ ४३४८ सुभापितसूक्तावली

आदि– दानं सुपात्रे विशुद्ध च शील ।
तपो विचित्र शुभभावना च ।।
भवार्णवो त्यर्णवयानयात्रा ।
धर्म चतुर्धा मुनयो वदन्ति ।।

५८. ५९८४ सुभापितार्णव

आदि– चद्रनाथ जिन नत्वा जिनयातिचतुष्टयम् ।
सुभापितार्णव वक्ष्ये ज्ञानविज्ञानकारणम् ।। १

६१ ४४१४ सूक्तालो

आदि- वीर विश्वगुरु नत्वा कृत्वा यत्नेन सग्रहम् ।
मदापकारसूक्तालो स्वाध्यपाठाय लिख्यते ॥ १

अन्त- आराधयद्भमनन्यकर्मा प्राय प्रसादादधिरेव मव ।
आराद्धुमेन तत्कृतप्रसादं कस्यापि विस्फूर्ति निर्यत्ति चेत । १८३४

लि क शुभसुन्दरगणि । लिपिस्थान—वद्धग्राम ।

५५ ४३४६ सुभाषितसग्रह

पत्र २३वें म पुष्पिका इस प्रकार दी हुई है—

इति श्रीमन्नाचार्यजी श्री ६ मेन्गवाहृतानि वा यानि समाप्तानि । लिपिकृत पूज्यऋषि श्री ८ सामजी तच्छिष्य पू० ऋषि श्री ५ महिराजा तत्शिष्य पू० ऋषिश्री ५ टाडरजी तत्शिष्य पू०पत्रिमात्माश्री ५ भामजा तच्छिष्यएण मुनादामाध्यएगार्थ शुभ श्रय सवद्वसुगगन समुद्रवर्षे कार्तिकमास शुक्लपक्ष त्रयोदशीगुरुवासरे राणपुरे लिपिकृता प्रतिरिय शुभ भव ।



१८—कथा-चरित्र आख्यानादि

१ ४३३२ अवदचरित्र

आदि- ॐ नम सिद्धेभ्य ।
धर्मात्सम्पद्यत लक्ष्माधर्माद्रूपमनिन्दितम ।
धर्मा सौभाग्यदायाय धर्मान्मवसमीहितम् ॥ १

अन्त- स्तद्य गोरक्षयोगिनो वचनत सिद्धोऽभवड दाम्रिय
मत्तान्शेवरा सवौतुकमरा भूता न चाभाविन ।
द्वात्रिंशी मतां निवादिचरितं यन्गद्यपद्येन त
च्चक्रे श्रीमुनिरत्नसूरिविजयी सद्वान्यमान बुध ॥

इति श्रीमुनिरत्नसूरिविरचिते गोरक्षयोगिना दत्तरत्नान्शेकरमबन्धयानक सम्पूर्णमिद ।

लिपिकर्ता—धामन्दर । स्थान—सवाला ।

७ ४३३५ उत्तराध्ययनकथा

आदि- प्रणम्य श्रीमहावीर नभाराध्यमतमण्डलम ।
मारभ्यत कथा वस्तुमुत्तराध्ययनस्थिता ॥

अन्त- गन्धामुदीय साधगर्मीप प्रव्रजित मग्न सम्बन्ध सत्र एव प्राप्ता । इति पंचविंशा ध्ययनकथा समाप्ता ।

कथा कृता पण्डितपद्मसागरै
स्वशिष्यवाक्यप्रणयेन सत्कृता ॥
पिपाडिपुर्यां जिनपार्श्वनायक-
प्रसादत सत्कुशलाय सन्त्विमा ॥
रचनाकाल—१६५७ । पीपाड़ग्राम ।

१६   ४३८७   चित्रसेनपद्मावतीकथा

आदि— कल्याणकमलागेहं नि सन्देहं महोदयम् ।
कल्याणदिनमद्देह वदेऽहं वृषभप्रभुम् ॥
अन्त— नभम्मरसचन्द्राब्दे श्रावणसितपञ्चमीतिथौ सोमे ।
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा जयतु बुद्धिविजयकृता ॥ ५६८
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा सम्पूर्णा ।

१९   ४३९८   चित्रसेनपद्मावतीचरित्र

आदि— नत्वा जिन प्रतीमाद्य पुण्डरीक गणाधिपम् ।
शीलालकारसयुक्ता साश्चर्या तत्कथा ब्रुवे ॥ १
अन्त— शिष्यस्तदीयो महिमानिधान
चरित्रपात्रं स्वगणे प्रधानम् ॥
पद्मावतीशीलगुणस्य कीर्तने
कथाऽकरोत् पाठकराजवल्लभ ॥ १२१४
श्रीनयविजयशिष्यै भक्तिनास्ति बुकार्य ए ।
चरित्र चित्रसेनस्य पुण्यार्थं चाह निर्मितम् ॥ १२१५
इति श्रीशीलविषये चित्रसेनपद्मावतीमहासतीचरित्र सम्पूर्णम् ।
लिपिकर्ता—रामविजयगणि ।   लिपिस्थान—राधनपुरनगर

२२   ४४३५   देवकुमारकथा

आदि— ॐ नम सिद्धम् ।
पुरा अभूत्कुसुमपुरे सूरनामा नरेश्वर. ।
विरोधिध्वसकरप्रसरसुन्दर ॥ १
अन्त— चिरमत्रिपद भुक्त्वा प्राप्यान्ते व्रतमुत्तमम् ।
प्रपाल्य स्वर्ययौ मोक्ष गन्ता च कतिभिर्भवैः ॥ ३९२
पुत्रात्सुख न भवति जनस्य जनकस्य च ।
रत्नमाश्चर्यमयी चौर्यव्रतपोषकरीकथा ॥ ३९३
इति श्रीदेवकुमारकथातृतीयव्रतमाहात्म्यम् ।
लिपिकर्ता—श्रीजिनसुन्दरसुगुरोश्शिष्याणुविजयसुन्दरो विनयी ।
देवकुमारकथागकमदिखच्च परोपकाराय ॥ १

२५ ४४३४ धमबुद्धिमंत्रिकथा

आदि- उद्वाहे प्रथमा वर क्लि कलान(शि)लादिवे यो गुरु
भूप च प्रथमो यति प्रथमकस्नोर्यैश्वरश्चादिम ।
गताद्य वरपाश्रमाद्यमपर सिद्धो पद वादिम
सच्चक्री प्रथमश्च यस्य तनय सोऽस्त्वादिनाथ श्रिये ॥ १
धमत मकल मगावनी धमत सकलसौख्यसम्पद ॥
धमत स्फुरति निमल यशो धम एव तदहो विधीयताम ॥ २

अन्त- आरोग्य सौभाग्य धनाढ्यता नायकत्वमानन्द ॥
कृतपुण्यस्य स्यादिह सदा जया वाछितावाप्ति ॥ १
धनदा धनमिच्छूना कामद काममिच्छनाम ।
धम एवापवगस्य पारपर्येण साधक ॥ २

इति पापबुद्धिनपधमबुद्धिमंत्रिक्यानक सम्पूणम ।

३७ ४३३३ युवराजऋषि चरित

आदि- विशालास्तिपुराजनप्रासादरतिमुन्दरा ।
जयन्ति(न्ती)स्व पुरीमात्मधनधान्यसमद्धिभि ॥ १

अन्त- एव निशम्य युवराजकपश्चरित्र ।
कपूरदाप्तिभिरचौरगुण पवित्रम् ॥
समारवारिधितरीतुतिते प्रयत्न ।
स्वाध्यायकमणि गुणिन कुरु नि स्वपन्नम ॥ १३

इति श्रीजुवराजकथासमाप्तमिति । लि स्या —हृपपुर ।

३६ ४४०२ रूपसेनकथा

आदि- देवा स्यवशगा नवापि निधयश्चाष्टौ महासिद्धय
गेहस्था सुरधनुगाविमणयो यस्य प्रभावान्नृणाम् ।
नष्टाभीष्टफलप्रदाननिपुण श्रीवीतरागादितो
लोभन्यामवपारदप्रतिदिन धम समाराध्यताम् ॥

अन्त- यशो धर्मो गुणा सौख्य न्दमोरायु सुमगलम् ।
सफला यतानि दत्ते च धमकल्पमाहात्म्यम् ॥ १०१४

श्रीवीरसेननाया धमकल्पद्रुमे शिलरोपमरूपसेननपाख्यानवणनोनाम नवम पल्लव समाप्त ॥ इति श्रीरूपसेनकथा सम्पूर्णा ।

४२ ४४५८ वरदत्तगुणमजरीकथा

आदि- श्रीमत्पार्श्वजिनाधीश पन्नर्बाद्धिपुरमस्थितम् ।
प्रणम्य परया भक्त्या सर्वाभीष्टप्रसाधकम् ॥ १

अन्त- श्रीमत्तपगणगगनागणदिनमणिविजयनेनसूरीणाम् ।
शिष्याणुना कथेय विनिर्म्मिता कनककुशलेन ॥ ५०
बुधपद्मविजयगणिभि प्रवरै र्भीमादिविजयगणिभिश्च
सशोधिता कथेय भूतेपुरसेंदुमिते वर्षे ॥ ५१
गणिविजयनन्दनगणामभ्यर्थनया कृता तथा मयका ।
प्रथमादर्शे लिखिता तैरेव च मेदतानगरे ॥ ५२

इति कार्तिके सौभाग्यपचमीमाहात्म्यविषये वरदत्तगुणमंजरीकथानक सम्पूर्णम् ।

४५. ४३३४ शातिनाथचरित्र

आदि- श्रेयो रत्नाकरोद्भूतामर्हल्लक्ष्मीमुपास्महे ।
स्पृहयति न के यस्यै शेप श्रीविरताशया ॥ १
अन्त- यस्योपसर्गा स्मरणे प्रयाति
विश्वे यदीयाश्च गुणा न माति ॥
यस्यागलक्ष्मी कनकस्य काति
सघस्य शाति स करोतु नाति । ६२६

इत्याचार्यश्रीअजितप्रभसूरिविरचिते श्रीशातिनाथचरिते द्वादशभाववर्णनो नाम षष्ठ प्रस्ताव । इति श्रीशातिनाथचरित्र सम्पूर्णम् । श्रीजीवविजयगणिनी परत ।

५१. ४३३६ शालिभद्रचरित्र

आदि- श्रीदानधर्मकल्पद्रुर्जीयात्सौभाग्यभाग्यभू ।
पूर्वापरिचमर्ताथेशलक्ष्मीभोगमहाफलः ॥ १
अन्त- श्रीशालिचरिते धर्मकुमारसुधिया कृते ।
श्रीप्रद्युम्नधिया शुद्धे सप्तम प्रक्रमोऽभवत् ॥ ५६

श्रीशालिभद्रचरिते सर्वार्थसिद्धिप्राप्तिवर्णनो नाम सप्तम प्रस्ताव समाप्त ।
जिनातिशयपक्षाख्यवत्सरे विहिता कथा । ग्रन्थेन द्वादशशती चतुर्विंशतिसयुता ॥

२०—राजस्थानी

१. ७७५३ (१-१७) अकपाटी आदि गुटका

आरभिक दो पत्रोमे लघु चाणक्यनीतिके दूसरे अध्यायका अतिम श्लोक तथा तृतीय अध्याय लिखित हैं। आगे १७ पत्रोमे अकपाटीका लेखन हुआ है, पत्रमे ऊपर अंक-सख्या और नीचे सुभाषित (नीतिपरक) दोहे, श्लोक आदि हैं। उदाहरणार्थ—

'दान दया दमोद्रिण दमन दवपूजितं ।
दकारा पचयतते दूगन नव गच्छति ॥ १ (पत्र १)

दूहा ॥ सरतर अक्षर सीप पीव जो रप अप्पाण ।
सर वरीतर सायरा, अक्षर राज दुवांण ॥ १ (पत्र २)

अन्तके १६ १७वें पत्रमे—

दूहा ॥ काला तू कोयल भली जस मनपरो विवेक ।
अव विहूणी अवरसु बोल न वोल एक ॥ १ (पत्र १६वां)
गाम गोरमे हात है, जोय दूर मत जाय ।
वनी पणाइ पारसी, अरथ कह्या इण माय ॥ १ (पत्र १७वां)

॥ लीपत । पीडत श्री ५ श्रीवालचदजी लीपी छ । स० १८३५ मीगसर सुद ५ वार मगलवार अपसुर ज सरुप गोठीरा छ ।

६ ६५२५ अजनाचोपाई

आदि– ॥द०॥ श्रीगणेशायनम ॥

दूहा ॥ श्रीगणधर गौतम प्रमुष एकादस अभिराम ।
मन वछित सुष सपज नित समरता नाम ॥ १
प्रथम उद्यम म माडियो मति दीस अति मद ।
तिण कारण पहिला नमु श्रीगणधर सुपकद ॥ २
सेवकन सानिध करू, दइयो अविरल वाणि ।
जिम वेगो सिद्ध चढ काइम रायिम कांणि ॥ ४

अन्त– तिणि गछ पीपल थापीयो आठ साषा विस्तार ।
सवत रुद्रवावीसम वीसम हुइ सुपकार ॥ १२
ते गछ दीस दीपतो, साचौर नगर मझारि ।
वीर जिणेसर दीपतो तिहां तीरथ प्रगट उदार ॥ १३
तास पाट अनुक्रम हूवा, श्रीलीपमीसागरसूरि ।
विनय करी धमसागर, वाचक देय सनूर ॥ १४
तास सीस पुण्यसागर वाचक पभण एम ।
अजनासुन्दरी चौपई पूरण कीधी ते प्रम ॥ १५
सवत सोलसत्यासीइ श्रावण मास रसाल ।
सुदि तिथि पचमी निरमल रिद्धि वद्धि मगल माल ॥ १६

सव गाथा ॥ इति श्रीअजनासुदरीचौपई सपूण । सवत १८६८ मीगसर कृष्ण पक्ष तिथि १ भौमवासरे द्वतीय प्रहरे लिपत ऋषी नोलचद पोही ग्रामे उदावत राज्य वाचनाथ चीर नद्य श्रीरस्तु ॥ श्री ॥

३० ७७४३ अध्यात्मरामायण भाषा

आदि– श्री गुणेसाये नीम ॥ सुरमती नीमो ॥ श्री गीनारामजी मत ॐ जी ॥ श्री रामाये नमा ॥ कथेन अधातम रामायने भाषा नीपत रामहृदय ॥ राज श्रीराजैनघजी सभापीत ।

चौपई– जबं भुव भार भयो दुष्टनतं । तब ही देव गये जाचन प्रभुरं ॥
चिदानद मुनी अदम बानी । परजापते अमनुते ही ठानी ॥ २
तीन सुप्न नन भेरे भगवाना । चीदानद यनकी मब जाना ॥
मेत्र गिरा वानी जु बुचारी । मुनीक ब्रमा नने बीचारी ॥ २

अन्त– दुहा ॥ राम हीरदैको राजैदानीते प्रीतें करतं वुचारं ।
सीय्याराम हीरदै बनैय्या नमे नाहे ब्रीचारै ॥ ६५
राम हीरद भाषा अरथं कीनीं मते वुनमानै ।
सुनी कह रीजे न धारी है करीये मते अपमानें ॥ ६६

ईती श्री अधानैम रामाणं रामै हीरदये भाषा अरथ सपुरन ॥ कथेते म्हाराजे श्रीराजसीघजी ॥ सुभ समुरथं ।

८५ ५२११ कछवाहोकी वशावली

आदि– ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ कुछावाकी वशावली निष्यते ॥

श्रीआदिनारायणतं कवलमं ब्रह्माजी ॥१॥ मारीच ॥२॥ कम्यप ॥३॥ सूर्य ॥४॥ ववस्वान ॥५॥ मनु ॥६॥ इष्वाक ॥७॥ विकुषि ॥८॥ पुरजय ॥९॥

अन्त– महाराजाविराज जन्म नाव मोहोनसिंघ नरवलका राजाको वेटो मो राज पायो । जदि मानसिंघजी नाव पड्यो । मीती पोम वदि ६ स० १८७५ का । राज कीयो महीना ४ दिन ६॥ माहाराजाविराज श्रीमवाई जयसिंघजी मवत १८७० कै साल श्रीजमवायजी पधारघा जाति देवा । सव माज्या साथ पधारी मीती असाट सुदि ८ सवत १८८४ कै साल ।

८७ ७७२० (२२) कपडकुतूहल

आद्य अश खण्डित है । उपलब्ध रचनाका प्रारभ इस प्रकार है—
· ··· ढि पिलंग पर सुदर ढोलियै वाय ॥ १३
मसी जर सु मो मन भयो, प्रीउ ढोलिए वोलाय ।
माल मुहुंगीघे लीजिये, मो माहरइ आवी दाय ॥ १४
तन सपुकी नाडी चणी, कचु वण्यो सुचग ।
रतन जडीत नीरपी , सोनी सुदर अग ॥ १५

अन्त– कचीयो पेम पछेवडो, कीवो सेज तीआर ।
तिण वेला मदिर गई, प्रीउ माणइ तिणि वार ॥ ३१
प्रीआग गगदास सूत, नगर उदैपुर वास ।
कपडकुतूहल कीधा, वणी देहि दुवास ॥ ३२
इति कपडकतुहल सपूर्ण ॥

९६ ४०२० कविकल्पलता

आदि– ॥ द० ॥ अथ श्रीसारस्वृत बावनी लिप्यत ।
ॐकार अपार पार तसू कोइ न लभ्य ।
सवर कर सिरताज मत्र धुरि कवियणभ्य ॥
अरधचद आकार उवरे मीडो जसु सोह ।
ग ध्याव चित जाय तिक तिहुयण मन मोहै ॥
साधक सिध जोगी जती जासु ध्यान अहनिस कर ।
कवि सार कहै ॐकार जप काइ सण भुलो फिर ॥ १

अत– क्षिते मडल क्षिति तिलक सहर पाली पुर साहै ।
गढ मढ मदिर महित वाग वाडा सनमाहै ॥
राज कर जगनाथ सुर सामत र सनायो ।
मानगरे सुसमथ मुजस वसुधा वर तायो ॥
समत सोलनि यासिय आसु सुदी दसमी दिन ।
श्रीसार कवित बावन कह्या साभलिज्यौं साच मन ॥ ५५

इति श्रीकविकल्पलता श्रीसारकृत सपुण । सुभ भूयात ॥ श्री सवत १८८८ रा मती फागुण सुदी १० स श्री श्रागुराजी श्रीवनरामजी । लीपता षु इद्रभाण वाचनारथम् अणदपुरमध्य ।

१०५ ४४१५ (१६) कागदरी नकल

इस गुटकेम पत्र स० ३९८से पत्र स० ४०६ तक चार कागजा प्रम(पत्रो)की नकलें दी हुई हैं जो इस प्रकार हैं—

पहली नकल । आदि– कागदरी नकल ।

छद नराच– मत हत सामर नगर सुघर । प्यारी निज हाथ दिया पतर ।
सूभ बान कथानक सुन्दरिय । छिब गात अनत चित हरिय ॥ १
सरिता सर निसर नीर बहै । नलनि सूभ वास घर र लहै ।
बहु दास निवास न कुप बन । वनिता गनि तीर सुनीर थन ॥ २

अत– दिन जात वथा तुम सग बिना । कबहु सुप होत न आप बिना ।
षहुता ज रजो समचार सब । सु मिथ्या तन मानहु साम कब ॥ १७
न लिषे तुम पत्र सनेह घनौ । पय जावनकी तुम रीन गनौ ।
जुग राम वसु ससि सवत य । सुभ मास तथी सरस चरय ॥ १८ इति ॥

दूसरी नकल– [सवत १८३४]

आदि– कागदरी नकल लीपते । स्वस्त श्रीअमुकानगर सुथाने सुकन सुभ आपमा मेलास बयारी, अमरसप्यारी चदवदनी मृगलोचनी नगनरी सडी जायरी जडी हीयारी हार मेजरा सिणगार प्रीतमरी पीनार चितरी ऊपार हुमतसुपा सदा सुपी ।

अन्त– सब सरपी नारी नहीं, सब सरपी नही वाण।
मब गुण एकणमे नही, दापु चतुर मुजाण ॥ ६२
इती ओपमा लिपणरी, जथाजोग मन जाण।
कहत दुलैमल चुप सु, रुप चुप परवाण ॥ ६३ ॥ सपुर्णं।

तीसरी नकल–

आदि– सिध श्री प्यारी दिसे, जैपुर नगर जठेह।
प्रीतम लिपत वणायकै, नित २ नवलै नेह ॥ १
चदवदनि मृगलोचनी, चिता लक सुचग।
गजगमणि रस जोग है, अतहि जाण सुचग ॥ २
अन्त– वाहू उतर देजो सदा, कागद अधिक उजास।
हित कर लिपजो हेतसु, दसकत अपणा पास ॥ २० सपुरण ॥

चौथी नकल–

आदि– सिध श्री सरवओपमा विराजमान अनेक ओपमानायक गुणनिधान बहोतर कलासुजाण, चवदै विद्यानिधान, सूरज जेहा तेज, चकवा चकवि जिहा हेत, चद्रमा जेहा सितल, रुपा जेहा ऊजला ... ।

अन्त– मत किणहिसु लागजो, नैणाहदो नेह।
धुकै न धुवो नीसरै, जलै सुरगी देह ॥ १८
सजन फलजो फूलजो, वड जु विसतरजो।
नालेरा जु लूवजो, आवा जु फलजो ॥ १९
इति श्रीपत्री सपुर्ण।

२५७ ४९१४ (५४) जोगी रासा

आदि– अथ जोगी रास लीपीते ॥ ॐ नम सीध्येभयो नम ॥
आदिपुरिष जो आदिजगोत्तमु, आदिनाथो।
आदिजुगोत्तमो जोग पयसो, जय जय जय जगनाथो ॥ १
तास परपर मुनिवर हुआ, दीगावर सहिनाणी।
कुदकुदाचरज[1] गुरु मेरै, पाहुजी कहिय कहाणी ॥
अन्त– जोगीह रासो सीपहु श्रावक, दुप न कबहु लहिसो।
जो जिणदासह त्रिविधि हि, सिवहू समरण कीजहू ॥ ४२
ईती जोगीरासो सपुरणमस्तु।

२६१ ५४१८ (५४) टडाणा गीत

आदि– टडाणा टडाणा वे, जियडे टडाणा टडाणा ॥
इस ससारै दुश भडारै, क्या गुण देपि लुभाणा छे ॥
जिन ठग ठगिया नादड कालै, फिर तम जोग पत्याणा छे ॥

---

१ कुन्दकुन्दाचार्य।

अन्त- करि उदिम आपन बल मडौ मोगी अमर विमाणा छे ।
समिति तपाहण दस विधि पूरा निरमल धरम कराणा छे ॥
सुध सरीर सहज लब लावहु भावहु अतर भा(णा) छे ।
जग बूचा तम सुप पावहु वछ पद निरवाणा छे ॥

इति टडाणा समाप्तम ।

३३६ ४६२४ (३) नागदमण कथा (अपूण)

आदि- ॥द०॥ श्रीसारदाय नम ॥ अथ नागल्मणि लिप्यते ॥

दूहा ॥ वलतो सारद विनवु गुणपति करो पसाऊ ।
पवाडा पनगा सरस, जदुपति कीधो जाऊ ॥ १
प्रभू अनेके पाडीया देत वडाचा दन ।
क पालण पोढीया क पय पान करन ॥ २
कोइ न दीवो कानवा सुण्यो न लीला वध ।
आप वधावण उपला, बीजा छोडण बध ॥ ३

अन्त- कलस ॥ सुणें गुणें सम वास, नदनदन अहिनारी ।
समुद्र पार ससार, दोई गोपद अणहारी ॥
अनतर आणद सब वपताप सुणाव ।
भगति मुगति भडार क्रशन मुगताह कराव ॥
रमीया चरित राधारमणि ॥

५३८ ४६०६ (२) राजसभारजन

आदि- ॥द०॥ अथ राजसभारजन लिप्यते ॥
गगाधर सेवहु सदा गाहक रसिक प्रवीन ।
राजसभारजन कहो मन हुलास रस लीन ॥ १
दपतिरति नीरोग तन विद्या सुधन सुगेह ।
जा दिन जाय आनदमें जीतबको फल एह ॥ २

बीचका कुछ उदाहरण—
गाम सहेट चल्यो चहै मुग्धा तिय पिय छल ।
पीसमे कोडी ही जने बागनी सल ॥ ६७
सहन रीति कुन तजि लग काम कनाव साज ।
वाग न मारी मीडकी वेटा तीरदाज ॥ ७०

अन्त- छन्द तीनस गाठ सब व्यवहार सुप देत ।
राज-सभा-रजन सरस कियो रसिकजन हेत ॥ ६७
अन बांन मुनि ससि (१७५६) समा विक्रम सक नभ मास ।
उजल नवमी भृगु दिवस पूरन रस प्रकास ॥ ६८

नृपद भूमि मग्रामपुर, श्रीनृपवर जयसाहि ।
तहि कवि मन सुप्रसन्न अति, मति रतिसो अवगाह ।। ६९
जब लो मुप सज्जन कला, मेरु धराधर धाम ।
तब लो चिर जीवहु रसिक, पढत गुणत गुन नाम ।। ७०
इति श्रीराजसभा-रजन दोहा समाप्त ।
सवत् १७९८ वर्षे मिति पोस वदि १४ शुक्रे लिपिकृत श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

५५० ४८३४ राठोड नाहरखानरो छद

आदि— छद राठोड नाहरपानरो गाडण माधोदासरो कह्यो ।।
आरज्या ।। उप्पन्ना पुरसाणी उडा । पाणी पछा पापर होडा ।
ऐराकीआ रछ्छीस जोडा । नाहरपान समर्प्पं घोडा ।। १
भाडजी केवी मुगलाणी । पासा पैग जिके पुरसाणी ।
वड पाता सुण अवरल वाणी । रेवत रीझ दीयै राजाणी ।। २
अन्त— कलस ।। वहम तेज वहु सफल वहुत मोला वहु भोयण ।
धीरज तेज अनत लोय दीप ववहलोयण ।।
धड विसाल पं करह गात उतगह मैगल ।
पवग वेग विसराल वाजि वीया वेगागल ।।
वरहास वडा वड कवीयणा त्यागी ग्रण हरतै रवै ।
समपीया पान राजानकै कुंप करन्नह अभिनवै ।।
इति नाहरषान घोडारा दातारारी छद सपूरण ।।

६४१४ विक्रमचरित्र (हेमाणन्द रचित)

आदि— ।।ई०।। श्रीसरस्वत्यै नम ।। प्रणम्य देवदेव च वीतरागमुरर्चित ।।
लोकाना हि विनोदाय करिष्येह कथामिमा ।। १
नत्वा सरस्वती देवी स्वेताभरणभूपिता ।
पद्मपत्रविसालाक्षी नित्य पद्मासने स्थिता ।। २
अन्त— श्री विक्रमनें वेताल कथा कही चउवीस उदार ।
सोल छियालै भाद्रव मास । हेमाणद कहै उल्हास ।। ३९
इति श्रीवेतालपचीसी २४ कथा ।
दोहा— वलि विक्रम सीसम गयो, पाछो तिण ही डाल ।
मडवधी काधड कीयो, तव वोलै भूपाल ।। १
विशेष— आगेका अश अपूर्ण है ।

६०३ ६१११ विद्याविलास चोपाई

आदि— ।।ई०।। श्री सरस्वत्यै नम ।।
दूहा— सरसति नित आपो सुमनि, चित हित धरि प्रणमेवि ।
जित तित थित थानक अचल, सोभित दह दिसि देवि ।। १

कविपण ारसा निति धरण दूर हरण अग्यान ।
चरण मरण उपम धरण उपावरण गुण ग्यान ॥ २

अन्त- वाचर गुणवधन सुपदाया श्रीसोमगणि सुपसाया जा ।
दम जिनहरष पुण्य गुण गाया, तीम ढाल सुप पाया जी ॥ १८
हिव राजानि सुण गुरवाणी ॥

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलासचापई सपूण ॥ स० १८२६ वर्षे मिति ग्रासाढ सुदि ७ दिने ।

६११ ७७२२ (१४) वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त

आदि- ॥ श्रीगणनाय न(म) ॥

कवित्त- गडत नक दईवत नर करन ग्रहिराइण ।
वनत थीन ग्रहि वेलत पान वेघत पत्रान्दण ॥
ग्रमरत ग्राम माया तपास रस होइ महा जल ।
परमा वात साजन घात चितत वणागन ॥
ग्रगराइ चाइ णकाणव सालिहातर दिठा सवे ।
निहु राइ तिलक नारियेण तना दाता तो वीरमदे ॥

अन्त- पर परि जिण गिरवर धरयौ मथुरा मारयौ कस ।
रया रायस निरन्द नयवारा जदुवस ॥ १०
श्रीठाकुरारी सापी छ ॥ लिपत मिश्र ग्रानन्दराम ॥ शुभमस्तु ॥

६१५ ७७४३ (४) वेदस्तुति भाषा

आदि- ॥श्रीरामजा॥ ग्रथ वेदस्तुता भाषा लाप्यते ॥ राजश्री राजतीपजा सभापन ॥

छन्द- श्री भागौत दसम सकन्द, वेद सतुत्न भाषा वध ॥
धनी ग्रानद भव वध छेद, ग्रावागमन मिटे भ्रम पेद ॥

चौपई- ग्रागुपन्त्र ग्रह्मा सतुवनाता । वेदव्यासक पुत्र विष्याता ॥
तानक पन्थन म कर । तीनको ध्यान हीरदम धर ॥

अन्त- नानाप्रती पाठ जु जे कर वुघजन क्रम नार ।
सत पद नाहुच पाय है राज प्रम थापार ॥ ६०

ईति श्राउन्मतुी भाषा ग्रथ सपुरण ॥ कयौ म्हाराज श्रीराजसांन्जा ॥

६७५ ४०१० नक्षहोतरी

आदि- ॥श्र०॥ श्रीगणेशाय नम ॥ अथ थान गूवाबहुतरी लिप्यत ।

दूहा- नरि प्रणाम श्री सारदा सयरी वुध परमान ॥
गुर न्धा वार्ता उ करी गायत ल्वी गान ॥ १
विक्रम नगर गुहामला गुण गणतणी ठार ।
हिदू थान ग्र हिदू परम ग्रगी गहर न ग्रौर ॥ २

अन्त- तरत गठ हाम करायो निशु गारिरा पिण थाई । उपरम विष्यमाला पडी । उात म्हार रना गरप हृट शुकाभिरा गगव हार ग्राप्या सार गया ।

वार । इद पुस्तक ममाप्त । दसकत भट्ट शामसुदरका । रगाजीत तत्सुत वलदेव पठनार्थ ॥ यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखित मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥राम॥

३५५   ५३८६   रामायण, युद्धकाड

आदि– (प्रारभिक पत्र अप्राप्त)

मनोहर कवि कलानिधि रच्यौ ।
तहा जुद्धकाडहिं नारदागम सर्ग वत्तीसौ सच्यौ ॥ ३२

अन्त– व्रज चक्रवर्ति कुमार गुनगन गहिर सागर गाजई ।
श्री रामचरन सरोज अलि परतापसिंघ विराजई ॥
तिहि हेत रामायन मनोहर कवि कलानिधिनै रच्यौ ।
तह जुद्धकाडहिं सतरु चौतीस ग्रथ फल वर्णन सच्यौ ॥ १३४

लिख्यते लेपक रामसेवग लिखायत ठाकुरजी श्रीमेदसिहजी तस्य पुत्र पृथ्वीसिंह आत्म-पठनार्थ सवत १८३७ शाके १७०२ प्रवर्तमाने मासोतम मासे उत्यम मासे अश्वेन ।

३६५.   ४६२३ (१)   रूपमजरी

आदि– श्रीगणेशाय नम । अथ रूपमजरी नद कृत लिप्यते ।

दोहा– प्रथम हि प्रणाऊ प्रेममय, परम जोति जो आहि ।
रूप उपावन रूपनिधि, नित्य कहत कवि जाहि ॥ १

अन्त–

दोहा– जदपि अगमते अगम अति, निगम कहति हैं जाहि ।
तदपि रगीले पेमते, निपट निकट प्रभु आहि ॥ ११७

इति श्री नददास कृत रसमजरी ग्रथ सपूर्ण समाप्त ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु । सम्वत् १७२६ चैत्र वदि तृतीया वुधवारे मोकाम रगामाटी सवलसिंघ कुवरस्य पठनार्थ रसमजरी ग्रथ मुरलीधर मिश्रेणमलेखि ॥

३७४.   ६०१६   व्रतकथाकोश

आदि– ॥ दें० ॐ नम ॥ अथ श्री व्रतकथा कोश भाखा लिप्यते ।

चौपई– आदिनाथ वदू जिनरा [य] । कर्म कलक रहित सुपदाय ।
धनुष पच से जाको काय । वृषव लछ्य सोभै अधिकाय ॥ १

अन्त–

छप्पै– श्री जिनद गुण धाम जास वच सुणि चित धरिये ।
श्रावकको आचार पालि कर्मनिसौ लरिये ॥
दान सील तप भाव च्यारि वृप मुल विचारो ।
और सकल परिहारि चहू उत्तम उरि धारो
सुरगादि थान दाइक महा क्रमते सिवपदको कराहि ।
ताते पुस्याल अनिको अवै इनि विनि मनमे किम धरहि ॥ २१

इति श्रीसूरिश्रुतसागर कृत व्रतकथकोशके अनुसारि भापा श्रीपल्य विधानकी

समापिता ॥ मिती मागसिर सुदि १३ पचम्या तिथौ वार वहस्पति वासरे सवत १६२३ का।
श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

४६२ ४०२८ सभासार नाटक

आदि- प्रथम पत्र अप्राप्त
स पथरन भीज पानी कब लौं विचारीय ॥
जिहा वकवाद तिहा अत न सवाद कछु
आप जो न सुधर तो कौनकौं सुधारिये ।
जोप अति जोर तो वताउ एक ठार तोहि
जानीये जगत जोप एक मन हारीये ॥ २६

दोहरा- सब लछन पहिल सुनौ पुण्य सुसगत पाय ।
मन चचनतासू वस नीच सग न सुहाय ॥ २७

अत- सतगुरु साही जो वताव साच मारगकू
साथी सतसग जास चलत ने हान है ।
यहत अरूप कोउ खोट काम कैस तेज-
पुज धाम जाहि जसी ही पहिचान है ।
ताहिम मगन दहको विसर जाय
वदको विचार यहै जान है सुजान है ॥
यहै पम लछिना अनन्य भक्ति मुक्ति यह
यत्र परप्राप्ति विख्यात निरवान है ॥ २७

दोहा- सब विध सब रस गाहियत कहत यहै रघुराम ।
यह नाटिक सम सदा भूपन भेष सुनाम ॥ २८

छप्पय- यह नाटिक जो सुन ताहि हिय फाटिक पुर ।
यह नाटिक जो सुन बुधवल कमत प्रचुर ॥
यह नाटिक जो सुन ग्यान पूरन मन आव ।
नाटिक सुन सुजान परम मनुजको पाव ॥
विख्यात जात निरवानता, जोग ध्यान धर धन लहै ।
पावत परमपुरुष गत, मति प्रमान कवि रघु कहै ॥ २६
इति श्री कवि रघुराम विरचित सभासार नाटिक सपूरणम् ।
सवत गुणकृत वसु ससी तपस्यपक्ष सित जान ।
पक्षति छाया सुत दिवस, ग्रथ सम्पत परमान ॥ १
सुधि विचार सो लिख हू रामचद्र कै मित्त ।
सभासारनाटिक लिख्यो सबन दिखावन चित्त ॥ २
जिसम जिसको सम्बध सदरत्न सामिरन ।
लिख्यो ग्रथ बाचत सुनत करायो जनको मन ॥ ३
॥ श्रारस्तु ॥ सबाय ॥ भद्र भूयात् ति ॥ श्री ॥

४८४ ५८६५ सिंहासन बत्तीसी

आदि– ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ स्यघासन बतीसी भोज प्रबंध हिती उपदेस कवि क्रस्नदास क्रति लिषते ।

छैपा– प्रथम सुमरि गण ज्ञान गणनायक ।
विघ्नहरन मति राय काज सिधिकरण सहायक ॥
येक दंत मय मन ग्रत नहि पाव पाव सुमति गति ।
फरस हथ समरथ देव परतछ अमित गति ॥
कवि क्रस्नदास बदत चरन, ग्रोर सुमति दुस्तर तरन ।
रस सिंधु मोढ विक्रम चरित सु, करित दुरित दुर्गम हरन ॥ १

अन्त– दीनो वरु विक्रमको गोय, सारिवाहन तन दाहन होय ।
तो लगि सो नृप आयो तहा, विक्रम वीर अवि जहा ॥ ४०
चटी वाच तेरे हेत दहयो तन आय . . .

विशेष– इसके पश्चात् पत्र रिक्त है ।



२२–जैनस्तोत्र

३. ४१४६ अन्तरिक्ष पार्श्वस्तव

आदि– श्री अन्तरीक पार्श्वनाथ छन्द लिष्यते ।

दूहा– सारदमाय प्रणमा करी, आपो अविरल वाणि ।
पुरसादाणी पास जिण, गास्यु गुण-मणि-पाणि ॥ १
अद्भुत कौतुक कलियुगे दीसे एह अदभ ।
धरतीथी अधर रहै, सदा अंतरीक थिर थंभ ॥ २

अन्त– कीयो छंद आनंद वृंद मनमांहे आणी ।
साभलता सुपकंद चंद जिम सीतल वाणी ॥
श्रीविजयदेव गुरुराज आज तस गणधर राजै ।
श्रीविजयप्रभ सूरि नाम काम सम रूप विराजै ॥
गणधर दोय प्रणमी करि थुणियो पास असरण-सरण ।
भावविजय वाचक भणे जयो देव जय जय करण ॥ ४६
इति श्री अंतरीक पार्श्वनाथ छंद संपूरण ।

४ ४३४६ अजित शातिस्तव (सबालावबोध) त्रिपाठ

आदि– अजि, अजि असघ भय संति च संत सव गय पाव ।
जय गुरु संति गुंण करे दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १

अंत- जइ इच्छह परम पय अहवा कित्तिसवित्थड भुवणे ।
ता तेलक्कुद्धरणे जिणवयणे फु आयर कुणह ॥ ४०
इति श्रीअजितशांतिस्तव ।

८ ४३६२ एकादश गणधर स्तवन

आदि- गोयम गणहर पढम सयपण ।
तित्थकर वीर जिण पच्मसीम गोत्रन समागउ ॥ इत्यादि ॥ १

अंत- इय समयज्जत्ति सव्वसत्ति नित्त भत्ति वसिया ।
वणास सुदि इग्यारिसि दिनि वार नाहइ थापिया ॥
ए सयलगणहर ए इग्यारसि जे आगहइ भाविया ।
एतवा भणसि भाव सुणसि त लहइ सुख सपया ॥ ५
श्रीप्रभासगणधरस्तव ।

इति श्री एकादशिदिनसम्बंधि श्री एकादशगणधर स्तवन सम्पूर्ण ॥

२० ४०३० कायस्थिति स्तोत्र

आदि- श्री पन्नवणा भगवती माहि थकी उदार करी गीतार्थ पूर्वाचार्य कायस्थिति
नउ स्तवन करइ छइ ।

आदि गाथा—जहतु हन्सण रहिउ कायठिई भीसण भवारन्ने ।
भमिउ भवभय भजणा जिणिदत्तह विन्न विस्सामि ॥ १
जह पहूता जिम ह जिनेश्वर तुह दसण रहिउ ताहरइ आदि ।

अंत- बहु गो घनती वार हिव घणइ पुण्य तणइ
उन्य सासन तुभ मुमइ दीव उदइ ।
ता तस्मातिणि कारणि अकाय नही काया जिहा एहवा जे सिद्ध तेह तउ
पद मुक्तिपद तेहती मपना ह तीथकर द मुनइ ॥ २४
इति श्रीकायस्थितिस्तवनबालावबोध समाप्त ।

२५ ४३६३ गौतम दीपाली का स्तवन

आदि- इन्द्र भूता गउतम भणइ तिसला कुमि निधान ।
शासा पूतनू पामीउ दइ मुभ मुगतिनो दान ॥ १

अंत- देव गुरु मर्त्यिमी सुगती वर अणुसरा ।
सक्म कहि हार गुरु गुण विचारा ॥ ७५
जिन वचन दीप दीपालिका राजती ।
इति श्री गउतम दिपालिकादि स्तवनम् ॥

२६ ४५६६ चतुर्विंशति जिनस्तोत्र

आदि- जाइपप्वमङ्गे महरा नाभेयप्रमुखान् जिनान ।
भारता स्मरुप मदय समवर्ग निवसिकाम् ॥ १

अन्त– स्निग्धा अविग्ना चासौ दिशा दीप्तिश्च अनन्छविभा अनकाना केशाना अन्ता यस्या सा अनच्छविभालकाता ॥

इति श्रीचतुर्विंशतिजिनसक्षेपतो वृत्ति समाप्ता ।

३७   ७४४४ (१)   चौवीसी

इस गुटकेमे निम्न कृतियां हैं—१. आनदघन चौवीसी २ सग्रहणी सूत्र ३ जीवविचार प्रकरण ४ नवतत्त्व. ५ दण्डक प्रकरण ६ सप्तस्मरण. ७ प्रतिक्रमणसूत्र ९ पाच तिथिरी थुई १० स्तुतिस्तवन ११ गौतम रासो १२ स्नात्रपूजादि १३ चौढालिया १४ थूलभद्र नवरसो १५ बार भावना १६ आनदघन बहोतरी १७ पनरै तिथिरी थुई. १८ पचसधि (सारस्वत प्रक्रिया) १९ सिदूरप्रकर आदि स्तोत्रस्तवन ।

६५   ४२९८   पच-परमेष्ठि-नमस्कारार्थ

आदि– श्री जिनाय नम । नमो अरिहताण ।

माहरउ नमस्कार श्री अरिहत भगवंत नइ हुउ । किसा छइ ते अरिहत जीव अरिहते राग द्वेष रूपिया अडरि वइरी जीता अनइ अठारे दोषे रहित । इत्यादि ।

अन्त– माहरउ नमस्कार पचाग प्रणाम त्रिकाल वदणा सदा हुइ ।

इति श्री पचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ सम्पूर्ण ॥

९१.   ४०२५   भक्तामर-स्तोत्र

आदि– इनही पछइ आपणे घरे पाछा आवी राजानी सेवा करिवा लागा पूर्विली रीतइ आदि ।

अन्त– अन इत्यत्तिकरी मानतुग सूरि इ रची, मई इस ताहरा स्तोत्र रूपिणी पुष्पमाला जे कठ कदलि धरइ तेह नह लक्ष्मी स्वयवर वरइ ॥ ४४

इति भक्तामरस्तोत्र-प्राकृतवार्तिकवृत्ति समाप्तम् ॥

१००   ६२७७   भक्तामर भाषा

भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हित हेत ।
जे नर पढे सुभाव सो, ते पावे सिव खेत ॥

इति श्री भक्तामर भाषा सपूर्ण ।

१०१   ७४५०   भक्तामर भाषा आदि १८ कृतियाँ

इस गुटकेमे निम्न कृतियां हैं—१ भक्तामर भाषा हेमराज कृत १–१६ २ चौंसठ योगिनी नाम तथा घटाकर्ण १७–२१ ३ कल्याणमदिर भाषा २२–३२. ४ चैत्यवदन २–४. ५ भक्तामर स्तोत्र ५–१७. ६ कल्याणमदिर स्तोत्र सिद्धसेन कृत १७–२९ ७ लघु शाति २९–३३ ८ अजित शाति ३३–३६ ९ स्तोत्र सग्रह आदि १३ कृतियाँ ३६–८१ १० शक्ति मत्र ८३–८४ ११ पदस्तवन ८४–८९ १२ वसुधारा ९०–११५. १३ सोलह पद ११५–१३० १४ स्नात्र अष्ट प्रकारी नवपद पूजा १३१–१९५ १५ वीस

विहरमान गात १६६ वाँ। १६ अतीत अनागत वतमान चौबीसी १६७-२००। १७ बावन वीर नाम २००-२०२ १८ पदस्तवन (१२ कृतियाँ) २०२-२३२।

११४ ४-४४ वीतराग स्तोत्र

आदि- य परात्मा पर ज्याति परम परमेष्ठिनाम्।
आदित्यवर्ण तमस परस्तात्मनति यम्॥ १

अन्त- तव प्रेष्योऽस्मि दासोऽस्मि सेवकोऽप्यस्मि किंकर।
ओमिति प्रतिपद्यस्व नाथ नाथ पर ब्रव॥ ८
श्रीहेमचन्द्रप्रभावाद्वीतरागस्तवादित।
कुमारपालभूपाल प्राप्नोतु फलमीप्सितम॥ ६
इति वी स्तोत्र आत्मस्तवो विंश प्रकाश॥ २०

१२३ ४१५६ श्रीदेवीछन्द गा चर स्तुति

आदि- सकल सिद्धि दातार पाश्व नत्वा स्तविमह।
वरदा सारदा देवी जगदानददायिनी॥ १

अन्त- इच्छ बह भक्ति भर अन्ल छन्द सध।
या देवी भगवई तु म पसोद होऊ सया सग कल्याण॥ ४५
इति श्री देवीछद सपूरण।

शनि स्तुति—आनदन जग जयो रविसुत सामलवान।
कोइ कवित करी सुभ स्तव तुज गुण को हवें मान॥ १

अन्त- ए मत्र घरी ऊकार उपर सारह। ए मत्र जपीय नर धारह॥
एणी मत्रें उलट धरी विनतडी चीत आणिय॥
रिध वृध सहजें सदा बनी वली एम सनीसर वखाणीय॥ १६
इति शनीसर स्तुति॥ लिपिकर्ता—सुबुद्धिविजय गणी।

१२८ ४५११ शोभन स्तुति

आदि- भ याभोनविबाधनक्तरण विस्तारि कर्मावनी
रभा सामजनाभिनन्दनमहा नष्टा पदा भासुर।
भक्तया वं दितपादपद्मविदुषा सपादय प्रोज्झिता (त्यिता)
रभा सामजनाभिनदन महा नष्टापदा भासुर॥ १

अन्त- सरभसनातनाविनारीनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्रमाभोरुह।
परमवसुतरागजारावसन्नाशितारातिभाराजित भासिनी हारतारावलक्षा मम।
क्षणरुचिरुचिरोच्चचलटामकटारूढकठोद्भटे सस्थिते।
सकदा भव्यलोक त्वमवाविवै परमव सुनरां गजारावमग्नासितारातिभा
राजिते भासिनी हार तारावलग्ना मम॥ ६६॥ २४॥ श्री शुभ भवतु॥

१३० ७२७८ शोभन स्तुति

आदि– आसी[द्]द्विजन्माखिलमध्यदेशप्रकाशसाङ्काश्यनिवेशजन्मा ।
अलव्धदेवर्षिरिति प्रसिद्धिं यो दानवर्षित्वविभूषितोपि ॥ १
शास्त्रेष्वधीती कुशल कलासु बन्धे च बोधे च गिरा प्रकृष्ट ।
तस्यात्मजन्मा समभून्महात्मा देव स्वयभूरिव(वा) सुदेव. ॥ २
अज्जायतास्यश्लाघ्यस्तनूजो गुणानच्यपूज ।
य शोभनत्वशुभवर्णभाजा ननाम नाम्ना वपुषाप्यधत्त ॥ ३
कातन्त्रचन्द्रोदिततन्त्रवेदी यो बुद्धबौद्धार्हततर्कतत्त्व ।
साहित्यविद्यार्णवपारदर्शी निदर्शन काव्यकृता बभूव ॥ ४
कौमार एव क्षतमारवीर्यश्चेष्टा चिकीर्षन्निव रिष्टनेमे ।
य सर्वसावद्यनिवृत्तिगुर्वी सत्यप्रतिज्ञो विदधे प्रतिज्ञाम् ॥ ५
एता यथामति विमृश्य निजानु (नु) जस्य
तस्योज्वला कृतिमलकृतवान् स्ववृत्या ।
अभ्यर्थितो विदधता त्रिदिवप्रयाणा
तेनैव साप्रत कविधर्नपाल नामा ॥ ६

अन्त– इति श्रीशोभनदेवाचार्यकृतचतुर्विंशतितीर्थंकरस्तुनिवृत्ति, कृतिरिय तस्यैव ।

१३२ ६८३६ स्तम्भ पार्श्वस्तुति आदि

इस गुटकेमे निम्न ५ कृतियाँ है—१ स्तभ पार्श्वस्तुति, २ आत्मोपरि सज्झाय, ३ शातिजिनस्तवन, दानशीलादि चौढालियो, ५ जम्बूकुमार सज्झाय ।

१३४ ६१६० स्तवनम्

पुष्पिका के अन्तिम २ श्लोक
पूर्व पाटलिपुत्रमध्यनगरे भेरी मया ताडिता
पश्चान्मालवसिंधुटक्कविषये काचीपुरे वैदुषे ॥
प्राप्तोह् कलहाटक बहुभटैर्विद्योत्कटै सकट
वादार्थी विचराम्यह नरपते सा(शा)र्दूलवत्क्रीडितम (क्रीडितुम्) ॥ १
काञ्च्य नग्नाटकोऽह् मलमलिनतनुर्लाम्बुसे पाण्डुपिडु ।
पुड्रोड्रे शाकभक्षी दशपुरनगरे मिष्टभोजी परिव्राट् ॥
वाराणस्यामभूवं शशिकरधवल पाडुरागस्तपस्वी ।
राजन् यस्यास्ति शक्ति स वदतु पुरतो जैननिर्ग्रथवादी ॥ २
इति समतभद्रस्वामिविरचित स्तुवन ॥छा॥

१३६ ६८२५ स्तोत्रसंग्रह

इस गुटकेमे निम्न ५ स्तोत्र है—१ नवकार रो स्तवन, २ श्री महावीरजी रो स्तोत्र, ३ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र, ४ श्रीशातिनाथ स्तोत्र, ५ सगीत बध नमस्कार, ये पाच स्तोत्र हैं ।

२३–जैनागम

२७ ४३५८ आवश्यकसूत्र सबालावबोध

आदि– नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाण नमो लोय सव्वसाहूणम ॥ १

अंत– समाईय पोसह सठियस्स जीवस्स जाइजो कालो ।
सो सफलो बाधवो ससो ससार फल हउ ॥ १

इति श्री आवश्यक सपूर्णम

४२ ४४१८ उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध)

आदि– संजोगाविप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणय पउ करिस्सामि आणुपुव्व सुणेहमे ॥ १

अंत– श्रीवर्द्धमानस्वामी परिनिवृत निर्वाण प्राप्त कि० ।
उत्तराध्ययनभवसिद्धिका भव्यजीवा तेषा समन्तात ।।८२ छ।।
इति षटत्रिंशत श्रीउत्तराध्ययनबालावबोध समाप्त ॥

५० ४३५७ उत्तराध्ययनावचूरि

आदि– श्रीवर्द्धमानमानम्य बृहद्वृत्त्यनुसारत ।
श्रीउत्तराध्यायनानामवचूरि लिखाम्यहम् ॥ १

अंत– योग उपधानादिरुचितव्यापारस्तदानतिक्रमेण यथायोग गुरु० सचित्तप्रसन्नता
स्याद्धतोरधीयत न तु प्रमादं कुर्यादिति भाव ।

इति श्रीउत्तराध्ययनावचूरि ॥

८१ १०६ कल्पसूत्र (सस्तबक)

आदि– ॐ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणमित्यादि ।

अंत– श्रीमत्तपागणाधीशश्रीदेवविमलप्रभो ।
श्रीसोमविमलाह्वेन टबार्थो लिखित स्फुट ॥
टबार्थ कल्पसूत्रस्य सूत्रनिष्पत्य हेतवे ।
बृहद्वृत्त्यनुसारेण सशोध्य सवधीयत ॥

१२१ ७४४५ प्रतिक्रमणसूत्र आदि

१ प्रतिक्रमणसूत्र । २ जयतिहुयणस्तोत्र । ३ श्रावककरणीस्वाध्याय जिनहर्षकृत ।
४ शत्रुञ्जयरास-समयसुन्दरकृत । ५ गोतमरास । ६ मुनिमालिका-चारित्रसिंहकृत ।
७ गोतमस्वामिस्तवनादि । ८ पानपानभाषाचोपई—लक्ष्मीवल्लभगणिकृत ।

१२२ ७४४६ प्रतिक्रमणसूत्र आदि

१ प्रतिक्रमणसूत्रादि । २ स्तुति-स्तवन । ३ शत्रुञ्जयरास । ४ गोतमरासो ।

५ स्तवनादि ८ । ६ जीवविचार, प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित । ७. नवतत्त्वप्रकरण । ८ विचारषट्त्रिंशिका । ६ बावीन परिगह छंद । १० बारहभावनाम्नाध्याय ।

१२७ ७३४५ पञ्चव्याकरणावृत्तीका

अन्त– निवृ ति कुलनभस्तलचन्द्रद्रोणाख्यसूरमुख्येन ।
पण्डितगणेन गुणवत्प्रियेण सशोधिता चेयम् ।।

१५६ ७२२३ समवायावृत्ति

वृत्तिरचनाकाल – एकादशशतेष्वथ विशत्यधिकेषु विक्रमसमानाम् ।
अणहिलपाटकनगरे(रे) रचिता समवायटीकेयम् ।।



२४–जैनप्रकरण

७ ७०१६ आगमसारोद्धार भाषा

यह और सख्या ७३३१ वाली प्रति मिलती है, किन्तु इसमे निम्न दोहा अन्तमे विशेष है—

करयौ इहा सहाय अति, दुर्गदास शुभ चित्त ।
समभावन निज मित्त को, कीनों ग्रन्थ पवित्र ।। १२

१६ ४३०२ ऋषभपचाशिका

आदि– ॐ नमो वीतरागाय नम ।।
भत्तिभरनमिरसुरवरासिरीड मणिप्पति कतिकयमोहो ।
उसभाइ जिणवरिंदाण पायपकेरुहे नमिमो ।। १
निज्जिय परीसहचमु सभयुव सग्रवग्ररिउपसरम् ।
सपत्तकेवलिसिरिं सिरिवीरजिणेसर वदे ।। २

अन्त– इयन्भाणअपलीवियकम्मिघण वालबुद्दिणा विमय ।
भत्ती इय उभयभयसमुद्दवो हिच्छवो हि फलम् ।। ५०
इति ऋषभपचाशिका समाप्ता ।।

६७. ४५६६ धर्म्मोपदेशश्लोका

आदि– दृष्ट्वा शत्रुञ्जय तीर्थं नत्वा रैवतकाचलम् ।
स्नात्वा गजपदे कुण्डे पुनर्जन्म न विद्यते ।। १

अन्त– इति श्रीपुराणे कथिता श्लोका ।

८४ ७२०० प्रबोधचिन्तामणि

अन्त– यमरसभुवनमितादे स्तम्भनकाधीशभूषिते नगरे।
श्रीजयशेखरसूरि प्रबोधचिन्तामणिमकार्षीत ।।

८६ ७३४७ प्रवचनसारोद्धार सटीक

प्रशस्ते– श्रीमानबुदपवतप्रभुरभूत भूमान् सुरत्राणभू
मत्या हा भुवि राजसिंह इति यो रामावतार पर ।
श्रीमानक्षयराजराजतिलक प्राद्यत्प्रतापाल
स्तत्पुत्रोद्धुरभाग्यभूमिरधुना बालोऽपि पाति क्षितिम ।
तस्य श्री मत्पुत्रद्वयीसयुतो
राज्यन्तम्भनिभ समस्तभुवनप्रख्यातकीर्तिव्रज ।। २
यात्रा श्रीविमलाचलस्य महता सघेन साडम्बर
द्व धाभूततपागणस्य सुचिरादद्वरिवान्वयकृत ।
सन्धान च मिथा विधाय भतवान यो बोधिलक्ष्म्याङ्कित
स्वात्मान सुकृत श्रिया च यशसा द्यावापथिव्यन्तरम ।। ३
तेन श्रीतपगच्छनायकगुरुश्रीहीरसूरीशितु
सघे श्रीमदुपासकेन नगरे श्रीरोहिणीनामनि ।
वर्षे विक्रमतो रसावसुरसक्ष्मामम्मिते वत्सरे (१६८१)
चित्कोशे स्वकृते चिर विजयतामषा गहीता प्रति ।। ४

१११ ४०८५ मङ्गलकलशचोपाई

आदि– श्रीगुरुभ्यो नम ।

दुहा– प्रह उठी नीत प्रणमीयइ श्रीरिसहसरदव ।
नाम थकी नवनिध मीलइ सिवपद आपइ सव ।। १
मगलक्लसइ दानसु पामि परधल रिद्ध ।
राजलीना सुख भोगवी दव तणी गति लीध ।। ७

अन्त– तस सेवक नित्य हपगणि रे सदा मन आणद ।
तत शिष्य लक्ष्मीहप कहै रे, सत्र नरनाव द ।। ५ ।। दा०
सहेर कावदीनयर भली रे रह्या तिहा चौमास ।
श्रावक सदा सुखिया वस रे पुण्य करी जम वास ।। ६ ।। दा०
साभलवो करवा भावसू रे मगम आणी विनोद ।
धरम करे ते सुख लहै र उछ एह प्रमोद ।। ६ ।। दा०
इति श्रीमगलकलशचउपी सपूर्ण ।।

१२१ ४२६६ विंशतिस्थानकविचारामृतसग्रह

प्रशस्त– विंशतिस्थानकाचारविचारामृतसागर ।
गच्छेशश्रीजयचन्द्रसूरिशिष्येण निर्मित ।। २२

वीरग्रामाख्यपुरे युग्मव्योमेन्दुपञ्चभि ।
प्रमिते वत्सरे हर्षेज्जिनहर्षेण साधुना ॥ २३
ग्रन्थस्यास्य पवित्रस्य वाचनश्रवणादिभि. ।
लभन्ते प्राणिन प्रौढा श्रीजिनेश्वरसम्पदम् ॥ २४
ग्रन्थोऽष्टाविशतिशतानुमित सर्वसख्यया ।
जीवेदय बुधश्रेणिवाच्यमानो निरन्तरम् ॥ २५
इति श्रीविंशतिस्थानकविचारामृत सग्रह सम्पूर्ण ॥

१२२ ७४७७ विचारामृतसग्रह

ग्रन्त– सूरि श्रीकुलमण्डनोऽमृतमिव श्रीग्रागमाम्भोनिधि
श्चक्रे चारुविचारसङ्ग्रहमिम रामाब्धिशक्राब्दके (१४४३) ॥

१२७ ४०२६ शीलोपदेशमालाबालावबोध

ग्रन्त– इति श्रीशीलोपदेशमालाबालावबोध श्रीखरतरगच्छमेरुसुन्दरोपाध्यायविरचित धनश्रीकथा समाप्ता । हिव ग्रथकार ग्रन्थनी समाप्ती भणी ग्रापणउ नामगर्भित मगलगाथा कहइ

ईय जईसिंहमुणीसरविनेयजयकित्तिणा कय
एय सीलोवएसमाल ग्राराहिय लहइ बाहि मुहा ॥ ११५

व्याख्या—इणइ पूर्वोक्त प्रकारि करी जयसिंह सूरि तेहनउ विनीत शिष्य शिष्य जयकीर्तिमुनि तीणइ ए शीलोपदेशमाला प्रकरणरूप मूलसूत्र कीधऊ । इति श्रीशीलोपदेशबालावबोध प्रकरण समाप्तम् ॥ ग्रन्थाग्रन्थ ६२५० ॥ सैलानागाब्धिचन्द्रो, वृद्धमास त्रयोदशी । कृष्णपक्षे रविपुत्रो ग्ररुणोदयजिनपूजनम् ॥ १

१४२ ४३५६ सग्रहणीबालावबोध

ग्रादि– श्रीपार्श्वनाथ फलवर्द्धिकाख्य गुरू श्च श्रीमज्जिनदत्तसूरीन् ।
गीर्देवता भाष्यसुधासमुद्र क्षमाश्रय श्रीजिनभद्रनाम्ना ॥ १

ग्रन्त– इति श्रीवाचनाचार्यश्री श्रीश्रीशिवनिधानगणिविरचिते सग्रहणीबालावबोधे सामान्याधिकार समाप्त । इति श्रीलघुसग्रहणी बालावबोध समाप्त ॥

१४५. ४००४ संग्रहणीसूत्र (संघेणनो रासछद)

ग्रादि– दशमइ ग्रह सातमीइ चौदश तर ग्राटमइ । ग्रधिके एकेक तिहा थी तिमइ । २३॥

ग्रन्त– (ढाल एह) ग्रर्थ– निरुपम ग्रमृत उपम सुण्यो श्रवणे सुख करी,
विचार करता चित्त धरता कर्मकोडिना दु ख हरे ।
ता रहु रास प्रकास उत्तम मेरू हू शशि दिणयरू ,
शासना देवी पसाउलि श्रीसघ चतुर्विध जय करू ॥ ५५०

इति श्रीसग्रहणीसूत्रे परिपर्णता नाम सप्तमोल्लास ॥ श्लोक सख्या ग्रन्थाग्र ॥ ६४१

१४६ ४०३१ संग्रहणीसूत्र सस्तबक

अन्त- मलिहारि हमसूरीण सीस लसण सूरिणा रइय।
रुघयणिरयगमेय नन्न वीरजिणतिच्छ ।। ३०

इति श्री संग्रहणीसूत्र संपूर्णमिति।

१६० ६२०३ सम्मेदशिखरमाहात्म्य

ग्रन्थान्ते पुष्पिका- इति श्रीभगवल्लोहाचार्यानुक्रमेण श्रीभट्टारकजिनेन्द्रभूषणोपदेशा
च्छीमद्दीक्षितदेवदत्तक्र(कृ)ते श्रीसमदसिखरिमाहात्म्ये समाप्तिसूचको नाम
एकविंसतिमोऽध्याय ।। २१

१६२ ७२१७ समाधिशतकटीका

अन्त- तुरङ्गदृष्टितत्त्वभूमिसयुते (१७२७) सुवत्सरे,
तपस्यशुक्लपञ्चमीदिने च तक्षके पुरे।
समुद्धृत सुपुस्तक समाधिसाधिताग्रयम्
सुवादिराजधीधनेन धारित स्वधीगहे।।

१७१ ५९११ हरिवंशपुराण

अन्त- इत्यरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ गुरुपादकमलवर्णनो नाम षटषष्टितम सर्ग।

विशेष- श्रीवर्द्धमानपुर श्रीपार्श्वालय नन्नराजवसतौ निर्मितम।

++++++++++++

* श्री *

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

य

र

श

ह

++++++++++

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २

परिशिष्ट ३



इन्द्रगढ़ पोथीखाना

ग्रन्थ सूची



१६६० ई०

इन्द्रगढ़ का हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रह

राजस्थान सरकार के आदेश स० २६१, दिनाक ४-८-५६ ई० के अनुसार इस विभाग की ओर से इन्द्रगढस्थित पोथीखाने का निरीक्षण किया गया। ग्रन्थो की अस्तव्यस्त स्थिति की जानकारी प्राप्त होने पर राज्य सरकार से उक्त सग्रह को इस सस्थान के सरक्षण मे प्राप्त कराने का प्रस्ताव किया गया। तदनन्तर राज्य के पत्र स० एफ ६ (६२) एज्यू वी ५६, दिनाक २४-१०-५६ ई० के अनुसार अनुमति प्राप्त होने पर इन्द्रगढ से उस सग्रह को इस विभाग मे प्राप्त कर लिया गया।

ठिकाना इन्द्रगढ (कोटा) का पोथीखाना विद्याप्रेमी महाराजा श्री शिव-सिहजी के समय मे 'सरस्वती भडार' के नाम से स्थापित किया गया था। महाराजा शिवसिह स्वय अच्छे विद्वान् सुकवि एव विद्याप्रेमी थे। इनके द्वारा निर्मित कितने ही ग्रथ उपलब्ध होते हैं जिनमे से कुछ इस सग्रह मे भी प्राप्त हुए हैं। शिवसिहजी के सुपुत्र महाराजा हाडा सग्रामसिंह अपने समय के एक आदर्श साहित्यकार नरेश हुये हैं। ये वडे ही विद्यारसिक एव सुकवि थे। अच्छे-अच्छे पडितो को पुरस्कृत करना एव ग्रन्थरचना करते-कराते रहना इनका व्यसन था। इनके द्वारा निर्मित सौ से भी अधिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं जिनमे से भी अधिकांश इन्होने अपने ठिकाने मे शिला-मुद्रणालय की व्यवस्था कर मुद्रित करा लिये थे, जो अब प्राय अप्राप्त हैं। उक्त हाडा सग्रामसिहजी के समय मे इस सग्रह की दशा अवश्य अच्छी रही होगी, यह स्वत. अनुमेय है। इनके उत्तराधिकारी महाराजा सुमेरसिहजी के नि सतान अवस्था मे अकाल ही काल-कवलित हो जाने पर इस सग्रह की दुर्दशा होने लगी और गन्थ भी इतस्तत नष्टभ्रष्ट एव जीर्ण-शीर्ण होने लगे। जिस समय इस सग्रह को देखा गया उस समय यह ठिकाने की सम्पत्ति के रूप मे रखा हुआ था। वहुत से ग्रन्थ गढ मे धूल मे दवे हुये जीर्ण-शीर्ण, कीट-विद्ध, दीमक-वर्षादि से क्षतिग्रस्त अवस्था मे पडे थे जिन्हे प्राप्त करके इस विभाग के सग्रहालय मे व्यवस्थित-रूप मे सशोधको के उपयोगार्थ रखा गया है। सम्प्रति इस सग्रह मे २०६ हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं। इनमे वहुत से ग्रन्थ हाडा सग्रामसिह एव उनके पिता महाराजा शिवसिहजी के रचे हुये हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छपे हुए उर्दू ग्रन्थ भी प्राप्त हुये हैं।

राजवशीय साहित्यकार हाडा सग्रामसिह की ओर, जितना चाहिये उतना, अभी विद्वानो का ध्यान नही गया है। उक्त सग्रह की पुस्तको की प्रस्तुत सूची विद्वानो एव सर्वसाधारण की जानकारी और उपयोग के लिये प्रकाशित कराई जा रही है।

—मुनि जिनविजय

परिशिष्ट ३

इन्द्रगढ पोथीखाने से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
१	अलंकारमञ्जरी	सग्रामसिंह	हिन्दी	रसालकार	३२	१६११	त्रिमल्लभट्टकृत अलकार मञ्जरी का भावानुवाद
२	शालिहोत्र		राजस्थानी	आयुर्वेद	१३२	१८६५	लि क गुमानीसाह लि स्था इन्द्रगढ़
३	हनमन्नाटक सटीक (रत्नमञ्जूषा टीका)	मू हनुमत्कवि, टी मोहन दास माथुर चतुर्वेद	सस्कृत	काव्य	१३०	१८वीं श	
४	मधुमालती चोपई	चतुर्भुजदास	हिन्दी	,,	२२२	१६वीं श	कामदारी लिपि आरम्भ में स्वप्नावलि के ५ पत्र हैं। पद्य सख्या १४५४
५	छन्द कौस्तुभ	सग्रामसिंह	,,	छन्द शास्त्र	४३	१६३४	लि क वन्शीधर गुजराती
६	सभाप्रकाश	हरिचरणदास	,	रसालकार	७६	१६२३	
७	पृथ्वीराजरासो (पद्मावती समय)	चन्दवरदायी	,	काव्य	७४	१८२६	लि क चनराम ब्राह्मण लि स्था किला रणस्तम्भवर
८	हिकमतग्रन्थ		फारसी, हिन्दी	आयुर्वेद	६४	२०वीं श	हिकमत के फारसी भाषा के नुस्खे नागरी लिपि में लिखे हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
९	रूपकप्रभाकर	सग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	२८	१९वीं श.	
१०	वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी	,,	८५	१९२(?)	
११	पुरुषपरीक्षा	विद्यापति	संस्कृत	कथा	८७	१९१२	शिवसिंहनृपतिकारिता
१२	नाममञ्जरी	नन्ददास	हिन्दी	कोष	५८	१९१४	आदि मे कुछ स्फुट कवित्त लिखे हैं।
१३	(क) हरिरस	ईसरदास	राजस्थानी	काव्य			चारों कृतियों के कुल ५८ पत्र हैं।
	(ख) नीसाणी विवेकवार्ता		,,	,,			
	(ग) नीसाणी ईसरदास		,,	,,			
	(घ) सूरदासके पद		हिन्दी	,,			
१४	सिखनख शृंगार सटिप्पण	बलभद्र	,,	,,	१५	१९२३	
१५	रसतरगिणी	शम्भुनाथ मिश्र	,,	रसालंकार	४१	१९२४	अन्तिम प्रशस्ति में गुलाब कवि (अलवरवासी) ने स्वयम् को ग्रन्थकर्त्ता बताया है।
१६	रूप(क)रत्नावलि	सग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	१२	२०वीं श	
१७	रसार्णव	सुखदेव (?)	हिन्दी	कार	५७	,,	अपूर्ण, लि. क धाभाई लक्ष्मण, शिवसिंहराज्ये
१८	केसोदासकी वाणी	केसोदास	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	३–२५४	१८८८	लि क भवानीराम शिवसिंहराज्ये
१९	काव्यरसायन	देवदत्त कवि	हिन्दी	अलंकार	७८	१९३१	लि क रामवल्लभ गुजराती
२०	(क) जनकजुहार		राजस्थानी	काव्य	१–४	१९२९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ख) सुजमलरासो		राजस्थानी	काव्य	४-७	१६२६	
	(ग) कृष्णकान्तचरित्र				८-११		
	(घ) तारातम्बोलको विस्तार			इतिहास	१२वाँ		
	(च) कोटाके महाराजाओं की सूची		„	,	१३वाँ	,	
२१	पाण्डवयश इन्दुचन्द्रिकाटीक (रसाल बोधिनी)	मू स्वरूपदास टी रसाल	हिन्दी	काव्य	१४२	१६१७	लि क वगसीराम
२२	(क) विज्ञानसागर		राजस्थानी	वदान्त	१-११	१६११	
	(ख) गङ्गास्तुति		,	स्तोत्र	११-१३		
	(ग) आश्चर्यनिधान		,	वेदान्त	१-६		
	(घ) भगतिचिन्तामणि		,	,	६-३२	,	
	(च) चौदहरतन खल		,		३२-५		
२३	पृथ्वीराजरासो	चन्दवरदायी	हिन्दी	काव्य	३१६	१६वीं श	सुलिखित प्रति
२४	(क) कबीर की साखी		राजस्थानी	सन्तसाहित्य	१-४	१८३६	लि क खुशालपाण्ड
	(ख) हरिवंशपुराणभाषा		„	काव्य	१-५७	„	
२५	(क) रामचरित	तुलछीदासदादूपन्थी	„	,	१-१५४	१६वीं श	
	(ख) सुदामाजी की बारहखडी			„	१५४-१६२	„	
२६	(क) कविकुलकल्पतरु	चिन्तामणि	हिन्दी	रसालंकार	१२-१८	२०वीं श	आद्य ११ पत्र अप्राप्त, अपूर्ण
	(ख) सूरजमलप(पि)गल	सूरजमल(?)	,	छन्द शास्त्र	१८-२२		अपूर्ण
	(ग) सभाप्रकाश (दम्मोल्लासान्त)	हरिचरणदास	,	रसालंकार	१-२४	१६२६	लि क दीक्षित वद्धिचन्द लि स्था इन्द्रगढ अपूर्ण
	(घ) रघुनाथरूपक मरुधरदेशभाषा	कविमछ	राजस्थानी	काव्य	१-५	२०वीं श	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिसमय	विशेष
	(च) पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका तृतीय-मयूखान्त		हिन्दी	रसालकार	१–१२	२०वी श.	
	(छ) कविप्रिया	केशवदास	,,	,,	१२–३६	,,	अपूर्ण
	(ज) साहित्यानन्द, षोडशस्कन्धान्त	ग्वालकवि	,,	,,	३७–२५३	,,	
२७	(क) इश्कचमन		,,	काव्य	१–१४	,,	अपूर्ण
	(ख) राजनीति कवित्त	देवीदास	,,	नीति	१–३५	,,	
	(ग) स्फुटकवित्तसग्रह		,,	काव्य	१–७	,,	
२८	रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड	गो तुलसीदास	,,	,,	१३३	१८६८	लि. क. लाला खुमानसिह
२९	(क) गुरुपरिचय		,,	सन्तसाहित्य	१–७५	२०वीं श.	'श्रीगुरु बलदेवजी शिक्षा' व 'श्रीदुर्जनगुरु शिक्षा' आदि विभिन्न भाग हैं।
	(ख) ग्रन्थपरिचयअष्टाग		,,	,,	१–६६	,,	
३०	फुटकर गजल		,,	काव्य	८	,,	
३१	(क) धनञ्जयकोष (नाममाला) द्वितीय परिच्छेदान्त	धनञ्जय	सस्कृत	कोष	४–१५	१७५१	लि. क प दयाराम, गुटके के आदि व अन्तमे स्फुट कवित्तादि है तथा दोनो कृतियो के मध्य छत्रबन्ध कवित्त आदि हैं।
	(ख) पृथ्वीराजरासो (नाहरराय समय	चन्दवरदायी	हिन्दी	काव्य	१–१३	१७६०	लि क. चारण विहारीदास
३२	विहारीसतसई लालचन्द्रिका टीका	कवि लाल	,,	,,	५४	१९वी श	अन्तमे नृपस्तुति आदि है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
३३	गीतावली (कवितावली)	मोहनराय	हिन्दी	काव्य	३०६	१८८०	शिवसिंहजी द्वारा लिखाये गये गीत, लि क गुजराती माधाता' लि स्था इन्द्रगढ़
३४	रसमहार्णव	संग्रामसिंह	,	रसालंकार	१०६	१९२६	लि क गुजराती वंशीधर
३५	चन्द्रालोकटीका (रसमयूख)		राजस्थानी		३८	१९वीं श	अपूर्ण
३६	भक्तिभूषण	संग्रामसिंह		योग(भक्ति)	४०	१९२७	लि क गुजराती वंशीधर
३७	(क) रागचमनचौतीस्यो	,	राजस्थानी	काव्य	१–१२	२०वीं श	
	(ख) शृंगारतिलक	,	हिन्दी	रसालंकार	१–५	,	
	(ग) हठप्रदीपिका			काव्य	१–६		
	(घ) स्फुट कवित्त	ग्वालकवि			१–७		
	(च) राधाष्टक			,	८–११	,	
	(छ) सितारसिद्धान्त	संग्रामसिंह		संगीत	१२–८१	,	
३८	रामचन्द्रिका	केशवदास	,	काव्य	१५५	,,	अपूर्ण
३९	(क) चेतनसिद्धान्त		,	सन्तसाहित्य	२	,	,,
	(ख) कविप्रिया (चित्रालंकारप्रकरण)		,	रसालंकार	१–१२	१९०६	
	(ग) वृत्तरत्नाकर(द्वितियाध्यायान्त)	केदारभट्ट	संस्कृत	छन्दशास्त्र	१३–२५	२०वीं श	
	(घ) सत्यनामप्रकाश	कबीरदास	हिन्दी	सन्तसाहित्य	८८	,	
४०	वृन्दावनमाधवकथा (चारो मिलन)		,	कथा	१–२४	१८११	लि क लाला छेदीराम
४१	स्वरोदय सटीक		संस्कृत हिन्दी	ज्योतिष	१–१८	२०वीं श	अपूर्ण
४२	(क) निशानी (विवेकविचार)	केशवदास गाडण	हिन्दी	काव्य	१–२०		

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र सख्या	लिपि समय	विशेष
	(ख) स्फुट साखियां (कवित्त आदि)		हिन्दी	काव्य	२०–२५	२०वीं श	
	(ग) गुणनन्दास्तुति	ईश्वरदास	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	२५–४८	,,	अन्त में गीत व भौंरगीता हैं
	(घ) ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	हिन्दी	,,	४१–८१	,,	
	(च) गजल, कवित्त, गीत आदि का संग्रह		,,	काव्य	८१–६४	,,	
	(छ) गुरुस्तुति, गोरखगणेशज्ञानगोष्ठी ग्रन्थ	गोरखनाथ	,,	सन्तसाहित्य	६४–६६	,,	अन्त के २२ पत्रोंमें कबीर, नामदेव, मीरां, सूर आदि की साखिया व दोहे हैं
	(ज) निसानी, केशवदास गाडण चारण की		राजस्थानी	काव्य	११८–११६		
	(झ) प्राणशांकली		,,	,,	१२०–१२१		
	(ट) शंकावलि		,,	,,	१२१–१२२	,,	
	(ठ) डूंगरसी बागडी को गीत		,,	,,	१२३–१२४	,,	
	(ड) वज्रशूच्युपनिषद्	शंकराचार्य	संस्कृत	वेदान्त	१२५–१३०	१८८२	आगे पत्र १५४ तक विभिन्न पद आदि हैं तथा कुछ औषधियों के योग हैं, लि. क. 'निहाल'
४३	विहारीसतसई टीकात्रय					१६२४	
	(क) कृष्णचन्द्रिका	कृष्णकवि	हिन्दी	काव्य	१२३–२७६	,,	र का. १७८२
	(ख) हरिप्रकाश	हरिकवि	,,	,,	,,	,,	र का. १८३४

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ग) अमरचन्द्रिका	बलदेव	हिन्दी	काव्य	१२३–२७६	१९२४	र का १८७३
४४	(क) सदयवत्ससावलिंगरी बात		राजस्थानी	वार्ता	१–७२	२०वीं श	
	(ख) पन्ना वीरमदेकी बात		,		१–६२	१९१४	लि क चि नूरीलाल
४५	डिंगल ग्रन्थ	संग्रामसिंह		काव्य	२७	१९३०	
४६	कुलप्रकाश (हाडावंश के खरड)		"	इतिहास	६४	२०वीं श	
४७	शृंगारगुड़ो	संग्रामसिंह	,	रसालंकार	७	१९३३	
४८	(क) भाषाभूषणटीका	मू जसवन्तसिंह टी हरिचरणदास	हिन्दी		४१	१९३०	लि क वंशीधरगुजराती
	(ख) कविप्रियाव्याख्या (कविप्रियाभरण,	मू केशवदास टी हरिचरणदास	,		२४२	१९२९	लि स्था इन्द्रगढ़
	(ग) पिंगलकाव्यविभूषण	वंशी सुमनेश		छन्द शास्त्र	१०२	१९१२	
	(घ) प्रबाष्टक नीति	विश्वनाथसिंहदेव	,	काव्य	१०३वां	२०वीं श	
	(च) पद्यामततरंगिणी	भास्कर अग्निहोत्री	संस्कृत		१–२७	१९३०	लि क वंशीधर गुजराती ब्राह्मण लि स्था ग्राम सुनमानपुरा
	(छ) काव्यरसायन	देवदत्त	हिन्दी	रसालंकार	१–४	२०वीं श	प्रति कीटविद्ध जीर्णशीर्ण
४९	हरिरस	बारहठ ईसरदास		काव्य	१–१२		
५०	बिहारीसतसई	बिहारीलाल		,	६८	१७८९	आगे पत्र ८५वें तक आयुर्वेद संबंधी कुछ स्फुट योग हैं। लि स्था इन्द्रगढ़

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
५१	शकुनावली		हिन्दी	ज्योतिष	६	२०वी श.	अन्तमे १८ पत्रोमे कुछ दोहे हैं
५२	(क) गीतगोविन्द	जयदेव	संस्कृत	काव्य	१–३८	,,	
	(ख) भजन-संग्रह	चन्द्रसखी मीरा आदि	हिन्दी	,,	१–५०	,,	
	(ग) फुटकर कवित्त		,,	,,	१–३४	,,	
५३	रामचरितमानस (बाल, अयोध्या, लंका व उत्तरकाण्डके स्फुट पत्र)	गो तुलसीदास	,,	,,	१२४	१८८४	अपूर्ण, बा का. के केवल २ पत्र (३१वा व ३२वा है) इसी प्रकार अन्य काण्ड भी अपूर्ण है। बीच बीचमे पत्र नही है
५४	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिकाटीका (बोधिनी)	रसाल	,,	,,	१६३	१९१७	लि. क ब्राह्मण रामनाथ
५५	पृथ्वीराजरासो (एकादशखण्डान्त)	चन्दवरदायी	,,	,,	१३०	१८७१	लि क. लच्छीराम भगत
५६	भाषाभूषण	जसवन्तसिंह	,,	रसालंकार	२३	१९०२	
५७	हितहमेल (४२वाँ ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	१००	१९२९	लि. क. रामनाथब्राह्मण, काटो
५८	(क) रसराज सटीक	मू मतिराम, टी शिवदत्त	हिन्दी	रसालंकार	९३	२०वीं श.	
	(ख) शालिहोत्र	नकुल	,,	आयुर्वेद	७७	,,	
५९	(क) अजामिलचरित्र		,,	काव्य	१–१०	१८९८	अन्तमे ८ पत्रोमे 'नाम महिमा' व 'दासजीकी नाममहिमा' है
	(ख) कबीरजीकी वाणी	कबीर	,,	सन्तसाहित्य	१–१२१	,,	
	(ग) नामदेवजीकी वाणी	नामदेव	,,	,,	१२१–१७५	,,	
	(घ) ध्रुवचरित्र	जनगोपाल	,,	काव्य	१७५–१९६	,,	लि क ब्राह्मण भुवाना

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(घ) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	हिन्दी	काव्य	१९६-२१४	१८९८	अन्तमें ८ पत्रोंमें नाम महिमा व दासजीकी नाम महिमा है। लि क ब्राह्मण भुवाना।
	(छ) भरतचरित्र				२१४-२२१		,,
	(ज) राजा मोहमदकी कथा		,,		२२१-२२९		,
	(झ) सुन्दरदासजीके सवया	सुन्दरदास	,	,	२२९-३१७		,
६०	(क) फुटकर कवित्त		,	,,	१-३५	२०वीं श	
	(ख) हाथीके लक्षण		,	ज्योतिष	३६-४७	,,	
	(ग) रागमाला		,,	संगीत	१-१६	,,	
६१	नखशिखवर्णन व कोकसार	आनन्दकवि		कामशास्त्र	२६	१९०७	लि क रघुनाथसिंह
६२	(क) सुखसंवाद		राजस्थानी	सन्तसाहित्य	१-४६	२ वीं श	अन्तमें पत्र सं ५० तक जनगोपाल आदिके भजन हैं।
	(ख) गणेशगोरखसंवाद			,	१-१६	,	अपूर्ण
६३	सतसई (डिंगल)	संग्रामसिंह	,	काव्य	९३	१९३४	लि क रघुनाथसिंह, कीटविद्ध
६४	गीतवही (९८० गीतोंका संग्रह)		,,	,,	२२८	२०वीं श	
६५	भगवद्गीता का अनुवाद		हिन्दी (व्रज)	वेदान्त	१८८	१९००	लि क ब्राह्मण भुवाना
६६	(क) विवेकविचार	शिवसिंह	हिन्दी	,	४०	१८९७	लि क राव जुहार मताप (महताव) पुत्र,
	(ख) फुटकर रागसंग्रह		,,	संगीत	२०	,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
६७	विवेकवार्ता	केशवदास गाडण	हिन्दी		२१०		जीर्णशीर्ण, कीटविद्ध, अन्त मे १० पत्रो में स्फुट श्लोक, पद्य व राग है
६८	रघुनाथरूपक	कवि मनसाराम (कविमछ)	राजस्थानी	काव्य	८८	१६२५	लि क ब्राह्मण रामनाथ
६९	यवनछंद (फारसी छंदो का वर्णन)	संग्रामसिंह	हिन्दी	,,	२८	२०वी श.	'गणपतिचरणसरोजरज, धर ह्याउ संगाम । यवन छंद रचना रचत, इन्द्र-दुर्ग निजधाम ।'
७०	संगीतपयोनिधि (७९वां ग्रन्थ)	,,	,,	संगीत	११	१६३३	रामरामग्रहचन्द्रमा, दरश हरियाली रैन । इन्द्रदुर्ग निजधाम मे, ये तो ग्रथ लखैन । गुनसन्तियोग्रन्थ जो, यह रच्चौ संग्राम, यह सुधार सुध कीजियौ, जो सुकवि गुणधाम ।
७१	(क) सुखसवाद		,,	सन्तसाहित्य	२९	१८८४	लि क. 'रामरतन', अन्त मे ६ पत्रो में नक्षत्र राशि व वायुविचार आदि है ।
	(ख) सन्तदासजीकी साखी	सन्तदास	,,	,,	१	,,	लि. क. रामरतन
	(ग) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	,,	,,	२–३२	,,	,,
	(घ) ध्रुवचरित्र	,,	,,	,,	३२–६३	,,	,,
	(च) फुटकर दूहा	अहमद	,,	,,	२	,,	
	(छ) ठीकरनाथजीकी भावना		,,	,,	२	,,	
७२	छन्देन्द्रकल्याणकल्पद्रुम	कल्याणदास भटनागर	,,	छन्द शास्त्र	५५	१९वी श	कीटविद्ध, अपूर्ण, जीर्णशीर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
७३	पोवण्डर्या ढूका	सग्रामसिंह	हिन्दी	प्रकीर्ण	४७	१९वीं श	जीर्ण
७४	वुधसिंहचरित्र	वशभास्करगत	,,	काव्य	१६०	२०वीं श	अपूर्ण
७५	नखशिखवर्णन	रसिकप्रियान्तगत (केशवदास)	,	रसालकार	१०	१८६७	नि क चि नन्दराम लि स्था करवाड
७६	गजपरीक्षा		,	काव्य	३८	२०वीं श	
७७	ढोलामारूरी वार्ता		राजस्थानी	वार्ता	१२४	,	अपूर्ण
७८	सदयवत्ससावलिंगारी वात		,		८६	,,	
७९	(क) भक्तिमक्तिप्रश्नोत्तरी		हिन्दी राजस्थानी	वेदान्त	१–७०	१९११	
	(ख) तत्त्वसारगीता		,		७०–८७	,	
	(ग) वर्णरत्नाकर			धर्मशास्त्र	८७–१६०	,	
	(घ) भक्तिपदार्थ		,	भक्ति(योग)	१–१३		
	(ङ) शिरोमणिसार			वेदान्त	१३–२२	,	लि क ब्राह्मण चि चम्पालाल
	(च) सहजानन्दभक्ति		,	भक्ति(योग)	२२–५५	,	लि स्था सेवागली मध्य चर्मण्वतीतटे
८०	कृष्णरुक्मिणीरीवेली सटीक	राठोड पृथ्वीराज	,,	काव्य	८७	१८१९	प्रथम पत्र अप्राप्त
८१	वशभास्कर सटीक		,,	इतिहास	११७	२०वीं श	अपूर्ण
८२	(क) चाणक्यदर्पण	चाणक्य	संस्कृत	नीति	१–२०	१८६४	
	(ख) नीतिशतक	भर्तृहरि	,	,	१–१९	,	
	(ग) बृहज्जातक		,	ज्योतिष	१–११८	,,	अन्त में तीन पत्रों में नव ग्रहदान लिखे हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
८३	नरसीजीका माहेरा		राजस्थानी	काव्य	४६	२०वी श	अपूर्ण
८४	कर्मविपाक		सस्कृत,हिन्दी	कर्मकाण्ड	६	,,	,,
८५	पातशाहीका किस्सा		हिन्दी	कथा	१२२	१९वी श	,,
८६	हाडोके प्रशस्तिगीतके स्फुटपत्र		,,	काव्य	६३	२०वी श.	
८७	स्फुटकीर्त्तनकवित्तसग्रह		,,	,,	५०	,,	
८८	हरिदासजीके पद	हरिदास	,,	सन्तसाहित्य	४३	१८०७	लि क. जोशी जीवराज गुर्जरगौड, पृष्ठ ४१ वें व ४२ वें से देवाचारणके कवित्त लिखे है।
८९	गजलचन्द्रिका	सग्रामसिह	,,	काव्य	४१	१९२८	
९०	अकारादिक्रमसे कवित्तसग्रह		,,	,,	५८	१९वी श	कवित्त सख्या ११९ से ७७५ तक
९१	रसभक्तिपथ	शिवदत्त	,,	योग(भक्ति)	१२	१९३५	
९२	लीलावतीगणितभाषा		,,	ज्योतिष	१४	१९वी श	अपूर्ण
९३	ताराविलास सटीक	विद्यानाथ	सस्कृत,हिन्दी	,,	१–९	,,	पृष्ठ स. १० पर नक्षत्र-स्वरूपचक्र एव पत्र ९ तथा १० के पृष्ठोपर दोहा आदि लिखे है।
९४	(क) स्वरोदय	चरणदास	हिन्दी	,,	१–१३	,,	
	(ख) नामसार	फतेहसिह राठौड	,,	काव्य	१४–५४	,,	
९५	(क) स्वरोदय		,,	ज्योतिष	१–१९	,,	
	(ख) तिथिकल्पद्रुम	सग्रामसिह	,,	,,	१९–२४	,,	
९६	(क) सुमुखीपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलगत	सस्कृत	तन्त्र	समग्र १३६	१८२९	लि. क आचार्य नगाद-विजय(?) लि स्था. सागौदा

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ख) रज स्वन्नस्तोत्र		सस्कृत		समग्र १३६	१८२६	
	(ग) शिवमहिम्न स्तोत्रादि	पुष्पदन्ताचार्य	,	स्तोत्र	,		उच्छिष्टगणिपति व बटुक भरवस्तवराज ग्रादि भी हैं। ग्रपूर्ण
९७	रामायण	गो तुलसीदास	हिन्दी	काव्य	१	१९१८	लि क चि रामरतन ब्राह्मण
९८	ज्योतिषग्रन्थ			ज्योतिष	४१	१९०७	
९९	फक्करवार्ता (ज्योतिष ग्रायुर्वेद कयोग व मोक्ष विद्या)			प्रकीर्ण	१७	२०वीं श	
१००	स्फुटवार्ता (नौहगणवर्णन ग्रादि)			,	१०		प्रतिमें तीन खुले पत्र हैं जिनमें लोह परीक्षा ग्रादि लिखित है।
१ १	रमलोत्सव	चिन्तामणिपडित	सस्कृत	ज्योतिष	२७	१८६८	
१०२	छायापुरुषविधि ग्रौर स्वरोदय (कबीरसाहबको)		राजस्थानी	,	१४	१९वीं श	
१०३	(क) ज्योतिषसार (लघुजातकानसार)				१–३१	१९१०	लि क द्वारका प्रसाद ग्रागे पत्र स ३६ तक ज्योतिष एव जनशास्त्र सम्बन्धी कुछ पत्र है।
	(ख) मेघमाला				३६–४०		
	(ग) चमत्कारचिन्तामणि		,	,	४०–६१	,	
१०४	सुभाषितपद्धति	शाङ्गधर दामोदरसूनु	सस्कृत	सुभाषित	२७	२०वीं श	ग्रपूर्ण हम्मीरभूपतिचौहान राज्यसभासदस्यराघव नाम्न पौत्र (ग्र क)

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि काल	विशेष
१०५	जुवदा रमलभाषा, सोदाहरण		राजस्थानी	ज्योतिष		१८७०	लि क ब्राह्मणनानजी, गुर्जरगौड
१०६	व्यग्यपचपचाशिका	सग्रामसिह	,,	रसालकार	१७	१९३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०७	किष्किन्धाकाण्ड छप्पय	प्यारेराम	हिन्दी	काव्य	३१	२०वी श.	आद्य १० पत्र अप्राप्त
१०८	विक्रमभूपकी कथा		,,	कथा (वार्ता)	२१	१८८३	
१०९	सवत्सरीफल		राजस्थानी	धर्मशास्त्र	८१	१९वीं श	कामदारीलिपि
११०	सुन्दरपदमुक्तावली	सुन्दर	हिन्दी	काव्य	१०८	१९३४	लि. कि व्रजवल्लभ लि. स्था माधवपुर
१११	सेऊसमनजीकी परची	अनन्तदास	,,	,,	१०	१८८९	लि क भुवाना
११२	राशियोकी किताव		उर्दू	ज्योतिष	१२	२०वी श.	फारसी लिपि
११३	दीवान मोजीज		,,	काव्य	१६८	,,	,,
११४	गुचापरागकी किताव		,,	प्रकीर्ण	५५	,,	मुद्रित
११५	किताव खलायक मुहम्मदरफी उकदीन		,,	,,	१२०	,,	फारसी लिपि
११६	किताव रमल		,,	ज्योतिष	७४	,,	,,
१२७	किताव ताजवीबीका रौजा		,,	प्रकीर्ण	१४	,,	इस पुस्तकमे ताजमहल निर्माणका ब्यौरा दिया गया है। फारसी लिपिमे
११८	याफता		,,	,,	१३७	,,	फारसी लिपिमे
११९	वाकैराजपूताना		,,	इतिहास	८८३	,,	,, मुद्रित
१२०	वशभास्कर		हिन्दी	,,	१४९	,,	जीर्णशीर्ण अपूर्ण
१२१	विनयपत्रिका	गो. तुलसीदास	,,	काव्य	९	,,	अपूर्ण
१२२	मर्यादापरिपाटीसमाचार		सस्कृत, हिन्दी	धर्मशास्त्र	८६६से१०३२	१९३४	मुद्रित

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१२३	प्रेमरत्नाकर	राजकुमार, भया रतनपाल	हिन्दी	काव्य	३३	१७४१	लि क –स्वामी खेमदास आगे १२ पत्रोंमें स्फुट कवित्त आदि हैं।
१२४	कबीरजीकी साखी	कबीर	,,	,,	२०२	२०वीं श	आद्य ५ पत्र अप्राप्त। अपूर्ण
१२५	विरदप्रकाश	उमेदसिंह	,,		२७	१९१६	
१२६	गृहदर्पण (३६वाँ ग्रन्थ) (यात्रा विषयवर्णन व स्थानोंके नाम)	संग्रामसिंह	,,	प्रकीर्ण	१४	२०वीं श	
१२७	शालिहोत्र	नकुल	,,	आयुर्वेद	५८	१८९०	
१२८	मन उमंग अनुराग	संग्रामसिंह	,,	काव्य	१९	१९३५	लि क वंशीधर गुजराती ब्राह्मण
१२९	(क) चैतन्यसिद्धान्त		,,	वेदान्त	२७	१९१३	आद्य दो पत्र अप्राप्त
	(ख) चतुरमहाबोध		,,	,,	११	,,	अपूर्ण
१३०	(क) व्यंग्यार्थचन्द्रिका	गुलाबकवि	,,	रसालंकार	१४	१९९२	
	(ख) पादसपचीसी	जगन्नाथकवि	,,	काव्य	१४–१६	,,	
	(ग) प्रेमपचीसी	गुलाबकवि	,,	,,	१७–१९		
१३१	(क) अलङ्कार मुक्तावली	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	३	१९१०	
	(ख) छन्द प्रस्तार	,,		छन्द शास्त्र	३	,,	
	(ग) अलङ्कारदीपिका	,,	,,	रसालंकार	५	,,	
१३२	(क) आत्म उद्धार	शिवसिंह		वेदान्त	१–५३	२०वीं श	छन्द संख्या ५२२
	(ख) आत्मप्रकाश		,,		१–२५	,,	
	(ग) युक्तिरत्न	,,			२५–३२	,,	
	(घ) युक्तिरत्नचिन्तामणि	,,	,,	भक्ति(योग)	३२–४०	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
	(च) प्रेमप्रभा	शिवसिंह	हिन्दी	काव्य	४०—४७	२०वी श	
	(छ) मुक्तिमगल	,,	,,	वेदान्त	४७—५५	,,	
	(ज) स्नेहसार	,,	,,	काव्य	५५—५८	,,	
	(झ) ग्रन्थसक्रान्ति	,,	,,	,,	५८—६७	,,	
	(ट) स्फुटकवित्त	,,	,,	,,	६७—७८	,,	
१३३	भर्तृहरिचरित	,	,,	सन्तसाहित्य	४०	,,	
१३४	रामचरित	सेनापति	,,	काव्य	१८	,,	स्फुटकवित्त (प्रारम्भिक ४ पत्रोमे)
१३५	सग्रामसिन्धु ग्रन्थव्याख्या (व्यग्यार्थ-मौक्तिकमाला)	सग्रामसिंह	,,	,,	४७	१९०८	
१३६	रामचरितमानस (वालकाण्ड)	गो तुलसीदास	,,	,,	११७	२०वी श	अपूर्ण
१३७	पावसपोडशी (५०वाँ ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	,,	,,	१७	१९२६	
१३८	भूगोलप्रश्नोत्तरी (५९वाँ ग्रन्थ)	,,	,,	,,	१५	१९३१	
१३९	रससिरोमणि	महाराज रामसिंहजी छत्रसिंहजीसुत, नरवर-निवासी	,,	रसालंकार	३७	१८३०	लि क—लछमण धाभाई लि स्था.—बडौदा
१४०	विहारीसतसई, सटीक	विहारीलाल	,,	काव्य	१८४	१८५६	
१४१	महाभारत उद्योगपर्व, ९ अध्याय, पद्यानुवाद	कृष्णकवि	,,	,,	८१	१९२७	र. का १७९२ आद्य तीन-पत्र अप्राप्त
१४२	(क) पूर्णबोधप्रकाश ज्ञानप्रकरण	पूर्णदास (गोवर्धनाश्रम-वासिक्षेमप्रतापशिष्य)	,,	वेदान्त	३१८	१७३१	लि. स्था —बूंदीपतिभाव-सिंह राज्ये
	(ख) ,, भक्तिभक्तसप्रदाय		,,	भक्ति (योग)	३२८	,,	रं. स्था. ,, ,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१४३	(क) ध्रुवचरित		हिन्दी	काव्य	१–४	१८२६	र का–१७८१
	(ख) ग्रमरलोकग्रखण्डधामवर्णन लीला				४–७	,,	
	(ग) धर्मजहाज		,		७–१७	,	
	(घ) गरुडपुराणसंवाद ग्रष्टांगयोग			योग	१७–३७		
	(च) पञ्चोपनिषद् भाषा		,,	वेदान्त	३७–४५	,	
	(छ) ज्ञानस्वरोदय		,	,	४५–५६		
	(ज) ब्रह्मज्ञानसागर				५६–६४		
	(झ) भक्तिप्रबोध			भक्ति योग	६४–७५	,	
	(ट) चारयुगवर्णन कुण्डलिया			काव्य	७५वाँ	,	
	(ठ) नासिकेत भगवर्णनादि		,	वेदान्त	७६–१००		
	(ड) चौबीसगुरुपरीक्षा		,,	,	१ ०–११५	,	
	(ढ) मोहछडावनवर्णन			,	११५–१२४		
	(त) सन्देहसागर		,,	,	१२४–१२७	,	
	(थ) शब्दोंके मंगलाचरणदूहा		,,	काव्य	१२७–१७५		
	(द) स्फुट कवित्त छन्द आदि		,,	,	१७५–१८१		
१४४	शनिश्चरकथा		,	कथा	१८	१८१४	
१४५	इन्द्रजाल		,	ज्योतिष	७	१९वीं श	अपूर्ण
१४६	हरिलीलामृत		संस्कृत	तन्त्र	१६	१८८८	लि क–मनीराम
१४७	(क) रसशृङ्गार		हिन्दी	काव्य	३	१९२०	प्रथमपत्र ग्रप्राप्त
	(ख) पायसपञ्चाशिका		,	,	१–७		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ग) झमाल (दूसरी) आदि		हिन्दी	काव्य	७–१०	१९२०	
	(घ) शृङ्गाररत्न		,,	,,	१०–१३	,,	
	(च) अलङ्कारमञ्जरी	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	१–११	१९२१	र का –१९११
	(छ) पावसषोडशी	,,	,,	काव्य	१–८	,,	
१४८	साहित्यबोध (काव्यप्रकाशानुवाद)		,,	रसालंकार	११	१९वीं श.	अपूर्ण
१४९	परिभाषाप्रकरण	सिद्धान्त पञ्चानन-भट्टाचार्य	संस्कृत	न्याय दर्शन	७	१७१८	लि क –लक्ष्मण, गंगारामात्मज, लि स्था. काशी
१५०	रामस्तवराज	सनत्कुमारसंहितोक्त	,,	स्तोत्र	१२	१८४७	
१५१	शिवशतनामस्तोत्र		,,	,,	३	१९वीं श	अपूर्ण
१५२	शृङ्गारप्रश्नोत्तरी, भाषा (६८वां ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	हिन्दी	रसालंकार	३१	१९३१	
१५३	अलङ्कारमञ्जरी	त्रिमल्ल, वल्लभभट्टपुत्र	,,	,,	१३	१९वीं श	प्रथम पत्र अप्राप्त
१५४	वाजिचन्द्रिका (६३वां ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	,,	ज्यौतिष	२१	१९३१	
१५५	आरामदर्पण (७४वां ग्रन्थ)	,,	राजस्थानी	प्रकीर्ण	१८	१९३४	आद्य दो पत्र अप्राप्त, लि क –रामनाथ
१५६	स्फुट कवित्त	पद्माकरभट्ट	हिन्दी	काव्य	१५	२०वीं श	एक कवित्त बेनीका भी है
१५७	(क) ध्रुवचरित	परमानन्द	,,	,,	१–१२	१७९१	लि क –वखतराम
	(ख) मंगलाष्टक	कवि कालिदास	संस्कृत	,,	१२–१७	,,	
	(ग) गणेशजीकी स्तुति		हिन्दी	स्तोत्र	१७–२३	,,	
	(घ) गोरखनाथजीकी स्तुति		,,	,,	२३–३०	,,	
	(च) भोगलपुराण		,,	पुराण(कथा)	३०–४०	,,	
	(छ) रागचिन्तन		,,	संगीत	४०–४८	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ञ) छीतमजीको जकडी	छीतमराम	हिन्दी	काव्य	४१–५१	१७६१	
	(ट) शायस्थद्वादशनाम टीका		"	कथा (पुराण)	५१–५७		
१५८	रसचन्द्रोदय	सग्रामसिंह		रसालकार	३५	१६१६	
१५६	रसचन्द्रोदय				२०	१६७०	
१६०	राजयोग भाषा	राजा प्रथ्वीचन्द्र ग्रन य	"	वेदान्त	४	१६२१	लि क—थीलाल
१६१	बहुलाष्टमी कथा			कथा	५	२०वीं श	
१६२	बींदरा बाजसराकी वारता		राजस्थानी	वार्त्ता(कथा)	१७	१८५४	लि क—घासीराम ज्योतिषी (डाकोत) लि स्था गणोली (बूंदी)
१६३	पद्मरीन राजस्थानीटीकासहित		संस्कृत राजस्थानी	ज्योतिष	११	१६वीं श	प्रथमपत्र अप्राप्त
१६४	(क) मासविचार (ज्येष्ठमाससे)		राजस्थानी	"	१४–१६	१६०५	कीटविद्ध
	(ख) छायापुरुषविचार				१६–१७	"	
	(ग) कबीरजीके रेखता		हिन्दी	सन्तसाहित्य	१८–२५		
	(घ) आत्मप्रकाश	धर्मदास		"	२५–३०		
	(च) बालबोधिनी चौपाई		"	"	३८–४६		
	(छ) हरिबोल		"		४६–४६	"	
	(ज) शब्द	कबीर			४६–५०		
	(झ) कबीराष्टक				५१–५२	"	
	(ट) अखण्डपरब्रह्मकी स्तुति	धर्मदास		"	५२–५३		
	(ठ) आत्मज्ञान आरती		"		५३वां		
	(ड) सम्वत्सरको फल			ज्योतिष	५४वां		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ढ) गुप्तज्ञानगुदरी	कबीर	हिन्दी	सन्तसाहित्य	५५–५६	१९०५	
	(त) रामरक्षा	रामानन्द	संस्कृत, हिन्दी	,,	५७–५८	,,	
	(थ) मूलपाजीग्रन्थ		हिन्दी	,,	५८–६१	,,	अपूर्ण
१६५	विवेकमार्तण्ड	जालन्धरनाथ	संस्कृत	वेदान्त	७	२०वीं श	,,
१६६	शृङ्गारसिन्धु (नवम कल्लोल)	भगवानदास	हिन्दी	रसालंकार	१४	,,	
१६७	(क) सिद्धान्तबोध	जसवन्तसिंह	,,	वेदान्त	५–३२	१८१०	आद्य ४ पत्र अप्राप्त
	(ख) सिद्धान्तसार	,,	,,	,,	१–२२	,,	
	(ग) गोरक्षशतक		संस्कृत	योग	२३–३०	,,	लि क –विश्वनाथ
	(घ) चौबीस अवतार		,,	प्रकीर्ण	३१वां	,,	
१६८	चौहाणोंकी वंशावली	गोविन्दराम बडवा, कोटा-निवासीकी पुस्तकसे	हिन्दी	इतिहास	१२	१८८३	
१६९	गीतवही	वेला चारण	,,	काव्य	१४	१९वी श.	
१७०	गीतमध्याक्षरी	शिवसिंह	,,	,,	१	,,	खरडा
१७१	(क) आदित्यव्रतमाहात्म्य		संस्कृत	पुराण(कथा)	१–७	,,	
	(ख) नक्षत्रफल		,,	ज्यौतिष	८–३३	,,	
१७२	मानसदीपिका व्याख्या		हिन्दी	काव्य	५२	,,	
१७३	पञ्चाङ्ग		संस्कृत	ज्यौतिष	१३	१९१९	
१७४	सूर्यजीकी कथा (हिन्दी)	पद्मपुराणगत	हिन्दी	कथा (पुराण)	१४	२०वी श	
१७५	छत्रबन्ध		संस्कृत	रसालंकार	१	,,	
१७६	झमाल	गोरचा डाढी	राजस्थानी	काव्य	२१	,,	
१७७	(क) कवित्तशतक	श्रीकृष्णचन्द्र (महाराजाधिराज)	हिन्दी	,,	१–२८	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ख) दोहाशतक	मोहनकवि	हिन्दी	काव्य	१–१४	२०वीं श	
	(ग) स्फुटकवित्त				१–६	”	
	(घ) विष्णुपद				१–४०		
	(च) मोहननामपचीसी		,	”	१–२	,	
	(छ) दोहासंग्रह			,	१–१२		
१७८	(क) शृंगारचमन	संग्रामसिंह		,	१–६	१९३२	लि क—रामवल्लभ चौब गुजराती लि स्था इन्द्रगढ़
	(ख) प्रेमचमन		”	,	६–११	,	
	(ग) रागसंयोग			संगीत	१२–२३	,	,
	(घ) वृष्टिकलानिधि (६८वाँ ग्रंथ)	”	”	रसालंकार	२४–२७		”
१७९	(क) छन्दशास्त्र		संस्कृत	छन्दशास्त्र	१–१०	२०वीं श	अपूर्ण
	(ख) वृत्तरत्नाकरटीका	समयसुन्दरगणि		,	१०–२०		
१८०	गणेशमहिमाकथा		हिन्दी	कथा	५१	१७८५	
१८१	संग्रामसिन्धु	संग्रामसिंह	”	रसालंकार	१–६	१९०८	
१८२	गीतापरिचयटीका	निर्मलसिंह (महाराजा)		वेदान्त	८–११६	२०वीं श	लि क—व्यास कालूराम
१८३	चारणगीतसंग्रह—		राजस्थानी	काव्य	३४४		इसमें निम्नलिखित सूची के अनुसार विविध गीतों का सङ्कलन है।
	१ कवित हींगळाजको			कवित्तसंख्या १	१		
	२ कवित बीजाशणिजीको			२	१		
	३ गीत नरसिंगजीका			२५	३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	४ दुहा सोरठुण			१	४		
	५ कवित राढ(ठ)			२६	४		
	६ गीत जाति त्रीवल			३०	४		
	७ कवित यन्त्रतध्वनि			४७	५		
	८ नशाणीमीराछलतन(त)जीकी			५४	६		
	९ गीत हामाजीको			१	७		
	१० गीत चतग्रळोळ हनुमत-जीको			५१	८		
	११ गीत गोख उोढो देवजीको			५३	८–९		
	१२ गीतजोगारमा(रम)			५६	९		५६वें गीत का प्रसङ्ग नहीं मिलता है।
	१३ कवित् चवाणकी उतप्ती			५६	१०		
	१४ गीत गोग(गोगा) चहुवाण			५८	१०		
	१५ गीत राव कोलणको			५९	१०		
	१६ गीत हाळुजी को			६३	११		
	१७ गीत रो(गो)पाळजीको			६४	११		
	१८ गीत वैरसळ			६५	११–१२		
	१९ गीत लालाहाडाको			६६	१२		
	२० गीत भापो पशुकाळको			६७	१२		
	२१ गीत राव ग्ररजनजीको			६८	१३		
	२२ कवित राव सुरजनको			६९	१३		
	२३ गीत रावसुरजमलजीको			७१–७९	१३–१६		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२४	नसाणी राव सुरजनको			८०	१६–१७		
२५	नीसाणी राव दूदा भोजको			८१	१७		
२६	नीसाणी दूदाजीको			८२–८३	१७		
२७	गीत दूदाजीको			८३–८७	१८–१९		
२८	राव भोजको गीत			८८–९८	१९–२३		
२९	गीत पाडगति			९९–१५८	२३–४०		
३०	राव नार्वासघजीका गीत			१५९–१६७	४०		
३१	गीत भगोतसिंघजीको			१६८–१७८	४२–४६		
३२	राव ग्रमेद(उमेद) सींघजीका गीत			१७९–१८३	४६–४९		
३३	ग(गोध)सिंघजी लार सती होई जीको			१८४–१९१	४९–५३		
३४	गीत राव छत्रसाळजीको			१९२वां	५३वां		
३५	गीत म्हाराजा ईंद्रसालजीको			१९३–१९९	५३–५५		
३६	गीत म्हाराजा सरदारसींघ जीको			२००–२११	५५–५८		
३७	गीत महाराजा मेघसिंघजीको			२१२–२२०	५८–६०		
३८	गीत म्हाराजा छोगसिंघजीका (गीत चोसरो)			२२१–२६८	६०–७५		
३९	गीत म्हाराजा देवसींघजीको			२६९वां	७५वां		
४०	गीत थेनियो साणोर			२७०	७५–७६		इसमें इन्द्रगढ़महाराजाकी प्रशस्ति है
४१	गीत श्रीकुटबंध			२७१	७६–७७		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	४२ रूपँका महाराजाजी भगतरामजी का कवित			२७३–२७६	७७–७८		
	४३ गीत मुक्ताग्रह			२७७–२७८	७९		भगतेसनरेशकी प्रशस्ति है
	४४ गीत चोसरा			२७९	७९–८०		"
	४५ गीत त्रिकुटवध			२८०–३०४	८०–९०		
	४६ भालडी			३०५–३६२	९०–१०४		इसमें स्फुटकवित्त भी है।
	४७ साखी म्हाराजा सरदारसिंघजीकी कही			३६३	१०४		
	४८ रूपक कवरजी सुनमानसिंघजी का गीत पचसर			३६४–३६५	१०४–१०५		
	४९ गीत मुक्ताग्रह			३६६–३६७	१०५–१०६		सुनमानसिंह प्रशस्ति है।
	५० गीत सुपखरो			३६८–३७८	१०६–१११		"
	५१ गीत त्रीकुटवध			३७९–३९५	१११–११७		"
	५२ गीत (कु)वरजी अमानसिंघजीका			३९६–३९८	११७वां		
	५३ गीत म(प्र)तापसिंघजीको			३९९–४०६	११७–१२०		
	५४ गीत राव अजीतसींघको			१	१२०–१२२		पत्रसंख्या मूल पुस्तकमें केवल १ ही दी गई है। पुनः ४०४ से प्रारम्भ है।
	५५ रूपक माहाराजा अमरसींघजीका गीत वेलीयो			४०४–४०८	१२३–१२४		
	५६ गीत माहाराजा फकीरसींघजीको			४०९–४१०	१२४–१२५		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	५७ माहाराजा जोगीरामजीका			४११–४१३	१२५–१२६		
	५८ गीत महाराजा सांवतसींघ जीका			४१४–४१६	१२६–१२७		
	५९ गीत घासीरामजीका			४१७–४१८	१२७		
	६० गीत महाराज प्रतापसिंघजीको			४१९	१२७–१२८		
	६१ गीत दलसींघजीको			४२०	१२८		
	६२ गीत महाराजा मरजादसिंघ जीको			४२१–४२३	१२८–१२९		
	६३ गीत कँवर फतेसींघजी सुजाण सींघजी ईंद्रसालोतको			४२४–४२५	१२९–१३०		
	६४ गीत वरीसालोतताका			४२६–४३६	१३०–१३४		
	६५ कवित रूपजी माहासींगोत			४३७	१३४		
	६६ माधोसींघजीको			४३८	१३४		
	६७ गीत मुकुनसिंघजीका सावभडो			४३९–४४६	१३४–१३६		
	६८ भोजी कसोरसींघजीका गीत			४४७–४५१	१३६–१३८		
	६९ गीत रामसींघजीका			४५२–४५५	१३८–१३९		
	७० गीत भीव(व) सींघजीका			४५६–४६५	१४०–१४३		
	७१ गीत स्यामसींघजीका			४६६	१४३–१४४		
	७२ गीत दुरजलसाल(दुरजनसाळ) जी का			४६७–४७८	१४४–१४८		
	७३ गीत जराम वोयास (व्यास)			४७८–४८०	१४८–१४९		

ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	७४ गीत गोपीनाथजीका			४८१–४८२	१४९		
	७५ गीत गोरधनसिंघजीका			४८३–४८४	१४९–१५०		
	७६ गीत पतीतसिंघजीका			४८५	१५०		
	७७ महाराज दुर्गादासजी कवित्			४८६–४८९	१५०–१५१		
	७८ गीत प्रथीसिंघजीका			४९०	१५१–१५२		
	७९ गीत नाहरसिंघजीको			४९१	१५२		
	८० गीत नाथजीको			४९२	१५२–१५३		
	८१ गीत हरराजावतको			४९३	१५३		
	८२ गीत रोलतसिंघ हरवावतको			४९४	१५३		
	८३ गीत जोगसीघ हरराजावतको			४९५	१५३–१५४		
	८४ रतसिंघ हरवावत कवित्			४९६–४९७	१५४		
	८५ होरसिंघजी मेवाउता गीत			४९८–४९९	१५४–१५५		
	८६ फतेसीह रायसीघजीको कवित्			५००–५०१	१५५		
	८७ रतुजा(रतुजी) चायको गीत			५०२–५०४	१५५–१५६		
	८८ गीत हाडा भोजसिंघजीको			५०५–५०६	१५६–१५७		
	८९ कवित् राव हमीरको			५०७–५०८	१५७वा		
	९० प्रथीराजको छपै			५०९–५१२	१५७–१५८		
	९१ गीत गोरा डोडो बरडोदको राना भोजराज चहुवाणको			५१३	१५८		
	९२ कवित् टोडरमल चहुवान तोमरानाको राजा			५१४	१५८–१५९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	९३ गीत बेदलाका ठाकुर बखत सीघ चहुवाण को। सुपखरो चोटीबध			५१५से५१७	१५९–१६०		
	९४ गीत चहुवाणाको			५१८–५१९	१६०–१६१		
	९५ गीत सत्रसाळ देवडाको			५२०	१६१		
	९६ गीत अभसीघ देवडोको			५२१	१६१		
	९७ गीत सुरताण देवडोको			५२२	१६१		
	९८ गीत (वी)रमदे सोनगराको			५२३	१६२		
	९९ गीत राणगदे सोनगराको			५२४	१६२		
	१०० गीत जसो सोनगरको			५२५	१६२–१६३		
	१०१ गीत कुभा(कुंभा) खीचीको			५२६	१६३		
	१०२ गीत धीरतसीघ खीचीको			५२७	१६३–१६४		
	१०३ गीत नगा खीचीको			५२८–५२९	१६४		
	१०४ गीत फतेसीघ खीचीको			५३०	१६४–१६५		
	१०५ गीत अकबर पातस्याको			५३१–५३२	१६५		
	१०६ कवित साहिजादो दानसाहको			५३३	१६५		
	१०७ कवित खान खान नवावको			५३४–५३६	१६५–१६६		
	१०८ कवित ओरजे(व) पातस्याका			५३७	१६६		
	१०९ गीत साहिजादाको			५३८	१६६–१६७		
	११० गीत दलिको			५३९	१६७		
	१११ गीत राणा कुंभाको			५४०–५४३	१६७		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
११२	गीत रावमल राणाको			५४४	१६८		
११३	गीत राणा परतापसींघको			५४५–५४६	१६८–१६६		
११४	गीत राणा अमरसींघको			५४६	१६६–१७०		
११५	गीत राणा जगतसींघजीको			५५०	१७०		
११६	गीत राणा राजसींघको			५५१–५५५	१७०–१७१		
११७	गीत राणा परतापसींघजीको			५५६	१७२		
११८	गीत राणा नगरामसींघजीको			५५७	१७२–१७३		
११६	गीत राणा गागाको			५५८–५५६	१७३–१७४		
१२०	गीत जगत पताको			५६०–५६१	१७४–१७५		
१२१	गीत रावजीका			५६२	१७५		
१२२	गीत रावजीको			५६३	१७५–१७६		
१२३	गीत अमरसींघ रावजीको			५६४	१७६		
१२४	गीत जैतसी रावतको			५६५	१७६		
१२५	गीत नाहरसींग देवडाको			५६६	१७६–१७७		
१२६	कवित् मेघो रावतको			५६७	१७७		
१२७	कवित् कावडया तेडीको भारतसींघजीको			५६८	१७७		
१२८	गीत राणा भीमको			५६६–५७०	१७७–१७८		
१२६	गीत उडणा प्रथीराजको			५७१–५७२	१७८–१७६		
१३०	गीत राणा मोकाको			५७३	१७६		
१३१	गीत गोडो ताराको			५७४	१७६		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१३२ गीत सोहो चलो			५७५	१७९–१८०		
	१३३ गीत देवीसीघ वगुका ठाकुरको			५७६	१८०		
	१३४ गीत दम्मारिकावास चोडावतको			५७७	१८०		
	१३५ गीत जसोतसींघ चोडावतको मुक्तायह			५७८	१८०–१८१		
	१३६ गीत नरांयणदास सगतावतको			५७९	१८१		
	१३७ गीत गजगति नरांयणदास सगतावतको			५८०–५८१	१८१–१८२		
	१३८ गीत घ्रठतालो			५८२	१८२		
	१३९ गीत गोकलदास सगतावतको			५८३–५८६	१८२–१८४		
	१४० गीत परतापसीघ सगतावतको			५८७–५९३	१८४–१८५		
	१४१ गीत जगतसींघ सगतावतको			५९४–५९५	१८५–१८६		
	१४२ गीत नालसींघ सगतावतको			५९६	१८६		
	१४३ गीत सगतसींघ सगतावतको श्रीकुटवध			५९७	१८६–१८८		
	१४४ गीत सुरतसींघ सगतावतको			५९८	१८८		
	१४५ गीत सगतावतको			५९९	१८८		
	१४६ गीत राणा संग्रामसींघजीको			६००	१८८–१८९		
	१४७ रूपक म्होकमसी चन्द्रावतको			६०१–६०४	१८९–१९०		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	२४८ गीत अमरसींघ राठौड़री			६०४	१६०-१६१		
	२४९ गीत भारतसींघ सालपुर			६०६-६०७	१६१वीं		
	२५० गीत उमेदसींघ शाहपुर			६०८-६१०	१६१-१६४		
	२५१ गीत छत्रोजीरो			६१३	१६४		
	२५२ गीत रामानन्द नाथरो			६१४	१६४-१६५		
	२५३ गीत केसरीसींघ सीसोदी			६१७	१६६		
	२५४ गीत मानसिंघ डाबररो			६१६	१६५-१६६		
	२५५ गीत प्रतापसींघ राणाजीरो			६१७-६१८	१६६ १६७		
	२५६ गीत नाथावत नाथजीरो ठाकुरजी चोखजी			६२०	१६७		
	२५७ गीत देवाजी ठाकुरको दरबार गीत			६२१	१६७-१६८		
	२५८ गीत नाथजी देवराज राजा हमीरजीरो			६२०	१६८		
	२५९ गीत बिहारीदास गावीरजीरो			६२३	१६९		
	२६० गीत राजु राठौड़को			६२४	१६९-१७१		
	२६१ गीत गुमान गोपालजीरो मुरजाफर			६२५	१७१-२०१		
	२६२ कवित् रामसिंघ लीलाजीरो			६२६	२०१		
	२६३ दोहा कवित् महाराजाजीको तथा एक कवित महाराजाजी को एक मुजरोको			६२७	२०१		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१६४ कवित हरीजीको			६२८–६२६	२०१–२०२		
	१६५ गीत लालसींघ सोल(ल)खीको			६३०–६३१	२०२		
	१६६ गीत कसनसींघजीको			६३२	२०२–२०३		
	१६७ गीत बीरमदे सोलखीको			६३३	२०३		
	१६८ गीत सोमराव जसगको			६३४	२०३–२०४		
	१६६ गीत मुळराज सोलखीको			६३५	२ ४		
	१७० कवित नाथावतांको			६३६	२०४		
	१७१ गीत देवीसींघ नाथावतको			६३७	२०४–२०५		
	१७२ कबित करण नाथावतको			६३८	२०५		
	१७३ गीत गोयदा सखराडाको			६३६–६४२	२०५–२०६		
	१७४ गीत ग्रमरसिंघ भाटी जसळमेरको			६४३	२०६		
	१७५ गीत सबळा भाई			६४४	२०७		
	१७६ गीत जावुको			५४५	२०७		
	१७७ गीत विजासर थयाको			६४६	२०७–२०८		
	१७८ गीत करण सरवयाको			६४७	२०८		
	१७६ दुहा जसा सरवयाका			६४८	२०८–२ ६		
	१८० गीत राठोडांका			६४६	२०६–२१०		
	१८१ गीत राजा गजसींघजीको			६५०–६५२	२१०		
	१८२ गीत राजा जसोतसींघजीको			६५३–६५६	२१०–२१२		
	१८३ गीत ग्रमरसींघ राठोडको नागोरको राजा			६५७–६५८	२१२		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
	१८४ गीत राणा [illegible]रो			६५६-६५७	२१२-२१४		[illegible]
	१८५ गीत राणा [illegible](व)[illegible]रो			६५७-६५८	२१८-२१९		
	१८६ गीत [illegible]रो			६५९-६६१	२१६-२१८		
	१८७ गीत [illegible] राणा [illegible]रो			६६२	२१९-२२०		
	१८८ गीत राणा [illegible] सूरजरो			६६३	२२०-२२१		
	१८९ गीत राजसींघ [illegible] गजारो			६६४-६६६	२२१-२२३		
	१९० (गी) [illegible] गढोदरो			६६७-६६९	२२३-२२४		
	१९१ गीत [illegible]रो			६६९	२२४		
	१९२ गीत [illegible]रो			६६९	२२४		
	१९३ गीत [illegible]रो			६६९-६७०	२२४-२२५		
	१९४ गीत [illegible] [illegible]			६७०	२२५		[illegible]
	१९५ गीत [illegible] [illegible]रो			६७०-६७२	२२५-२२६		
	१९६ गीत [illegible] [illegible]रो			६७२	२२६		
	१९७ गीत [illegible] [illegible] गीत [illegible]			६७३	२२६-२२७		
	१९८ गीत [illegible] [illegible] ठाकुररो			६७३-६७५	२२७-२२८		
	१९९ गीत [illegible] [illegible] [illegible] ठाकुरके माडै [illegible]			६७६	२२८		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२०० गीत जतसींघ समीयांणरो ठाकुर राठोडको			७०३	२३०–२३१		
	२०१ गीत केसरीसींघ उदाउतको			७०४	२३१–२३२		
	२०२ गीत उदाउतको			७०५	२३२		
	२०३ गीत मोहोकम राठोडको			७०६	२३२–२३३		
	२०४ गीत विजा राठोडको			७०७	२३३		
	२०५ गीत हठीसींघ राठोडको			७०८	२३३–२३४		
	२०६ गीत तेजसींघ राठोडको			७०९	२३४		
	२०७ गीत कुसलसींघ चांपावतको			७१०	२३४–२३५		
	२०८ गीत सेरसींघजी कुसल सींघजीको			७११	२३५		
	२०९ गीत कुसलसींघ सेरसींघको			७१२–७१४	२३५–२३९		
	२१० गीत सेरसींघजीको			७१५–७१७	२ ९–२४१		
	२११ गीत दुरगादास राठोडको			७१८	२४१		
	२१२ गीत गोपालसींघ मेडत्याको			७१९	२४१–२४२		
	२१३ गीत अरध गोल कसनसींघ राठोडको			७२०	२४२		
	२१४ गीत परसा राठोडको			७२१	२४२–२४३		
	२१५ गीत चतुरा राठोडको			७२२	२४३		
	२१६ गीत करण राठोडको			७२३	२४३		
	२१७ गीत साहायसींघ राठोडको			७२४	२४३–२४४		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२१८ गीत करण राठोडको			७२५	२४४		
	२१९ गीत सैंसमल राठोडको			७२६–७२९	२४४–२४६		
	२२० गीत माधोसीघ राठोडको			७३०–७३१	२४६–२४७		
	२२१ गीत जसोतसीघजीका उमरावाको			७३२	२४७		
	२२२ गीत अभैसीघजीका उमरावाको			७३३	२४७–२४८		
	२२३ गीत परथीराज राठोडको			७३४	२४८		
	२२४ गीत ज(य)सींघ राठोडको			७३५	२४८		
	२२५ गीत सेवो बावेलको			७३६	२४९		
	२२६ गीत घाणोराको ठाकुर पदम-सींघको			७३७	२४९		
	२२७ गीत सगतसींघ राठोडको			७३८	२४९–२५०		
	२२८ गीत मोकम चापाउतको			७३९	२५०		
	२२९ गीत अखैसींघ राठोडको			७४०	२५०–२५१		
	२३० गीत कमो राठोडको			७४१	२५१		
	२३१ कबित् राव बीकाको			७४२	२५१		
	२३२ गीत कल्याणसींघजीको			७४३	२५१–२५२		
	२३३ गीत प्रथीराज राठोडको			७४४–७४५	२५२–२५३		
	२३४ गीत रायसीघको			७४६	२५३		
	२३५ गीत बीकानेरको मोणसीघका बेटाको			७४७	२५३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२३६ गीत सांगोर याणवय वलीयो रामसींघको			७४८	२५३–२५४		
	२३७ गीत रायसींघ बीकानेरको			७४९	२५४		
	२३८ कवित बीकानरका राजा अनोपसींघको			७५०	२५४–२५५		
	२३९ गीत बीकानरको पदमसींघको			७५१–७५४	२५५–२५६		
	२४० गीत केसरीसींघ बीकानेरको			७५५	२५६–२५७		
	२४१ कवित राजा गजसींघजो बीकानेरको			७५६	२५७		
	२४२ गीत भींव राठोडको			७५७	२५७–२५८		
	२४३ गीत दुदा राठोडको			७५८	२५८		
	२४४ गीत लखधीर यींदा			७५९	२५८–२५९		
	२४५ गीत योक अखरो करण बीकानेरका राजाको			७६०	२५९		
	२४६ गीत आफुको			७६१	२५९–२६०		
	२४७ गीत म्यागको			७६२	२६०		
	२४८ छप्प राव भाराको जाडो चाको			७६३	२६०		
	२४९ गीत जाडेजाको योसर			७६४	२६०–२६१		
	२५० गीत हीरा मांगळयाको			७६५	२६१		
	२५१ गीत महेड जाडेचाको			७६६	२६१–२६२		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२५२ गीत राव देसलको			७६७	२६२		
	२५३ दुरजनसाल सोडाको			७६८	२६२		
	२५४ गीत भोज कावाको			७६९	२६२—२६३		
	२५५ गीत घासडी सोडा चवाणको			७७०	२६३		
	२५६ गीत सोडा राठोडाकी चुकको			७७१	२६३—२६४		
	२५७ गीत सोडा भाटीकी चुकको			७७२—७७३	२६४		
	२५८ गीत राजा मानको			७७४—७७५	२६४—२६५		
	२५९ कवित वडो जैंसीघको			७७६—७७८	२६५—२६६		
	२६० गीत वडो जैंसीघको			७७९	२६६		
	२६१ गीत जगतसीघ आंम[मे]रका राजाको लहचाल			७८०	२६६		
	२६२ गीत राजा रामसीघजीको			७८१	२६६—२६७		
	२६३ कवित् राजा वसनसींघको			७८२	२६७		
	२६४ गीत सीहि श्रोगान राजा सवाई जैंसीघको			७८३—७८८	२६७—२७०		
	२६५ गीत वडा जैंसींघजीको			७८९—७९०	२७०—२७१		
	२६६ गीत दुमेळ । मनोहर साखळो बडा जैंसीघको उमरावको			७९१	२७१		
	२६७ गीत तलोकसींघ राजाउतको			७९२	२७१		
	२६८ कवित् कुशलसीघ नाथाउत चोमा[मू]को ठाकुर			७९३—७९४	२७१—२७२		
	२६९ गीत गजैंसीघ नाथाउतको			७९५—७९६	२७२—२७३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२७० गीत सोरठो उव(य)सींघ सेखाउतको			७९७	२७३		
	२७१ गीत वीर्यसिंघजीको			७९८	२७३–२७४		
	२७२ गीत बोलतसींघको			७९९	२७४		
	२७३ गीत सोसींघ सेखाउतको			८००	२७४–२७५		
	२७४ गीत कानसिंघ बलभद्रोत			८०१	२७५		
	२७५ गीत देवसींघ खगारोतको			८०२	२७५–२७६		
	२७६ गीत अमरसींघ खगारोत			८०३	२७६		
	२७७ गीत गोरधन कल्याणोत			८०४–८ ५	२७६		
	२७८ गीत मानसिंघ कल्याणोत			८०६	२७६–२७७		
	२७९ गीत कमा कल्याणोतको			८०७	७७		
	२८० गीत जचव कल्याणोतको			८०८	२७७		
	२८१ गीत फतेसींघ नागाको			५०९	२७७–२७८		
	२८२ गीत जसींघ नरूको			८१०	२७८		
	२८३ गीत दोनू जसींघ नरूकाका			८११	२७८		
	२८४ गीत सुजाणसींघ जगनाथोतको			८१२	२७८–२७९		
	२८५ गीत साहेबखां भाखरोतको			८१३	२७९		
	२८६ कवित्त राजसींघ भाखरोतको			८१४–८१५	२७९–२८०		
	२८७ गीत राजसींघ भाखरोतको			८१६	२८०		
	२८८ गीत गुजरीका पेट(बेटा)को नरायणदासजीको दोलतखां बेटो छ जीको गीत छ			८१७	२८०–२८१		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२८९ कवित् जैतसींघ मानसीघउत (बाकाउत)को			८१८	२८१		
	२९० दुहो बाकाउतको			१*	२८१		*यह दोहेकी संख्या है।
	२९१ गीत सपुतको			८१९	२८१–२८२		
	२९२ गीत कपुतको			८२०	२८२–२८३		
	२९३ गीत वेसरैं मानसीघोताको			८२१	२८३		
	२९४ दुहा सवाई जैसींघजीको			१*	२८३		*यह दोहेकी सख्या है।
	२९५ गीत खगार कछावाको । खगारो ताको बड़ो सारा सु			८२२	२८३		
	२९६ कवित नाथाउत कछवावाको			८२३	२८३–२८४		
	२९७ गीत जग खोडो राजा विठल-दास गोड़को			८२४–८२७	२८४–२८५		
	२९८ गीत राजा अनाद (आना?)को			८२९	२८५–२८६		गीतस० ९२८ नही है।
	२९९ कवित राजा वीठलको डुगरसी वाझडीका कह्या			८३०–८३२	२८६		
	३०० गीत राजा अनरद गोडको			८३३	२८६–२८७		
	३०१ कवित् सावझडो			८३४–८३५	२८७		
	३०२ गीत राजा नरस(ग)को			८३६–८३९	२८७–२८८		
	३०३ गीत जाति हसमग			८४०	२८९		
	३०४ गीत अरट गोडाको			८४१	२८९		

ग्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३०५ गीत अरजन गोडको			८४२–८६०	२८६–२९६		
	३०६ गीत सभरांम गोडको			८६१–८६४	२९६–२९८		
	३०७ गीत राजा मनोरदासजीको			८६६	२९८–२९९		गीतस ८६५ नहीं है।
	३०८ गीत राजा उतमरामजीको			८६७	२९९		
	३०९ गीत बीरभद्र गोडको			८६८	२९९		
	३१० गीत अरजन बीरभद्रको			८६९	२९९–३००		
	३११ गीत जोरावरसींघजी माहा राजाधीरासींघजीका नाथजीको			८७०	३००		
	३१२ गीत उव(ब)भाण हरभाण गोडको			८७१–८७२	३००–३०१		
	३१३ गीत सगता गोड्को			८७३	३०१		
	३१४ दुहो रास(णा)सांगा उतमराव रतनरो कह्यो			१*	३०२		*यह दोहेकी सख्या है।
	३१५ गीत यानसींघ सांगाउतको			८७४–८७५	३०२–२०३		
	३१६ गीत कसनसींघ गोडको			८७६–८७७	३०३		
	३१७ गीत दलाझालाको			८७८–८७९	३०३–३०४		
	३१८ गीत राज कीरतसींघजी सादड(डी)का ठाकरांको			८८०	३०४		
	३१९ गीत नाथजी झालोताणाको ठाकुरको			८८१	३०४–३०५		
	३२० कुंडल्या जसोंत झालाका			८८२–८८६	३०५–३०६		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
	३२१ दूहो माधोसीघ भालाको			*१	३०६		*यह दोहेकी सख्या है।
	३२२ दूहो मदनसीघ भालाको			१–८९०	३०६–३०७		८९० कवित् स है।
	३२३ कवित् हमतेसिघ भालो			८९१	३०७		
	३२४ मत्र हेमतसीघ भाला उपर			८९२	३०७		
	३२५ गीत जालमसीघ भालाको			८९३	३०७–३०८		
	३२६ दूहो पुवाराको			*१,८९४	३०८		*१ सख्या दोहेकी है।
	३२७ गीत सादुल(सार्दुल) पुवांरको			८९५	३०८		
	३२८ गीत रावत मयण उमटको			८९६	३०९		
	३२९ गीत परसराम उमटको			८९७	३०९–३१०		कवित्तसख्या के अतिरिक्त ४ दोहे और हैं।
	३३० दूहो मानधाता पुवार बीजोल्याका ठाकुरको			*१	३१०		*यह सख्या दोहे की है।
	३३१ गीत नगा खातीको			८९८–८९९	३१०–३११		
	३३२ गीत नारग देसतीको			९००	३११		
	३३३ गीत रजपुताका गाढको			९०१–९०४	३११–३१३		
	३३४ गीत अनोपसीघ कछवावो			९०५	३१३		
	३३५ गीत माधोसींघ कछवावो अजबगढ भानगढका ठाकुरको			९०६	३१३–३१४		
	३३६ गीत गोयददास माधाणीको कछवावो			९०७	३१४		
	३३७ गीत कमा माधाणी कछवावो			९०८	३१४		
	३३८ कबित् सवाई जैसींघको			९०९	३१४–३१५		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३३९ कवित सताराका राजाका			६१०–६१६	३१५–३१७		
	३४० कवित हरवसाह बुंदेलाका			६२०–६२१	३१७–३१८		
	३४१ कवित ग्रातमाराम रुघनाथ सींघ गोड भावरोत			६२२–६२३	३१८		
	३४२ कवित तरवरसाह भाटको			६२४–६२५	३१८–३१९		
	३४३ कवित परती चकवडुवाको			६२६–६२७	३१९		
	३४४ कवित रूपगादी खोडको			६२८	३१९–३२०		
	३४५ कवित पत्ताई देवीदासका कहा			६२९–६३६	३२०–३२२		
	३४६ कवित पुडळया गिरधरका कह्या			६३७–६६६	३२२–३२९		
				इसके पश्चात स्फुटपत्र हैं, उन्हीं पर क्रमश पत्र संख्या दी हुई है। अत गीत सख्या क्रमन नहीं है			
	३४७ गीत ग्रमरसींघजी खातोली का ठाकुरको			३३०			
	३४८ गीत महाराजा भगतरामजी को छतर। भव्यारीदास यागडीको कह्यो			३३०			
	३४९ कवित खटदरसणका नाव परी छप्प			३३०			पत्र ३३१ से ३३४ तक स्फुट कवित्त दोहे हैं।
	३५० गीत डोढो ग्रठलाळो सवा सोको			३३५			

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३५१ गीत सावझड़ो			३३६			
	३५२ गीत जाति अठतालो			३३८			
	३५३ गीत पदमसींघजी रहणावत को ठाकुरज्याकी ठुकराण्या सुवरामें काम आयो ज्याको			३४०			
	३५४ गीत देवो आगाको			३४४			
	३५५ नशाणी राव साजाको			३४४			
१८४	उम्मेदचरित्र	वनमालदास	हिन्दी	इतिहास	४–११८	२०वीं श	अपूर्ण
१८५	गीतासार		”	वेदान्त	१०	”	
१८६	मदनकँवाररी कथा		राजस्थानी	कथा	३०	”	अपूर्ण, कीटविद्ध
१८७	(क) वैराग्यशतक	भर्तृहरि	संस्कृत	काव्य	८–१२	१८००	
	(ख) पोथी साठसम्वतसररी		हिन्दी	ज्योतिष	१–३३	”	
	(ग) गोकुल नाथामल्ला आगाराके युद्ध		”	काव्य	१–६	”	
	(घ) शाहजादांका चारोंसहजादांकी कथा (पद्यबद्ध)		”	”	१–७	”	
	(च) कुतुबरास		”	”	३६	”	अपूर्ण
१८८	परिचय अष्टाङ्ग		”	योग	३–८०	२०वीं श.	कीटविद्ध, अपूर्ण
१८९	भाषापिंगल		”	छन्दःशास्त्र	६	”	अपूर्ण
१९०	(क) कविकुलकण्ठाभरण		”	रसालंकार	१२	”	”
	(ख) काव्यकौमुदी		संग्रामसिंह	”	”	१–१३	”	
	(ग) सपलरो वरसानेर गीत लक्षण		”	छन्दःशास्त्र	३	”	”

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(घ) भाषाभूषण	जसवन्तसिंह	हिन्दी	रसालंकार	१०	२०वीं श	अपूर्ण
१९१	परमलोकपत्रिका		,	वेदान्त	१०	१९०५	
१९२	पंच प्रकाश	कविजहार		काव्य	१२	२०वीं श	
१९३	विदग्धमुखमण्डन (ततीयपरिच्छेदान्त)	धर्मदास	संस्कृत	रसालंकार	१०		
१९४	वीरसप्तशती	सूर्यमल्ल	हिन्दी	काव्य	१९		जीर्णशीर्ण, अपूर्ण
१९५	महाकालभैरवकवच	गन्धर्वतन्त्रोक्त	संस्कृत	तन्त्र	३	,	
१९६	भैरवकवच (त्रैलोक्यमङ्गलनामक)	रुद्रयामलोक्त	,,	,	३	,	
१९७	सुमुखीसहस्रनाम	रुद्रयामलगत	,,	,,	१२	१८९१	
१९८	अर्गलाकीलकस्तोत्र	सप्तशतीगत		,,	४	२०वीं श	
१९९	समुखीपटल (हनुमद्विषयक)	रुद्रयामलगत	,,	,,	१०	१८६०	
२००	गणेशकवच		,		३	१८६५	
२०१	क्षेत्रपालमन्त्र		,,	मन्त्रशास्त्र	३	१९वीं श	
२०२	अमृतसञ्जीवनीकल्प		,	तन्त्र	८	,,	
२०३	बालापूजनपद्धति		,,	मन्त्रशास्त्र	१४	,	अन्तिमपत्र अप्राप्त
२०४	उड्डीशतन्त्र		,,	तन्त्र	८	,	अपूर्ण
२०५	गर्गसंहितागिरिराजखण्डटीका	नाथूराम गुजराती	हिन्दी	पुराण	३३	२०वीं श	
२०६	इन्द्रगढ़महाराजसंग्रामसिंहविरचितग्रन्थोंकी सूची आदि		,	प्रकीर्ण	२९		

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी

++++++++++

प्रकाशित ग्रन्थ

१–संस्कृत ग्रन्थ

१ प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, सम्पादक–मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिराम-शास्त्री, विद्यासागर। मूल्य–६.००

२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाई-जयसिंह-कारित। सम्पादक–स्व० पं० केदारनाथ, ज्योतिर्वित्। मूल्य–१.७५

३, महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, सम्पादक–म०म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी। मूल्य–१०.७५

४, तर्कसंग्रह, अन्नंभट्ट, सम्पादक–डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम. ए., पी–एच. डी., मूल्य–३.००

५. कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दी, सम्पादक–डा. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी. एच-डी., मूल्य–१.७५

६. वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्ण-भट्ट, सम्पादक–पं० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–२.००

७ शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक–डा. हरिप्रसादशास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य–२.००

८. कृष्णगीति, कवि-सोमनाथ, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–१.७५

९ नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–१.७५

१०. शृङ्गारहारावली, श्री हर्ष-कवि-रचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–२.७५

११. राजविनोद महाकाव्य, महाकवि-उदयराज, सम्पादक–पं. श्री गोपालनारायण बहुरा एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२.२५

१२, चक्रपाणिविजयमहाकाव्य, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक–केशवराम काशीराम शास्त्री। मूल्य–३.५०

१३ नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्ण रचित, सम्पादक–प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारीख, तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–३.७५

१४. उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दर-गणी-विरचित, सम्पादक–पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि। सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–४.७५

१५ दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक–पं० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–४.२५

१६ कणकुतूहल महाकवि भोलानाथ विरचित सम्पादक–प० श्री गोपालनारायण बहुरा एम ए, उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर। इसी ग्रन्थकार की अपर कृति 'श्रीकृष्णलीलामृत' सहित। मूल्य–१ ५०

१७ ईश्वरविलास–महाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित सम्पादक–श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। मूल्य–११ ५०

१८ रसदीर्घिका कवि विद्याराम प्रणीत सम्पादक–प०श्री गोपालनारायण बहुरा, उप सञ्चालक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर। मूल्य–२ ००

१९ पद्यमुक्तावली कविकलानिधि कृष्ण भट्ट सम्पादक–प० मथुरानाथ शास्त्री साहित्याचार्य। मूल्य–४ ००

२० काव्यप्रकाशसंकेत भामन्द भट्ट कृत सम्पादक–श्री रसिकलाल छो० परीख
भाग १ मूल्य–१२ ००

२१ " " भाग २ मूल्य– ८ २५

२२ वस्तुरत्नकोश अज्ञात कर्तृक, सम्पादिका–डॉ प्रियबाला शाह। मूल्य–४ ००

२–राजस्थानी और हिंदी ग्रन्थ

२३ कान्हडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित सम्पादक–प्रो के बी व्यास, एम ए।
मूल्य–१२ २५

२४ क्यामखाँ रासा, कविवर जान रचित, सम्पादक–डा दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द भवरलाल नाहटा। मूल्य–४ ७५

२५ लावारासा चारण कवि गोपालदानविरचित सम्पादक–श्री महतावचन्द खारेड।
मूल्य–३ ७५

२६ बांकीदासरी ख्यात, कविवर बांकीदास सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी एम ए।
मूल्य–५ ५०

२७ राजस्थानी साहित्यसग्रह भाग १, सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी एम ए। मूल्य–२ २५

२८ कवीन्द्रकल्पलता कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित सम्पादक–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत। मूल्य–२ ००

२९ जुगलविलास महाराजा पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत। मूल्य–१ ७५

३० भगतमाळ ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पादक–उदैराजजी उज्ज्वल मूल्य–१ ७५

३१ राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची–भाग १ मूल्य–७ ५०

३२ " भाग २ मूल्य–१२ ००

३३ मुहता नैणसीरी ख्यात भाग १ मुहता नैणसी कृत, सम्पादक–श्री बद्रीप्रसाद साकरिया।
मूल्य–८ ५०

३४ रघुवरजसप्रकास किसनाजी आढा कृत सम्पादक–श्री सीताराम लाळस मूल्य–८ २५

३५ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची भाग १ सम्पादक–श्री मुनि जिनविजयजी।
मूल्य–४ ५०

३६ वीरवांण ढाढी बादर कृत सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत।
मूल्य–४ ५०

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत ग्रंथ

१ शकुनप्रदीप, लावण्य शर्मा रचित — सम्पादक—मुनि श्री जिनविजयजी
२. त्रिपुरा भारती लघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत ,, ,, ,,
३ करुणामृतप्रपा, ठक्कुर सोमेश्वर-विनिर्मित ,, ,, ,,
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंह विरचित ,, ,, ,,
५ पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्ण मिश्र रचित ,, ,, ,,
६ वसन्तविलास फागु, अज्ञात कर्तृक ,, एम सी. मोदी
७. नन्दोपाख्यान, अज्ञात कर्तृक ,, ,, बी जी साण्डेसरा
८. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमि विरचित ,, श्री बी डी. दोशी
९ वृत्तजातिसमुच्चय, कवि विरहाङ्क विनिर्मित ,, ,, एच डी. वेलणकर
१०. कविदर्पण, अज्ञात कर्तृक ,, ,, ,,
११. स्वयम्भूछन्द, कवि स्वयम्भू विनिर्मित ,, ,, ,,
१२. प्राकृतानन्द, रघुनाथ कवि रचित ,, मुनि श्री जिनविजयजी
१३ कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथ विरचित ,, श्री एम एन. गोरी
१४. दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी ,, ,, गङ्गाधर द्विवेदी
१५ नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभा प्रणीत ,, डॉ प्रियबाला शाह
१६ भुवनेश्वरी स्तोत्र (सभाष्य), पृथ्वीधराचार्य रचित ,, श्री गोपालनारायण बहुरा
१७ इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध ,, डा. दशरथ शर्मा

२–राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

१८ मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग २, नैणसी मुहता सम्पादक–श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१९ गोरा बादल पदमिणी चउपई, कवि हेमरतन विनिर्मित — सम्पादक–श्री उदयसिंह भटनागर
२० राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज
मूल लेखक श्री आर एस भण्डारकर — अनुवादक–श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी।
२१ राठोडारी वंशावली — सम्पादक–मुनि श्री जिनविजयजी
२२ सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थ-सूची ,, ,, ,,
२३ मीरां बृहत् पदावली ,, विद्याभूषण स्व पुरोहित हरिनारायणजी द्वारा संकलित
२४ राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ — सम्पादक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
(देवजी बगड़ावत और प्रतापसिंह वार्ता आदि)
२५ पुरोहित बगसीराम हीरां और अन्य वार्ताएं ,, श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

'राजस्थान पुरातत्त्व' नामसे एक शोध-पत्र (जर्नल) निकालने की योजना भी विचाराधीन है।